६१५६

१८६०

संगीत [illegible]

६५२

पत्र

ॐ प ८ इतिरागभैरवख्यालादिप्रथमरागसंपूर्णम्॥

१ १८५। अथपरीसागरमृदंगाध्यायप्रारंभः

संगीतरत्नाकरे अथमृदंगवादित्ररागिणि

परनचौताला ताधीधुन्ना तथा थीथीटे

किटि गिदि गननथा तता धीधी धुंधुं ताना

धिरर धिरर धिलांगधा धाधिननक धाधि

ननक धिननक तिटिकिता गिदि गिन्नाधा

धुंधुंधिट धिट धिट धिट धागे धिट धिट धागे

तरदा हूंहूं नट ततकैत्तर किटि तक ता गिट्त

धाधिताक धाधिताक धाधा धिताक धाधिताक

धाधिताक धाधिताकधा धाधिताक धाधिताक ॥

ॐ
१

शास्त्री फारसी अंग्रेजी शिरः पीडा सद्यस्त्र ।।

शि
१

ॐ नमः ।। नत्वादौ शिरः पीडाया
निदान संप्राप्ति संख्यादिकमाह
चरकादिभिः ।। संधारणात्स्वप्नवि
पर्ययाच्च मंदाग्निनोच्चैरति भाषणे
न । प्रस्नानस्य गंधादति रोदनेन शि
रोभिघातादतिमैथुनेन १ ।। प्रा
ग्वातसेवाक्त विति रहाभ्यो शैत्र
सेसेवन विन्नापात् ।।

टीका

राग पंचम

चारपदी

छटपदी

अष्टपदी

बडे पद

॥ २३

लेख भैरवाध्यायका सूचीपत्र

भैरवका

सूचीपत्र

वराह ३
नरसिंह ४
वामन ५
परशुराम ६
श्रीराम ७
श्रीकृस ८
बुद्ध ९
कल्कि १०
२१ अष्टपदी
षट्पदी
पंचपदी
२२ नित्यकीर्तन
२३ भजन
२४ कवित्त
२५ पातशाही ध्रुवपद
२६ नवरस
२७ नायिकावर्णन
२८ सूलफाक तालके पद
२९ रूपक ताल पद
३० झंप ताल पद
३१ धमार ताल पद
३२ चक्का ताल पद
३३ सवारी ताल
३४ आडाचउताल ताल
३५ झूमरा ताल
३६ धीमा त्रय ताल
३७ त्रेवट ताल
३८ जलद त्रय ताल
३९ होरी
४० ब्रह्म ताल
४१ रुद्र ताल
४२ विष्णु ताल
४३ लक्ष्मी ताल
४४ रागसागर
४५ ठुमरी
४६ चर्चरी ताल
४७ टप्पा
४८ दादरा ताल
४९ सोहर
५० गजल

ॐ १

प पृ२ जिसको उतराकहा
प पृ तेहैं अर्थात् रिषभ
प पृ अपनि हसरि श्रुती
प पृ रंजनी नामापर को
प पृ मलहोताहै कोमल
प पृ धैवत उहै जिसको
प पृ तंतीवर कहतेहैं।
प पृ पंचम स्वर तीवर उस
प पृ कोकोमल धैवत क
प पृ हतेहै अरु उहसरी
प पृ श्रुति रोहिणी नामा
प पृ पर होताहै
प२ पृ२ रिषभ आद भैरव सं
प२ पृ२ पूरण तस्यअलापस्य
प२ पृ२ ननरी रना आनन उन
न उआनाम अदतन
री तनं॥ इतिभैरवराग
अलापः॥

प२ पृ१ सा नीसा नि ध
नि सा इतिशारदामतेन
प पृ१ अनुस्वारभैरवरागस्वरसगमः
प२ पृ रे नि सा नि ध नी सा
प४ पृ१ इतिशिवमतेन २
प४ पृ ग म ग रे सा नि सा
प४ पृ इतिहनुमानमतेन॥३॥
प४ पृ ध नी सा ग म नी
ध प म म रे ग रे सा
प४ पृ२ इतिभरतमतेनसगमः ४
प४ पृ अथकल्लमतेनसगमः
प४ पृ नि सा नि रे सा रे नि सा
प५ पृ१ इतिकल्लमतेनसगमः ५
सा नि सा नि ध नी सा
इत्यस्थाई इत्यन्तरः
अथसंगीतदर्पणास
गमः ध नि स नि
रे स

प३५ पृ२ इतिसंगीतदर्पणे।
प पृ अथसंगीतकल्प
प पृ द्रुमः सरगमः
प पृ भैरवराग चारतार
ध नि सा रे ग म
प ध नि। इत्यस्थाई।
प पृ२ म ध नि सा रे स
ग रे सा॥ इत्यन्तरः॥
स रे सा सा रे ग रे सा
प६ पृ१॥ इत्याभोगः॥ इतिषड्जा
श्रुभैरवसंपूरणसगमः॥
प६ पृ चारतार ग ग म ग
रे सा॥ समस्वरसंपूर
णमेंयोंसगमविचारे
प६ पृ२ सासारे सारेरे रेरेगरे
प७ पृ१ इतिगांधारग्रामसगमः
अथऔडवभैरवप्रका
प७ पृ१ रः ॥

प७ पृ१ महादेवनि पंचम
त्यो करके पंचस्वरका भैरव
उच्चार किया जिसका वर्णन
रिषभ और पंचम अवर्जितहै
षड्ज और मध्यम और नि
षाद अनुवादीहैं गंधार
वादीहै कोमल धैवत संवा
दीहै रिषभ और पंचम अवा
दीहैं इसको औडव भैरव क
हतीहैं तस्योत्पते
सर्गमवरणनम्
ग ग ग म ग स
प८ पृ२ इतिस्थाई॥
मूर्छनासंयुक्त
प८ पृ१ इत्यन्तरः
ग म प नि सा
इत्यन्तरः॥ इतिमार्गभैरवस
र्गमवर्णनम्॥

ॐ २

सूचीपत्ररागभैरव १ अथतु
पत्र १ नराद्विआरंग:
पत्र १ गीतध्याय: अथम
पत्र १ भैरवरागवर्णनम्
पत्र १ खड्जांशग्रहन्यासं
पत्र १ षड्जादिकमूर्छना
पत्र १ संपूर्णांभैरवंप्रात:
पत्र १ गीयंतेशारदामतम्
पत्र १ अथशारदामतेन॥
पत्र १ टोडीगौरीरामकली
पत्र १ इतीनोसमभाग
पत्र १ इनह्निमिलाकिगाई
पत्र १ इअगटभैरोराग
पत्र १ इतिशारदामतेन॥
पत्र १ रिषभांशग्रहंन्यासं
पत्र १ रिषभादिकमूर्छना
पत्र १ भैरवंसंपूर्णांप्रात:

पत्र १ गीयंतेमतिशंकर:
पत्र १ इतिशिवमतेन॥दोहा
पत्र १ अंशन्यासग्रहतीनो
प १ मुख्यरिषभस्वरजान
प १ शिवमतभैरोप्रात
प १ हि गावतगुणोसुजा
प १ न॥इतिशिवमतेन॥
प १ अथहनुमानमतं
प १ गांधारांशग्रहंन्यासं
प १ गांधारादिकमूर्छना
प १ संपूर्णांभैरवंगीयं
प १ अनुषेहनुमान्मतं
प १ इतिहनुमान्मतेन॥
प १ दोहा अंशन्यास
प १ गंधारस्वर निसको
प १ हेग्रहजान प्रातहि
प १ भैरवगाइये आप

प १ कहतहनुमान
अथभरतमतम्॥
प १ धैवतांशग्रहंन्यासं
प १ धैवतादिकमूर्छना
प १ निषादान्तेभैरवंगेयं
प १ भरतमतेनकथ्य
प १ ते दोहा न्यासअं
प १ शग्रहधैवतस्वर
प १ जानो संपूरणभैर
प १ वभरतविधानो
प १ इतिभरतमतेन॥
प १ निषादांशग्रहंन्या
प १ सं निषादादिकमू
प १ र्छना प्रातश्चभैर
प १ वंगेयं कल्लिनाथम
प १ तेनच॥इतिकल्लिनाथम
प १ तेन॥ टोडी गौरी
रामकली इत्य॥

प १ तिणादे एकत्र होनेसे भैरो
राग होताहै
प १ ग्रीष्मऋतु
प १ वीररस दत्तनायक प्रात:
प १ काल विल्लोदेवता आद्याशक्ति:
प १ अग्नितत्व ह्रींबीज शिवऋषि
प १ ॐभंभंपेंह्रांस्वाहा इतिमंत्र:
प १ ॐभंइत्यावाहनं ॐभंभैरवंनम:
प १ इत्यासनम्॥इतिध्यानम्॥
प १ अथविनियोग:॥ ॐभंइतिमंत्र
प १ स्य विल्लऋषि ॐशिवऋषि
प १ पंक्तिछंद: आद्याशक्तिम्
प १ अग्नितत्वं ह्रींबीजम् प्रात
प १ समे जपेविनियोग:
प १ अथजपसंख्या॥सप्तलक्ष॥
प १ धूपदीप नैवेद गुग्गुल धूप
प १ काश्मीर श्वेतपुष्प संपूर्णा
प १ सातस्वर धैवत रिषभकोमल

अवस्त्रागे भैरवराग
की प्रथमपुत्रवंगा
लनामवर्णनम्
पंचभार्यासहित
ऋषभांशग्रहन्या
सऋषभादिकमू
र्छना रिपुस्वरव
र्जिती गीयंभैरवपु
त्रस्यबंगला ॥
अंशान्यासग्रहरिष
भस्वरपंचमवर्जि
तहोइ षाडभस्वर
बंगालकहेभैरवपु
रागहेसोई संपूर
णनिसअंतमे प्रा
तसमाजवहोइ

प। ९२ बंगालभैरवपुत्रजो
गावतहैं सबकोई॥
संगीतकल्पद्रुमः॥
ऋषभांशग्रहन्या
सं पंचमस्वरवर्जि
त षोषराग्राममी
यंतेवंगालोरागउ
च्यते ॥ रे म प ध
नी सा ग म ध रे
सा ग रे सा नी प
म ग ॥
बंगालराग भैरव
का प्रथमपुत्र रात
की अंतमे प्रातःका
ल समैविषे गायन
करणा चाहिये सं
पूरण संगीतोका

प ९२ ईमनहै ओर छेद
स्वरका इरागहै इ
सकिषाडव संज्ञाहै
पंचमस्वरअवर्जि
तहै ओर एकमत
वाली गंधार वर्जि
त कहतेहै क्यो
कि जिसरागमे ऋष
भस्वर वादि होताहै
ओर पंचमस्वर सं
वादे होताहै ओर
कही कही धैवत
भी संवादि होताहै
ओर वाकिस्वर अ
नुवादि होतीहै
रेषभमधग्रामवाला

प२ ९१ इत्यस्थाई॥
रे म प ध नी सा
ग रे सा नी प म
ग रे सा॥ इत्यस्थाई॥
सा म प म ग रे
सा नी प ध प म
ग रे नी म ध ध
नी सा ग म ग रे
सा॥ इत्यन्तरा॥
इत्याभोगः अथध्यानं॥
इत्याभोग॥ ध्यानम्॥
बंगालके शीत
वस्त्र धारणकीया
अरु श्वेतवस्त्रही
ओढ्याहै अरु यज्ञो
पवीत धारणकीयाहै

पु ९२ ५ अरु कंठमें अक्ष
माला पहरीहै
अरु सोवर्णकी पा
त्र हाथमें धारण
कीयाहै अरु वेद
विद्याका पाठक
रताहै अरु वेद
के अर्थको जान
ताहै अरु नाचने
में गावनेमें प्रवी
नहै॥ इतिध्यानं॥
स्वरूपरागका
ऋषभांशग्रहन्या
सो खाडवायरिकी
र्तितः बंगाल
ऋषभाजातोः
गीयःकरुणाहृस्मयोः

ओं
१

प बंगालका ऋष
भीग्न्यासहै अरुध्या
नवहै अरु करुणा
हासिरसहै गाया
जाताहै॥ रागस्य विनि
योगः॥ बंगालनाम
रागस्य ऋषिसौरभ
कीर्तितः देवताग्नि
रितिख्यातो गायत्री
छंदईरितः रंअग्नि
वीजं कीलकंस्वाहा
डंशक्तिमेरितं रंडं
स्वाहेति मंत्रेणप्रसा
दार्थेनियोजयेत् ॥
इसबंगाल रागका
ऋषि सौरभहै अरु

पृ
८

गायत्री छंदहै अ
रु अग्नि देवताहै
अरु रंवीजहै अरु
स्वाहा शक्तिहै अरु
डंकीलकहै अरु
रंडं स्वाहा येमंत्रहै
अरु जपसंख्या १२००
घृत दीप चंदन धू
प मालपुष्प नै प्र
वेद्य रक्तपुष्प इस
प्रकार करके पूजन
जपकरणे करके
रागप्रसन्नहोताहै॥

रा.सं. ॐ अथ परब्रह्म वेदना । राग भैरव । चौताल । नि रं ज न

नि रा का र प र ब्र ह्म प र मे श्व र ए क ही अ ने क

हो य व्या प्यो वि श्वं भ र ।। अ ल ख जो त अ वि ना

शी जो नि रू प ज ग ता र न ज ग न्ना थ ज ग ता र

ज ग त प ति ज ग जी व न ज ग धा र ।। वा ही मे स

भ जी व जे त सु र न र मु नि गु नी ज्ञा नी ना भ क

न ती स न ली जे ते रो अ न न ही हूं अ ने त ए जौं तो

हे वो थूं भ ज प र जा ए उ ख मा ज ॥ बै जू अ भ ।

आ दि अ ल ब अ गो व र नि रं ज न नि रं का र भ

क का ज को टि को टि हू प य रै से त न सि र ता

ज ॥ राग भैरव चौताल ॥ मा यो म य सु द न मु कुं

द मु र ली य रे मु ख मो ह त म ड हा स ॥ क म

मलतैंवलाङठठाऊँसनहूपामन्वेतर॥

कहेवैज्हूवामरोव्रलवहिविराटहूपवही

श्रापश्रवतारमपचौवीसवहूयर॥ रागभैरव

वैताल॥ श्रनेतव्रलोउकेनायकपरेव्रल

श्रीश्रीयरमहोराज॥ कृपासिंधुभक्तपाल

हरिकरणकृपालगरीवनिवाज॥ यहवि

रा.म. चौताल ॥ जै शारदा भवानी सारति विद्यादानी म

होवाकवानी तोहि ध्यावे ॥ सुर नर मुनि मानी

तोहि कूं त्रिभुवन जानी जो जाकी मन इछा

सोई सोई पुजावे ॥ मंगला बुधदानी ज्ञानकी

निदानी बीणा पुस्तक धारणी प्रथम तोहि गा

वै ॥ तानसैन तेरी प्रस्तुत कहा लो बखानो स

3

लनैयन वासुदेव परंब्रह्म परमेश्वर विश्व

रूपमग्रास ॥ नारायण निराकार बनवा

री वामन विठल शंख चक्र गदा पद्म सोह

न हे पास ॥ पतितपावन विरद जाको कृ

पाल दयाल भक्तवत्सल मदन राय के नित

जिय ग्रास ॥ अथ सरस्वती वंदना । राग भैरव ।

रा.सं

क़ु र त न हो न हो रे ग रे ग की क र त जे

हो अन्य भुवन भैरव चार ताल स र स ति श

स त्र हो इ मो हूं वा ग्वा नी खि र ज ऋ ष

भ गो धा र म ध्य म प ञ्च म धै व त नि षा

द गु र शु द्धि ग्रा व त ता न सा नी ता न से न

मा गे ता ल स्व र अ द्वा र ग ग रे ग से ग त

4

५

म स्वर तीन ग्राम मराग रंग लय प्रस्तार भावै ॥ रा

ग भैरव। चौतार ॥ महां बाक बानी सन्मुख हू जैं

हो ॥ जहां तैं त्रिभुवन मानी जा तैं ते भवानी जो

जो के मन ईछा सो ई सो ई पुजे हो ॥ रिद्ध सिद्ध

नव हि पाई ए मात जब न बबणि कहू जे हो ॥

तो न सैन यह प्रसाद मोगा त जहां त हा ज्वरत

दु॰स॰ घ्रा नी । वैष्ण वी म रो रा व रो से व क य ह मों गे ना ।

द वि घ्ना म्ब र त वा न रा ग मे रे ग रे मे सा नी । रा

ग भैरव वैताल । जै का ली क ल्या नी त्व त्र था द

नी गि रि जा य न प्रणा मा वें डी चा मे उ ग्र त्र था

र नी । ज ग ज न नी ज्वा ला म्ब खी घ्रा द ज्यो त ।

श्व ने ता दे वी श्च त्र पूर्णा घ्रा ने दी त र ण ता र नी

५

मोगावै३छ्याफलदानी॥रागभैरव चौताल॥ हे श्रे
वेग्रादभवानीजगमानीसर्वानी। सर्वकला
देविद्यावरदानी॥शिवसंगेजगदेवे ग्रहरसिं
हारनतरनतारनतौनतालसुद्धरागरेग
ग्रतरदेवानी॥सप्तस्वरतीनग्राम३कीसह्
र्छनाउनंचासकोटताननतिनकेघोरेजीयमे

ग०स०

ष्णामाउविकरनीस्वविहरनी।कामदूकाम

त्ताकामदायिनीकालीकल्याणीउष्टदलनी

कमलवदनीकरुणाकारुणीकाश्मीरवानी

कैलासीकालहरनी।परमेश्वरीपार्वती।

परमपुन्यपावनीजगराजदामससवर

नीमहाकालीतारननरणी।ग्रष्णमाणपातिवेद

6

५

जोगनीजयरत्नाकरनीविंयवासनीललि
ताबह्नवरामवानीभ्रमरदलनीमहिषा
सुरमारनी। हिमगिरिहिंगलाजरानी
काधूमीरीशारदाकामरूकमलावलजा
वैष्णूभक्तसुखकारिणी। गणभैरववैताल
सर्वाणिसर्वकलाप्राक्रिशारदासरस्वती

रा॰स॰ कोनितशेष। तोनसैनकेउभत्तम हौंकोथ्या

वैश्रविघनरूपविनायकरूपमरूपश्रदे

श। रागभैरवचौताल। एजोरेगणेशकोगुणी

रिद्धसिद्धकेदाताविघनहरनरूनी।

जिनध्यायोतिनपायोमनइछाभनी। व

कहकेश्रभकोध्यावतहरनरमति। राग

ना। राग भैरव चौताल॥ लेबोदर गजआनन।

गिरिजासुत गणेश। एकरदन प्रसन्न

वदन सुकण भेष। नरनारी गुणी गेयथ वै

किन्नर यत नेब हमि लि ब्रला बिस्र आर

तएज वत महेश। अष सिद्ध नव निद्ध मू

षक वाहन विद्यापति नो हि सिमरत तिन

रा०स

णी गेय वै पे ड़ि न । रागभैरव चौताल । ए राग एरा

जा म हा रा जा रा जा न न जे वि घा ज ग दी श ।

स म स र मो गा उं व जा उं स व रा ग रा गि नी

पु त्र व धू न स हि त छ ती स । बा र स स्व र न इ

8

क्की स स्र्छ ना उ नै चा स को ट ता न ग्रा वै ज

ग दी म । तो न मै न को दी जे छ रा ग छ ती स ।

भैरव चौताल। तुम महागणपत देव बुधदाता

सीस धरै गजमुंड। जे ई जे ई ध्यावै ते ई ते

ई फल पावै चंदन लेप किए भजदंड। सि

द्धेश्वर नाम तुमारो कहियत जे विद्याधर

सीन लोक मध सप्तदीप नवखंड। नौ न मै

न तुम को नित सुमिरत सुरनर मुनि गा।

प प म म ग रे स रे ग रे स स ग प म ग रे स

रा० स० नि ज ग त ज न नी शा र दा से त न म न मा नी

७२

म म प नि स रे स नि नि प प म ग

इत्यामोग ॥ ता न सैं न मो गे ता न स्व र श्रु त व

ग म प नि स नि प प म ग रे ग प म ग रे स

रा ग रें ग सें ग त सौं गा वैं इ च्छा फ ल दा नी ॥

प प प म प म ग रे रे ग

राग भैरव चौताल ॥ जै शा र दा भ वा नी भा र

प म ग रे स स स रे स रे स ग प म ग रे ग म प म ग रे स

ती वि द्या दा नि म हा वा क वा नी तो हे ध्या वैं

रे सै सै ध

राग भैरव चौताल सरस्वतिस्तुती ॥ स्व र स्व ति

रे सै नि सै ग रे सै ग प म ग रे सै

श्र स न्न हो प मो को वा क वा नी ॥ इत्यस्थाई ॥

म ध नि सै सै सै रे सै नि ध प ध

स्व र ज ति स व गे या र म य म पे च म ये

प म ध नि नि ध प म म ग रे ग प म ग रे सै

व त नि घा द गु र स्त स्व श्रा व त तां न मा ति

म प ध नि नि ध प ध नि सै रे सै नि ध नि

इत्यंतरा ॥ रू प की नि या नी द या नि वि द्या दा

रा॰ स॰
७२

सं सं रे सं सं नि प म ग म ग रे

री झ त का हो लो ब खा नौं स म स्व र ती न

ग म प नि प प म ग प म ग रे सं

ग्रा म रा ग रे ग लै ग्र त र ग्रा वें ॥ राग भैरव

रे सं नि प रे सं नि प म

चौताल। ध्रुपद ॥ स र वा णी स र व क ला श

प नि सं सं रे ग म प प प म ग रे सं रे ग

की प्रा र दा स र स्व ति प्रा मा ड ख ह र णी

म ग रे सं म प सं नि सं रे

स्त्र ख क र णी ॥ इत्यस्थाई ॥ का म रू क म ना।

इत्यस्थाई ॥ सु र न र स नि मा नी नो ही कोवि

भ व न जा नी जो जा की म न इ छा सो ई सो ई

पु जा वें ॥ इत्यंतरः ॥ मे ग ला बु ध दा नी ज्ञा

न की नि या नी बी णा पु स क या र णी प्र

थ म तो ही गा वें ॥ इत्याभोग ॥ ता न सै न ते

नि ध पं म म ग रे सं

रा॰स॰ कालीनरनतारनी॥ राग भैरव चौताल॥ ध्रु

७३

ग रे सं नि ध नि रि सं नि सं नि ध सं

पद॥ जै कालीकल्यानिखप्रथारनी गि॰

रे ग म ग रे रे ग म ग रे सं नि रे

रि जा च न प्रपा मा वे डि वा मे डा क्ष ग्र थो र

३

सं म ध नि सं सं नि सं

नी॥ इतिप्रसपाई॥ जगजननीज्वालामुखि

ध नि सं नि ध पं म ग म ग रे सं ग म ध

श्रा द जो न अ ने ता दे वी अ न्न पू र्णा श्रा ने दी॰

नि ध प प म म ध नि सं नि ध प म ग रे सं

का म दा य नी का ली क ल्या नी ऽ ष्ट द ल नी ।।

ग म नि ध नि सं नि ध

इत्यंतरा ।। क म ल व द नी क र ण का र नी ।

सं नि ध प म ग रि ग म प म ग रे सं

का श मी र रा नी कै ला सि का ल ह र नी ।।

म ध नि सं सं रे सं नि ध प म

ग्र था

इत्याभोगः ।। प र मे श्व री पा र्व ति प र म पु न्या

ग रे सं म ध नि सं नि सं रे सं नि नि. ध

पा व नी जु ग रा ज दा स प्र णा मा ब र नी म हो

रा॰ स॰
७४

मा पा नि सं नि पा पमा ग रे सं

ज्यू भ ग त स व क र णी ॥ राग भैरव चौताल

नि सं पा नि सं ग रे सं नि पा नि सं रे

ध्रुवपद ॥ म हा वा क वा दि नी स न स व ह

सं नि सं रे सं सं मा पा नि नि

जें [illegible] ग्र ब हू जे हों ॥ इतिअंतरा ॥ जा ही तें त्रि

सं सं नि सं नि पा निसं सं रे सं नि पा पं मा

भ व न मा नी जा तें हू भ वा नी जो जा के म

मा रे सं ग मा पा पमा ग रेसं

न इ च्छा सो ई सो ई ए जें हो ॥ इतिसंचायी ॥

नि स नि ध प म ग रे स ग म ध प ध नि स नि

न र ण ना र णी ॥ इत्येनरः ॥ यो ग नी जय र त्या

ध प म ग म ग रे स ग रे स नि ध रे स रे स

करणी बिं द वा स नी ल ल ना बो द्रु च रा म वा

नि स स रे ग म ग रे स ग रे स नि ध नि रे स

नी भ्र म र द ल नी म हि षा सु र मा र नी ॥

म ध नि स स ध नि स

इत्याभोगः ॥ हि म गि री हिं ग ला ज रा नी का

नि ध प म ग म ग रे स स स नि स ग

षा मी र षा र दा का म रू क म ला न ल जा बै

रा० स० ७५

गमानीसर्वागीसर्वकलादेविद्यावरदानी । शिवसेगोज

गदेवेग्रस्वरसिंगारनतरननतानननानतालप्रबंदरागरे

गग्रतवदेवानी । सप्तस्वरतीनग्रामइकईसमूर्छना

उनंचासकोटतानतिनकेव्योरेजियामेग्रानी । वैजू

बावरोगावरीमेवकयहमांगेनादविद्यामृतवानरा

गमेरैसमानी ॥ राग भैरव ध्रुवपद चौताल । गंगाजी

म प नि सं सं नि प पं म ग रे सं ग म पं म प

रि द्ध सि द्ध न व हीं पा ई प मा त ज व त्रे ग्र व

पं म ग सं ग रे ग म ग रे

रा ण्ह जे हो ॥ इत्याभोगः ॥ ता न सै न या ग्र।

सं नि सं म प नि सं सं रे सं नि

सां द [illegible] मा ग त ज हो न हो ज्ञ र त फ र ता।

प पं म ग म ग ग रे सं ग म नि प नि प पं ग रे सं

न हो न हो रे ग रे ग की क र त ज य हो ॥ रा ग

भैरव चारताल ॥ ध्रुपद ॥ हे ग्रे बे ग्रा दि म वा नी ज

रा॰स॰
७६
76

नामथनारकागंगाप्रुतरीकालिंदीइहविधउरैवनापकी
नीत्रिवीनी। छुटीपोतकेटदीपकमावकीजोतहोततामे
गुप्तप्रघटमरस्वतिमिलीएननैयनी। संदरहूपप्रनूपमशो
भात्रिभुवनपापतापहरनीकरनसुचैनी। तानमैनकोंकरो॰
निरमलनंदनाभक्तजननकीवैकुंठकीनसैनी॥ इतिश्री
भोगा॥ रागभैरव गंगाजीकाल्हनी॥ ज्ञानसमे॰

कीबेदना। जैगंगाजगतारणीजगजननीपापहरनीबेदवर
नीबैकुंठनशानी। भागीरथीविस्नपदापविचत्रिपथगाजा
ह्नवीजगपावनीजगजानी। सीसमयविराजितत्र्यलोकपा
पावनकियेजीवजंतवगमृगखगनरमुनिमानी। तानसै
नप्रभुतेरीअस्तुतकरैतेदातासभक्तजननकीमनकीवरदा-
नी॥ रागभैरव ध्रुवपद चौताल। चंद्रवदनीमृगनैयनी

गा॰म॰ नानीनलोककीहैंहीमानाकीटपतंगादिकनरपापी

ममकौंनमनेनाराहे ॥ रागभैरव गंगामहिमा ॥

पतितजननारोमातगंगेपापविनाशननापउधार

नकरुणाकरनिस्तारे ॥ मोहनदीवहिभवसागरमें

पवनचलतमधुधारे ॥ नारणनरननहिंवरदा॰

नानईपापारउनारें ॥ ॥

अस्नानकरनहूंगंगाजुकीधाराहे ॥ निर्मलवचनसुनो
हेप्राणीपापकटनकोंआराहे ॥ अंमृतजलकोपानक
करोअरुध्यानधरोगंगाधरकोंनितउनचरननमोंचि
तलावोयाहीमेंनिस्ताराहे ॥ सीसनिवासकरोहोविन
तिपनगावोतुमशरणागतकोअधमउधारनजगानि।
स्तारनमहिमअपरंपाराहे ॥ जिसमाननाहीकोईदा

रा०स०

७८

78

म ग रे स नि ध प म प ध नि

जा व त म हे श ॥ इति अंतरा ॥ अथ सि द्ध न व

ध प म ध नि स स रे स नि ध प म ग

नि ध म ष क वा ह न वि द्या प ति नो ही सि म।

रे स रे ग म स नि ध प म म

र त ति न को नि त शो भे ॥ इत्याभोगः ॥ ता न

ध स स ध नि स स रे स नि ध प

मैं न के अ भ त म हू को या मैं अ वि द्य हू प

म ग रे स रे ग नि ध प

वि ना य क हू पं अ दे श ॥ राग भैरव चौताल

स हू प

म ऽ प
राग भैरव चौताल ॥ गणेश ध्रुवपद ॥ ले बो द

प ध नि ध प म ग रे ग म प म ग रे स नि स
र गं जा न न गि रि जा सु न ग णे श ए क

स रे ग म ग रे स स नि ध प
र द न सु स त्र व द न श्र ह णा भे षा ॥ इति

म ध नि स स ध नि स
अस्थायी ॥ न र ना री गु नी ग य र्व कि न्न र

नि ध प म ग रे स रे ग म प म ग प
य त ते ब ह मि ली ब ला वि सु आ र ती सु

रा॰स॰ न देव बु य दा ना श्री स य रै ग ज सैं ड ॥ इति श्र

७५

स्यायी ॥ जै इ जै इ ध्यावै तै इ तै इ फ ल पा वै वै

79.

द न ले प कि ए भु ज दै ड ॥ इति श्रेतवा ॥ सिद्दे

स्व रो ना म न उ म हा रो क हि य न जे वि स्वा य

र ती न लो क म य स म दी प न व वै ड ॥ इ

ए जो रे ग णे श को गु णी ॥ वि ङ सि ङ के दा वि

य न ह र न हू नी ॥ इति प्रस्थायी ॥ जि न या

यो ति न पा यो म न इ छा भ नी ॥ इत्याभोगः

व क स्र के श्र भ्र को या व त म्र र न र म्र नीः

राग भैरव चौताल। ध्रुवपद ॥ त्रम हो ग णा प

म ग रे ग प म ग रे स

रा॰म॰ गा नी प्र त्र ब ध्न म हि त छ ती प्र ॥ इत्येतरः

८॰

४०

म प ध नि स ध नि स नि ध प म ग

बा ई स स्व र त इ क्री स मू र्छ ना उ ने चा सः

रे स रे ग प म ग रे स

को ट ता न प्रा वै ज ग दी प्र ॥ इत्याभोगः ॥

म ध नि स नि स स रे स नि ध प म ग

ता न सै न को दी जे छ रा ग छ ती स रा ग

रे ग प म ग रे स

ग्गी ता ल ल य से गी त ॥ रागभैरव चौताला।

न्याभोगः॥ ता न मै न तुमको नि त सु मिर न

सु र न र सुनि गु णी गे य र्व पं डि त ॥ राग

भैरव चौताल। ध्रुवपद॥ हे ग ण रा जा म हा रा

जा ग जा न न जे वि घ्रा ज ग दी श॥ इति अस्था

यी॥ स म स्व र सों गा ऊं ब जा ऊं म ब रा ग रा।

ग.म.
८१
81

गणपतिजन्म ॥ उमयाअंगउबटनतेंप्रगटेंश्रीगणरा
जविराजे ॥ उमास्नानमेंगमजीसुंदरीद्वारराखनकेका
जें ॥ स्नानकरनकेंजानमहलमेंकोमतआवें ॥ द्वारे।
रोकजनेतेडेमोकेंकहिकहिकेआवनपावें ॥ ८ ॥

ध्रुवपद। अथ अस्थायी। मायो विद्याधर गुणनिधान गुणदा
ता सरस्वति माताकों कर आदेश। अथ अंतरा। नमो नमो
विद्धसिद्धके स्वामि सकल विद्या प्रवेश। अथ आभोग।
जो इनको ध्यावै मन इच्छा फल पावै दूर होत ननतें कलेश
तान सैन अमृत महीको ध्यावै ब्रह्मा विष्णु महेश॥ इति
आभोग॥ राग भैरव चौताल ध्रुपद।

प म म ग ग रे ग म म ग रे स स म प

रा॰स॰ ल ल ना क म ल न य न क रु ना सा गा र जै जै का

८२

प म म ध ध नि नि स स स नि रे रे ग स नि ध स

र स भ स्व र न र म्व नि न म त प्र ज स्व र ई द श्री

ग म म म म ग ग म ग रे स स नि ध म

ध र श्री क र श्री व र ल क्ष्मी प ति ना रा य णा।

स म नि ध नि ध नि स रे स नि प

न रो त्त म वि स: त्रि लो क प ति श्रा ऽऽऽऽ जै ॥

नि ध नि स रे रे स नि

राग भैरव ध्रुवपद चौताल ॥ मे रे म न न र न र ह

ग ग म पै

विस्नुजीका ध्रुवपद राग भैरव चौताल । च न्द्र भः

नि ध पै पै ग रे ग म पै रे सै सै रे ग सै नि नि ध सै ग

जा शे ख च क्र ग दा प द म क री ट म कु ट सीस

म ग रे म म ग सै म नि ध सै

कौ स्तु भ म णि मा ऽऽऽऽ जे इतिश्रवणायी ल क्ष्मी से

नि सै रे रे रे सै नि ध पै म म पै पै म

ग सो हैं पी त व स न ग रु ड वा ह न जै जै विः

नि ध नि सै ध नि रे नि पै ध पै ध

ष्ण स हू प शो भा रा ऽऽऽऽ जे इतिअंतरा उ र मेग

गा॰स॰

८३

म प नि ध प ध प म म नि ध नि सं नि

हे री पल छिन न बिसारे तान सैन निर्मल म

रे रे ८ सं नि ध म ग रे ग म ग रे सं

जिये भगवान मानुष जन्म न ही बार बार

इति श्री भोग:॥ राग भैरव तिताला श्री कृष्ण वाक्यम॰

सं सं सं सं सं नि सं सं ग रे सं नि ध नि सं ग सं ग ग म

हम भक्तन के भक्त हमारे कारज तिने सा।

ग ग म म प म म प ध नि सं सं

भा रो। इति स्थायी। सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी

ध म ध नि सं सं ग म ग रे म पं

दि ना म जि न र च्यो ब्र वि ल था म का म क्रो ध

म ध पं म म ग रे ग पं ग ग रे सं

त ज लो भ व हो जा त में सा र इतिअस्थायी ॥

म नि ध नि सं नि सं सं रे सं नि ध प पं

जि न र च्यो स्व र्ग म र्त्य औ र पा ता ल नि रं ज न

म म म ध म म पं ग रे सं

सो ई सा का र नि स दि न ज प मु रा र इत्यंतरा

ध पं म ग रे ग म ग रे सं सं सं

दी न बे पु दी ना थ का ट न उः ख दे द फं द ता

रा. स. न बै री मै रो रे जी ते भ क्त जी त प्र न प्रा प नी हा

८४

रे हा र वि चा रें। जो मो हे भ क्त वि सा र त ज ग

मैं नि श्चि य म नो वि सा रो रे सू र दा स प्र भु भ

क्त वि रो धी च क्र सु द र्श न मा रें ॥ राग भैरव

ध्रुवपद चौताल। मोहनस्वरूपकेआधारतनकोंप्रबाध

या ब त ट र त न टा रे भ क्त स त्वा नि ज जो नो त्व

म कों र य हो क त हों नि हा रे। इति श्रेनता। भक्त

न हे त ला जे जी या य र के पा उ पि श्रा दे यो।

वो जो ह जो ह भी र व नै भ क्त न कों ना ही ता ही

उ ठ जा वो। जो म म भ क्त न वै र क र त है सो ज

रा॰म॰ ८५ 85

भुवणद चौताल। विस्नुचरणजलब्रह्मलोकेकमंडलमेंशि

वजटाराजतदेवीगंगे। इतिप्रस्थायी। भागीरथीजह्नुसु

कलजगतारनीसूभमभारउतारनतरंगे। इतिअंतरा।

हरिद्वारप्रयागसागरवेनीत्रिवेनीसरस्वतिविद्यादेनी॰

करनउरावमेंगे। धीरजकेप्रभुत्वमरोगदोषदूरकरोपा

पहरोनिरमलकरोयहसंगे। इत्याभोगा॥ ॥

लीजिएगोपाल। इतिश्रुस्यायी। नैनश्रानसघदीजेंतनः

तें उवेइतनीविनतीमेरीसुनलीजिएहाल। इतिश्रेनरा।

पतितपावनकरुणासिंधुदीनउवेभंजनअनेकहूपली

लाथारीभक्तवछलजगजगभएक्तपाल। मदनमो

हनमधुसूदनमुरारगजसुदामाद्रोपतिसहायकरेता

नमैनसभभक्तपरिपाल। इतिश्रामोगा॥ रागभैरव।

रा॰ स॰ हे वागेवर वास। हर हर करत हरे पाप मिटे सकल उ:

त्रिसंताप लेहे मन हुलास। तान सेन सेवा ध्यावत म

न इछा फल पावे होवे कैलास निवास॥ इतिरागभैरवः

राग भैरव ध्रुवपद ताल चार॥ चंद्र भाल सीस गंग गौ

रि अरधंग ललाट भसम मुंड माल कर पिनाक रईया

शिवजीकीस्तुत । रागभैरव ध्रुवपद । चौताल । हो ॐका

र महादेव शंकर तुम सकल कला पूरण करत ग्रा

म ॥ इतिस्थायी ॥ नि पट य ही धरत ध्यान सिमरन

करमन मीन देखत दरसन गयो त्रास ॥ इत्यंतरा

हरिडरखडेदसोहत जटा गंगा गल रुडमाला सो

रा.स.

८१

87

म ध नि सं सं सं नि ध नि सं सं नि ध

इत्यस्थायी। महादेव महो जनि श्रम नाम न श्र ई या त्रिलो

प म ग रे ग प म ग रे सं ग म ध प

चन नीलकंठ ऊगा त्रिपुर ई या। इत्यंतरा। शोकरणे

ध नि नि सं नि ध ध प प म ग ग रे सं ग ग म

मूत्रिपुरारी डिम डिम डमरु बजैया। नाचत तो

ग रे सं नि ध नि नि सं सं रे सं म ध नि सं

उव कईलास पतरी फत विस्मर कैया। बैजू नाय

सं रे सं नि ध प म ग रे सं

कमे गीत निरंतन देव पतिर ई या॥ इत्याभोगः॥

रा०स०

श्रीरामसत्तेः राग भैरव। चौताल। सूरज वंश न

मो गुरु इष्ट हमारे दशरथ सुत राजा राम

जानकी नाथ नाथ त्रिभुवन के मोहन सुंदर

स्याम। लछमण भरत शत्रुगुन हनुमान ज

नकसुता के पूरन काम। धीरज के धस्व ध्र०

त ही वत्र र हो प्रगटे प्रयोध्या याम। राम।

ग॰म॰ पतेश्वरत्नपालखिरगसेनशिवकृपालड्ड

जीपमहायश्वप्रजाऽऽऽऽम।गगभैरवचौतार

पवेमीनादह्नरनमोयकेबजाईश्ववीन॰

कोन्हमभस्वरतोनमधुरेधुनि।श्रवणसह

ननकल्लुह्नयनरहीश्रालीभिनकपरिमे

रेकानहुनि।ननमनरोमरोमव्याकुलभ

राग भैरव चौताल। गौरीशंकर राया कृष्ण को

ना ऽऽऽऽम लीने सकल सिद्ध का ऽऽऽऽम। नि

शि दिन स्मरन सोवत जागत उठ प्रातक

होसी ता रा ऽऽऽऽम। मीन कच्छ पवराह नः

रसिंह वामन नृप पर सुरा ऽऽऽऽम। हरि ह

लयर बुध कल कीज शोया या ऽऽऽऽम।

रा॰स॰ सरिगम कीनो विचारी गुहन पै सीखके ऐऽऽऽऽऐ

स रे स सा रे ग सा सा रे ग म स स रे ग म पा स स

रे ग म प य सा सा रे ग म प य नि स स निनि ।

यनि यप यनि निनि यप म ग यप म ग मम

ग रे रे ग म मा । धुरपत मय मरे गाम बना

ये । सा॰

ईरी जी न लि प गे य र्व ना र द म नि गु नि । बै

जु के ब्र म न र ना री प शु पं छी मो हे श्रो र मा

हे म्ह र न र म नि । राग भैरव सरिगम तालचार

सा रे रे ग म प ध नि । मनहर मोहरे मनमें श्रेसे

ही आवत सा । इत्यस्थाई । आरोही अवरोही स

नलेहो सम कोई । नि ध प म ग रे स । ३गुण ।

रा॰स॰ रता रोहिणीपर कोमल संज्ञा हो कर ठैहरता है और नि
४ षाद चउ त्रोभनी नाम दूसरी श्रुती पर ठैहरता है।
और इसकी षड्ज कों मूर्छना है अब येह भैरव ग्रंथ
१ म दो प्रकारका है एक तो संपूर्ण जाति सो कहते है
और दूसरा ओड्व जातिका है जिस में रिषभ पंचम।
२२ वर्जित है सो शिवजी में उत्पन्न हुवा है उसको भी।
पिछली तराहके ही स्वर लगाने हैं पांच स्वर अर्थात।
षड्ज सम रहता है रिषभ उतरा लगता है गंधार

अब इस भैरव कों षड्ज आपनी चौथी छंदोवती स्वरता

पर काइम होताहै ऋषभ उतरा लगता है अपनी रंजि

नी नाम दूसरी स्वरता पर ठैहरता है अब गंधार दूसरी

क्रोधा नाम स्वरता पर चढा हो कर ठैहरता है जिस

की शुद्ध गंधार संज्ञाहै और मध्यम उतरा शुद्ध जिस

की संज्ञाहै सो अपनी मार्जनी नाम चतुर्थ स्वरता पर

ठैहरता हैं पंचम शुद्ध आलापिनी नाम चतुर्थ स्वर

ता पर ठैहरता है और धैवत उतरा अपनी दूसरी स्व

रा. स.
४२

जो ऊडव भैरव कथन कराहै सो मार्गीहै ॥ और जो संपूर्ण कहा है सो देसी प्रसिद्ध है जगत में ॥

2

चडा मध्यम उतरा पंचम सम धैवत उतरा निषादचडा

इस भैरव का मालकौंश में भेद है सो क्या भेदहै जो।

मालकौंश को गंधार वाहेसरी काहृडेका उतरा लग

ता है और निषाद भी उतरा लगता है अर ओडव भै

रवको दोनो गंधार अर निषाद येह चडे लगें गे गंधा

र रामकलीका लगें गा निषाद टोडी सुथका लगें।

गा प्रथम येह दो प्रकार भैरव के कह दिये है ॥ येह

~~इनके सरगाम कहिते है। अथ शारदा मतम। जो~~

रा॰ स॰ यासारंग देवेन भाषितं कान्हनडा स्वरैर संयु

क्ता सारंग स्वर मिश्रिता देषाखा जायते यत्र

द्वितीया प्रहराई दिने। दोहा। मध्य भूषन॰

संगहै स्वरु संपूर्ण होइ कोउ खाडव कहतहैं

ऋषभ हीन यो जोइ। अथवीररसस्वरूपम।

सवैया। गौर गंभीर गुणी चित सुंदर अति उत

सा भास्व त्रिशूल कर पञ्च नट मेड याखी पुत्रो

वो जयति भैरव आदि रागः। अथवीररसः

वीरे रसे वो जित रोम हर्षा निरुध्य मेवेय वि

लाम बाहु प्रोषु प्रचेड किल देड रागो देशा

ख राग कथितो मुनिंद्रैः। गोया रोषा ग्रहन्या

स केचित ऋषभ इति स्वना स संपूर्णा मता मे

२

रा॰स॰ देग की करन जैहो। राग भैरव। चौताल।

सरस्वति स प्रसन्न होय मोकु वाक वानी

षड्ज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत

निषाद गुरु भाव आवत तानमानी। रू

पकी नियानी दयानि विद्यादानि जगत

जननी शारदा संतन मन मानी। तोन।

1

महो वाक्य वानी मन्भाव ह्रूजैं सव ह्रूजैं
हो। जहो तैं त्रिभवन मानी यातैं तू भवा
नी जो जाके मन ईछ्या सोई सोई पुजे हो
रिद्ध सिद्ध तबहि पाई पना तजव तब व
रण ह्रूजे हो। तोन सैन यह प्रसाद मांग
त जहो तहो जुरत फुरत तहो तहो रंग।

रा॰ स॰

राग रागनी पुत्र वेधु सहित कंठ समावें । कहे बाजू बामेरे सर्व देव दया करो राग रंग।

तान ताल लय प्रकार गावें । राग भैरव । चौ॰

ने मेंबे आदि भवानी जग मानी सर्वाणि सर्व कलाढे विद्या बखानी । शिव मेरो जग देवे प्रसर सिंगार नत रन तारन तान ताल।

8

सैन मोगे ताल स्वर प्रबन्ध राग रंग संगत:

सें गावे इच्छा फल दानी। राग भैरव: चौ:

जय सरस्वति गंगा गणेश ब्रह्मा विस्न।

महेश शक्ति सूर्य सर्व देव ध्यावें। सप्त स

र तीन ग्राम इकीस मूर्छना उनेचास को

ट तान देहो आवें। उरपति रपला गडोट

रा॰स॰ ग जननी ज्वाला भवी आदि जोत अनेदा देवी ।

अन्नपूर्णा आनेंदी तरन तारिणी । व्यापिनी जग

रता करणी विंधवासिनी ललिता बङ्गरी भ

वानि असुर दलनी महिषासुर मारणी । हिम

गिरी हिंगलाजरानी काश्मीरी शारदा कामरु

कमला तुलजा वैज भक्त भाव कारणी । रारा

१

षउड राग रंग अलार दे बानी। सप्त स्वर इकीस मू
र्छना उनचेवास कोट तान तिनके थोरे जियाः
मे आनी। वैजू बावरो गावरो सेवक यह मोरो ना
द विद्या म्हरन वान राग मेरे गरे मेस मानी। रा
ग भैरव। चौताल। जै कल्याणि त्रिश्र धारिणि गि
रिजा जन प्रणामा चंडी चामुंडा छत्र धारणी। ज

रा॰स॰ नी जग राज दासस्या भवरनी महाकाली तारन

तरनी। राग भैरव। चौतार। अथ गणेश वंदना

लंबोदर गजानन गिरिजा सुत गणेश एक र

दन प्रसन्न वदन शुभ भेश। नर नारी मुनी

गंधर्व किन्नर यक्ष नेबरु मिल ब्रह्मा विस्नु।

शारद पूजवत महेश। अष्टसिद्ध नवनिद्ध॰

10

भैरव । भैतार । सर्वाणि सर्व कला शक्ति शार
दा सरस्वति प्रणामा सुंदरी दुखहरणी सुखक
रणी । कामरू कमला कामदायनी काली क
ल्याणि दुष्ट दलनी । कमल वदनी करणका
रिनी काश्मीर रानी कैलासी [illegible] काल
हरनी । परमेश्वरी पारवती परम प्राण पाव

ग॰स॰ प्रभुकों ध्यावत सुर नर मुनी। राग भैरव। चौताल

तुम हो गणपत देव बुद्धी दाता शीस धरे गज॰

मुंड। जैई जैई ध्यावै तैई तैई फल पावैं चंदन ले

प किए भुज दंड। सिद्धि प्रवर नाम तुमारो कहिय

तजे विद्याधर तीन लोक मध सप्तदीप नवखंड

तान सैन निति तुमकों सुमिरत सुर नर मुनि॥

मूषक वाहन विद्या पति तोहि सुमिरत तिनकों।
नित शेष। नान सैन के उभ नमही कों ध्यावे।
अविघ्न रूप विनायक रूप सदृ आदेश। रात भेर
व। चौतार। गणपति बेदना। एजो रे गणेश कों
गुनि। रिद्ध सिद्ध के दाता विघ्न हरण हूनी। जि
न ध्यायो तिन पायो कीरतजा सुनि। बक सूके

रा०म० रव । चौताल । ए राग राजा महाराजा गजाननजे
विद्या जग दीस । समसवर सो गाऊं बजाऊं सभ
राग रागिणी पुत्र वेधुन सहित छतीस । बाईस
स्रुति इकीस मूर्छना उनेचास कोट तान ग्रावे
जगदेश । तोन मैन कौं दीजे छे राग छतीस रा
गिणी ताल लय संगीत मगमो होय कंठ प्रवेश

नी गंधर्व पंडित । राग भैरव। चौताल। साधो वि

द्या वर गुण नियान गुणदाता सरस्वति माताको

कर आदेश। नमो नमो रिद्ध सिद्ध के स्वामि स

कल विद्या प्रवेश। जो इनको ध्यावै मन इच्छा

फलपावै दूर होत तन तें कलेश। तान सेन प्र

भु तमही को ध्यावै ब्रह्मा विस्नु महेश। राग भै

रा॰स॰ प्रभु तेरी प्रस्तुत करैं हे दाता भक्त जननकी भक्ती
की वर दानी। अथ सूर्य वंदना। राग भैरव चौता॰
जै सूर्य जगराज वहू जग वंदन जगत्राता जगत
तारन जगन्नाथ। आदित्य सविता अरक खग पूषा
गभस्ती भान भान दिवाकर जग कारज होए तेरे॰
हाथ। ज्ञान ध्यान जप तप तीरथ व्रत संजम।

गंगा भैरव। चौतार। गंगा जीकी वंदना। जै गंगा

जगतारणी जग जननी पाप हरनी वेद वरनी।

वैकुंठ नशानी। भागी रथी विस्नु पदा पवित्रा।

त्रिपथगा जाह्नवी जग पावनी जग जानी। सी

स मथ विराजत त्रईलोक पावन किये जीव जं

त खग म्रग सुर नर मुनि मानी। तान सैन।

रा॰स॰ के तारन तरंगे। हरि द्वार प्रयाग सागर वेनी त्रि

वेनी सरस्वति विद्यादेनी करत उध्व भंगे। धीरज

के प्रभ तमरोग दोष दूर करो निर्मल करो यह

अंगे। राग भैरव चौताल। प्रभाकर भासकर दिन

कर दिवाकर भानु प्रघटे विहान। तेरे उदैतें

ताप पाप छूटे धर्म कर्म प्रेम नेम होय गुरु ज्ञान

नेम धर्म कर्म सभ उदै होय स नाथ्य । तोन सैन

यें प्रभु किरपा कीजिए राग रंग स्वरन सों निशि

दिन गांऊं तेरो गाय । राग भैरव । चौताल । वि

स्नु चरण जल ब्रह्मा के कमंडल में शिव जटा रा

जत देवी गंगे । भागीरथी जू सकल जग तार

नी भूम भार उतारनी ब्रनयन बेली कटाछन

रा०स० केट दीपक सबकी जोत होत जामे रास प्रघट स
रस्वति मिलीए नैयनी । सुंदर रूप अनूप सशो
भा त्रिभवन पाप नाप हरनी करत सब चैनी ।
तोन सैन कौं कीं निर्मल है दाता भक्त जननकी
वैकुंठ कीन सैनी । राग भैरव । चौतार । प्यारे ब
हिं ब्रह्म तेहि विस्न तेही महादेव तेही शिवषा

15

ओर ध्यान । जग मगात जगत पर जग वंद्य ।
जोति रूप कश्यप सुत जग के प्रान । तीन मैन
के प्रभु उदै जगत कपाट खुलत दीजिए विद्या
कृपा निधान । राग भैरव । चौताल । वेद वदति
स्रग नैय नीना मय नारका गंग सुतरी कालिंदी
रहू विय औरें बनायकीनी त्रिवेनी । कुटी पोत

रा॰स॰ के पद बरणने । राग भैरव चौतार । प्रथम उठ भै

रही राधे कृस्न कहो मनयासो होवे सब सिद्ध का

ज । यहलोक परलोक के स्वामी ध्यान धरो ब्रज

राज । पतित उधारन जन प्रतिपालन दीन दयाल

नाम लेत जाए उठ भाज । तानसैन प्रभु कों स

मरो प्रातही जग में रहे तेरी लाज । राग भैरव ।

16

कि नहिं सूर्य नहि गणेश। जलथल पवन पानी
नहिं तेज नहिं प्रकाश नहिं अग्नि नहिं ज्योती न
हिं महेश। नहीं ऊच उही नीच नहिंहे सभहि नमे
नीच नहि चंद नहिं दिनेश। नहिं एक नहि अ
नेक गुरुचेला नहिं अलेख बैज्नबामरो नहीं सद्गु
रदास नहीं नेकट नक लेश। अथ भगवानजू।

रा॰स॰ ग रे सं नि य म ग रे नि सं ॥ इत्यो:
१७

नर: ॥ इति मार्गे भैरव संपूर्णा मरगम वर्णनम्

17

रा॰म॰
२

गोधा। गेशा। ग्रहं। न्यासे। गोधाधा। दिक। मूर्छना। मेहुर्गि।

भैरवें। गेये। प्रत्यूषे। हनु। मन्मतम॥ इति। हनुमान्म॰

तेन॥ दोहा॥ ग्रेशा। न्यास। गंधार। सुर। तिस। कोहि। य

ह। जान। प्रातहि। भैरव। गाइये। आप। कहत। हनुमा॰

स्वयभरतम तेन
श्लोक

न॥ दैवतांशा। ग्रह। न्यासे। धैवता। दिक। मूर्छना॥

इतिशारदामतेन । रिषभांश । ग्रह । न्यासे । रिषभा

शंकरं मतम्

दिक । मूर्छना । मेघरागे । भैरवे । ज्ञातः । गीयते । मता ॥

शंकरः । इतिशिवमतेन ॥ दोहा ॥ अंश । न्यास । ग्रह ।

तीनो । सुरब । रिषभ । सुर । जान । शिव मत । भैरो । ग्रा

तहि । गावत । गुणी । सुजान ॥ इतिशिवमतेन ॥ ॥ ॥

रा॰ स॰
३

मत। अनुसार। निषाद। न्यासले। ग्रंश। ग्रह। वामे। कियो॥ उचार॥। इति कम्म मतेन॥। टोडी। गौरी। रामकली॥ इनमा। निषादे। एकत्र। होने। करके। भैरो। राग। होताहै॥ ग्रीष्मऋतु। वीर। रस। दलनायक। प्रातःकाल। विसु देवता। आद्याशक्तिः। अग्नितत्वं। ह्रीं बीजं। शिवऋषि॥

१

कथ्यते भार तंमतम्

निशांते भैरवं गेयं भरत मतेन कथ्यते ॥ दोहा ॥ न्या

अंशन्यासग्रह याहिको धैवतस्वरपहिचान संपूरणभैरव भने भरतमतेन अनुमान ॥ १८

स । अंश । ग्रह । धैवत । स्वर । जानो । संपूर्ण । भैरव । भरत ।

अथहनुमतेन

विधानो ॥ इति भरतमतेन । निषादांश । ग्रह । न्यासे ।

द्वि

निषादा । धिक । मूर्छना । प्रातश्च । भैरवं । गेयं । क्रम ।

स्यामत

वेद । मते । नव ॥ दोहा ॥ प्रात । हि । भैरव । गाइये । काली

रा॰स॰
५

इति ध्यानम्॥ अथ वीररस स्वरूपम्॥ सवैया॥ धीर । गंभीर । गुणी । चित । सुंदर । अति । उत । साहस । भरे । दो । नैना । हूलको । देष । उलीव । सु । रस । वीर । को । थार । क । रै । दौ । बैना । [illegible] मेर । कुबेर । सबी [illegible] हमरे । अक वीर सु । धीर । भरी । सब । सैना ॥ जाइ । कहो । पति । सो । अपने । नृप

५

ॐ भं भं ऐं ह्रां स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ ॐ भं इत्यावाहनम् ॥

ॐ भं भैरवेनमः ॥ इत्यासनम् ॥ अथ ध्यानम् ॥ गंगा ॥

धरा । शिशकला । तिलक । स्त्रिनेत्रः सर्पै । विंभूषित

तनुः गज । कृति । वासा । भास्व । त्रिशूल । कर । पष । न्द्रमे

उ यारी । प्रभ्रो । वरो । जयति । भैरव । आदि । रागः ॥ ॥

रा॰स॰
५

रवपागविराजनभूधर॥ अथ विनियोगः॥ ॐ मेरु

ति मंत्रस्य विस्वश्रषिः पंक्ति छंदः आद्याशक्तिः अभि

स्वाभीष्टार्थसिद्धर्थं

लावे ह्रीं बीजे आनमम जपे विनियोगः॥ अथ जप

मेव्या ममलतम। युगाप्रभावेन। धूप दीप नैवेद्य

गुग्गुल घृत दीप कर्पूर श्वेतपुष्प मेरुणि मानस्वर॥

५

जापही बैठ करो नम चैना ॥ नमष्यानम ॥ सीस ज

टानि मैं गंग तरंग त्रिलोचन चंद ललाट हि ऊपर

लाल विशाल फ नी सिरकी मनि जोत लसै कछु

कुंडल ऊपर रूपक एकर शूल लिए हरि वल्लभ

नादे वजे डमरू पर भूषन नागन के तन मै थर भे

रा॰स॰
६

नामापर होनाहै अर ऋषभ आद भैरव मेपूर्ण है

ध नि नि सा ग म ग रि ग

तस्य अलाप ॥ ननरी इना आनन उन न उआ

म प ध प म ग ध ग म ग

6

नान अद ननरी नने नानरी नना उननना आन

रि ग म ग रि सा म ध नि सा रि सा

रा ननन रनु नानोम ॥ ननन अदनने आननन नुम

इति स्थाई।

नि ध प म ग रि ग म ग रि सा

नानुनै नना नननरी नना आन नान ननुम नन्नु

इत्यन्तर:

६

धैवत। रिषभ। कोमल। जिस को। उतरा। कहते है। अर्था

त। ऋषभ। अपने। दूसरी श्रुती। रंजनी। नामापर। कोम-

ल होता है कोमल धैवत। सो है। जिसको। उतरा। कहते

षड्ज तीव्रतर भी हैं। और। तीबर। कहते है। पंचम। स्वर। तीव्रतर तीबर। उसको।

कोमल। धैवत। कहते हैं॥ अब। वो है। दूसरे। श्रुति। रोहिणी

गा॰ म॰
७

सा नि ध नि सा ग म प नि ध प

नानननरी। ननीरीन। नानान। नम। नम। नितना। ग्रान

म प पम ग रि ग म नि ध नि सा नि सा

नरी। ननननरीना। ग्रानरी। नना। नना। नते। नननना।

रि सा ग म प प म ग

नना। ग्रानरी। ननन। नान। निननरी। नान। ननन।

रि सा रि सा रि ग म ग रि सा

नना। नना। नन। दर। ननन। नाननार। नदीन। नानु

रि सा सा रि ग रि म ग रि सा रि

म। नाने। नरी। ग्रानारी। नरननि। नने। निनारन। रीन।

रि

७

नरीन। तानुरी। रनानना। ज्ञान। नान। ज्ञान। नान। रान

ननुम॥ नननननना। ज्ञानन। तानु। तननरीन। ताना

ननन। तान। ननु। तननु। ननाना। ज्ञाननरी। नन।

ज्ञानन। तानन। ननु। नरी। नना। ज्ञान। तान। नन।

ननना। रना। ज्ञान। ताननरी। तानी। ज्ञानननना।॥

रा॰ म॰
८

प नि सा रि ग ग रि ग म
आदन । उदन । ननरीन । ननुंन्ह । नन । नौं । ननौं । नरी । र
ग सा सा
नान । नोम । नोम ॥ इति भैरव रागस्य प्रलापः ॥

8

सा नि सा नि ध नि सा सा ग म

ग रे सा नि सा ग म नि ध प म

म ग रे ग म ग रे सा सा ध

म

इति स्था॰

९

२सा रि ग म ग रि २सा २प ध

तानं। तनानु। आनुम्। अदन। तनरी। अद। तननन।

नि ध २प म ग म ग रि २सा नि ध

रीनन। आनोम्। तनं। तम्। अरीते। तना। नरी। रना।

नि २सा २सा रि ग म ग रि ग म ग

नतौ। ननौम्। उद। नतौम। आनन। तानरी। नर।

रि ग म २प ध २प ग म ग

रना। नरी। ननन। इउद। तन। आद। तनरी। रर।

रि २सा २सा रि ग म ग रि २सा नि

नरानतम्। ननन। तम्। तर। नन। तनरी। नत। नन।

गा॰ सा॰ गा रे सा गा म नी ये पै म म

गा रे गा म गा रे गा रे सा सा रे

नी ये पै म गा रे रे नि सा नि ये

नि सा ।२॥ इति शिव मन्त्रेन सरगमः ॥

तीनताल २

गा म गा रे सा नि सा म म पै नि

५



नी सा रे ग म ग नी ध प म ग

म ग म ध नी सा नी ध प म

ग रे ग म ग रे सा ॥ इति शारदा

मतेन ॥ अनुसार ॥ अथ भैरव राग स्वर मरगामः तीन ताल

रे नि सा नि ध नी सा २ सा ग म

गा॰ स॰
१०

10

म ग रे ग रे सा रे नी सा नी ध

नी सा ग म ध नी सा नी ध

प ध नी ध प नी ध प म

ग म ध नी सा नी ध प म

ग म रे ग रे सा रे नि सा नि

सा स्था.



पं पं पं मं पं मं गं मं पं नीं सां

गं रें नीं पं नीं पं पं मं पं मं

गं मं गं रें सां नि सां मं गं

मं गं रें सां ।३॥ इति हनुमान्मतेन मरगमः॥ पं नि सां गं मं नीं पं पं।

गा॰ स॰ ॥

ध नि सै नि सै नि रे सै रे नि

सै सै सै म ध नि सै नि गा

रे सै नि सै ग म रे सै। ध।

ताल ४

इति क्रमपाठेन सप्तमः॥ सै नि सा नि

ध नि सा ग ग म म रे सा नि ॥

२ २ २
ध नी सा। ध। इति भरत मतेन सरगमः॥

२ २ १ २ २ २ १ २ २
नि सा नि रे सा रे नि सा नि।

२ २१ २ २ २ २ २ २ २
ध नी सा नी सा ग म ध प

२१ २ २ २ २१ २ २ २
म प ध म ग ग म ग॥

१२ २ २ २ २१ २ २ २ २१ २
रे रे ग म प ग म ग ग म

रा॰स॰
१२

गा मा रे गा मा रे गा मा गा मा पै

नि सां रे नि ध पै मा गा मा

नी ध पै मा गा रे सां ॥ इत्यंतरः ॥

अथ संगीत दर्पण सरगमः ॥ ध नि सै नि

रे सै ध नि सै ध पै मा मा ।

सा ग ग म नी प पै म ग म रे

ग म ग रे सा ॥ इतिस्थाई ॥ ग ग

म प नी सा नी सा रे सा नि

पा पै म ग रे सा पा पा पा

पा पै पा नी सा नी प पै मा

गा·स·
१३

रे सै ग रे सै नि ध पै म ग रे सै

इत्येतवरः ॥ सै रे सै सै रे ग रे सै सै

रे ग म ग रे सै सै रे ग म पै

ध प म ग रे सै सै रे ग म

पै ध पै म ग रे सै सै रे ग म

13

ध नि सं म ग रे सां ॥ इति संगीत द

र्पणम् ॥ अथ संगीत कल्पद्रुम सरगमः भैरव

राग चारताल ॥ ध नि सं रे ग म

पं ध नि सं नि ध पं म ग

रे ग रे सं ॥ इतिस्थाई ॥ म ध नि सं

गा॰सा॰
१४

म गा पे नि ध पे म पे म गा म गा

रे गा रे से गा म पे ध से रे से

नि नि से नि नि ध से से नि

ध नि नि ध पे ध ध पे म पे

पे म गा म म गा रे गा गा रे

१४

ध प नि प ध म गरेस सरेग रेगम गमध

मधप धपनी पनीसा सनिप निपध धमग

मगरे गरेसा ॥ इत्याभोगः ॥ इति षड्जांश भैर

व संपूर्ण सरगामः ॥ अथ गांधारांश संपूर्ण भैर

व सरगामः चौतार ॥ ग ग म ग रे स सं

ग॰ स॰ १५

नी ध नी ध ध ध प ध प प म

प म नी म ग म ग ग रे ग रे

रे रे सा रे सा ॥ सोई गुरु न मन सान

ध्यान धरे ॥ इति गोधारोश्रा सरगम वर्णानम्

अथ औडव भैरव प्रकारः । महा देवजीने पं

से रे सा ॥ सप्त स्वर संपूर्णा में जो सरगम वि

वारी ॥ सा सा रे सा रे रे रे ग रे ग ग

ग ग म ग म म म प म प प

प ध प ध ध ध नी ध नी नी

नी सा नी सा सा सा नी सा सा नी

सा॰ सा॰
१८

नि॰ सरगम वर्णनम् ॥ ग ग ग म ग सै सै

ग म य म ग सै सै ग म य नि सै नि

य म ग सै ग म य नि सै म ग सै।

नि य म ग सै य नि सैं ग सै सै ग

म सै नि य म ग म॥ इति ग्रामोत्तरः॥ मार्गी

१८

16

व मालो करके पंच स्वरका उच्चार किया तिसका

वर्णन रिषभ और पंचम बावर्जित है षड्ज औ

र मध्यम और निषाद अनुवादी हैं गंधार वादी है

कोमल धैवत संवादी है रिषभ और पंचमवि

वादी है इसको औडव भैरव कहते हैं। तस्यालाप

कं
रा-स

जानि जौ जाकी मन इछा सोई सोई सुजावै । मंगलाष्टपदानि

ज्ञानकी निधानी । वीणा पुस्तक धारनी प्रथम तोहि गावै । ता

न सैन तेरी प्रसन्न कहो लो वखानै सप्तस्वर तीन ग्राम रागरं

ग लय प्रस्तार गावै ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ महा वाक वाद

नी सनमुख हूजै प्रबहू जै हो । याहो ते त्रिभुवन मानिया

नि ध ध म ध म म म ग रे ग म ग रे स स नि ग म ध म ग रे स ॥ म म ध ध नि ध ध नि ध ध ध नि स

नि ध ध म ध म म ग रे स ग स ध ध म ग रे स ॥ म ध नि स स स रे स स नि ध म ग म ग रे ग म ध नि

ध ध म ग ध म ग रे स ॥ नि स ध नि स म ग रे स नि ध नि स रे स नि स रे स स ॥ म ध नि नि स स रे स नि

यकादिकृतध्रुवपदतुलसीदाससूरदासादिकृतविस्नुपद

अमीरखुसरोकबीरसदारंगअदारंगादिकृतख्यालप्रारंभः।

अथतानसेनकृतध्रुवपदसरस्वतीवंदनागान ॥ रागभैरव

चौताल ॥ जै शारदा भवानी भारति विद्यादानी मह्रावाक

वानी तोहि ध्यावै। सुर नर मुनि मानि तोहिकें त्रिभुवन

ध प प म प म ग रे रे ग प म ग रे सा सा सा सा सा रे सा ग प म ग रे ग म प म ग रे सा ॥ सा ध नि सा

सा रे सा नि ध ध ध

क॰
रा॰ सं॰

७ ६ ५ ४ ४ ३ २ ३ ५ ४ ३ २ १ ४ ५ ६ ७ ७ ६ ५ ६ ७ १ ३ १ ७ ६ ७
गुरु सब देव आवत नोन सानी । रूप को निधानी दयानी विद्यादा

६ ५ ४ ४ ३ २ १ २ ३ २ १ १ ३ ५ ४ ३ २ १ ४ ४ ६ ७ १ २ २ २
नी जगत जननी सारदा संतन मन मानी । नोन सैन मांगे ताल

७ ६ ५ ४ ३ ३ ४ ६ ७ १ ७ ६ ५ ४ ३ २ ३ ५ ४ ३ २ १
स्वर अलाप राग रंग संगीत सो गावै इच्छा फल दानी ॥ राग भैर

व ॥ चौताला ॥ जय सरस्वती गंगा गणेश ब्रह्मा विस्नु महेश

शाकी सूरज सर्व देव ध्यावै । सप्त स्वर तीन ग्राम इकीस मूर्छ

नि ध पै म म ग रे ग पै म ग रे स ॥ म पै ध नि नि ध पै ध नि सं रे सं नि ध नि ध पै म म ग रे स रे ग रे सं सं

ग पै म ग रे सं ॥ म म ध नि सं रे सं नि नि ध पै म ग ग म ध नि सं नि ध पै म ग रे ग पै म ग रे सं ॥ ॥

~~ध प म रे रे ग म म ग रे सा ग म प नि सा नि सा नि ध नि सा नि ध प प ध प म म रे सा ॥ ग म प नि सा नि सा~~

ध प म ग रे रे ग म ग रे स ग म प ध प म ग रे स ॥ ग म प नि स नि स नि ध नि स नि ध

७

३

तैतै भवानी जो जाकै मन इछा सोई सोई पूज्यैहौ । सिद्ध सिद्ध
नव ही पाईये मात जब तब चरन छुज्यैहौ । तानसेन यह पु
साद मांगत जैसे तहो जरत फरत तेहो तहो रंग रंग की करत
जैहो ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ सरस्वती सु प्रसन्न होई मोकों
वाकबानी । षडज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद

ध नि सा सा रे सा नि ध ध म म रे सा ग म ध ध म ग रे सा ॥ म ध नि सा सा नि ध ध म ग रे सा ग म ध म ध ध
म ग सा ॥ ग रे ग म ग रे सा नि सा म ध नि सा सा रे सा नि ध ध म ग म ग ग रे सा ग म नि ध ध ध ग रे सा ॥
रे सा सा ध रे सा नि सा ग रे सा ग ध म ग रे सा ॥ म ध नि सा सा सा रे सा नि ध ध ध ध म ध नि

क॰
रा॰स॰

नारद तोंब नाल सहु राग रंग प्रस्तर देवानी । सप्त स्वर तीन

ग्राम इकीस मूर्छना उनचास कोट तान तिनके चोरे जी

यमे आनी । बैजु बावरो रावरो सेवक यह सोरो नाद विद्या

मूरत बान राग भैरे गरे मे सानी ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥

जै काली कल्याणी खेत्र धारणी गिरिजा चंद्र स्यामा चंडी

धपगमधनिसनिधपमगगप सगरेस ॥ गमपधपमगरेसगममपमरेसगमधपमगरेस ॥

मधनिसरेसनिधपमधनिसनिधपमधपमगरेगपमगरेस ॥२॥ गरे सनि ध नि रि स नि स नि

ध स रे ग म ग रे रे ग म ग रे म

४

ना उनेचास कोट तान देहो ग्रावै । उरपति सपला गंजाद राग

रागणी पुत्र वेध सहित कंठ समावै । कहे वैजवा वरे सर्व देव

दया करो राग रंग तान ताल लय अलप गावै ॥ राग भैरव ॥

चौताला ॥ नृंग्रवे आदि भवानी जगमानी सर्वानी सर्व कला

दे विद्या वर दानी । शिव संगे जगदेवे ग्रहर सिंगारन नरन

पमगमधपमगरेसा ॥ मपधपमगरेसगमपधपमगरेसा ॥ गमधनिसनपमगरेसग

मपधपमगरेसा ॥ ॥ मपधपमगपमगरेसस मपधपमगरेगपमगरेस ॥ गमध

निसरेस निध निस नि ध प

का॰
रा॰स॰

शारदा सरस्वती श्यामा सुंदरी ज्ञान हरनी सुख करनी । कामरूक मता
कामदायनी काली कल्याणी दुष्टदरनी । कमल वदनी करुणा कारणी
काश्मीर रानी कैलासी काल हरनी । परमेश्वरी पार्वती परम पुण्य
पावनी जग राजदास वरनी महा काली तारन तरणी ॥ अथ गणेश
(श्यामै)
वंदना ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ लंबोदर गज आनन गिरिजा

नि स स रे स म म प ध म ग म ग रे स रे ग म ग रे स ॥ म ध स नि स रे न ध प प म म ध नि स नि ध प म ग रे स ॥ ग म
नि ध नि स नि ध स नि ध प म ग र ग म प म ग रे स ॥ म ध नि स स स रे स नि ध प म ग रे स म म प न स नि स स रे स
नि नि ध नि स प म म ग रे स ग ॥ म प प ध नि ध प म ग रे

वामेश्वरी छत्र धारिणी । जगजननी ज्वाला मुखी आदि जोत अनेना देवी
अन्नपूर्णी ज्ञानेश्वरी नरेन नारिणी । योगनी जय रक्षा करणी विंद
वासणी ललिता वोड्ड वरा भवानी असुर दलनी महिषा सुर मारणी ।
हिम गिरि हिंगला जगानी काश्मीरी शारदा काम रूकमल्ला नलजा
जे भक्त सुख कारिणी । रागभैरव वीनारा ॥ सर्वांगी सर्व कला शक्ति

म ग रे स नि रे स स ॥ म ध नि स स नि स ध नि स नि ध प म ग म ग रे स ग म ध नि स नि ध प म ग रे स ॥ ग म ध
प ध नि स नि ध प म ग म ग रे स ग रे स नि ध रे स रे स नि स स रे ग म ग रे स ग रे स नि ध नि रे स ॥ म ध नि स स
ध नि स नि ध प म ग रे स स स नि सं ग म ध नि स नि ध प म ग रे स ॥ ॥ रे स नि ध रे स नि ध म ध

क॰ राग॰

राग भैरव ॥ चौताला ॥ प्रथमे गणेश को गुनी । रिद्धि सिद्धि के

दाता विघन हरन हैनी । जिन ध्यायो तिन पायो मन इच्छा भनी

बेक सबके प्रभु को ध्यावत सुर नर मुनि ॥ राग भैरव ॥ चौताला

तुम हो गणपत देव दाता शीश धरे गज सुंड । जेई जेई

ध्यावे तेई तेई फल पावे चंदन लेप किए भुज दंड । सिर धरे

ग म प ध प म ग रे ग प म ग रे स ॥ म ध नि स नि ध नि स नि ध प म ग रे स ॥ ग म प ध प म ग रे स

स म प प ध ॥ म ध स नि स रे स नि ध प म ग म ग रे स ॥ऽ॥ ग म प प ध प म ग र ग म ग रे सै नि सै

रे ग प म ग रे स ॥ ग म प नि स नि सै रे स नि ध प ध प म ग रे ग रे ग प म ग रे स ॥ ग म प ध

6

सुतगणेश एकरदन प्रसन्न वदन श्रुकृणा भेश। नर ना
री गणी गंधर्व किन्नर जनत ते वर मिलि ब्रह्मा विस्नु आरती
एजो वेन महेश। ग्रेष सिद्ध नव निद्ध मूषक वाहन विद्याप
तितो हि सुमिरत तिनकों नितशेश। तोन सेनके प्रभ्नुम
हीऊं ध्यावे अविघन रूप विनायक रूप सरूप आदेश ॥

ग म प म ग रे स नि स स र ग म ग रे स स नि ध प ॥ म ध नि स स ध नि स नि ध प म ग रे स रे ग म प म
ग प म ग रे स नि ध प ॥ स ध ध नि ध प म ध नि स स रे स नि ध प म ग रे स रे ग म स नि ध प ॥ म म ध
स स ध नि स स रे स नि ध प म ग रे स रे ग म ध नि ध प ॥

कहि[illegible]काहूलई॥ भावीभूत वर्तमान जदपि बषाननतैंहू तदपिसबैकों।
न हूं[illegible]षानी काहूपै गई॥ बैनैंपति चारिमुष एक बैनै पांचमुष ना
ऐबैनै षट्मुष तदपि नई नई॥ पूरन पुरान अरु पुरुष पुरान परि पू
रन बतावैं नबतावै और उक्तिकों॥ दरसनदेत जिन्है दरसन समुझैं ना
नेनेति[illegible]नेति कहै वेद भेद छांडि युक्तिकों॥ जानीयह केसोदास अ[illegible]
दिन [illegible]राम कहत रहत तउरन पुनिरुक्तिकों॥ रूपदेइ अनिमें[illegible]
गुनदेइ गरिमांहि भक्तिदेहि महिमाहि नामदेहि मुक्तिकों॥३॥ सवी[illegible]
निका छंद॥ जगन भगन अरु रगन धरि मगन जगन जुग दी[illegible]गी।

रा.चं.
२
2

तिका छंद विचारिकै बंसीधर यह कीय ॥४॥ सनाढ्य जाति [illegible]
है जग सिद्ध सुद्ध सुभाउ ॥ सुकृलमदन प्रसिद्ध है नर मिश्र पंडित रा
उ ॥ [illegible] सोसुत पाईयौ तिन कासि नांथ अगाधु ॥ असेष सास्त्र [illegible]
चारि [illegible] जानियौ मन साधु ॥५॥ दोहा ममग्यारह तेरह विषम [illegible]
रि चरन करि देहु ॥ मत्त अठतालीस सब छंद दोहरा येहु ॥ उपज्यौ ति
[illegible] मंद मति सुत कविके सब दास ॥ भाषा बोलनि जानई जिनके [illegible]
कुल [illegible] दास ॥ ७ ॥ सोरह सै अठावना कातिक सुदि बुधवार ॥ राम चंद्र
की [illegible] तबकी नो अवतार ॥ ८ ॥ बाल्मीकि मुनि सुभमैं दीनो दा

२

नचा+ रसर्के ... रु॥केसव यह तिन सों कह्यौ कै पाऊं सुष सारु॥श्रीछंद र

सार मन ... छंदु एक है॥श्रीछंद॥जित जित बुद्धि विचारिके अंत एक गु

रु देहु॥चारि तकै रति उद्ध रह बेमी श्री छंड येह॥१॥ दुषकौ नदै॥

हरि जू जु रै ११॥रमनक छंद॥दोहा॥द्वैअक्षर लघु दीजिये एक॥

अंत ... देहु॥मंदर छंद सुरमनै है सुकवि कंद करि लेहु॥१२॥से

तो मराज छंद॥यगन करी जो द्रुय द्रुय धरी॥बारह बरनहि वाम से ...

री १३॥सुनौ एक रूपी सुनो वेद गावै॥महा देव जाकौ सदा चित्त ...

ला वै॥१४॥नगस्वरूपिणी छंद॥जगन रगन रमि दीजिये लघु ... रीजे

रा॰ चं॰
३

अंक॥ सोई नग सब्रूपिणि कीजै छंद निसंक॥ ५५॥ भलो बु[illegible]न ता
गौ वृथा कथा कहै सबै न राम देव गाइहै न देव लोक पाइहै॥ [illegible]
षट् पद छंद॥ ग्यारह तेरह विरति करि छुह चौकल तुक चारि॥ [illegible]
रवि [illegible] ठाईस डुइ छुप्पै लेहु विचारि॥ ७॥ बोलिन बोल्यो बो[illegible]
दियो फिरि ताहि न दीनो॥ मारन मारयो शत्रु क्रोध मन वृथा न कीनो॥
नौ॥ जुरेन मुरे संग्राम लोक की लीक न लोपी॥ दान सत्य मन।
मा[illegible]जस दिसि विदि सावोपी॥ मन लोभ मोह मद काम वस।
भयौ[illegible] केसौदास भनि॥ श्री रामचंद्र रुद्रादि प्रभु अवतारी अवता

३

रमा[illegible]॥मधुछंद दोहा॥ रगन जगन इम दीजिये गुरु लघु अंतहि
देहु [illegible]धुसंज्ञा यहछंदहै कविमनमें धरिलेहु॥१९॥गोल वोल।
चारु मारु प्रीति सों हियें विचारु॥राम नाम सत्यधाम और नामको।
नकाम॥२०॥तरनिजाछंद॥ तीन अंक लघुदीजिए गुरुलै दीजै अंत
तरनि[illegible]छंद विचारियो याविधिसे बुधिवंत॥२१॥वरनिवो वरनु[illegible]
जगन[illegible] सरनुजो २२ सुप्रियाछंद॥ सरस सगन इकदेइकै लघु गुर
दीजैचर्ण॥सुप्रिया छंद विचारिकै कहेया कवि सुभवर्ण २३ कुमा[illegible]
ललितछंद॥ जगन सगन द्वैदेइकै फिरिदीजे गुरु अंत कुम[illegible]

रा.चं.
५

न सो छंद यह कहि जन पिंगल वंत॥ विरंचि गुनि देषो गिरा गु[illegible]ल
षो अनंत लषणावै विसेषहिन पावै॥२६॥ दोहा॥ मुनिपति यह उप[illegible]
सदै [illegible]वरी भये अद्दृष्ट॥ केशव दास तहां करे रामचंद्र जू इष्ट ॥२७॥ गा
हा [illegible] बारह पुनि अठारैह फिरि बारह लैदेह ॥ चौथे चौदह दे[illegible]
गाया कीजे येह २८ रामचंद्र पद पद्मं वृंदारक वृंदाभि वंदनीयं॥
सभ केसव मति भूतनया विलोचनं चंचरी कायते २९ चतुष्पदी छं
द॥ [illegible]बलके रानि सातदै गुरुलै दीजे अंत॥ ऐसें रानिके एक तक॥
चौपै[illegible]जु कहंत ३० जिनको जस हंसा जगत प्रसंसा मुनि जन मा

५

न म[illegible]लोचन ग्रनु नृपति स्याम सनृपति अंजन अंजित सेना॥
काल[illegible]य दरसी निर्गुन परसी होत बिलंबन लागै॥ताके गुन का
हिहैं। सब सुष लहिहैं। पापपुरातन भागै॥३१॥ दोहा॥ जागत जा
की जोति जग येकै नृप स्वछंद॥रामचंद्र की चंद्रका बरनतहैं। बहु
छंद ३२ रोलाछप्पैछंद॥कला चौबिसै चरन प्रति चारन कैं करि
हू॥[illegible]गुरु तामैं लसैं सो रोला कहियेहु ३३ सुभसूरज कुल कल
स नृपति दसरथ भनि भूपति॥तिनके सुत सनि चारि चतुर बिन
चारुचारु मति॥राम चंद्र भुवचंद्र भरथ भारथ भवभूषन[illegible]

राम॰
चं॰
५

॥ अरु सत्रुघन देहदानव दल हृषन ॥ तिहपुर प्रसिद्ध आनंद [illegible]
द्विज गन रछ्छाकरन ॥ कहि केसव अविनासी निगुन कोटि भान सोभ[illegible]
हरन ॥ ३४ ॥ चूर्नाछंद ॥ परत कला चौसटहि कों हैतक दीजैतास ॥ द
स [illegible] एक पलक प्रतिहै तजि त्रास ॥ ३५ ॥ सरजू सरिता तट [illegible]
गर वसै वर अवधिनाम जसधाम धरं ॥ अघ ओघ विनासी सब पुरवासी
अमर लोक मानो नगरं ३६ ॥ षट्पद छंद ॥ गाधि राजकौ पुत्र साधि स
त्रु मि[illegible] बल ॥ दानकृपान विधान वस्य कीनो सुव मंडल ॥ कैमन अप
नो [illegible] जीति जग इंद्रिय गन अति ॥ तप बल यही देह भये छत्रीते ।

५

वि[illegible]त ॥ तिहिं पुर प्रसिद्ध केसव समति काल अतीता गति निगु
नि [illegible]र अद्भुत गति पग्गुधारियै विश्वामित्र पवित्र मुनि ॥ ३॥ प
द्धटिका तीनचतुष्कल देखके अंत पयोधर देहु ॥ चारितेकें चौसठि
कला पद्धटिका करिलेहु ॥ ३८॥ मुनि आये सरजू सरित नीर तहां
देषे [illegible]न अमल नीर ॥ नव निरषि निरषि इति गति गंभीर ॥ कछु
वरनन लागे समतिधीर ॥ अति निपट कुटिल गति जदपि आपु ॥
बहुदेति सुद्ध गति छुवत आपु ॥ कछु आपन अध अध गति चलंति
॥ फलपतितनि कौ ऊरध फलंति ॥ ५ ॥ मदमत्त जदपि मातंग [illegible]

रा.चं.
६

तदपि पतित पावन तरंग ॥ बहु न्हाइ न्हाइ जिहि जल सनेह [illegible]
त स्वर्ग सूकर सदेह ॥ ४५ ॥ नवपदछंद ॥ प्रथम हमरे पाय मैं पंद्रह म
त्रा जास ॥ तीजे बारह चारि पुनि चौथे दीजे तास ॥ ४६ ॥ आगे दोहा देइ
कै नव[illegible] कीजे मित्र ॥ नारसेन पिंगल कह्यो छंद सुहायो चित्र ४७
जह तह लसत महा मद मत्त ॥ वरवारन वारन दल जत्त ॥ अंग अंग चर
चेतन चंदन ॥ मूडनि भरके अभ्रक बंदन ॥ दोहा ॥ दीह दीह दिग्ग
जन[illegible] केसव मनहूं कुमार ॥ दीने राजा दसरथहिं दिकपालनि उप
हा[illegible] ॥ अडिलछंद ॥ आदि अंत लषि लीजिये चारि चतुष्कल दे

६

हू ॥ [illegible]नरहित चौसट कला छंद अडिल है येहू ॥ ५५ ॥ देषि वाग अ
नुरा[illegible] उपजिय ॥ बोलति कोकिल कलधुनि सज्जिय ॥ राजति रति
की सखी सुवे मति मनो कहति मनमथ संदेसनि ॥ फूलि फूलि ता
न फूल बढावति ॥ मोदति महामोद उपजावति ॥ उडत परागन वि
त उडावत ॥ भवर भवत नहि चित्त भ्रमावत ५६ पादाकुल छंद ॥ [illegible]
सटि [illegible]ल तुक चारि है सोरह सोरह जासु ॥ पादाकुल यह छंद करि
पिंगल वन प्रकासु ५७ सुभसर सोभै मुनि मनलोभै सरसिज फूले
अलिरस भूले जलचरडोले बहुविध बोलै उरअरु कांहीं [illegible]तिन।

राम
चं॰
७

जोंही ॥४८॥ चौपई ॥ देषे बनवारी चंचल भारी तदपि तपो धन[illegible]ना ॥ अ
तितनपमय लेषे गृहस्थित देषे जगत दिगंबर जानो ॥ तदपि दिगंबर पु[illegible]
वनीन[illegible] निरषि निरषि मन मोहै ॥ पुनि पुष्पवनी तन अति पावन गर्वी
सहित सब मोहै ॥४९॥ गर्व मंजोगी रति रसभोगी जग जन लीन क[illegible]
वै ॥ गुनि जन लीना नगर नवीना अति प्रिय कोजिय भावै ॥ पतिहि रमा
वै चित्त भ्रमावै सो तिनि प्रेम बढावै ॥ यौं दिन रातिन अद्भुत भातिनि
कवि [illegible]ल कीरति गावै ५०॥ हाकलिका छंद ॥ पंद्रह मत्त तकहि प्रति
जनि[illegible] जो तक चारि ॥ बरनच वाली सकल है हाकलि लेहु विचारि ५१

७

संग [illegible] विषिसिष्यनिवने॥पावकसे नपतेज निसने॥देषे सरिता उपा
वन भले देषत औधि पुरी कहूचले॥मधुभारछंद॥चौकल अकेल र
क जगनु मेल चहूं चरनबंध मधुभारछंद॥५३॥ऊचे अवास प्रति धुज
प्रकास॥सोभाविलास॥सोभैआकास ५४॥ आहीरछंद॥ग्यारह मत्ता
तुकनि प्रति अंतजगनलै देहु॥चारि चारि तुक कीजियो छंदअही
रएहु॥५५॥अतिसुंदर अतिसाधु थिरनरहति पल आधु॥सवनि न
पोमयमानि॥दंडधारिनिह जानि ५६॥हरिगीतीछंद॥इक पंचकल
करिएक षट्कल पंचकल पुनि तीनिकै॥गुरुअंतदर वस तीस म

राम
चं०
८

चरन चरननिवीनिकै हरिगीतछंद सुरुचिर रचिपचि भेद पिंगला। चीनिकै॥हृदये सभूपति सदार संदर बसे चित हिगुनीनिकै ५०
सुभट्टान गिरिगन सिषर पर अति उदित औषधिसी गनै॥बहुभा
र वारिद रुचिरहू रहि उरझि दामिनि दुति मनै॥किधौं रुचिर प्र
ताप पावक प्रगट सुर पुरकौं चली॥किधौं सबद सुभग सुदेस च
न महि[illegible]रंग दिवि षेलत भली॥५८॥दोहा॥जीति जीति कीरा
ति लई सत्रुनकी बहु भांति॥पुर पर बाधी सो भिजति मानो ति
नकी [illegible]ति ५९ त्रिभंगीछंद॥कलदस आटहि कैकै रुचि पुनि।

८

नामहं [illegible]वसति कौर ए चारि॥ अंते गुरुदेवके दस पुनि कैके छंद त्रिभंगी
विचारि॥ ९॥ सुभसवच्छर सोभै विद्गगन छोभै मुनि गन लोभै देषिस
वै॥ बहु दुंदुभिवाजे गजगन गाजे दिग्गज लाजे सुनततवे॥ जह
तह श्रुति पढ़ही विद्यति रटही जय जस मढ़ही सकल दिसा॥ १०॥
सवई सव विधि छम बसत जथा क्रम देव पुरी सम दिवस निसा
॥ ११॥ कविकुल विद्याधर सकल कलाधर राज राज बरवेष वने॥
गनपति सुष दायक पसुपति लायक सूर सहायक कौन गने॥ [illegible]
नापति बुधजन मंगल गुरगन धर्म राज गन बुद्धिघनी॥ [illegible]सभ

राम.
चं.
५
१

मनसा नरु करुनामय अरु सुरतरंगिनी सोम सनी॥ ६३॥ हा[illegible] छंद
छ कल तीन गुनि देइकै अंतर गन गति देहु॥ तेर सकल कल [illegible]
रितुक छंद हीर करिलेहु॥ ६४ पंडित गन मंडितगुन दंडित मति दो
षिये। छत्रिय वर धर्म प्रकर क्रुद्ध समर लेषिये॥ वेससहित सत्यरहि
त पाप प्रगट मानियें॥ सूद्र सकति विप्रभक्ति जीय जगत जानियें
सिंहावलोकनछंद॥ सोरह कल कल कीजिये जमक जुगति तकजा
स॥ पाछै देइ कवित्त कहि सिंह विलोकन तास॥ ६६॥ अति मुति ना
न म[illegible] नह मोहि रहैया॥ कछु बुधि बल बचनन जाइ कहैया॥ पसु प

६५

५

ति नारि नर निरषि नवै॥ दिन राम चंद्र गुन गनित सवै ९७॥ मरहट्टा छंद॥ प्रथमहिं छह कल देइकै पंच चतुष्कल देहु॥ गुरु लघुकै उन तीसकै मरहट्टा करि लेहु॥ ९८॥ अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिंतामनि नारि॥ बहु सत मष धूपनि धूपित अंगनि हरिकीसी अनुहारि॥ चित्री बहु चित्रनि परम विचित्रनि केसव दास निहारि॥ जनु विश्वरूपकी अमल आरसी रची विरंचि विचारि॥ ९९॥ सोरठा॥ विषम चरन समदानु दोहा सम दल विषम करु॥ सोरठ ऐसो जानु विषम चरन सम तुकनि धरु॥ १००॥ जग जसवंत विसाल राजा दसरथकी पुरी॥ चंद्रसहित सब काल भाल थली जनु ईसकी॥ १०१॥ कुंडलिया॥ प्रथम

रा॰चं॰
१०

दोहरादेकैरे फिरिकै गुरुलच्छु देहु॥ जमक जगति चौवा[illegible] कल
कुंडलिका पहु॥ ३२॥ पंडित अति सिगरी पुरी मनहु गिरा गति[illegible]
ठ॥ सिंहुति जुत जनु चंडिका मोहन मृत अमृठ॥ मोहन मृ[illegible]
अमृत देव संग दिति सीसोहै॥ सवशृंगार सदेह सकल सुष सुष
मा मंडित॥ मनहुं सची विधि रची विविधि विधि वरनत पंडित॥ ३३
सोरठा॥ नागर नगर अपार महा मोहतम मित्रसे॥ त्रिष्णा लता कु
ठार लोभ समुद्र अगस्तिसे ३४॥ दोहा॥ विश्वामित्र पवित्र मुनिके
सव बुद्धि उदार॥ देषत सोभा नगरकी गए राज दरबार॥ ३५॥ इति
इतिश्री केशवदास विरचितायां श्रीमत्सकल लोक लोचन चकोर चिं

१०

नामणि श्री राम चंद्र चंद्रिकायां विश्वा मित्र आगमने नाम प्र
थम प्रकाशः १॥ दोहा॥ या दूजे जु प्रकासमैं मुनि आगमन प्रका
स॥ राजा सों रचना वचन राघव चरित विलास॥ १॥ हंसछंद॥
भगनु आनो है गुरु दानौ पावक हीमें हंसकहीमें २ आवत जा
ते राजकिलोग॥ मूरति धारी मानहु भोग ३॥ मालनीछंद॥ आ
दिनगन गनि दीजिये अंतयगनु विचारि॥ वेसी मालनीछंद पद
कविजन पढहु संभारि ४॥ नह दरबारी सब सुष कारी कृतजुग
कैसें जनु जनवैसें ५ दोहा॥ महिष मेष मृग वृषभ कहु विरन म

राम
चं०
११

हु राज राज॥ लखन कहूं पायक नटन कहूं निर्त नट राज ॥ समा
नकाछंद॥ ग्यारह मत्ता लकनिप्रति चारि चरन करि लेहु॥ समा
निकाछंद विचारिकै कविमनमें धरि लेहु॥७॥ देषि देषिकै सभा
विप्र मोहियो सभा राजमंडली लसै देवलोककों हसै ८ मल्लिका
छंद॥ प्रथम रगन फिरि जगनदे गुरु लघु दीजे ओर॥ मल्लिकाछं
द विचारिहूं कहै सु कवि सिर मौर॥७॥ देस देसके नरेस सोभिजे
सबै सुदेस जानिजैन आदि अंत कौनदास कौन संत॥ ९ दोहा
सोभतबैठे तिहि सभा सप्तदीपके भूप॥ तह राजा दसरथ लसत

११

रा०सं० अथातः परं ॥ श्रीमक्की प्रभु व राजा सकाशा
त् कृतं तत्सर्व संगीत संग्रह सारे श्री मक्की
राघव कुल चंद्रस्य श्री रामचंद्रस्य सत्यदाख्या
न पूर्वक चतुर्विंशति अवतारा चरित पद ग
ण पत्यादि वंदना पद ब्रह्म वंदना सूर्यवंद
ना सरस्वति वंदना शेष महेशादि वंदना।

रा॰म॰ प्रबंध धोहू ध्रुवपद विष्णुपद ख्याल टपा मा

ठा परमाठा धीमा ठुमरा जति जलद नाना।

देश भाषा पद देश काल राग कालस्थापनादि

विधि पूर्वक श्रुति मूर्छना ग्राम निर्मान वाद्य

निर्मान नृत्य विधि आसन क्रियोग भावोग।

कोडारण यावनोपाय ताल गत परण शाला

देवी भद्रकाली वंदना। श्री विश्व स्वामिकृत।

श्री मद्वल्लभाचार्य कृत। श्री रामानुजनीमा

नुज। श्री माधवाचार्य नीमाचार्य। श्री हित

हरि वंश कृत। श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु कृ

त। श्री रूप सनातन कृत। श्री जयदेव कृत

तुलसी कृत सूरदास कृत शिवगीत मत छंद

रा॰स॰ निराकार परंब्रह्म परमेश्वर एक ही अनेक हो॰

य व्याप्यो विश्वंभर । अलाव जोत अवि नाशी

जोति रूप जगतारण जगन्नाथ जगतार॰ जग

त्पति जग जीवन जगधर । वाही में सबजीव

जेत सुर नर मुनि गुनी ज्ञानी नाभ कमल तें

ब्रह्मा प्रकटा यो ॐमन रूपा मन्वंतर । केहे

कादि विविध विटिप प्रफुलितोप वन इव कृ
नै तत्सर्व मेंगीत मेंग्रह मांरे कल्पद्रुमे गायः
न प्रारम्भा । अथ वैजू नानसैन गोपाल मदा
रंग प्रथारंग अमीरखुसरो खुसहाल कमीर
मीरांबाई सुप्रारंग कृत प्रारम्भा ॥ अथ पर
ब्रह्म वेदना ।२४। राग भैरव चौ०। निरंजन।

रा॰स॰ सेत नहीं है अनेत एजें तोहि बांध्हे भ
ज पर जाए उव भाज। वेन्हू प्रभ प्रा
दि अलष अगोचर निरंजन निरंकार
भक्तकाज कोटि कोटि हुपधरे मेतन
सिरताज। राग भैरव। चौ॰। मायो म
यमहदन मकंद मरली धरें माव मे।

बैज्ञो वामरो ब्रह्म बहि विराट् रूप वही आप॥

अवतार भए चौबीस वपयर ।२५। अथ अने

न बेदना पद । भैरों राग। चौ॰। अनंत ब्रह्मोड

के नायक परब्रह्म श्री श्री यर महाराज ।

कृपा सिंधु भक्त पाल स्रव करण कृपाल

गरीब निवाज । यह बिनती मानलीजे मेरो

रा॰म॰ रायके नित जिय श्राम। श्रथ महा दे
व बंदना। भैरव। चौ। महादेव श्रादि
देव देवादि देव महेश्वर ईश्वर हर।
नीलकंठ गिरिजा पति कैलास वासी
शिव शंकर भोलानाथ गंगाधर। रू
प बडू रूप भयानक बाघंबर श्रंबर ख

हत स्टउ हास । कमल नैयन वासुदे
व परंब्रह्म परमेश्वर विस्नु पुराण श्रा॰
स । नारायण निराकार वनवारी वा
मन विठल शोव चक्र गदा पद्म सो
हत हैं पाम । पतित पावन विरद जा
को कृपाल दयाल भक्त वत्सल मदन

रा॰ स॰ प्रातःकाले में गाया जाता हैं और टोडी गौरी रामकली॰

में मिलकर बनता है॥ अब इसका सरगम कहिते हैं

सा रे रे ग म प ध नी सप्त स्वर सो हरे मन में ऐसें ही आ

ऽऽऽऽवत सारे॥ इति आस्थायी॥ अंतरा आरोही अवरो

ही सुनले हो सब कोई। नी ध प म ग रे सा। इत्यंतरा

संख्या॥ तस्य फले। यथेष्टसिद्धिः॥ अथास्यान्यागानि। अ

स्यक्वचिद् ग्रीष्म ऋतावपि गृहीतः दत्त नायकः। अ

य शारदा मतम्। जो भैरव षड्ज में चले और षड्ज

स्वर जिसका न्यास गृह होवे और षड्ज की मूर्छना॥

लगे सो शारदा भैरव कहलाता है संपूरण होता हैं।

रा॰ रा॰ भव सीस ससि सम राषते हैं केसो दास दास।

के वपुषकें। सा करे की साकर निसेका होत

मन सुष सुष जोवैं राज सुष सुषकें।। १।। क

वित्त। वानी जग रानी की उदारता बषानी

जाइ ऐसी मति कहि धौं उदार[ता] बषानी॰

कौनकी भई। देवता प्रसिद्ध सिद्ध रुषराज

ॐ अथ राम चंद्रका कृत कवि केशव दास ॥

राग भैरव ताला ध्रेडक छेद । बालक मृ

नालनि ज्यौं तोरि डारै सब काल कठिन क

राल वै अकाल दीह दुषकौं । विपत हरत

हठ पद्मनि के पात सम पंक ज्यौं पताल पे

लि पटवै कलुषकौं । हरि कै कलंक अंक

ग.ग. वै न बतावै न बतावै और झकि कै। दरसन

देत जिन दरसन समझै न नेत नेत कहै वे

द छाडि भेद झकि कै। जानि यह कैमोदा

म ध्रुव दिन राम राम कहत रहत न डरत

पुन झकि कै। रूप देहि ग्राणमाहि गुणदेर

गाणमाहि भक्तदेर मोहिमाहि नामदेहि म

तप बड कहि कहि हारे स कहि न काहू ल

है। भावी भूत वर्त मान जगत बषानत है

केसौ दास कैंौ हून बषानी काहू पै गई व

नै पिन चार मुष पूत बनै पांच मुषनाती

बनै षट मुष तदपि नई नई। कवित्त। ए

न पुरान अरु पुरुष पुरान परि पूरन बता

रा॰रा॰ तिन के भेद मति सुत कवि के सौ दास। राम॰

बेद की बेदिका करियौ भाष प्रकास। सो र

हसै षटा बना कातिक सुदि बुध वार। राम

बेद की बेदका कीनौ नव प्रबन्ध। बाल

मीक मन स्वपन मै दीनौ दरसन चाह। के

सब यह तिन सौ कह्यौ कैौं पाठ सुष मान॰

क्रिकैं ॥ राग भैरव ताल। गी। संगीतकाछंद

सनाधे जाति गुण छिहै जग सिद्ध संहद स

भाव। कुसदत्त प्रसिद्ध है तह मिश्र पंडत

राव। गणेस सो सुत पाइयो बुधि कासी

नाथ सुगाय। अमेष साखी बचार को जि

न जानियो मत माय॥ दोहरा॥ ताल। तीन। उप जैं

रा॰रा॰ ककीली कन लोपी। दान मत्य मनमान मज
म हिम विदिसा बोपी। तनु लोभ मोह मदका
म बास भयान के मबदास भन। पारब्रह्म।
श्रीराम है अवतारी अवतारि मन॥ मथुछंद
राम नाम मत्य धाम॥ नजाछंद॥ नरनिता
वनि बैथ रतुमो। देवन रज गत को मरतुमो

राग भैरव ताल। मनि वचनग खद्रपनी।

छंद॥ भलो बुरो नन गुनै वृथा कथै कथै

सहैं। न राम देउ गाइहै न राम लोक पाइहै

छपै छंद॥ बोल न बोल्यो बोल दियो फिर

नाहि नदीनो। मारि न मास्यो शत्रु क्रोयम

न वृथा न कीनो। ज्वरि न सेरे न माहिलो

रा॰रा॰ लेषे। अनंत मुष गावै तिमे षेन पावै ॥ दोहरा

मुनिवर यह उपदेस दै जबही भये अदिष

केसवदास तही करे श्रीरामचंद्र जू इष ॥

इति भैरव राग रामचंद्रिका परिछेद: ॥७॥

राग भैरव ताल। प्रियाभार छंद॥ एकके

हैरे रघु नेद जू। जगु यौं कहैं जगु वेदु जू॥

राग भैरव ताल। सोम राजी छंद॥ गुनी

एक रूपी सुनी वेद गावै। महादेव जाको।

सदा चित्त लावै॥ राग भैरव ताल। कुमार

ललता छंद॥ विरंच गुण देषे गिरा गुननि

रा॰म॰ के त्रिभुवन जानी जो जाकी मन इंछा मो
ई सोई पुजावै । मंगला बुध दानी ग्यान
की निदानी बीणा पुस्तक धारणी ग्रंथ
म तोहि गावै । तान मान तेरी प्रस्तता॰
कहो लौं बखानौं सप्त स्वर तीन ग्राम रा
ग रंग लय प्रस्तर आवै । भैरव राग । चौ॰

प्र त्रपूल कर। तान मैन के प्रभ दीजें
नाद विद्या संगत सो गाऊं बजाऊं बी
न कर यर। प्रथ सती वेदना। भैर
वराग। चौताल। जै शारदा भवानी भा
रति विद्यादानी महा वाक वाक वानी
तोहे ध्यावै। सुर नर मुनि मानी तोहि

रा॰भै॰

ग रे सा सा ग म प ध नि ध प म ग

सदा करदोउ । भारत भूम धुनीन पद नपो ता

रे सा ग म प ध नि ध प म ग

धवतार । मानसिंह गुरको नमो तारण कारण

रे सा सा नि

सार ॥ राग भैरव ताल गीत । नराजकेद ॥ ध्रुवो

ध नि सा ग रे सा ग म ध प ग रे सा म ध नि सा नि ध

य वेद नाटके मनोप ग्रंथमे करो । अलेब साथ

प ग म ध प म ग रे सा सा नि सा ग रे सा ग म

के विचार चितमै धरो । सबै पडे सजे जना निवा

प म ग रे सा म ध नि सा नि ध प ग म ध प म ग

मोह वेचना । लहै अपार मोषको टुटे ममस्त फं

राग भैरव ताल ३ । प्रबोधचंद्र नाटक । दोहरा ॥

प नि सा ग म पा प पा म ग रे सा प पा म ग

गौरीपुत्र गणेश पद वंदौ वारंवार । कारज कीजे

रे सा नि प नि सा ग म ग रे सा ग मे प नि सा रे

सिध मम देहु सबुध उदार । जाके नाम प्रतापते

सा नि प पा म ग रे ग म प नि सा नि प पा

जलपर सैल तराहि । वहि रघुनाइक दासके सदा

म ग रे सा रे ग म पा प पा म ग

वसे मनमाहि । गुरनानक गोविंद गुर जासम

रे सा रे सा ग म प नि सा नि प पा म

औरन कोइ । अभिवंदन पदकमल तिन जोर

रा-भै

ताल ष । नाटक । सवैया ॥ भान मरीच सनीर स

मे अनिजा अज्ञान जगत वनायो । वायु आकास

सपावक नीर मही अनि लोक सतीन उपायो ॥

जाहिपिषे सगसाप जिमे जग फेर सभे तिन मा

हि बिलायो । उजल आनम वोथ मोह हम आने

ट सो उर मोहि धायो ॥ राग भैरव ताल ष । नाट

रे सै

यना ॥ रागभैरव तालाप । नाटक । सवैया ॥

ग म पी प पी म ग रे सै ग रे सै नि प नि सै ग म प

मूपन बोध सबोधनरी अति कौतिक माहि रहे

पी म ग रे म प नि सै रे रे ग रे सै नि प पी म ग रे सै

लपटाय । बोधविना जग मोह कहो इम सेन स

ग म प पी म ग रे ग म पी प पी म ग रे सै

भै सब वेद अलाप । ग्रेनसभै धमदीनकरे नि

नि प नि सै ग म प पी म ग रे म प नि सै रे ग रे सै

नहेर महो करुणा रस आप । बोध उपावन हैन

नि पे पी म ग रे ग म ग रे

सतो नर नाहिनके यह ग्रेय बनाय ॥ राग भैरव

ना॰भै॰

नाटक । दोहा ॥ कीरत बरमा नाम जिह भूपति
बडो रसाल । ताहि सभा महि बिमल मति आहि
प्रधान गुपाल । बरष एक नाटक करो भयो सह
भा मझार । जाको हेर सुज्ञान लहि भए भूए भ
वपार । याको सुनै जु कानमै नीके चीत लगाइ ।
आसुर संपति छूट तजि बेग ज्ञान बढ़ जाइ ॥ १॥१

३

क। सवैया ॥ श्रुतिको जोन सनातन जो जग व

या परही सभमाहि सुहाई। रिट सोतिनिविषे श्रुति

भा सुनतेहे क्रन संयमको जिह भानेद नाई। विदसु

इ निरोधु सुवाउ भले वलसेथ हसे श्रुति उबव

लाई। द्विग तीसर विभ्राज सुवालविषे सिव

सेजमवेन सुश्राप दिषाई ॥ राग भैरव ताल ३।

रा॰ भै॰ काननमैं जिहू कीरतिके छति टेक बनाय । स
भ दिगज कान सुनाल बडे विथनाहि सुफालन
पौन पजाय । निहु संग मिले श्रुति नावनहैं भव
नाहि घनाय सुजाल वढाय । इन ग्राय गुपालस
पडु कहयो वजनाटक भूपति देहु दिखाय ॥
राग भैरव ताल ३ । नाटक । दोहा ॥ सहज सु

भैरव ताल रूपक नाटक। सवैया॥ वड़वानलनिको
कछु काम नहीं अव आर समोहि उपाल दई। स
भ भूपति जा मकुटा मणिके पदपंकज आरती आ
न कई। अव लागि समुद्र मही पनके उर फाटन
को नरसिंह भई। वल भूपति सिंधु यसो यसलो
इन फेर वराह उथार लई। दिगनादि विलासनि

ग-भै॰ नाटक। सवैया॥ अमिय अमानन भूपतिके स
विष वली नृपमार गिराय। रनपाल करी सग
ली परनी अनि याहिके सीसहि छत्र फिराय। स
पयोनिध मेषल याह धरा सिरि भूपनके इन राज
राय। रस सोति अयोग निवेदनके जग आपि
विनोद करै रसभाय॥ राग भैरव ताल ४॥

२ध २पै २म २ग २रे २सै २ग २म २ग २रे २सै २ध २नि २सै

छिद्र छभाव यह्न कौरनि वरमा भूप । नारिन उ

२ग २मे २ध २नि २ध २पै २म २ग २रे २सै २ध २पै

दमयो कौयो दिगजय मरम छनूप । नाविणा

२म २ग २रे २सै २ग २रे २सै २नि २ध २नि २सै २ग

र शेयन भप ब्रह्मानंद छमाव । विविध विषै रस

२मे २ग २रे २सै २ध २पै २म २ग २रे २सै २रे २ग २म २पै २ध

पास करि भप मनोज विकार । नाविणार दूषन

२पै २म २ग २रे २ग २रे २सै २रे २सै २नि २ध २पै २म

मनो वासरदप विनाइ । छन छन भप सब्राज

२ग २रे २सै २ग २रे २ग २रे २सै

छम भूपनि राज दिवाइ ॥ राग भैरव ताल ४ ॥

रा-भै वुयार चारवाक नाटकके हेत निज नारको वुला

योहै ॥ नैपथ्यकी उर तिन हैरकै प्रकार कह्यो

आरये सुआउ इतनवो नटी आईहै । आरये सुको

न काज मोहको वुलायो आज कीजीए सुकाज

अब वेरको लगाईहै । सूत्रधार नाहिको उवार

पुनि पञ्च कह्यो आरये अजानन हि जाहिन वुला

6

नाटक । कवित ॥ प्रगोथवेद नाटके सुन्याहि

नट नो हिहिडिग्रा कुसलमित्र आप जोई हरव बनायो

है ॥ कौरनवरम देवके समीप सोई नाटक स

हे रनको भूपनको मन उमगायो है ॥ सुनो स

बपार नम प्रगटि विचारकहो सभाइ समेत रि

द कौनक सुहायो है ॥ सुनिके गपाल वाक स

ना·भै· हास प्रतिकूल न्टप नामकरजीनकैं गुपाल स्वनरे

सत्क्रिया आयोहै ॥ सामराज राजको अभिषेक जि

नफेरजगकीरति वरमदेव कालमें करायोहै ॥

राग भैरव ताल । नाटका । सवैया ॥ रागरेरा

मह्रो पिसना सनया अवलो नर छउन तालवजावै·

अलिकै कविपिंग कपोल लटी सु पिसावन यान

हैं । नाटक अथर्व वेद वेद मांमान जगदीजी

प दिखाइयो गणाल मनआई हैं ॥ राग भैरव ताल

। नाटक । कवित ॥ भूपति विपल बल सोई

न शरन जान पावक प्रना पवन मेगने बफायो है

ताहिकी मजाल तीन भौन में विसाल वाकी की

रतिको अंजलोक तीन हूं मै गायो है ॥ तीने वेद

रा॰भै॰

8

दिखाए ॥ नटनी नव पङ्क कह्यो भरता हित सो-
गान मान वले सुभगाए ॥ पङ्क आदि प्रवेश वडे
मनमै सुन आरय पशुपाल सुभाए ॥ राग भैरव
ताल । नाटक । सवैया ॥ निज आक्रमके रण
रंग मही निज मंडल भूपनके सुभगाए ॥ प्रति
कान लो तान कठोर धनु रण मंडलमै सर ओघ व

हि नन दिषावै । करिकैभ मदंगनि पोनवली धसि
नाद अनेक सुपोद सुनावै । यह भांत सुनो नटनी
जगामे रगरेगा मझी अवलो जसगावै ॥ रागभैर
वनाल । नाटक । सवैया ॥ रससोन अ सन्न
विनोदनके छिनहे नटनी सगुणाल अलाप । अब
याह सुभावहु नाटक जोधर स्वांगा भले हमदेह ॥

ग्रा॰ भै॰ हेदसमै अवलोजस कीरनि गाहि निवीनीं रस

सानिविषे तिनकी मति आरय मोह करो कि

रभानि सुवीनी ॥ इतिप्रबोधचंद्रनाटकेध्यायः

लाए। जिन बानननकै अरिषेतन बिषै सु तुरंगानके

वडु पेज गिराए॥ निज आउध धार मही असे गा

जकोटिनि कोटि सुभस रलाए। पैदल सेनि सु

क्षीरनिधी भजमैदर गान सुवधा झलकीनी॥

स्वानि सैनि पयो निधकी मथ्यकै बलभाव लि

जै लषमी जिन लीनी। जिनके रणकी सुनि

रा॰भ॰ चाल ॥ राग भैरव ताल ३ ॥ चौपई ॥ प्रथम दे

म ललित मन भावा ॥ तेहो नेम मान हरि

गावा ॥ युक्त सकल सम ऋद्धि उदारा ॥ विज

य पुत्र जग कीरति वारा ॥ विघ्न येन प्रति

पालिक राई ॥ भक्त सेन सज्जन सुखदाई ॥ य

रम निरत मंगल गुण सागर ॥ दाया दान

ॐ अथ भक्तमाला प्रारम्भः ॥ राग भैरव ताल ३

२सं ग म २प २प म ग २रे २सं २नि २प

३ ॥ दोहा ॥ श्रवण सुखद मंगल करन हर

नि २सं २ग २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे २सं २नि २प

न त्रिविध तप सूल ॥ भक्ति महात्म कथन अ

२प २म २ग २रे २सं ग २म २ग २रे २सं २सं २ग २म

ब करहुं सकल सुख मूल ॥ १ ॥ ह्रिदय प्र

२प २प म २ग २रे २सं नि २प नि २सं २रे २सं

काश ज्ञान रव दहन उरत मद मारु ॥

२म २प २नि २सं २रे २सं नि प २प म २ग २रे

श्रीपति चरण सरोज नित नवल देन रति

रा॰म॰ हेत प्रेम मन लीना॥ गलना नाम प्रकट जग

कीना॥ तहां जनेंद्र कम मनि राज्यो॥ पुमक स

कल निज मंत समाज्यो॥ प्रथ कील मनि वर

सिष दोई॥ गुरु पद जलज भक्ति रत सोई॥ ए

ज्यो ऽपि करण हेत तजि गेहा॥ गवने विपन॥

दिवस इक तेहा॥ हृदन ऊप्या कम मम कलनी

मान मति नागर । नाम कबिर गुरु देव सहाये ·
कमल दास सब लोगन गाये ॥ भक्त प्रधान नि
पुन गुण ज्ञाना ॥ विष्णु जास कर वंदत संमा
ना ॥ सज्जन सर्व भूत हित कारी ॥ विरत विवे
क निरत ब्रत धारी । भूप देस निज कबिर ·
सहाई ॥ रेमय पुरी पक बिर चाई । गुरु वर

ग॰भ॰ कौल सजाना। अत्र राम मन बचन बखाना।

अहो कवन यह बाल नवीना। यत्नो अशोक॰

विपन पथ दीना। जो यहि चलइ लेत निज

गेहा। पालहि सेत सकल करि नेहा। सिखव

हिं देखि मनि अग्र अमानी। लोचन ताङ मा

र जन पानी। कीनो अमल नैन भे नामा। ३

३

५.२

रे सं नि ध नि सं ग म ग रे ग म ध नि

कै। यरत द्रोण मन भावत जी के।। चले युगल

सं नि ध प म ग रे सं नि ध नि सं ग म

निज आश्रम काहीं॥ ज्ञान विचार करत मन।

ग रे सं ग

माहीं॥ राग भैरव ताल ३। दोहा॥ तब दोष।

म ध नि सं रे रे सं नि ध नि

मारग पको श्रेय बाल बल हीन॥ जानि उ

सा ग म ध नि सं नि सं रे सं रे सं

रभित प्रभाव समय निज जननी तजि दीन।

ग म ध प म

राग भैरव ताल ४। चौपाई। देवि नाम मनि।

मे ग रे ग मे प नि सं रे सं

गा. भ. कृपि रमन लाई ॥ सेन उछि है केंड बर बरना ॥

नि प प मे ग रे ग म ग रे ग म प नि

नहीं मनान पान नव करना ॥ मोजा उछि है मे

सं रे सं नि प प म ग रे ग म ग रे

नन जन बाना ॥ मोड करडू नव नान ग्रहाना

4

ग म प नि सं रे सं नि प प म ग रे

ग्रम मनि ग्रग दाम मन भाबा ॥ सिसहिं की

ग म प प म ग रे नि सं नि प प मे

न उपदेस सहाबा ॥ दोहा ॥ पुनि सब मनन·

ग रे सं ग मे प प मे ग रे ग म प

मन बिनय बदन कौन मनि पड़ा ॥ सिस पै·

ग रे ग म प प म ग रे ग म प

मेरो बाल दृग ज्योति प्रकासा। अति अमल

नि सं रे सं नि प प म ग रे ग म प प

निज आश्रम ल्याये। क्रम स्वामि अनु मास

म ग रे ग म प नि सं रे सं नि प प म

न पाये। अगदास बालक मन बानी। बोले

ग रे ग म ग रे ग म प नि सं

मधुर वदन हित सानी। अरे वत्स तव आ

रे सं नि प प म ग रे ग म ग रे

श्रम दाहू। ईहां निवास करहु निज चाहू।

ग म प नि सं रे सं नि प प म ग रे ग

कलकट मैन माथ सिव काई। मन तन रत होइ

रा॰भ॰ देवि म दिन स भ कृपा ज न गुरु ब र दीन म ने

हू। गायो नाम प्रसिद्ध जग जन नाभा प्रमते

हू। नव ते दीनन दैम प्रम बन्स जटिर जिय।

नान।। तजि सर्य म स ब प्रान प्रब मोहि मेव

न रनि मान।। राग भैरव ताल ध।। चौपई।। स्वा

मि नदैम सनन सावदाई।। नाभा दास वरण

गोविंद कृपा नव जन निज जानि मनेडु ।। गा
गभैरव तालध रदो बेद ।। या विध करते हो
र ना स निज गुरहिं निवासा ।। रादत मं जल
राम नाम कछु काल विनासा ।। सं तन मे वा
रत कव वर मति विमल विकासो ।। भूत भवि
ष्यत वरतमान गति ज्ञान प्रकासो ।। दोहा ।

२सं २नि २प २पं २प २नि २सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं

रा.भ. द सुहावा । सुमन सुगंधि सकल विरचावा ॥

ता.त्रा. २प २नि २प २पं २म २ग २रे २सं २प २नि

देरा ॥ कनकासन पट आभरन सजत भक्त

२सं २रे २सं २प २नि २प २पं २म २ग २रे २सं

चित्र ॥ चोरा । स्थित मन भाव कर गहित स

२प २नि २सं २रे २सं

ज श्री विठ्ठन दै बीरा ॥ राग भैरव ताल । चौ

पई ॥ इत मुनि ध्यान लीन भगवाना । उत ।

सेवक इक वनक सहाना । नाम जहाज ढ्या

6

सिर नाई। गुरु समीप निज कीन निवासा। रो

म रोम उर हरष प्रकासा। मन बच करम भ

क्ति अनुरागा। इष्टदेव निज सेवन लागा। सम

य एक निज रुचिर शरीरा। मुनिवर प्रवरा

म मति धीरा। भक्ति निरत कछु भाव न दूजा

ध्यान लीन हरि मानसि पूजा। धूप दीप नैवे

रा.भ. जन कहुं कठिन काल अब जानी। राखि लेहु
करुणाय अगाहू। बल्यो जात अब सर उपका
रू। दीन नाथ बिनु कवन उबारा। अब भरोस
मोहि देव तुमारा। जब अस बिनय बनक व
र कीन्यो। गुरु त्रिकाल दरसी लव चीन्यो। ज
न कर देखि प्रबल डर काया। उपजी दीन

ज्ञत भारी। भानिरोय आवृत निय वारी। य
द्यपि करि अजास श्रम पायो। तद्यपि सोन नि
कट तट आयो। तब उवाच निज गुरु वरका
ही। लग्यो सुमार्ग वनक मन माही। दीन ना
थ जन संपति सारी। लगी निम राग होन हो
न तिय वारी। जो कृपाल निज सेवक मानी।

रा॰भ॰ नाभा चामर कर धारो। गुरुहिं नेम भाव ब

वन उचारो। कत न होउ त्व भगवन स्वा॰

मी। ध्यान लीन निज जन अनुगामी। गायो॰

घाल अव हूर जहाजू। महो प्रसाद नाम स

ब काजू। अग्र दास सुनि वचन सुहावा। ना

भा ओर दृष्टि निज पावा। बहरि ध्यान कम॰

घाल कहे दाया। फिरत रहे ललित नहि काला॰
गुरु वर ध्यान लीन निज माला। जन कलेश
वारन हित सोई। कूटो ध्यान माल थिर होई
दोहा॥ दशा देखि भगवान नहि वोहत दीन
वलाय। तद्यपि हरि पूजन स्थित भयो नाहिं
मनि गाय॥ राग भैरव ताल ।चौपई। तव।

रा.भ. करहु कथन कलि मंगल मूला। नाभादास बं

दि गुरु चरना। नमत विनय बदन प्रभ बरना

होत। भंजन कृपा निकेत प्रभ संत सजमग

ग ग्राम। करहुं अलप मति कथन कस म

पन सिंधु अभिराम। तव जान्यो गति होहि

तस तोहि प्रन भव सत भान॥ राग भैरव ता

ला पति चाहू। भये लीन मनि बर ब्रत थाहू।
करि पूजन षोडश उप चाहू। उठे नेत्र क॰
रि विनय जहाहू। अति प्रसन्न मानस प्रनु र
गे। वदन वचन मृदु भाषण लागे। प्रव तें
तम नाभा मन भावन। गुण गण संत मजन म
जग पावन। पाय मोर आसिष प्रनु कूला।

ग.भ. अस न देषि आसिष गुरु पाई। नाभा नेम्र चरन
सिर नाई। सावधान ह्वै चित चन लागा। भग
तन चरित चारु अनुरागा। कछु दीक्षा निज
गुरु वर लीनो। अन्यात कथन श्रवण कछु
कीनो। वंदित आदि देव गण नायक। विघ्न
हरन मंगल कल दायक। उर धरि चरन क्र

10

ल । चौपई । मोर न देस बचन बल पाई । अरु
प्रसाद संतन सिव काई । ज्ञान दीपि नव हृ
दय प्रकास ही । सरमहि सुमति कुमति सब
नाही । भयो होत जोई होवन हारा । बद रा
पानि सहयुग जन सारा । संत सजस गुण गा
म सुहावन । तोरे जानि परहिं सब पावन ॥

रा॰म॰ त समुदाय । भनी महात्म्य ताहि श्रव हनु मत॰
वरन हूं भाय ॥ राग भैरव ताल । चौपई । कथा
शुभ अद्भुत मन भावन । जास समर्णं भक्ति ह
रि पावन । संतन होहिं रुचिर हढ भाई । लो
क परलोक सकल सुख दाई । सोरठा । समय
एक मिथिलेस राम चंद्र करुणाय तन राजेतट

स भगवाना। सुमरत सेत सिद्ध सुर नाना॥ ग्या
न देव दिस देश नरीसा। सकल सनाय धरनि
धर सीसा॥ दोहा॥ भक्त माल वर ग्रंथ इह क
रि करि विवध विचार। नाभा लगणा यथा म
ती कथन करन निरधार॥ अथ हनुमनचरि
त्र॥ दोहा॥ सिर धरि पावन चरन रज विप्र मे

रा॰भ॰ उ श्री राजा। कच कुंचित जनु मधुप समाजा।

दसन पांति कर कांति नयारी। मृदि छबिम

क उंद कलि हारी। भृ कुटि कुटिल धनु इंद्र

लजाही। इंदु किरण इव हास सुहाही। चा

चिबुक मृदु रुचिर कपोला। कंबु ग्री मधुर

सुर बोला। श्रवण सुबद भुज दंड प्रचंड

जल धीम मेन वेध उपोग हित ॥ राग भैरव ता
ल । चौपई । चार इंदीवर बदन सुहावा । सु
भग बरन स्याम घन भावा । हृदय बिशाल
कंज नव लोचन । भुज आजान मान भव मो
चन । सुंदर अधर अरुन छवि नीके । नासि
क कलित कीर श्रीय जीके । चिर ललाट छवि

रा॰भ॰ नील हनुमाना। नल समेत परिवारन कीने।
बैठे राम चरन मन लीने। अन्य ललित सिष॰
सेवक जोई। निज निज रहे लाग सब कोई॥
सोरठा। नव प्रभ सभा मझार आवा दृढ बि
मान ह्वै सेवत प्रेम अपार भक्त बभीषण ले
क पती॥ राग भैरव ताल । चौपई॥ लीये

13

माल जयेति जनन मन मेडा। यनुष निषंगा।

पानि कटि मोहा। चित वनि चारु मनिन मन

मोहा। यज्ञो पवीत पीत तन चैला। वंदित ज

हि वरिंचि पति शैला। अस प्रभ राम धाम गु

ण स्वामी। वत्सल भक्त जनन अनु गामी।

लखन सहित सुग्रीव सुजाना। अंगद जाम।

रा० भ० गे। पुनि पुनि वदन सराहन लागे। इह स्वज

प्रति विचित्र मय कांती। अमल अमोल सु

ह सब भांती। अस बखानि रघुवीर सुजाना।

सन्मुख देखि दास हनुमाना। चरन निकट

निज लीन बुलाई। आय प्रणाम कीन क

पिराई॥ सोरठा॥ तब प्रसन्न मन हो दीन

पानि सुभ मंगल दाई। मरव रतन मय माल
सुहाई। धरणी सिंधु रतन गण जोई। तिन
कर मूल भूत जनु सोई। प्रेम भक्ति जुत मन
भाव आई। नम्रत सीस राम पद नाई। की
न उपायन सो नहि काला। अद्भुत अति वि
चित्र जोई माला। देखि राम नहि मन अनुरा

रा॰भ॰ नाहीं। नारि दमन कल बलि सावनाही। दे

खन लग्यो ग्रंथ तहि नीके। भये लोग सब

विसमित जीके। दिव्य अमोल माल बर पही

बन बर हनन कीन कस तेही। विसमय ति

नहिं निरखि हनुमाना। भाषन लग्यो मधु

र स्राव ज्ञाना। निज शुचि भक्ति जणावन हे

15

घाल कक्कणाय । तन रतन माल बर जोय ।
हनुहिं दीन पहिराय प्रभ ॥ राग भैरव ता
ल । चौपई । पहिरि माल हनुमंत बडभा
गी । राम चंद चरनन अनुरागी । बहुरि उ
तारि पानि निज लीनी । बैठि एकांत भल
हिं बिधि चीनी । तहितें मणि निकासि इक

रा॰भ॰ रन लागा। पावन जबहिं धरन पर डारी। मंजु
ल माल रतन मय सारी। पुनि भयो भनत वद॰
न हनु मंता। निश्चय बचन सुनहु मम संता॰
मजुल देह जबन इह धारी। भूत वरा वर क
हे अति प्यारी। मोहि परंत राम बिनु नामा।।
केवल जानि परहिं सब चामा। अस बखानि ह
16

तू। भयो कहत बन चर जलकेतू। मनहु से
त जहि बस्त मझारा। राम नाम नहिं निहारा
सो मोहि तीन काल प्रीय नाहीं। हो हिंन ग्रा
म चिन्ह जहि माहीं। अस कहि हनूमान व
ल गंजन। हमर मग्री दमन करि भंजन। रा
म नाम हंजत अनुरागा। तहि मै भलहिं निहा

ग·भ· गे। बार बार मानस अनुरागे। तव समान तव
हीं हनुमाना। भूत भविष्यत काहु न जाना।
सहृषा तोर भक्ति गुण सागर। होहिं न देव लो
ग सुर नागर। वपुरा मनुज कवन तव भाई।
तव मालात भक्त गुण गाई। जहि सुग्रीव राम
सन मेला। ग्रह मयोधि गति निदरि अकेला

नुमान सधीरा। कै निधडक निज तचा शरीरा

दीहा। शीघ्र करन उतारि नव सब कहे दीन

दिखाय। राम नाम रह्यो प्रत्र बपु रोमहिं रोम

समाय॥ राग भैरव ताल ३ चौपाई॥ हनुम

न चरित चारु प्रभ देखी। भये चकित सब

हृदय बसेखी। बहु विधि करन प्रशंसा ला

रा·भ· क सब जारी। अद्भुत करि बिचित्र निज भारी।

बहुरि आय रघु नंदन चरना। सादिर सिय ह्

तान सब बरना। सेत बंध आरंभ रचाई। द्रोण

सैल त्राण समर लयाई। रत्ना कीन प्राण स

हिराई। राम चंद्र सब शोक बिहाई।। सोरठा।।

इनते लेकर प्रान जेजे कीन अनेत तब उग्रक

18

॥ सीये मात अवेषण हेत । कीन विवधअ
म हर कुल केत । जगत जननि मन प्रति मे
भासा । जाय कीन मन हरषि हुलासा । अति
विचित्र दस कंध अगामा । भेज्यो विदत सक
ल बल धामा । अक्ष कुमार तास प्रिय प्रेमा ।
अति प्रचंड बल कीन वधेमा । देम विचित्र ले

रा॰भ॰ लीला। निकर संत सज्जन व्रन सीला। सकल लोक हंकार विभंजन। सर्व प्रकार भक्त मन रंजन। समय एक द्वारावति माही। कुस दे व प्रभु त्रिभु सोई। सोरठा। पारिजात द्रुमनाथ निज प्यारी सत भामकहे। विजय इंद्र संग्राम ल्याय दीन अभिराम प्रभु॥ राग भैरव ताल

19

रम हनुमान सो किमि बरणन जाहिं माव । र
ह हनुमंत चरित्र विदत पुराणन श्रुभवर म
ब विधि परम पवित्र मै बरन्यो संछेप कछु ॥
ग्रथ हनुमान चरित्रम । राग भैरव ताल । चौ
पई ॥ अब आगे सुनही हनुमाना । अन्य महा
त्म होहिं बाखाना । करहु श्रवण चकृत मन ।

रा.भ. हि लीला। मानत हृदय मोद भयो सोऊ। म
हेश मोर आज नहि कोऊ। चारु चक्र आयुध
कुल केतू। नाना मुर भुज छेदन हेतू। भयो
जलधि है कृत जनु लीना। कुसम घाल तिन
कर गति चीना। उपज दरप नकु अंकुर जो
ई। तिन कर हृदय नरत प्रभु सोई। भई न

२०

चौपई। तब सुग्रीव सुंदर मत भामा। अग्र

गएय पति कृता लिलामा। पाय कल्प द्रुम

मन अनुरागी। आपन भाग्य सरा हन ला

गी। मोह समान कौ धन्य न आना। अमति

न हृदय हरष सर माना। अह विहंग प

ति गरुड सुग्रीला। निज बल वेग जानि म

गा०भ० न छीया मन भाम डखी जुग जोरत पाना। मेरे

मनो हृदमे वचना रचना मूड कीन प्रवीन म

हाना। हे कहाण तन मै तुम कहे उत सहृग

त देखति हे कित आना। साच कहो मन की

गति नागर लोग उजागर श्री भगवाना ॥

चौपई। एह कस बात बनी सुर राया। मै दासी

छ कर जन अनुगामी। भगवन अखिल व्रा
व्र स्वामी। हनुमत भक्ति जणावन हेतू।
लगि करन लीला भव सेतू॥ सोरठा। करु
णा सिंधु अथाह वत्सल भक्त समूह सब
राजे गत उत्साह सतभामा सामीप तब॥
राग भैरव ताल । सवैया। देखि दसा भगवा

रा॰भ॰ वन नाथा। बोले भामिनि परम प्रबीना। जो मो-
हि तव उतमाह वरीना। देख्यो प्राणप्रिया त
हि माही। बालव चेत हेत कछु नाही। एक प
रेत मोर जिय प्यारी। पीडा विरहे भक्त निज
भारी। मरम भक्त मोहि मानस प्यारा। नाहि
न काडु सकल संसारा। पुत्र प्रद्युम्न मोहे त्रि

शुभ मन वच काया। जौन कहौ तज है निज

प्राना। तुम कहं कबहुं याल भगवाना। मै

श्रैसे देखि शुभ नाहीं। गति डत माह लोभ म

न माहीं। शुभ तव दर्शा देखि निज जी के। जी

वन लगत नाहि मोहि नीके। निजक्रीया का

र म्हड मे जल गाया। सुनत श्रवण शुभ त्रिभ

रा॰भ॰ हरमन नाम भक्त हितकारी। अस सुनि श्रव
ण वचन भगवाना। बोली वदन मंत भामा·
इहका वचन नाथ उच्चारा। ऐसो कवन घाल
तव प्यारा। कहों निवास कवन तहि नामा।
चलहो तहा वरन ब्रन स्यामा। मंदिर ताहि
सेग लै आवहु। नाथ होभ निज हृदय मिटा

23

य अैसे। नाहिन अधिक भक्त मोहि जैसो। सो

रहो। अरु मोरे निजकाय। अैसे प्रिय जिय सो

नहो जैसे भक्त प्रियाय मोहि लागत संस्हति

अधिक ॥ राग भैरव ताल । चौपाई। अति उ

त्वित्त मन पीडत देहा। सुमरि रजनि दिन

नाम सनेहा। मन अकुलाउं पाउं कब प्यारी।

रा॰भ॰ न सोच मन मांही। मैं निज नाथ भक्त हरषाई॰

ईंही भवन कल लेहु बुलाई। पै प्रेम वचन मो

र मन प्यारी। सो कहि परम भक्त व्रत धारी।

विन सिय राम रूप कवि आना। नाहिन नाथ

मन कछु प्रीय आना। परि कर जाप चाह ऋत

जोई। सेनन इह देव तहि सोई। ऐसे सर्व भक्त

बहु। सवैया। सोरठा। यद्यपि इह सब होय।
तदपि मिटहिं न कबहुं जे हृदय तो भ।
ग्रभ जोय तोमै जानुन एह वरज॥ राग भै
रव ताल। चौपई। सुनि मृदु गिरा वदन।
सत्य भामा। बोले अखिल लोक विश्रामा।
प्रीय याहि मै संशय कछु नाही। जो नव की

रा॰भ॰ केध दण्ड समर सम आव कुशल करि ध्यान॰
लखन सहित सिय भवन निज ॥ राग भैरव
माल। ।चौपई। सो अस पवन सवन गुण सा॰
गर। आवहिं रहो कवन विधि नागर। वै अस
व मन बहुरि पराई। सीया कैसे निज आश्रम
जाई। इह चिन्ता मोरे मन माहीं। मंदरि आन

25

सुख दाता। हनुमत जासु नाम बिख्याता। मा
धव गंध प्रभ गिरि गोहा। करहिं निवास दा
स गत मोहा। मोर सुमर्ण ध्यान नित लागेषा।
आन भरोस सकल परित्यागेषा। जान कि हर
न काल मे रामा। धनुष धारि वपु धृत अभि-
रामा॥ सोरठा॥ लिये संग हनुमान बिजन-

रा॰भ॰ जहि तें हृदगमत भक्त मम दीखि कुशल पुत्र सो

य॥ राग भैरव ताल। ।चौपाई॥ अरु जब शालि

लावन तन भेदा। मै डर मानि तासु श्रुति बेदा

बिथत अचेतन धीर गत भयऊ। नाहिन सुधि।

शरीर कछु रहऊ। तब यहि निपुण भक्त ह

नुमाना। रक्षा कीन लावन प्रीय प्राना। राज

76

हेत कछु नांहीं इहि मै सुनहु ललित बतया

री। अग्र गन्य पति देवन तरनी। गाम सरूप

रुचिर प्रीया जोरी। मै प्रवीन नहि यारन को

री। जान कि परहि कवन पुनि देहा। इह।

प्रनि हृदय मोर संदेहा।।दोहा।। रुकमनि

वनहि कि तुम बनी बिनु तुम बनहिन कोय-

रा.भ. ता परि हरौ हो। जान कि कवि चुप मै परौ हो।

त्रिभुवन धनी तेरा तव जाई। आपन निज ए

२७ भक्त सब दाई। लेइ बोलि निज भवन इला

मा। हो हिंन कबहुं लोभ उर नामा। श्रीय म

व सनत कुल मूढ गाथा। हृदय समता।

कीन वित नाथा। आय गरुड श्रम भाषन।

बकुलकर भयो सहाई। अति उपकार कीन
कपिराई। दोहा। तव तें निश्चय नाहि मन मो
रे राम बिनु ज्ञान। जानत नाहिंन होहिं कौ
यद्यपि मोर समान॥ राग भैरव ताल। । चौ
पई॥ सुनि मृदु बचन रचन भगवाना। बो
ली बदन ललित मन भामा। दीन घाल बि

रा॰भ॰ तब वेग झलासा। कहु इ आय द्वारिका मझा,

रा। जानकि सहित राम अवतारा। तब दर

शन इच्छा मन माही। अस कहि ताहु वेगव

ग माई। सेग लिवाय आय मन मोरी। कबहु

जनाव अग्र गति होई। हनि प्रभु साम वदन

। भगवाना। शीघ्र कीन तब गरुड पयाना॰

28

लागे। बंदि सरोज चरन प्रभु रागे। कहिये। दीन घाल प्रभु मासा। बोल्यो कवन काज। निज दासा। रमा नाथ सुनि गिरा सुहाई। क रि अनेक विधि नाथ बडाई। बोले मनज भूपा ल पति नागर। पवन पुत्र मम भक्त उजाग र। मोदन गंध शैल सुचि वासा। तहां जाय

ग.म. छेदः॥

१

४

बहुरि चक्र मन गिरा सहूला। बोले कलत

हूल सत हूला। ग्रावत ताहि भक्त मम।

प्यारा। रहइ तिष तव ग्राश्रमद्वारा। मेरा

रा॥ हनुमान जब ग्राव तब तत·तण मो

हि चक्र तव पूर्व करहु जनाव पाछे लाव

हु ताहु जन॥ इति भैरव राग भक्तमालपरि

रा॰भै॰ न दामनि इति मंदिर मध्य चारी ॥ इति
प्रेतरा ॥ इति सुंदर मंदिर जिंह धर्म स
भा भास रही विद्वजन विविध न्याय।
दाय देन हारी ॥ बालनिधी केबुकेज
प्रपर हाथ गदा चक्र परम भक्त भूमि
पाल पीर हरै मारी ॥ इति प्रभोगाः ॥

अथ गदाधर ध्रुवपदम राग भैरव ताल
चार ।१। कौमोदकि धरण हरण स
कल कलुष भक्त जनन श्रवण मन।
न धारि कारि दर्श हर्ष भारी ॥ इति
अस्थायी ॥ रतन जडत मकुट त्रिक
ट कुंडल युत झलक रहो पीत वस

ग॰भै॰ दीम नदर दानी । यालाली याली याला लोम या

ला लालाले लोम् यालाले लोम यालाली याले

दिर नोम् नोम् ननाना नोम् नाना नानानाना

नादिर दिमँननाना दिम नान नाना दानी ॥ राग

भैरव मादरा नाल । । वडे रघुवीर रघधीर गड

लंकको मंगलक्रमन वडे धनुष धारी । पग

२

नरवन वैठके इन मिल काज । गाइन गुणीओं न
नर वहीलका सभ सषी ग्रन मिल करत जबबस
दरेरा मिल गाऊ वजाऊ तोन नेहूर मदील तोसा
ज ॥ रागभैरव नताला ताल । । दानी उदे ना
ना दिरना दीम दिम तना ना ना ना ना ना ना ना
दीम दानी नादिर दिर तम दिर दिर तम दिरदिर

रा॰भै॰ झूना विसाज पीआ सरूप सावेरे ठाडे नैननमें भ

रे ॥ राग भैरव टोना ताल। । टोना कामन

3

कर समझावो काहू देसना जावरे ॥ जेव मे

व उार सावोरी हकेनिको पीआ घर लावरे ॥

इति राग भैरव लोरी झूलना समापतम ॥

दल ग्रह माहो जोधा वली लीये एकते एक बल

अधिक भारी । सेस परती पस्यो सूरवादर ब्ब

पिते हाथ पैकोन लीये पकोरी । दोर वज्र ओर

जव मार लंका लई सकल संसार जैजै प्रकारी

जन ॥ नवेली अकेली चली स्याम सथ मानी

संसार जाये । गागर भर भर धर आवे मोरा क

ग· भै·

२ग २रे २सा २ग २म २म २प

खेति मारी ॥ इति थ्रेनरा ॥ अत्यद्भुत देख

२प २प २म २ग २रे २ग २म २प २प २म

नृप सभा सकल चकित भई नमोनमो

२ग २रे २म २प २प २म २ग २रे २सा २म २प २नि

वाणि देव गर्भ नव उचारी ॥ शूकरतनु

२सा २रे २ग २म २ग २रे २सा २नि २प २प २म

है प्रसन्न ब्रह्मिमोक हृदयरे हैमनेत्र

२ग २रे २म २प २प २म २ग २रे २सा

मार भूमि करी रदन धारी ॥ इत्याभोगः

इति शूकर वतार ध्रुवपदे ॥ ॥

4

अथ चतुर्विंशति अवतार ध्रुवपदानि रा

२ग २म २प २ध

ग भैरव सूकर ताल चार ।१। विश्वेश्वर वि

२प २म २ग २रे २ग २म २ध २प २म २ग

ष्ण करण इच्छाधर स्वर जोहि नाभिपद्म

२रे २म २ध २प २म २ग २रे २सं

मम बैठ चिंताकरि भारी ॥ इति अस्थायी

२म २ध २नि २सं २रे २ग २म २ग २रे

भूमि को अभाव देष छींक भई नाम नि

२सं २नि २ध २प २म २ग २रे २म २ध २प २म

कस सूकर इक स्वल्प बड्डर वड्यो क्षि ।

रा॰मे॰ इति श्वेतरा ॥ शंख चक्र पद्म गदा बाण
धनुष खड्ग आदि पार्षद सभ आस-
पास बसै मूर्ति धारी ॥ जगत जीव-
परम भाग्य उदय कस्यो श्री न्रपेश-
महाराज जिस विकुंठ पुरी अपर सा
री ॥ एसै उपकारि धर्म धारि चिरंजीव

5

राग भैरव ताल चार। ४। रघुनंदन।

चिदानंद कंद समन रंजन नित द

र्शन जिह सकल विकल ड:ख दल

न मारी ॥ इति ग्रस्थायी ॥ थारी जहो

परम जोत रूप के अनेक रूप द्वादश

लाख गंडकि नदि जान शिला भारी।

रा॰भै॰ करहिं शोचि थरैं सारी ॥ इति ग्रेतरा ॥

6

परमात्मा आत्म मध्य माया जिम वास
करै राम लछन मध्यवर्ति जानकि दि
प नारी ॥ परम प्रबल पवन सुत ह्वा
रदेश नामजपैं महाराज नृपति सुभ
ग सदा विजय धारी ॥ इति आभोराः ।

अथ श्री रघुनाथ ध्रुवपदम राग भैर
व ताल चार।४। जेहु पुरी रक्ष कर
ण हेत धनुष करहिं धरैं श्री राघव।
नाथ सिया लछन युक्त सारी ।।इति
अस्थायी।। दूर्वा दल श्यामवर्ण स्वर्ण
मुकुट भृकुटि तिलक हाटक के कटक

ग.मै.

रहैं कली कलुष हर करण सदासद

विहारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति रघुनाथ

ध्रुवपदम् ॥ ⁘ ॥

रा॰भै॰

सी गोकुलचंद। कंचनको दोयम गडाये नगन जडत बहुरंग। आनंद भये नंदजीके दुआरे मेवा मेवा लियाई मालन। कुसल कवरने जन म लीयोहै नंदमहर घर पालना। रागभैरव जगलछंद ताल। । तेरो अटल रहीलो राज पियारे महमद शाह पीया जमजम नित नित

गगभैरव लोरी नाल । । लोरी लालको देहू

माई कवको दोडी दोडी परवाऊ । कुनकित

कुन कार गाऊ बजाऊ अगार वेदनका फूला

फुलाऊ । लालकौ देहो सषी सभ लोरीओ ॥

अगार वेदनका फूला फुलाऊ रेशम दीओ वरे

डोरीओ । फूलना । नवल हेदोर ना माई फूला

२ पि १ मे २ गे १ रे १२ गम २२ गरे २ से

ग.रु. रि हरै दिशातो मम सखियम। २। दर गदारिक

जासहि पद्माभी परशु शूल शिवतो ऊषा पाश

कैः उमहरण व सकेटि कयेवितो हरिहरैः

दिशातो मम सखियम। ३। सभग केद्र शिवावे

डि शिरोधर छवि महो दर केयर रोविषोम

घन जत्रु समनन्त वलसो हरिहरै दिशातो।

अथ हरिहर वरिक्रम ॥ राग भैरव ताल ॥ गी·

नि सं नि प सं रे ग म ग रे सं ग म प

जलधिजा गिरिजा समले कृतौ विदित मा

पं पं प म पं ग म ग रे सं म प नि सं नि प

र कुमार समद्भवौ विहित वारण वाण महा

पं म ग रे सं सं रे ग म ग रे ग म ग रे सं

प्रियौ हरिहरौ दिशतां मम सप्रियम् ॥ १ ॥

सं नि प नि सं सं रे ग म ग रे सं सं ग म प पं म

सजल नूतन नील पयोधर रजत रम्य म

ग रे ग म ग रे सं म प नि सं सं रे नि सं नि प प

हीधर सन्निभौ मदय भक्त निरीत चंद्वरौ ह

ग.२. तो मम स्वस्थियम ६. भ्रमित कुंतल पिंग कप

र्दकौ जटिल केश पिशंग जटाधरौ मरम ।

विक्रुण धूम्र शिरो रुहौ हरिहरौ दिशतो म

म स्वस्थियम ।७। भुजग राज मृगेंद्र महाजि

ना सनशयौ शरणा गत वत्सलौ स्वरवराभ

यदान विधायिनौ हरिहरौ दिशतो मम स्व

मम स्त्रियम ।४। सुरभि चंदन भूति विभू

षितो कनक कंकण पन्नग कंकणो कमन

कांचन कुंडलि कुंडलो हरिहरौ दिशतो म

म स्त्रियम ।५। प्रथित पीत पटोरु दिशे

बरौ मदव प्रांशुक प्रांशि धुनि संदरो वि।

यिकृते धृत शंबर मूर्तिको हरिहरौ दिश

गी·टी· १० तरल मौक्तिक पन्नग हारिणी शुभ चन्दे

श दोर्वन धारिणी कनक कांच्यहि युक्तटिहा

रिणौ हरिहरौ दिशतो मम सुश्रियम् ११ म

धुकरो चितया वनमालया विलसिता स्त्र

याश्रिय ऋवाखजा उरसि जृंभितया पिकशो

भितौ हरिहरौ दिशतो मम सुश्रियम् १२ प

श्रियम् ८ कृत गजेंद्र महेंद्र विमोचनतोणौ कम-
ल कल्प लसच्छिवि बीजतोणौ हृदि पवसर।
हृपनिरीक्षणौ हरिहरौ दिशतां मम सुश्रिय
म् ९ विविध रत्न किरीट मदोल्लस ज्ञव नि-
शाकर शोभित शावरौ विशद नेत्र युगावि
क शोभिनौ हरिहरौ दिशतां मम सुश्रियम्

4

रा॰ह॰ जनकराज महीधर राजयो रचिसमाज सदी
न करो बुझै अपिलवाय भयो जेगदी सघैौ
हरिहरैौ दिशातो मम स त्रियम १५ अविदि
नारि मनेत नयो शातो भम दनेक जगजानि
न त्रियेअभिमना मनतु नत माखिनो हरि
हरैौ दिशातो मम स त्रियम १६ स निगमा

द पयोज समन्वितया जटा वनतटी परिरं
भित याख्या दिवि भवापगया प्लुप लादि:
नौ हरिहरौ दिशतां मम स श्रियम १३ घ्रां:
म द्रमोक नरात्म विचारिणौ सकल लोक
समस्थिति कारिणौ जलधि भूधर राज वि
हारिणौ हरिहरौ दिशतां मम स श्रियम १४

गा. ह. उदपि देवनदी रय रोयकौ सकल तत्व स

नातन बोयकौ स्कत निजाल्प जनात्म वि

प्रोयकौ हरिहरौ दिशातो मम सु श्रियम् १०

नियति पूर्वक बुद्ध चराचरौ तदनु कूल

कृतात्म सरामरौ नियत संविड पात्र प

रापरौ हरिहरौ दिशातो मम सु श्रियम् ११

गम गीत गुण लोवौ प्रकृति निर्गुण वास्त

व रूपकौ श्रुति शिरः स्तुत मौ भग शालि-

नौ हरिहरौ दिशतां मम स त्रियम् ९ म

र मद त्रिपुर स्मय हारिणौ मधु मदांध न

रांधक दारिणौ स्मर यम स्मर मौख्य विधा-

यिनौ हरिहरौ दिशतां मम स त्रियम १४

गा॰ ह॰ श्लियम १३ सकल करई साव त्रिपुटी परै।
मद मदात्मक संस्कृति मात्तिएगे। अबसम्पः
त्रय त्रय्या पदातिगो। हरिहरो दिगांतो ममः
म श्रियम १४ विलस दत्त मया दिवि लव
णो करणमानम बुद्धि परे वरो। हरिहरो
दिगांतो मम म श्रियम १५ उदित विष्ठ वि

6

हृयत मान हृगा हृर रदनसा । मपि महर्षि

हृवा त्मवतो गिरो । अविषये महिमान म

पागतौ । हरिहरौ दिशतां मम हृ श्रियम्

कृति मतौ विह पंचभि रिंद्रियैः । रन गता

न्म तया रव पूर्वकान् । विदयतौ विषयान्

अपितात्मकान । हरिहरौ दिशतां मम हृ॰

गं.हृ. वदेषु शास्त्रि श्रुति विबध लाति मति प्रफल

त्मम चित्कलौ मणि दिवास्य परे परि वाय

कौ हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियम् २८ स

म पहाय बुधैः श्रुति नेतिने त्युरूपदैः परि

हृश्य मशेषकं स्वहृदि निश्चित शाश्वत त

त्वकौ हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियम् २९।

7

कल्पविकल्पवैरौ। तदपलापपटुस्वनिरीक्ष
तौ। परमतत्वविकाशविचक्षणौ। हरिह
रौ दिशतां मम सच्छ्रियम २६ मदविदन्वा।
विबोध स्वभावात्मकौ। हरिहराव्ययमापि
कविग्रहौ स्फुरित निरूपित केवल चिद्गतौ।
हरिहरौ दिशतां मम सच्छ्रियम २७ मद

ग.२ विगतभेद तयोर्ह्लसिते ऽधिके मनसि तत्व

8

मसी त्युरु वाकात: कविभि: शकलितै का

मतो निज। हरिहरौ दिशतो मम स श्रियम् ३२

प्रतिदिन मघमीह ये पठंति हरिहरयो स्त

व महत्वना त्मभेदा: स्तव मचिर मिहार्थ्यतो ऽ

भिदोस्ते विगलित भेद विभावना भवेति स्त

जल तरंगक रज भजंगम । गगन पुष्प वदा

हित विषकौ । अति विरुद्ध तथापि निरंजनो

हरिहरौ दिशतो मम सुप्रियम् २॰ अवि दि

तो विषयो न्मृग तृष्णया परि मिमी लितबु

द्धि विलोचनैः उपगतो वपि नित्य मलादि

तो । हरिहरौ दिशतो मम सुप्रियम् । २॥

रा० हृ० परिभूयते २५ ॥ इति हरिहर परिच्छेदः ॥

9

त यन मतिमान व्रूहयेयो। प्पारि परिवार

जयाय जेत्र कामः। परिषदि विङ्घो वि

जेत्र कामान् पठति समस्त सवैति सर्व।

मेतत् स्थ पठति यो विहिता चरणो स्थि

तो नृपति गोष्ठ जय त्वरि मेजसा स विष

ये रिव पंचभि रण्याधो नहि कदा प्पारिभिः

गा॰ दे॰
७

उधोजे पद सेवत वीते कल्प जगासो ऊबजा उरला वनरे। ज्यो स्वाद ब्रजलोकमें नाही सोऊवरी स्वाद पावनरे। संगारे ब्रजको राज दीयोहै हमे लखिजोग पढावनरे॥ ऊमरी॥ हरी मारमोरनीर लीयो नव नै भवन नही भावनरे। गावै ग्रदरमे कहे याकी सोवस कवहुन आवनरे॥ ऊमरी॥ तेरीवात ग्रपरं

गुण गावै देव शास्त्र गुमरी परिछेद मांहे नाल। ३। सो

ब राजी होहै जामो प्यारो जान। रन मानी परमानंडी

आया झूठो करी क्षो बखान। प्रकट प्रकार करीके

क जरा पीकलोक अपरान। इनमें झूठ नहीं नि

ल जी काई रंगीला शीनमरी ज्ञान॥ राग देवशा

ख गुमरी माल।३। कवन बचन विलना वने॥

रा.गं.
ठु.

2

गैरे ज्ञान करो भव पार परीरे । प्यारेरे करुणा सा
गर निज पालो सब मेसारेरे । पैसे मधु सूदन सदा
रैरे ॥ रागा गंधार ठुमरी ताल । ३ ॥ मोरी गली पाय
फेराजो ह्रोमोरी ग० ॥ ह्योंयो वछकर आपमोरे
वालम लोक जाने अमरावह्रो ॥ ठुमरी ॥ नईलग
न ह्रम जानीरे ॥ जो तम रसीयां वोली वोलो तम

गं.
२

पार। अत प्रचंड जिन राख्यो है ब्रह्मंड शुद्ध जोति निरं
जन निराकार। जाकौं कोउ न पायो पार। निगम
गावै पार न पावै ब्रह्मा महादेउ वरै। ध्यान धरै जाको
पंचानन श्रीपत जश अत प्रभै भक्त दातार। मन
राम कृस्न राम कृस्न ध्यावे सोई। महाजप करवे
वे हरि प्रसन्न होवेंगे। मन वच क्रम सों याद क

रा॰ गं॰
ठु॰

3

उमगौ उमगौ आवै गोरीयाजीयाराहमारहो ॥
कहा करूं कछु वसनहीं मेरो तनकारो मन
पीय राहमारहो ॥ हमानंद रुकत नहीं रो
के मोही लीयो हेमरहीय राहमारोहो ॥ इति
राग गंधार ठुमरी परिछेदः समाप्तः ॥

हूंते नाथ मये नीहो ।। ठुमरी ।। मैं गावैं नहीं जई

हूं राम । जो गावैं ने की बात बलैहै नाथ रटौना चलै

हूं राम ।। राग गंधार ठुमरी ताला ३ । कारीरे बदरी

या राम कैसी उमड आई । सावन की रित आई पी

या मिले बन थाई ।। अरे बहे परबै आमन भावन

बिना सजना मे दिवाहो राम कैसी ।। राग ठुमरी ।।

९

११

गा॰ पो
८.

ट मेवन वीने कल्पजगामी अवजा उरला वतेरे ॥
ज्यो सबे ब्रह्मलोकमें नाही सो अवधी सबे पावत
हे। मनारे ब्रजको राज रीपोहे इमे लखि जोगपठा
वतेरे ॥ ठुमरी ॥ हरि सबे मोरतोर लीयो तबते
भवन नही भावतेरे। गावे गुदवमें कहे याकीसो
बस कबहून आवतेरे ॥ ठुमरी ॥ तेरी गान श्रपरे

अथ राग गंधार ठुमरी परिछेद माझ ताल।३। सोच

राजी होइगे जाग्यो थ्यारो जान। रनमानी परभातडी

आया झूठे करो क्यो बखान। प्रकट प्रकार करी

केक जरा पीक लोक अथरान। इनमें झूठ नही

तिलजी काई रंगीला प्रीतमरी आन॥ राग ठुम

री ताल।३। कवन वचन विलमावनरे। उयोजे प

रा॰टो॰ डोंट सौं खर समसौं मान मनाइये । इतिस्थाये । नन
न ननुम् दिर दिर तोम् तदीम् तदीम् नादिर दिर दि
र दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तोम् ततोम् उद त
हनु कुतनं यलल यलल लं लाइये ॥ इतित्यरा ॥
अथआभोगः ॥ सानिधपमगरे सासारेरे गग म
म पप धध निनि ससप ससप सधाइये ॥

2

त्रयताल: । कट कंकन ऊपरीमाथा २ दीताल: वप

क: । स्रुतिमैथा म्रुतमैथा । संगीत ताल ॥ तत्त

त गुरु रामानंद चरण सरण उद्धार परमानंद

कंदे इति ताल प्रबंध: ॥

चतुरंग ताल ॥ २ ॥ चतुरंग गाइन गुण गाइये गा

इये रिझाइये रघुनाथकों स्वर ग्यान तालसें राग

रा दो॰ पधमगरी गमं सगरी सगरीसा सरिसग सरिगम

गसा धरमा। इत्यंतरा। अथआभोगः ॥ अमवारी

विपरीत पंचताल। पीमधुं रस हंकार श्रीतज सर

ना क्रमना। गीनताल। डुम डुम बटा डुम डुम ब

टा थारी गिर गिर चंग थारी गिर गिर चंग ॥

धमालतारः। कनन कनन कन मन मेवः ॥

रागिनी टोडी प्रबंध ताल संगीत ॥ परमानंद
कंदे सिरी समरे स्वर वित मधुर विमकरंद प्रे
ट समान सम्यक निर्मलंका कलश मठ मगरी वेत
न कलानयना चला। इत्यध्याये। अथ सम ताल प्र
मवारी श्रीमत ककुरा वरस कलोल कला पंचमवो
ताल मवला सकला दरकंपपनि ब्रह्मताल। ६७

पधनि धानिसा सानिधा निधपा धपमा पमगा

मगरे गारेसा ॥

भैरव राग चारतार सरगम (बड्डांश धानिसां

रे गामपाधानि सानिधपा मगारे गारेसा ॥ अंत०

मपाधानि सारेसा गारेसानि धपमगारेसा ॥ भो

ग० ॥ सारेसा सारेगारेसा सारेगम गारेसा सारे

गमपमगारेसा सारेगमपधापम गारेसा सारेगम

पधनीधपम गारेसा सारेगा रेगम गमपा मपधा

धनी निनिसानिसा ।। सासानिसासा निनिधनिध ध

धपधप पपमपम ममगमग गगरेगरे रेरे सारे

सा सोई गुरुण मनमान ध्यान धरें ।।२ ।।

रागभैरव ॥ गांधारांशसरगाम चार तार संपू० गाग म

गरेसा सामगापनि धपमप मग मगरे गरेसा ॥

गमपा धसारेसा निनिसा निनि धसा सानिधा निनि

धप धप पम पपमग मम गारे गगरे सारेसा ॥

सप्तस्वर संपूर्णमें यांसर गमविचारी सासारेसा

रेरेगारेगा गगमगम ममपमप पपधपध धधनि

क॰
रा॰म॰

ईससीस मथ विराजत त्रई लोक पावन किए जीव जेत खग
म्रग म्रर नर मनि मानि। तीन सैन प्रभ तेरी प्रसतत करैं न्हदा
ता भक्त जननकी म्रक्तकी वर दानी॥ अथ महादेव वंदना
राग भैरव॥ चौतारा॥ महादेव आदि देव देवादि देव महेश्व
र ईश्वर हर। नील कंठ गिरिजा पति कैलास वासी शिव शंकर
ग म ध प ध नि सा नि ध प म ग रे ग प म ग रे सा नि ध नि सा सा रे ग म ग रे सा॥ म ध नि सा नि
ध नि सा रे सा नि ध प म ग रे ग प म ग रे सा सा सा रे ग म प म ग रे स॥ ॥ ग रे सा नि ध नि स रे
स नि ध नि सा रे ग म म ग रे रे ग म प म ग रे स॥ म ध नि स नि ध नि सा रे सा नि सा रे सा नि ध प म ग रे

4

गणेश । तान सैन की दीजे कृपा करी छत्तीस रागणी नाल लय

संगीत मन सो होय कंठ प्रवेश ॥ अथ गंगाजी वंदन ॥ राग

भैरव ॥ चौताला ॥ जै गंगा जग तारनी जग जननी पाप हरनी

वेद बरनी वैकुंठ निशानी । भागीरथी विष्णु पदा पवित्रा त्रि

पथ गा जान्हवी जग पावनी जग जा नी ॥

रे सा ॥ म ध नि स नि स स रे स नि ध प म ग रे ग प म ग रे स ॥ ॥ ग म प

ध प म ग रे ग म म प म ग ग रे सा ॥ सा नि ध नि सा सा रे ग म प म ग रे सा ॥ म ध नि सा

नि सा नि ध नि सा रे स स नि ध प म ग रे सा सा रे ग म ग रे ग म प म ग रे सा ॥

क॰
रा॰ स॰

सुघा गभस्ती मान भानु दिवाकर जग कारज होय तेरे हा
थ। ज्ञान ध्यान जप तप तीरथ ब्रत संजम नेम धर्म कर्म सब
उदै होय सनाथ। तानसेन पै प्रभु कृपा कीजिए राग रंग सु
रन सौं निसिदिन गाऊं तेरो गाथ॥ अथ परब्रह्म वंदना॥ रा
ग भैरव॥ ताल चौताला॥ निरंजन निरंकार परब्रह्म परमे

प म म ग रे ग म ग रे स स ग म नि ध प ध प म ग रे स॥ ग म नि ध नि ध प म प ध प म ग म ग रे स ग म प
म ग रे स॥ ग म ध नि स रे स ध नि स नि ध प ग ग रे स ग म नि ध प ध प म ग रे स॥ ॥ ॥
ग म प प ध प म म ग ग म ग रे स

भोला नाथ गंगाधर । रूप बड़ रूप भयानक नाथ बाघंबर
अंबर खपर त्रिशूल कर ॥ तान सैंनके प्रभु दीजे नाद विद्या
संगात सो गाउं बजाउं बीन कर धर ॥ अथ सूरज वेदना ॥
राग भैरव ॥ चौताला ॥ जै सूरज जग चख जग वेदन जग
ज्ञाता जगत करता जगन्नाथ । आदित्य सविता अरक खग

म रे ग म ग रे सा सा रे ग म प म ग रे सा ॥ ग म ध प ध नि स नि ध प म ग रे ग म ग रे सा नि सा ॥
म ध नि सा नि ध नि स रे स नि ध प म म ग रे ग म म ग रे सा रे ग म प म ग रे सा ॥ ञ ॥
ग म प नि ध प म म ग रे ग म ग रे स ग म म प ध प म ग रे स ॥ ग म नि ध नि स रे स नि ध

क०
रा०सं०

थेरे ॥ अथ अनंतदेवताके वर्णन ॥ राग भैरव ॥ ताल चौताला

अनंत अहोंडके नायक परे अलख श्री श्री थेर महाराज। कृपासिं

धु भक्त पाल सबे करन कृपाल गरीब निवाज। येह विनती

सुन लीजे तेरो अंत नहीं तु अनंत पूजे तोहे वंधे भजे परे जा

पडुरव भाज। वैजके अंम आदि अलष अगोचर निरंजन निरंकार

निस ॥ ~ ॥ गमपधप मगममगरेरेस निधरेस सरेगमप मगरेमस ॥ मपध निसस धनि सरिसनिध

पमगरेसस ॥ गगममधपधनिस निनिध पमगपमगरे सनिध रे सरे गमगरेस मधनी सनिधपॅमगरेस ॥

मधनी सॅसॅ ध धनी स रे सनी ध पपम मगमगरेस

स्वर एक ही अनेक होय याको विस्वंभर। अलख जोत अविना

सी जोती रूप जगतारन जगन्नाथ जगत पति जग जीवन जे

गधर। वाहिमें सब जीव येते सुर नर मुनि ग्यानि नाभ

कमल ते ब्रह्मा प्रगटायो श्रीमत रूप मन्वंतर। केहवे स्व व

ही ब्रह्म वही विराट रूप वही आप अवतार भए चौवीस वपु

नि स नि स रे ग रे स म प ध प म ग ।। म ध नि स रे स रे नि ध ध प म ग म ग रे स स ग म ग रे ग म प ध

नि स र स नि ध प म प ध प म ग र ग ।। म ध नि स स रे स नि ध नि स रे ग म रे स नि ध प म प ध नि ध प म

ग रे ग म म ग रे स नि ध नि स र ग रे ग म ध नि ध नि स र स नि ध प म प ध नि ध नि स नि र स स नि ध नि ध प म ग रे स

कं
रा॰ सं

कृपाल दयाल भक्त वत्सल मदन गायके नित जिय आस ॥

राग भैरव ॥ चौताला ॥ विस्नु चरण जल ब्रह्माके कमंडल

शिव जटा राजत देवी गंगे । भागीरथी जू सकल जग तारनी

भूम भार उतारनी प्रन चन वेली कटा लनके तारन तरंगे ।

हरिद्वार प्रयाग सागर वेनी त्रिवेणी सरस्वती विद्या देनी करन

सनिधपममममगमगरेसमधनिधनिसनिधपमगरेस ॥ ‒ ॥ गरेसनिधनिसरेससनिधसरे

गमगरेरेगममपमगरेस ॥ मधनिससनिधनिसारेसनिधपमगरेगमगरेसासानिसागमधप

ममगरेरेगममपमगरेस ॥ गमधपधनिसनिधपमगरेगमगरेसासानिधनिसासारे

ध्रुपद पुस्तक ३८

भक्त काज कोटि कोटि रूप धरे सेतन सिर ताज ॥ राग भैरव

चौताला ॥ माधौ मधुसूदन मकुंद मुरली धरे माव मोहन म

उहुलास । कमल नयन वासुदेव परब्रह्म परमेस्वर विस्व स्व

ने आस । नारायण निराकार वनवारी वामन विठ्ठल शंख

चक्र गदा पद्म सोहत है पास । पतित पावन विरद जाको

मधनिनिससरेरेसनिधपमगरेस ॥ ॥ गमधनिधपमगमगरिसनिधनिसरिगगमगरेस ॥

मधनिसनिसगरेसनिधधपमगमगरेस ॥ मधपधनिसनिधपमगमपमगरेनिसससनिध

निससगगस ॥ म म ध नि स स स रि

कं
रा·स·

प्रभु उदै जगत कपाट कपाट खुलत दीजिए विद्या कृपा निधान

राग भैरव ॥ चौतारा ॥ चंद्र वदनी मृग नयनी ना मथ नार का

गंगा उतरी कालिंदी इह विधि डोरे बनाय कोनी तिर वेनी। कु

टी पोन कंठ दीपक नाद की जोत होत तामें राग प्रगट सरस्व

ती मिलि पुन नैंनी। सुंदर रूप अनूपम सोभा त्रिभुवन पाए

स ध नि स नि ध प म रे रे ग म प ध म ग रे स ॥ ॥ ॥ ॥ ग म प ध प म ग रे ग म ग रे सा नि ध

नि स स रे ग म ग रे रे ग म प म ग रे स ॥ म ध नि स नि ध नि स रे स नि ध प म ग रे ग म ग रे स स रे ग म प म ग रे स ॥ ग म

ध प ध नि सा नि ध प म ग रे

१२

दुख भंगे । धीरज के प्रभु नम रोग दोष हर करो पाप हरो निरम
ल करो यह त्रंगे ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ प्रभाकर भास्कर दिन
कर दिवाकर भान प्रगटे विहान । तेरे उदै ते पाप ताप छूटे कर्म
धर्म प्रेम नेम होय गुरु ज्ञान औ ध्यान । जगम गान जगत पर
जग वंद जोती रूप कश्यप सुत जगत के प्रान । तान सेन के

ग म ग रे स ॥ म ध नि स ध नि सा रे स नि ध प म ग म ध नि स नि ध प म ग रे स ॥ ॥ रे स ध नि रे स ग
म प ध प म ग रे ग म ग रे स ॥ म ध नि ध स ध नि रे स नि ध प म ग रे स ग म ध प म ग रे स ॥ ॥
ग म प ध प म ग रे स ध नि स ग म ध प म ग रे स ॥ ग म ध नि स

क॰
गा॰स॰

तेही नीच तेही है सबहीन के बीच तेही चंद तेही दिनेश । तेही
एक तेही अनेक गुरु चेला तेही प्रलैरव बैजू बावरो तेही सद्गुरु
दाव तो हि नै कटत कलेश ॥ अथ श्री भगवान के वरनन ॥ राग
भैरव ॥ चौताल ॥ प्रथम उठ भोर ही गाये हरस कहो मन यासें
होवे सब सिद्ध काज ॥ यह लोक पर लोक के स्वामी ध्यान धरो

स स ग ग म ग रे ग ग प म ग रे ग रे स स स स म म म प प प प नि प म म म ध ध नि स स स स स नि नि स स रे रे नि
स नि ध प ध ध ध प ध प म प म म म नि ध स स नि ध नि स रे स नि ध प प ॥ [illegible] ॥ ग रे स नि ध नि स स
नि स स रे ग म म म ग रे ग म ग रे ग रे स ॥ म ध नि स स स रे स नि ध प

13

ताप हरनी करन सुख चैनी। तीन सैन को करो निरमल त

महाता भक्त जननकी वैकुंठ कीने सैनी॥ राग भैरव॥ चौता

ल॥ प्यारे तेही ब्रह्म तेही विस्न तेही रुद्र तेही शिव शक्ति ते

ही सूर्य तेही गणेश॥ जल स्थल पवन पानि तेही तेज

तेही प्रकास तेही अग्नि तेही जोति तेही सुरेश। तेही अव

गमगरेसनिधनिरेसा॥मधनिसाधनिसरेसानि धपमगरेगमगरेससरेगम पमगरेस॥ ॥

गगममनिधपपममममगरिमम गगरिससगममगरिममपमस॥ ममनिधसससससनि निरे

रेगरेरेसनिधपपममधपधरेनिनिधपपप॥ धधपध

कं
रा·सं

तन मन रोम रोम व्याकुल भईरी जीन लिए गंधर्व नारद मुनि
गुनि। बैजके प्रभु नर नारी पशु पंछी मोहे और मोहे सुर नर
मुनि॥ राग भैरव॥ चौताला॥ मोहन सबके आधार तनकों
अब राख लीजिए गोपाल। नैन प्रान सुख दीजे तनतें दुःख
दूर कीजे इतनी विनती मेरी सुन लीजिए हाल। पतित पाव

ग म ध प ध नि स नि ध प म ग म ग रे स नि ध नि सं नि सं ॥ म ध नि स स ध नि स स रे स नि ध प म ग रे ग म
ग रे ग रे स ग ~ ॥ म प ध प म ग रे ग म ग रे स ग प म ग रे स ॥ म ध नि स स ध नि स नि ध प
म ग रे स स ग म ध प म ग रे स ग प म ग रे स ॥ ॥ ग म प ध प

14

वेज राजे । पतितन उद्धारन जन प्रति पालन दीन दयाल नाम

लैन जाय दुख भाजे । तान सैन प्रभु को सुमरो प्रानहो जगमें

रेहे नैनो लाजे ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ एवं सो नाद स्वरन साथ

के वजाई प्रवीन कान्ह सप्तस्वर तान मधुरे धुनि । श्रवण सुन

त कछु सुध न रही आली मिनक परी मेरे कान सुनि ॥ ॥

म ग रे स ॥ म ग ध ध प ध नि नि सं स नि ध प म ग म ग रे स नि ध नि स ॥ म ध नि नि स नि स रे स नि ध प म

ग रे ग म म ग रे स ॥ ~ ॥ ग म प ध प म ग ग रे ग म ग रे स ध नि स रे ग म ग रे ग रे स ॥ म ध नि स स ध नि

स रे स नि ध प म ग रे ग म ग रे स

क॰
रा॰स॰

ननकी भईहौं बावरी हेदावन दिसिहेरि झकि झकि ॥ बला

वेद पढ़त भूले शिव समाथ मोह डुले सुर नर मुनि मोहे दे

वांगना देखे लकि लकि । सप्त स्वर तीन ग्राम इकईस मूर्छ

ना लेतान सैंन प्रभु मुरली वजावन बोलत मोर कोकला झुक

कि झुकि झुकि ॥ राग भैरव ॥ चौतारा ॥ जा दिनतैं मोहन मुर

प म ग रे स स स म प ध प म ग म ग रे स ॥ ग म प ध प ध प म ग रे स ग म प नि ध प म ग

रे सा ग म ग रे स ॥ ग म ध नि स स नि ध प म ग रे स ग म ध नि स नि ध नि सा नि ध प

म ग रे ग म ग रे स ॥ ॥ ॥ ग रे स नि ध नि रे स नि

15

न करुणा सिंधु दीन दुख भंजन अनेक रूप लीला धारी भक्त

वछल जग जग भए कृपाल । मदन मोहन मधुसूदन मुरार

गजउद्धारा द्रोपति सहाय करि तानसेन प्रभु भक्त प्रतिपाल ॥

राग भैरव ॥ चौताल ॥ ५ आज बांसरी बजाई बन मधु कौन

देवा कौन देग फुकि फुकि । सनन श्रवण सुनि रहि नहीं

प म ग रे स स म प ध प म ग रे स स म प ध प म ग म ग रे स ॥ म ध नि स नि स नि ध प म ग रे स स

म ध नि स रे स नि ध प म ग रे स ॥ ॥ ग म प ध प म ग रे सा ग म प ध प म ग रे स ॥ ग म

ध नि स नि ध नि स नि ध

का॰ रा॰सं

गोपी री फिर हरि सम नैनन नासो कथ तथ सब बिसराई । धुनि सुनि मन मोहे मगन भई देखन हरि आनन । जीव जंत पसु पंछी सुर नर मुनि मोहे हरे सब के प्रानन । बैज बन बारी बैसी अधर धरि हेंदावन चंद बस किए सुनन नहीं कानन ॥

राग भैरव ॥ चौतारा ॥ जै माधव मकुंद मुरार मधु सूदन मद

स ग रे स ग रे स नि ध ग म ग रे स स ॥ ग म ध नि स नि स नि ध नि स नि ध प म ग रे रे ग म ग स स ॥ ग रे स नि नि ध नि स स रे ग म म ग रे ग म प म ग रे स ॥ ग म ध नि सा सा सा नि ध नि स नि ध प ध प म ध प म ग रे रे ग म म ग रे स स ॥ ॥ ग म प प म ग ग प म प म ग रे स स ध नि

ली वजाई ता दिननैं हौंन तन मन गईड़ु विकाय । सप्त स्वर
नकी आरोही अवरोही रस भरी तान सुनाय । झूली सब खं
न पान सेजड़ुंको सोय वो वौ कचौक उठ रही मरजाय । मेरे
तो जीवन धन हैं बलि हारि गावौं गौ गर वो लगाय ॥ राग भै
रव ॥ चौताला ॥ मुरली वजाय रिझाय लई मुख मोहन नैं
स स नि ध प म ध नि स स रे ग म ग रे स स रे स ॥ म ध नि स ध नि स स रे स नि ध प म ग म ग रे स ॥
ग म ग म ध प ध नि स नि ध प म ग म ग रे स म नि ध नि स ॥ म ध नि स स नि स ध नि स रे सं नि ध प
म ग रे ग म म ग रे स ॥ ~ ॥ ॥ स ग रे स नि ध नि ध स स रे ग म ग रे स नि

क॰
रा॰सं॰

उठ प्रातही हरि हरि हरि हरि रे रे रे मन मेरे याते होवे सफल अष्ट जाम
यह लोक पर लोकके स्वामी वैकुंठ होवे विश्राम । दीन दयाल
कृपाल भक्त वत्सल भक्त जनन अभिराम । वैजू बावरी कहाय
के अब काहे कुं भटकत चौरासी लख धाम धाम ।। राग भैरव ।
चौताल ।। मोहन ने जागो मनोहर मधु सूदन मदन मोहन सुरा

प ध प म ग रे ग म ग रे स स रे स म ध स स ग प म ग रे ग म ग रे स रे म ।। म ध नि स नि ध नि स नि ध प म
ग रे ग म ग रे स ।। म प ध ध प म ग रे स ग म ग रे ग रे सा ।। म ध नि स स नि ध प म ग रे स म
प ध प म ग रे ग म ग रे स रे सा ।। ।। ॥ॐ॥ म म प ध प म ग रे ग म ग रे स ग रे स स नि नि स रे

17

न मोहन मन रंजन मन भावन । जगत पति जगन्नाथ जग

जीवन जग वंदन जग पावन जग प्रगटावन ॥ कमल केशव करु

ना नाथ केसारी केस काल काली नाग नाथन काम जनावन ॥

वैकुंठ नाथ बिहारी बद्री वामन विस्व वल्लभ वाराह विठ्ठल

वैजु बावरे प्राण जीवा वन ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ प्रथम

स स रे ग म ग रे स ग रे स नी ध नी रे सं ॥ म म नि ध नि स स स रे स स नी ध प म ग म ध नि स नि नि ध से

नि ध प म ग रि स ॥ ग म ध प ध ध नी स नि ध प म ग म ग रे स स स नि स स रे ग म ग रे नि नि

स स नि ध नी रे स ॥ म ध नि स स स रे स नि ध प म म ग रे स स नी ध नि स ग म नी ग रे स ग म ध स नि ध प नि ग ध रे स ॥

रे म

क॰
रा॰भ

रागभैरव ॥ चौताला ॥ भोरही भैरव राग अलापो हो प्यारे बंसी
बाइन । खरज रिखभ गंधार मध्य पंचम धैवत निषाद ताइन ।
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई ताल काल और माइन । उ
रपति रपेंला राइंट देशी मारग तान सैनके सुनो साह अक
बर यह विध स्वरली में कीने गाइन ॥ रागभैरव ॥ चौताला ॥

रे स ध रे स स ग म ग रे स ग म ग रे स ॥ म ध नि स स नि ध प म ग रे स ग रे स ॥
म प ध प प ध नि स नि ध प म ग रे स ग रे स ॥ म ध नि सा स नि ध प ग म
स नि स स रे स नि ध प प म ग रे स ग रे स ग रे स ॥ ३ ॥ ५ ॥

18

१८

री माधो मुकुंद मन भावन । जागो जागो जैनरायण जगत

पति जग जीवन जादो नाथ जसुधा नंद जगत सुख प्रेम व

धावन । जागो पजु कान्ह कुंवर केवल कल्याण राय जागो

प श्री हुलस चंद प्रेमा नंद पावन । जगतके जगैया नूम प्रडे

वैजुके स्वामी वलिराम हुलस जके भैया पापन सावन ॥

गपमगरेगपमगरेस॥ गमधनिसधनिसनिधपमगममरेसगमगधनिसगमधससनिध

पमगरेस॥ गसधनिधपमपधनिसरेसनिधनिधपपगरेगमपमगरेस मधम गगरेस॥

मधनि सरेसनिधनिस निध निधपमगगरेगमगरेसगमनिधपम गरेस॥ [illegible]॥

क॰
रा॰स॰

मोवत कछु जागत रस भरी लोन सैन सुन सेदर मेंदे नैन मह
क्यावत । गौरस्याम अभिराम परस्पर अति आनंद कछु कह
नन आवत । रसिक गोविंद जुगल छबि ऊपर तन मोरत वार
वार वलि जावत ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ अनत रति मान
आए हो जमेरे ग्रह अरु सीले नैन वैन लोनधान । अंजन अध

स रे स नि ध प म ग रे स ग म प नि ध प म ग रे ग रे स ॥ ग म प ध प प म ग रे स ग म प ध प म ग रे स ग रे स ॥
ग म ध नि स नि ध प म ग रे स ग म प ध म ग रे स ग रे स ॥ ॥ ग म प ध प म रे
ग म ग रे स ग म प ध प म ग रे ॥ म ध नि स

१

प मेरे भाग जागे पिय मोरहू सुधलई । मैं इतनो भलो मनाव
त हे वल माहो त्रम पर वल गई । अधरन अंजन महावर भा
ल मन गन औरे भई । तानसैनके प्रभ ठाढे रहो वलै याले हों
कहो पई तियनई ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ भोर ही कुंज मह
लके आंगन मध ललिता वीनं वजावत गावत । पिय प्यारी

रे स ध प रे स ग म म ग रे स ग रे स ॥ म ध नि स र स नि ध प म ग रे ग म ग रे स ॥
ग म ध प म ध प म ग रे स ग रे स नि ॥ ग म ध नि स नि ध प म ग रे स रे
स ग रे स ॥ ९ ॥ ग म प प ध म रे रे स ग म प ध प म ग रे ग रे स ॥ म प ध नि

का॰
रा॰क॰

रा॒ज॒न॒ नै॒न॒ तनी॒ दे॒ग॒नि॒ कं॒पि॒ जा॒त। अ॒थ॒र॒न॒ अं॒ज॒न॒ पी॒क॒ क॒पो॒ल॒
न॒ न॒ख॒के॒ चि॒न्ह॒ दे॒खी॒य॒त॒ गा॒त। व॒त॒भं॒ज॒ दा॒स॒ प्र॒भु॒ गि॒रि॒ध॒र॒न॒
भ॒ले॒ तु॒म॒ आ॒प॒ह॒ी॒ मो॒हि॒ दि॒खा॒व॒त॒ घा॒त॥ राग भैरव॥ चौताल॰
रैन गंवाय आपही मेरे कहा चकई मोहे कीनी। कवननव
ल वनिता संग जागे सिखे संदे सोई दीनी। निस जागी संके

ध नि सं नि ध नि ध प प ग ग रे सं॥ ग रे सं सं नि ध नि ध नि सं ग रे सं रे सं रे ग म ग रे सं॥
म ध नि सं सं सं नि ध नि सं नि ध प म ग म ग रे रे ग प म ग रे सं॥ ॐ॥ ग म प ध प म ग रे ग म ग रे
सं ग म ग रे॥ ग म ध नि सं सं नि ध प म ग म ग रे॥ ग म प ध प

१०

र धरे सोहै पीक लीक सोहै काहे कजला छूटी सोहै खोन ।

पेचङ्क सेवारत पेच डून आवत पते पर तिरछी सोहै चित

वतगात । नंददास प्रभु प्यारी हियमे वसत तोतें भूल नाम

वाही को निकस जात ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ भोर भए

आए लाल धरेत पग डगमगात । पाग लट पटी सीस वि

नि ध प म प ध स नि ध प म ग रे ॥ म प ध प म प ध प ध स नि ध प म ग रे ॥ म ध नि

स नि ध स रे स नि ध प म ध नि स नि ध प म ग रे ॥ ॥

ग रे स नि ध ध नि सं सं रे ग म ग रे सं ॥ म नि ध नि सं सं नि

क॰
रा॰ स॰

कपल कल गानी। सूरदास प्रभु रिझि रहे थम थन्य नव क्रं

जन रानी॥ राग भैरव॥ चौताल॥ मैजा तिज हो रित मानि

आप हो लालन जव चीरिया कह वानी। पसे पद अखियो

रसम सानी और पा गलट पटानी भाल जावक रंग विन्हानी।

अधर अंजन प्रगटानी विनगुन मालव नानी सव अंग अंग

प म ग रे सा॥ म ध नी स ध न स नि ध प म ग रे सा॥ ꣸ ॥ सा नि स नि ध नी सा ग रे

स नि ध नि स ग म ध प म ग रे॥ म ध नि स नि स नी सा नि ध प म म नि म ग रे स नि स नि

ध नि स ग रे॥ स नि ध नि स ग म ध म ग रे म ध नि स नि सा नि स नि ध प

२१

न सेंदेसैंाते कपल नही लीनी । प्रेमरंगके मनकीन जानिसु

ख वक वेकी कीनी ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ ने निशा लाल

संग जगत मानिमैं जाति पग डग मग परनन सुधै । सिथल

वसन कटिकेश राजत आनन सुदेश बोलत कछु अटपटा

त वानी । यह छव मो मन भाई मिटि है चंचल नाई पी कली

म ग रे स ग म ग रे ॥ ग म ध नि सै नि ध प म ग रे ग म ग रे ॥ ~ ॥ म प ध प म ग रे स रे स

म प म ग रे सा ॥ ग म ध न स ध नी स न ध प म ग रे स ग म प म ग रे स ॥ म प ध प म ग रे सा

म प म प ध

क॰
रा॰सं

यौं थीके प्रभुतम चिरजीवो व्रजजन प्रान प्रयारो ॥ राग भैरव ॥
चौताला ॥ प्रथम नाम लीजिए शनही । हरि हरि हरि हरि हरि हरि
निशि दिन चरि चरि पल पल अष्टजाम । जसोदा नंद आनंद कंद
मधुसूदन बाल मुकुंद भक्त वछल जन विश्राम । दामोदर द
या सिंधु भक्त वत्सल भगवान वैकुंठ पति वृंदावन धाम । वन

म ध नि स स नि ध नि स नि ध प म ग रे ग म ध प म ग रे स ॥ ~ ॥ ग म नि प ध प म
ग रे स रे स ध नी स ग म प ध प म ग रे स ॥ म ध नि स नि ध प म ग रे स ग म प प म ध प म ग रे स ॥ ग म प ध प
म ग रे स ग म प ध प म ग रे सा ॥ म

उलटे निशानी। सूरदास गुन निधानी धन धिय जो नमकं

खवदानी सेग जागतनैंन विहानी ॥ राग भैरव। चौताल।

प लाला जीयो जालौं गंग जमुन जल नहनी धरनी अव

तारो। वेग वधो वध होइ विरथ लद जमुमति हलनि

हारो। भक्त हेत अव तार लियोहै मेटन कौं भव भारो ॥

म ग रें स नि सा नि धा नि सा ग रे ग म ध प ग रे म ध स नि ध प म ग रे ॥ ॥ ~ ॥ ॥

ग म प ध नि म ग रे स ग म भ प म ग र ग म ग रे स ॥ म ध नि स नि ध प म ग रे ग म ध प म ग

रे स ॥ म प ध प म ग रे स ग म ध प म म ग रे स ॥

का- उनेचास कोट तान सें आधार॥ राग भैरव॥चौताल॥ ऐसे कैसे
रा-स बनेगी प्रीतरीत की मिलन नाही मनलाय। कबहू देखन बंसी
बटपे ग्वाल बाल निदराय। बिन देखे कल पलन परत पल छेद
र स्याम लो भाय। प्रेम रंगरातन मन धन वारो बिन देखे रह्यो नजाय
राग भैरव॥चौताल॥ म्वारे त्रिभुवन पते इंद्र सुरपते शोषनाग है
म ग रे स ग म ध प म ग रे स ॥ ऽऽ ॥ रे स नि ध नि स ग म प ध प म ग रे ग म ग रे सा ॥ ग म ध नी सा रे सा
नी ध प म ग रे ग म ग रे स ॥ म प ध म ध प म ग रे स ग म म ग रे स ॥ ग म ध नि सा नि स नि ध प म
ग रे सा ॥ ऽऽ ॥ ॥ स ध स ग म रे स नि स ग म प ध प प म ग म

वारी वैजु प्रभु वदी नाथ विठल विसु वामन गुरु विश्राम ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ वानी च्यारोंके ग्योरे सुन लीजे पहो गुनी जन न व पावै यह विद्या सार । राजा गुवर हार फौज दार खंडार दिवानउ गुरवक सीनोहार । अचल सुर पंचम और चल सुरवाद करन रिषभ मध्यम दैवत निषाद गंधार । सप्त तीन अकइसा वाईसो

ध नि स नि ध नि स नि ध प म प म ग रे सा ॥ ~~ ॥ ग म प ध म ग रे सा नि ध नि स ग म ध प म ग रे सा ॥ ग म ध नि स नि स नि ध प म ग रे सा ग म रे सा ॥ ग म प प प म ग रे स ग म प ध म ध प म ग रे सा ॥ ग म ध नि स नि ध प

कं
ग॰म॰

पसी को वनर सचेर नार जिन तम विर माप पसे साव दए। ग्रथ
रन अंजन कजे पीक पलक लीक औरन सो चित हित वहो भांत
न लए। नैनन सैन के प्रभु वहाहेी पाव धारी पजहो किए नेह नए
रागा भैरव॥ चौताला॥ सूरज वंश नमो गुरु इष्ट हमारे दशरथ सु
त राजा राम। जानकी नाथ नाथ त्रिभुवन के मोहन सुंदर स्याम

ग म प नि स रे स स ध नि स नि ध नि ध प ध म स ध स प प म ग रे॥ ग म प नि ध प प नि स नि ध प म ग म प ध
स रे ध नि स नि ध प म ग रे॥ ग म ध नि स स ध नि स नि ध प ध नि स नि ध प म ग रे॥॥ ग म प नि ध प म म रे
ग म ग रे स स नि ध स स ग म म म ग म प म स॥ म ध नि स स नि स रे रे रे सं स नि ध प म म प ध रे स स॥

25

फण पते। छीर उदधि सलिल पते कौस्तुभ मनि रतनन पते दि

कर दिनन पते कमलापते। शशि उडगन पते हनुमान बलन

पते नारद भक्तिन पते साजन मृदंग बीण पते। चिर चिर जीव

रहो साह अकबर नरन पते गोनसैन गानन पते॥ राग भैरव॥

चौताल॥ मोसों जो अवध बद गए सोऊ की यह आप भोर भए॥

प ग रे॥ ग म ध नि स स नि ध म ग रे स ग म प ध नि स रे नि ध प म ग स॥ ग म नि ध प म ग र ग म

प ध प म ग रे स ग म प म ग ग रे॥ ग म नि ध नि ध स रे स नि ध प म ग र ग म ध ग रे॥ ~~~॥

ग रे सा ग म धा प ग ध प ध नि स ध प म र ग म ग रे॥

क
रा-स

मुनि नार नारि भूरि भार भक्त हेत गावत गुनि गुन अपार। जैजै

जै श्री धनुषधारि पवन पुत्र आज्ञा कारि सीता पति छवि निहा

रि बलि हारि बार बार॥ राग भैरव॥ चौताल॥ असां नाल कू

ड़ी कूड़ी गलां करदा रहंदा प्यारिया औरां दे नाल हसदा बोलदा

मटके जांदा नीवे बोल बोल। रात दिहाड़े ध्यान रहंदा तुसाडा

म ग रे स रे स नि ध नि सा ग म ध नि ध प म ग रे स॥ म ध स स नि ध प म ग रे स स नि ध नि सा ग म ध ध

म ग रे ग म ध प म ग रे स॥ ॥ ग म प ध प म ग रे स रे स रे म प ध प म ग प म

ग रे ग म प प म ग रे स॥ म ध नि स ध नि स रे स नि ध प

२५

लक्ष्मण भरत शत्रुघन हनुमान जनक सुताके रटन काम।

धीरजके प्रभु गुनन्हौ चतुरन्हौ प्रगटे अयोध्या धाम॥ राग भैरव

चौताला॥ सेव्य महाराज रामपद सरोज अति उदार। अंकुश य

व ध्वजा रेख मीन कमल कुलीश जपत शेष वेदन सुर अज

महेश सेवत सनकादि च्यार। कौशिक मुनि संग चारि पाहन

धपध ममपमम प ममगरेममगरेममममपपपमसधधप॥ मनिध निस ससनि निरेरेस नि

धपपममप धधनिसप॥ऽ॥ रेसनिध निस गमधपमगरेगमगरेस॥ गमध निस नि

धपनि सनिधपमगरेसगमध नि सरेस निधपमगरेगमपपमगरेस॥ गमपध नि ध प

का॰
रा॰स॰

जन । रतिरससबके लीबसकेवा रहेंहे सहेंस कानन कौने लागन ॥
जीवन गिरिधरके प्रभ समुद्र तरंग झकोरन काजन ॥ राग भैरव
चौताला ॥ ताकौं प्यारे पठही कियोंहे आपने आईमना वन । आने स
रके सखकी वतियां पनहोवेरीहैं नीके जानत जैसी नेंमो सोरी
लागी वनावन । याग्रखकी श्रवका नन करहैं श्रन मिल पियसों
म ॥ गमपधधनिसनिधपमगरेसगमपसपम ॥ निसरेसनिधनिधपमगमधनिसनि
धपम ॥ ॥ समपधपमगरेसगमगरेसरेस ॥ गमधनिसनीधनीसनिधपमगरेस
गमपधनिसनिधपमरेसरेस ॥ मपधपमगरेसगमपधप

७०

२६

सोएपा श्रौंवदा नाहीं माडे कोल। मायल कर मान चायल कीना
सावली सूरत निरषछड्णा लीना विन चोर अमोल। भौं हक मान
निरछी चलो वदा नैना देवान नसी चलो वदा नोल मोल॥ राग भैर
व॥ चौताल॥ लोचन हमरे रहे हरि संग रजनी जागत। कमल
प्रफुल क्षीन भए डगमगत गात फहै डरडर देखन लाज सा

म ग रे ग म ध प म ग रे स ॥ ग म प नि स रे स नि ध प म प ध नि स रे स नि ध प म ध प ग ग रे स ॥
ग म प ध स रे स नि ध प म ध नि स नि ध प म ग रे स ॥~~~॥ ग म प ध प म ग ग रे स ग म ध प म ॥
नि स नि स ध नि स रे नि ध प म प ध न सा नि ध प

क॰
रा॰स॰

संडे ताल मिठे बोल ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ छत्र छवि निरतन
ई भई रीत जैसी सभा आभावा सुर पत की । सगान सदन मन सुक
नर तन छात्र बरन बरन रंगन रंगन छवि विसान निरख नर नरेश
ताने सुरेश हूते ग्रथ की । और मान मत जर वाफ तास तिनके सम
योने । अस एक कंचन खंभ लगे औरन राज गामगेन खनके सो कही
नि ध प म ग रे सा ॥ ॥

२७

२८

कहोन परत तेरी मोहेन नावन कहा कहीं राजाराम सों नो सीरी प
टावै हमारे ग्रह वना वन ॥ तोंनसैंन कहे आवन अपनी औरनकी
चित लावन मेहकीवात कहलावन ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ असा
न नेळडवे मीया औरों नालहु सदा खेलदा रहेंदा गाहे गाहे अ
वदा क्या साडे कोल । रात दिहां मैंएड ध्यान तमारा रहेंदा कवीनो
म ग रे स स म प म ग रे स ग म प ध प म ध नि स नि ध प म ध म ग रे स रे स ॥ ग म ध नि स नि ध स
रे स नी ध प म ग रे स ग म ध प म रे स रे स ॥ [illegible] ॥ म ग म प ध प म ग रे स म प ध प म ग
रे ग म प ध नि स नि ध प म ग रे स ॥ ग म ध नि स नि ध प म ग रे ग म ध नि स [illegible]

क॰ रा॰ स॰

जनसौं नादकी चरचा कीजिए। अक ईस न्हरल्ला उनंचासकोट तोन वाईस स्वरनतैं सब ग्रंगान सौं गाइये ठीक तोन स्थनाल सौ चो स्वरनसौं सरिगम पधनी उलट पलट फेर फेर जाव वूझ स मझकर भ्ररपदकी थरन विचार करली जिए। नाद समुद्र अपरं पारकाऊन पायो याहूको भेद वारन पारकाहे को भ्रतरिसनाह

न जात उपमाया वालनकी ॥ साहन साह किरान सानी साहजहां जू

को नो रोज दीनो अरवं वरवं वक्षिनो गरवीनके गरव तिहूं लोकमें

वरचा कीरतकी ॥ राग भैरव ॥ चौताराम प्रथम खरज साधे श्री

रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद स्वर सप्त तीन ग्राम श्रु

ह अक्षर प्रमाण यह सब अपनें मनमें जब समझावै तवगुनी

क॰
गा॰सं॰

वडे वडे गायन सब सेषी श्रीमगा हरी नन मन न करिए ज्ञान वि
नय रि गरव तज दीजिए ॥ राग भैरव ॥ चौताराा ॥ प्रथम गाईये
सयो जाते मख ख्रव से हरागा अंस न्यास ग्रह स्वर स्वगोय । सेस
शीव ससि लिलाट भस्म अंग जटा मुकुट मुंडमाला सीस गंगा ।
मधु माधवी भैरवी भंगाली वरारी सैंधवी पंच त्रिय प्रचंड शोभा

कगमेंड करत हो सब गनी जन यह विद्या ग्रटपट महा घोर स्व
न विकट होत नाद ईश्वर रूपी ग्रमरत रस जितना जो कों मिले
तितनोई पीजिए। वली देवी सरस्वती ने वाचा एक मर यहि नाद
समुद्र में पैठि डूबन लगी तव तेवी का हिरदे थरिके तरन ल
गी ग्रौरनकी कहा गिनती करीए। महा नाद सैन कहे सुनो

कं
रा॰सं

सप्त स्वर तीन ग्राम इकईस मूर्छना उकतपक लाग डांट कर देखा
यो। तान सैन कहे सुनो साह अकबर प्रथम राग भैरव गायो ॥
राग भैरव ॥ चौताला ॥ थन त्र्य पार ब्रह्म कीनो जिन ग्रेवे वद बा
नो सप्त धर्मनें कछु बीज बोयो ॥ सजल धवल स्फटिक पै दनवारे
उ विस्तार जाको साखा ग्रह मेर मानों हग पाल जटा तानों जल

30

लिप् संग। साध पम गम पम गम पधनी सारी रीसा गम पाग
म प पध पध पम गरे सा पंग। दीपक हे स्वर यह विध कहिये भैर
व राग प्रसंग। राग भैरव॥ चौताल॥ सघन वन छायो द्रुम वेली
माधी भुवन अति प्रकास वरन वरन पुष्प रंग लायो। कोकला
खिजन कीर कपोत अति आनंद कारी चहूं ओर जर वर सायो।

क॰
रा॰स॰

न देख प्यारो री जय किन भयो जैसे अलि पंकज लेन सुगंध अ।
ग्रीन अघायए कौन इत उत डोले ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ जाग
त भैरों जोती स्वरूप किरननें प्रगट्यो तिमिर हट्यो शशि भयो मं
द। दिनकर दिन लायो सबके प्रफुलन कों बढ बढ कियो आनं
द ॥ जग चन्द्र जोती प्रकास प्रतक्ष देव जग वेद ॥ बैजू बावरे

३।

छायो प्रहम पवन मानैं। तैसो हेद तिल सो हाय ग्रमीय हेद वरष

न यानै। नरं गान सम उर गान जेते फल पशु पंछी जीव जेत कम

ला मन ग्रगम दीरघ धरी वामदेव नामजे हरषी यत करनार या

विय जानैं। राग भैरव ॥ चौताला ॥ परी प्रात उठे है लालन ल

लनाले दरपन मुख निरषत ग्राप ग्राप मेंहस वोले। प्यारी के दृग

का॰
रा॰स॰

र लोक इंद्र लोकऊ नहीनार ॥ राग भैरव ॥ चौतारा ॥ गौरी शं

कर राधा कृस्नको नामलीने सकल सिद्ध काम ॥ निसि दिन

सुमरत सोवत जागत उर धारत कह्यो सीता राम ॥ मीन कच्छ

प वराह नरसिंह वामन रूप परसुराम ॥ हरि हलधर बुध

कलंकी जसोधा धाम । एते प्रभु रत्न पाल खरगसेन शिव कृ

३८

गावैरे कहावन काटो जनम मरन के फंद ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥
प्रथम मंजन अंजन कर कर पहर चीर चार ॥ आलीमे दिल लेले
कमल बदने इश्या भूषण तक सटा कंठ माल रतन मकन के हार
आही अति भयो हादरु कटाहस लाग्न अलके कन नाहन से
पिय प्यार ॥ नोन सेन नगार तन जटित सोरह सिंगार किएन

कं
रा॰म॰

राग भैरव ॥ चौतारा ॥ भोरही भैरव राग अलापो अहो प्यारे वेसी
में आन । खरज गांधार रिषभ पंचम मध्यम निषाद धैवत तान
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई ताल काल और मान । उतपति
रखला गुजरात देशी मारगतांनसैंन रचो साह अकबर प्रमान ॥
राग भैरव ॥ चौतारा ॥ प्रथम अलापचीक तान शुद्ध अक्षरसौं

53

पालइ जीय सहाय शुरुज्ञाम ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ सम्हष्टि
क सेवा चरन रघुनाथको नेनन वेहो तो है जग तारन ॥ दीन उधा
रन करुणा सागर गावत चारो श्रुत आदि अनाहद कारन । सी
ता रव नवि हरन तन कमान नेजकी होके वा जन साथ हिनथा
रन । ज्ञान दास आ चरन कमलकी वान सदा चित सारन ॥ ॥

कं०
रा०सं०

सुध लई। मैं ईतनो भलो मना वनउं वलमाहीं तुम पर वल गई
अधरन अंजन महावर भाल मन गात ग्रीव भई। नैन मैं ननने क
साढ़े रहो वलै याले हौं निन नई॥ राग भैरव॥ चौताल॥
परी हौं री ऊ देख भोरही उठके प्यारी कजरारे द्दग दोउ करसौं
लागे मलन। इन याकव सौं पैं जान जे भात नीर वहो मानो क

34

की जिये प्रमांन । स्वर नाल कलि ग्राम मूर्छना की वानिसों

करैं गुनी जन गांन । और को कह्यो न माने हिय जिय हठ धरे

याहि है श्रुति मूढ़ ज्ञान नाद ही को कर विनान । महा नाद

सैन कहे गुणा के जान कार एक प्राद होत है नम हजो जान

सुजांन ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ ५ मेरे भाग जागे पिय मोर हैं

का
रा·म·

चक्र वत नरेश अकबर डुख हरन॥ तानसेन एसो रुहो छतो नर
नरेंद्र नरन॥राग भैरव॥चौताला॥ रुन जर भई अपने प्यारे की
काहे कुं चिन्ह डरावत मोते नवही जानि तेरी चतुराई। रातकी
जागि पागि प्रीतम संग मोसों छिपावत गात नैन उनींदे तेरे
लेत जंभाई। सुंदर मृग नैनी बोलत पीक बैनी प्यारी रंग भरी

मल मथते अलक स्रत छूटे लागो चलन । वेद वदनी म्रगनै

नी बिन देखे घरी पल कलन । नैन सैन देखरिझमगन भए

सुंदर नार अबलन ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ शुभ नछत्र नवे

न बैठे राजन भ्राजत है सब मुलक खलक तजे बिथना

किए सब छत्र धरैनै सब लागे सब सेवा करन । धन धन

क॰
रा॰स॰

वलाइये। जलालदी मह्र ममद पसे दाता किए तिहूं लोकमैं ज

श गाइये। राग भैरव॥चौपाई॥ सकर गंज गंज वकस सेष

फरीद आलम पीर रीद पसे के लीजे निवाज रहे जगमैं ला

ज जाप ननने रंज। जेई जेई मांगी पते ईते ई फल पाइये ता।

नको करन दारिद्र भंज। तीन सैन करे पनेही मांगीने पनम

38

म्रत मन समाई। तोनसैन पिय वस करलीनौं धन धन मह्रा

रानी सुखदाई॥ राग भैरव॥ चौताल॥ ग्रक वर प्राण नाथ ग्रना

थनको यह नाथ प जाये ग्रष्ट सिद्ध नव निध पाइये। परम दाता

ज्ञाता सबहीको मन रंजन यह दुख भंजन कल्प वृक्ष ग्रनद

पाइये। ग्रंतर जामी स्वामी जग काज करवेको प रम नाल

कं
रा॰म॰

श गाफो गाफ पनि वसोचहू सवद ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥

जो नाल वहै नवी अलि हसनहुसैनके मनमें लाय देखे। इ

मामजेन लावदीन ईमाम महम्मद वाकर इमाम जाफर सा

दक परसीद खेलाय देखे। इमाम मुसिका जम इमाम अ

ली मुसीर जाइमाम महमद नकीके कदम पाय देखे। इमा

३०

पैजो ह्रो मदनन ठंज ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ अगाज गेज श्रे

उ डन डेडने गावली अलि मरदान मन्हा मरद । जैसे भट अौर

काहू सो ना मोरे जोरे सन मवे साहनके आगे खेट छूट किए

गरद् । एक अेन दंत खिनले मिले एक भाज गए गिरि के दल

तिनहूं नीदन परे आस दरद । यन यन नज अनाप न वज

का॰
रा॰सं॰

आनना फिर डुलिया हंसन नन तांनसैन कहे गीत सागर भयो

अपर पार ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ बादर ऊनई आपसो पिय वि

न लागे उराप। पसी अधियारी कारी उर पावनी लागत जिय

कौ भारी ते सबै अवध वचन गए हरि न पाए। दा दुर पिक मोर

सोर करन लागे विरहीनन लागे उराप। तांनसैनके प्रभु तुम

३४

३८

म अलीनको इमा मह मन असकरी इमाममहदीके जहूरकौं

जाय देखे ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ प्रथम मेंजन होइ अंजन क

र कर पहर चीर चार । अलेइललला जुल वला पहू आभूषन रु ज

स जड़द कंठ मालर कान औैर मकन के हार । अन ही अति भयो

ढाढ़ रुद कटाल सला मनलेक मरहन अला पिय प्यार । रवना

क॰
रा॰ स॰

नैननि हारी मोहे सुहे बसन हसन मैन वारे ॥ राग भैरव ॥ चौ
ताला ॥ जहां जहां जग जग कर आप अपनैं जनकी सहाय ।ना
ना विध वपु धारे भीर परे भक्तन पर जग पत सीता पति राम
राय । सीवरी गज गीध व्याध अजा मेलसे अनाथतनक भन
क स्रवनन नाम लीनैं जमते छुडाय । दिन देषु वलि हारी

39

नीके जानो भली सुथलीनी सो बुजहूं न आप॥राग भैरव॥

चौताल॥ बादर झुमि झुमि आए बरन बरन बरसन लागे

प्यारे। सुनि सुनि बन घोर चातिक चकोर मोर बोलत सुहाए

नंद दुलारे। तैसेई बन कुंजकेलि विहरत भुज कंठमेलि स्र

बणगे जागे दोउ रूप उजारे। सखिजन बलि हार लेन रूप

के॰
रा॰ क॰

विघ्न भारा जागे आज हमारे ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ मोहन का
मन उत्तम रूप पहरत सवार चीर ओप वफाय कुंदन अंग । टि
के को कियो उदोत नाते तिमिर फटो शरन परे पाछे सीस फूल
भू असमान श्रवण कुंडल कवरी अचक कटाछ आपजोत बन
रही दोउ अनंग हग अंजन दिए खंजन वस कर लिए कर दर्पन

40

रघुनाथ अशरन शरन कौशल पति कौंन गाय ॥ राग भैरव

चौताल ॥ रैन गंमाय आप हो लालन कहां जागे सगरी रात वा

न कहो प्यारे। नव किशोरन बल तिया संग जागे पागे प्रेम

प्रेमके चिन्ह न्यारे न्यारे। सब निशा मोहे तल फत बीती मो

र भए आए ललारे। तान तरंग रंग रस भीने कीने नहव

का॰
रा॰सं॰

पीलारस लेन अन जान लांन सैनके अभ माह अक वरसौं वन
रहे जैसे पारवती महादेव अरधंग ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥
जिन करो मोसों झूटि झूटि वातैं तिहारी प्रतीत मोहे नेक नहीं
आवत। वेतो लंगर कान्हा छिन छाडे अपनी वान वर वश
मनहार करत मोहे मना वत। नित उठ सोतन के ग्रह जावत

51

हार सुवेदेन सुवे पैये श्रन निरखे उर जानय वर मन गुनीगा

वै मांन कड़ीरा । कपोल मुक्त लर मुक्त माल भुज विनाल क

र कमल वाजु वेथ फंद नलट कलटक श्रलि जग सेरा । राम

किरन उपजो न बल विचित्र कंचुकी मध्य श्रनेगा श्रथर सुंदर

नवली नेरे वाटरनन जनन टनन । श्रमृत नाम श्रेर मलाप

क॰
रा॰स॰

साधपमगसासानीधमगसा सानीधनीनीध पध धपमपप मग। ममगसासानी धनीध पधपमपमगम गरे गरेसा संगी त रत्नाकर मतसों लेहो सुधार बाक बानी सो राग रंग लेहो मा गा॥ राग भैरव॥ चौताला॥ बरषा रित वनिता वन आई नैन न मै निरषत लगि रहाई। कंचन की सी लता अलवेली सी

मेरे प्रनक्कु आय लाखेन सोहे खोवन । परम परम निज हूक द

मा करा वन बार बार कोरिसा वन पानाहि सो हावन ॥ रागा भै

रव ॥ चौताला ॥ गावो रे गावो गुनी प्रथम भैरव खरज स्वर राग ।

हजे स्वर कंठको मल ध्रनि सोच समज लेहों निषाद धैवन

पंचम मध्यम गांधार रिषभ साथ लाग । सामगासा सागमगासा

क॰
रा॰स॰

किरन गान कटन क थिर कट नक दिदि गानथा ॥ राग भैरव ॥ चौ

ताल ॥ नेक ब्रह्म नायक पर ब्रह्मसी सो दल महा राज । कृपा सिं

धु भक्त वछल पहले स्वर कर रत्नक मेरी लाज । या विनती

कबूल कीजिये नम जरा सिर ताज । श्रीलक्ष्मी नारायण पसे

राजा बहादुरके सुवण कर सवे ग्रंछे काज ॥ राग भैरव ॥ चौताल

४३

नरननई नैसी यह्केश स्याम वरन घटा छाई । रह्नस बोले ग

रजन दशन चमक को थाई । वदन एसो लागत मानौं बादरी

के ससि उदै कीनो सोलह कला संपूरण भाई ॥ राग भैरव ॥

चौताल ॥ आवत ही रंग रंगाय सो पिय भोर । दिम् थम् थिर कि

टनक दिदिगन थिर कटन कथिर किटनक दिदि गन किरनी

कं
रा.स.

लालन आजुलागि पकन बल बालनाचत सकल त्रियन मथ।
गति सुगंध । झलकत तनजो बन जिम ससि मथ सुरंग देहु
बदन हसन दसन दामिनी। इति मम भक्तदो यज्ञष चित बन
सर मारत मनकुरंग। घेर दार त्रुंदन लोचा घरी झुमेर दार झुन
री चट कल मन भूषण सकल अंग। जग राजदास प्यारे पसीनी

खरत सुभट चिन्ह जगे रैन यातैं रैन उनी दै भोर भए आए स्याम

मेरे मदन । नाख रद छद छाय लागे पागे रसबीर विह दयातैं

लखि परत अरुन बरुन बदन । सो भीन गात अरु सात बातनमैं

अर बगात शयन करौ तुम सेवा पगन । तन मन धन जेवा राज

दास परवारो आप जीत समर समर कदन ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥

क॰
रा॰स॰

नेदको सुरना गमक नीर सरत अगाधतान तरंग नाल तवल
बहो अला पन ओडो खोडो सरग धार। आरोही अवरोही दोउ
कुल सर अंस न्यास ग्राह गहतान भवर सरोज वादी विवादी सिवा
र। नौका अवाज पर राग रागणी पक्षि क वष्टत उतारत रानी
जन वार पार। हरिदास सागर उत्तम नायक धारु ध्रुव पद छंद

45

मैं न देखि बोलनि चलनि चितकी हरनि अथरस थर अमरत वच

नि कर पदनी रजसहि नै वचन सरवस लेकरे रसके तरंग ॥ राग भै

रव ॥ चौताल ॥ पहिले झुकके अवचलिरी सायली गतलीने मा

नो वसकीने साहिब मेल तत मार । जोरस सेरस उपजत नम इन

भांत नरस सो रस उप जावत जे नित नैननि हार । नैरेया नाद महा

क॰
रा॰सं॰

कहे कंउ कंठतेह माऊ को नंदन कल्य वृन्द शुक वर पारख पाय

राग भैरव ॥ चौताल ॥ अथरन कीला लीकडे कडे वनरही मा

नो जरी लाल चुनी । पियाके मिलवे को आवत कर दरपन ले

देखत हस मुसकानी छब भई है हुनी । अति रसाल लाल

लाल लाल डोरे यह छब मोसों वरनीन जाय सरस सलूनी ।

४६

गुण वली पन पतार संगीत गीत प्रचार ॥ राग भैरव ॥ चौताला

केते रत्न जगतमें उते प्रगट किए प्रथम कामधेन सुर विधने ब

नाए। कन कीनें विष वारुनी ग्रमी श्रीसुधा करचारो खोन रवि

रा वोनी परवा जीर विरच्यौनें पाए। धन्वध थनेतर फरन मरन

गज श्रीमगणि रंभा छंद धारु भर पद गायन लेव साए। तांनसेन

मो मन चकोर के कारण डुरज वार रहे फंदसे ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ प्यारन को बिछुवा सहज नहीं होमई तमारे दरस बिनमानौं बिन मीन नीर ॥ हिए पर तन चीर श्रोसुकरत भीर रोके नाही जाय पनो गहर गंभीर ॥ च्यार दिननमै जाय वहु देशमैं तेरा विजय वेग मिलोगे आय बीरज वदास आलम गीर ॥ होतो च्यार इग

47

साहसि कंदर जल किरननसों भ्रत रित मोतीहोत जात लाज

नन हूनी ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ अहोहो जाय देख अहूप

विक्त रहे यों लागत मानो नारका मोदसे ॥ देपन सारत कर द

रपन लेदेखत हो भूलरहि भोरे दौऊ स्राव लागे चार बादसे ॥

जिनके आभूषन की देख जोत होई जो उननै नाहोई स्रोथसे ॥

कं
रा॰ सं॰

नीकी तान ॥ खरज रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषा
द सप्त स्वरगान ॥ उर पतिरपला गउार देशी मारग दिखाय
प्रेम न्यास क्रति मर्छान ॥ तान सैन कहे स्वनौं साहू अकबर
प्रथमही मुरली प्रमान ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ नयनन
के नहीं परत कल कमल नयन बिन देखे जादो नाथ व्रज

58

४८

को राज जिनो निहारे काज पर आवै वथ सीस नेरो नाजरा खे

नो नमारे मानो वजीर ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ अनवन सब

नऊते नीके आलम करे सिंगार सब अनन मोई ॥ कुटी लटै देखो

भौंह पलकन पीक और लटी अंगिया की कहा कहो यत जाई

राग भैरव ॥ भोरही भैरव राग अलाप सुनायो नीकी नीकी

का
रा-मं

रव॥चौनारा॥ प्यारे नेही ब्रम्हा नेही विस्न नेही रुद्र नेही शा
कि नेही गणेश नेही चौरा॥ नेही जल नेही थल नेही पवन
नेही प्रकास नेही प्रथवी नेही रुपा॥ नेही खेल नेही मुल वे
ला नेही रोवन नेही हसन नेही उठत बैठत चलत नेही फुरा॥
तान मैं न के प्रभ एकही अनेक होय जग मे व्याप रहो हजुरा॥

A

राज ॥ कालिंद्रीके नीर भारि भई भीर वल वीर वासु देव वन

वारीके कारन नजदई लोक लाज ॥ व्याकुल मलीन वदन

मदनकी सथी रही बुधि हर हरि लीनीकीनी वावरी सीसरो

न एको काज ॥ काहेको देर करि हेरी मोरी वीर वैजकौं वेग

मिलो प्रभु मन मोहन माथे सरव निधान सिर नाज ॥ रागभै

क·
रा·म॰

लैंते देनाल नेह पिक्के जेहा डरव पांदा ॥ रत देहा पहा चंद जेहा
म्रव वेरवणायौं सान हो नि भोंदा ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ वाद
र उद्र आप सो पिय विन लागे डरपाय ॥ एकतो अंधियारी का
री लागत डरावन तैसेही अवध वीतन लागे अजहूं न आए ॥
दादुर पीक मोर सोर करन लागे विर हितन लागे डराए ॥

५०

रागभैरव ॥ चौताल ॥ सेवा चरन रघुनाथजी वर के सकल ज
गत तारन ॥ दीन दयाल करुणा सागर पावन प्यारो श्रुति
आदि अनाहद कारन ॥ सीता नाथ दशरथ नंदन दासरथी भ
क्ति हित स्वरूप धारन ॥ ज्ञान दास अनाथन के कृपासिंधु तेही
जगत आधारन ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ कीकर आवों हा

क॰
रा॰स॰

जे चारौं फल अर्थ धर्म काम मोक्ष प्रात होत जग जाना ॥ राग
भैरव ॥ चौताल ॥ मुरली बजाय रिझाय सब मोहन नैं गोपीरी
जरहि रस तोनन सो सुध बुध सबै बिसराई। धुन सुन मन
मोहे मगन मोहे मगन भई देखत हरि आनन। जीव जंत पशु
पंछी सुर नर मुनि मोहे लिए सब प्रानन। बैजबनवारी सुर

51

नोनसैंके प्रभु तुमनीके जानो भली खपलीनी मोरे याप ॥

राग भैरव॥ चौताल॥ भैरुं भय हरना सुख करना सबनके

अभय वरदाना। भैरवी अरधंग अरुण अंगकोटी इंदु सम छ

वि दामनि दुति गाता। वाम कर खपर त्रशूल धरनरे मुंडमाल

नैनो ज्वाल फिरतमाना। वानी वर विलास स्याम रामकोटी

क॰
रा॰सं॰

कीनी बावरी सीस रोन एको काज । काहे कौं ठेर करी हरि मेरी बेर वैज को वेग मिलो प्रभु मन मोहन माथो स्याव नियान शिरताज । राग भैरव ॥ चौताला ॥ मोसौं जो अवथ वद गए सांऊ के भोर रहो अए । एसी काऊ वनर नार जहां नमर सवस किए एसे नेह नए । अथरन अंजन भाल महा वर तिन तिलक ठए ।

५२

ली ग्रथर थारी हूंदावन चंदवस किए स्रुननहीं कानन ॥ राग

भैरव ॥ चौताल ॥ नैनन कों नहीं परनहै कल कमल नयन वि

न देखे जादोनाथ ब्रज राज । कालिंदी के तीर भारी भई भीर व

लि वीर वासुदेव वनवारीके कारण तज दई लोक लाज । व्या

कुल मलिन वदन मदन कीन स्रुधि रहि उधि हरहरि लीनी

क॰
रा॰सं॰

राग भैरव ॥ चौताला ॥ रैन बी माय आए हो लालन कहां जागे

सारी रात बात कहो प्यारे । नव किशोर न वल तिया संग जागे

पागे अंग अंगके चिन्ह न्यारे न्यारे । सगरि निशा मोहे तरफत

बीती भोर भए आए ललारे । तान तरंग रंग रस भीने कीने

नख चिन्ह भाग जागे आज हमारे ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥

५३

नोन सैंन प्रभु जावोजी जावो नई नार रंगाय ॥ राग भैरव ॥

चौताल ॥ ऐसे कैसे बनेगी प्रीत रीतकी मिलन नहीं मनला

य कबहूं देखन वेसी वटमैं ग्वाल बाल संग गोधन बन बन

चराय । कबहूंक तुम कुंजन तें आवन रहनतहो खेल छिपा

य । प्रेमरंगाके प्रभु घरी पल छिन विन देखे रह्यो न जाय ॥

कं·
रा·सं

दिदेव ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ जिन करो मोसें छूटि छूटि ब
तियां तिहारी प्रतीत मोहे नेक नहीं आवत । वेतो लंगर कान्ह
नहीं छाडे अपनी वान वय वस तिनके यह जावत । मेरे अन
न आय लावत सौंहें खवावत पग परस परस निज चूक
छमा करावत । बार बार को रिसा वन तोन सेन पताहि सोहा

54

चंद्रवदनी मृगानयनी हंसगामनी चलिहै पूजन महादेव। कर

लिए अग्रधार पध्यनके गुंदे हार मल दीय गज गए देवनमें देव

महा देव। सोलह सिंगार बनी सो आभरन सजन ख सिखहे

दर नाई खबवर् तिन जाईके निर्मल मंजन कर सेव। तोनसे

न करहो धूप दीप अक्षत पत्र नैवेद्य ले ध्यान लगाव हरहरहर आ

क॰
रा॰सं॰

दाता । जाकी कृपातैं सुत धन लछमी पालन करै सब जग त्राता ॥ जोई जोई आवत मन फल पावत सब गुनी धन कौं देत विधाता । तीन सैन प्रभु जग जग जीवो चरन कमल रंग राता ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ शिव संकर सर्व पिनाकी वामदेव विरूपाक्ष त्रय लोचन त्रिसूलधारी । महादेव महेस्वर ईस्वर वृषभ

वत॥ राग भैरव॥ चौताग॥ सोवन चंद वदनी म्रग नयनी

पिक वैनी मन हरनी चंपक वरनी गज गमनी बन बन वैठि

रंग महलमैं। अधर बिंब यरे दशनन नासिका कीर भ्रकुटी

यन नन झलकन प्यारीके सोदास मंद मुस क्यानमहलमैं।

राग भैरव॥ चौताग॥ प्रथम नारद सरस्वती गणपति ब्रंथ

कं
ग·स·

रहे रतिरण जगावन ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ वेदऊला सरीक
अला अमी ऊदरन रट हमरो कीनों रसूल जगत सहारा आप
कर नार कर सतनहै दरदीयो नवीको। सम कर वसी सयारो
उमदको दीन मजब सम मदीन इलम आलीव ऊहा हसन ऊसे
न होउ करन सेवा वेदगी। हक आरव दीन आवद सा ऊदवा

5

वाहन मेरु माल कंकंके कारन शेष विष हारी ॥ राग भैरव ॥
चौताल ॥ कौन सों रत मानि सांची कहो मन भावन । निशिके
जागे अबरागे आए हो झुक नलागित्व झुम झुम आपहो
मोहे रिझावन । वचन बनावन बन नहीं आवन कहि देत नैन
बैन दर सावन । तान सैनके प्रभु वाही सिधारो जहा सारी रैन

कि॰
रा॰स॰

रुन सरस्वती शुभ्र प्रगट होत चंद किरण जोती प्रकाश पर कु

वन भुज तेनी । तैसे वन वनतेऊ मिलन वली लाल प्रति रंग

भीनी । भागी रथी तरी भगत तारन स्वरग उदारण सारनी ॥

सवभू प्रपावन पैथार तीरथ प्रयाग वेनारी जलौधा पति

धरनी तरनी । तोलौं उत पति नर नारी अला विस मकर

कर जाफर काजम र जानकी हकीकत कीन कीनक वादीन ग्रश
करी। अगमहरन मैं हेदी महम्मद हादी रहनुमा ॥ राग भैरव ॥
चौताल ॥ है का लिंद्री पति प्रताप वीर ओधानरी सरस्वती मिल
भई त्रवेनी। पीछे तें आवत जमुना श्याम रूप वरन गौर रूप
वरषत पाषाण नीर गोमाणाते वलि जमके वेनी। अहन व

कं
ग·स·

सो लेही कला संष्टरन भाई ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ भोरही आ
पहो लाल देह मह्या वर तिलक भाल अरुन नयन अलसा पगा
न ॥ छनञ्ज वनी जिन विरमा पलमही केञ्ज गोहो जहो सारी रात ।
पलन पीकरस अधर अंजनकी वनरही विन गुन माल लाल
विनात । कंकन गडो पीट उपरम कदले देखो आप अव राम

न्हावत करत अस्नान गावत भरनाद तोन सैन गाणी ॥ राग भैर
व ॥ चौताल ॥ वरषा रुत वनिता वन आई नैननि मैं निरखन
लगी रुहराई । कंचन सीलता अली अलवेली सी नरननई नैसी
यरु केश स्याम वरन छटाछाई । रुहस वोल गावजन दशन चा
मकके थाई । वदन पसी लागत मानो वदरीके मुवंदे कीनों

क॰
रा॰ सं॰

मिट गयौ अमंगल भयो मंगल किशोर स्वर जग मगाय उठ्यो
महल जागी जब जानकी ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ दोउ अनु
राग भरे आप रंग भवन भाग थन बिज्जली सी लखि लाजत स
हल है । बैठे एक आसनपै एक संग एक रंग उद्योत परन से
गको मल कल है । एकन ले अनरल गाय दीनें दोउन पै छि

झूलकाहे वना वन मोसों वात ।। राग भैरव ।। चौताल ।।

आस पास सह चरी नूपुर झन कार करत चमकी कलिमा

नों फूल सेस मानकी । सोंधे कील पट जैसेद पटके अभिरन

की छटा दिक वदन देखि उठत झल मानकी । झोंकन झरो

खनके परदे उघार देन चरन आय लागी सोभा सत भानकी ।।

क॰
रा॰स॰

मोकों आली विन देखें अपनें पीयकें ॥ एक पल अंतर सजन नाहीं दिनदीए कछु कैसे समझाउ अपनें जीयकें ॥ राग भैरव चौताल ॥ आज उठ चली प्यारे पै आपही मनावन कौन वसत सिंगार कीए वीरे आभूषण पहिरे वनाए ॥ प्रथम मंजन अस नानकर अंजन दशन वीरी अधर पान सिंदूर भरे मागके सर

६०

६०

रकन गुलाब किए पंखे जो वह हल केल हैं । और लीने बीन स
रबीने अलाप कीनी राग रंग महर भर गुंजन नैं गुंजन महल है ॥
राग भैरव ॥ चौताला ॥ नींदन आवत पिय बिन देखे मोरी आली
कैसे परे अब चैन ॥ घरी घरी पल छिन मोहि बीतत जात रह
त मारग जोहत नैन ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ चैनन आवेरी

क॰
रा॰स॰

बस करनैननसौंल भाए ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ नखत बैठे

जसन कीनैं साहसक बेथ पंडित ज्वी विचार प्रबल राज पायो।

कनक दंड चवर छत्र रतन जडित जग मगात सुर नर मुनि

गुनि गंधर्व गायो मृदंग बजाय इंद्र लोक देखन आयो। एसमै

जोबक सराज भक्ता नरंग देत अरब खरब जैसै मेघ झरलायो।

कर कराए । जावक पावन हाथ मेंहदी साह अकबर सुगंध अंग अं
ग लाए । सेत सारी अड़प माल बोलीस्तन हंसी वां हगारे मक्क मा
ल सहाए । सीस फूल श्रवण ना टेक भज बाजू बंद फेंद सहाए ।
नयवे सर सुधार कनक किंकनी कुंड चांदिकान् अर विक्कवान
की भनीजे हरि सनाए । कमल जीवन लक्षी रामके अभको रम

क॰
रा॰स॰

दया प्रतीत जीयमें रची मदन रायके नित ध्यान ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ जशोधा नंद आनंद कंद गोविंद गिरि धर मुकुंद म धु सूदन बन वारी । बद्री नाथ वामन विठल वासुदेव मथुरा प ति माधो मुरारी । कमला कांतकेशो कृस्न कमल नयन कृपा सिंधु करतार कुंवम कल्याण केसारी । राधा वर रंग ब्रीज रसि

६२

६२

चिर चिरजीरहो जलालदीन अकबर चक्रंवक सीस निवायो ॥

राग भैरव॥चौताला॥ माधो मधु सूदन मकुंद मुरली धर मद

हास। कमल नैन वासुदेव अवलषे अकषोत्तम परमेस्वर विस

हरन आस। नारायण निराकार वामन विठल लछमन

शंखचक्र गदा पद्म सोहत है पास। पतित पावन विरदजाको

क॰
रा॰स॰

हिदायत आजजकौं दीजे संतत संपत दीन दुनी कुशल हेमति
हारे नामको आधारे ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ मेरे मन अल्ला अ
ल्ला ऊर रटे रसना ज्यौंकेरे आय । निशदिन ज्ञान ध्यान और जप
म्बर सदको यह सीख सीख ले समझाय ॥ राग भैरव ॥ चौताल॰
हजरत महम्मद रसूल अली वली माख हूल ख्वाजहसन बसरी॰

6

कराय रंग नाथ रमापति दास सागर प्रभु रास बिहारी ॥ राग

भैरव ॥ चौताला ॥ प्रथम अल्लाह अक बर करो रे तुम मेरे मन

हजे रसूल चित धरो रे । वेहून वेचु गुनवे सवे वेच मन परद पो

श दाना बिना पाक जात वाही कूं याद करो रे । पसो आलिम करी

मकरम को करन हार जो सुध नित लेत तेरी निश वासर रे ॥

कं
रा॰कं

हजरत महबूब करसीदक उमरू अमरत अल्हर मुलको सरदी नए
र दीन मरमजव जैसे रदीया आगम मयार अमीक ॥ कहन सजान
हजरत ईमाम पाक इमामन बीजको आन वाहन दिनेन जी के अली
वली माहव करमसे इझाली करनहै जुलफ कारमार फकर जेर
कीए महमदी वलमा कहायो सवनें मनायो वरडहल्ला शरीक ॥

६४

६४

हजरत अवहल वाहद वेनजेद फजल वेनय आलम खल तान ॥

इवराहीम अथम कमि कामकीज्ये मो पर सहजी फजलम रा

रीहि वेर नल वसरी ॥ राग भैरव ॥ चौतारा ॥ हून वेच रहन

वे खवे वेनमन हूसरी रच्यो महम्माद अवल आखर हकीक ॥

फन कीनों च्यारों यार वासि पान वाक वार अथम सीदक सावत

को
रा॰ सं॰

हार वधायो । वेसीधर प्रभुको जश स्तुति गनहैं सवहीको लागत

सुहायो ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ आपहो जु भोर भए सवनिश

अनत जागे अरुण वरुण नैन लिए मेरे आए । डगमग पग धर

त जात वातनमें नत रात झूठी झूठी सौहैं काहे कुं खात । अत

ही अल सात जात जिन संग रंग रस कीन वलमा सवाद सजी

65

राग भैरव ॥ चौताला ॥ या करीम सत्तार जबार सहस नाम पाक

पर वर दिगार ॥ बिन अवड्ला बरसे नूर नाम महम्मद किताब

रस्सूल करतार ॥ राग भैरव ॥ चौता ॥ सब मिल गावो बजावो सर

देग आज हमारे लालनकी बरस गांठ कनकथार भर मुक्ता हल

कर करियो ब्चावर पायो ॥ नव नव पलवनकी माला द्वारन

रा॰ सं॰

साहब दिवान। यह सेवग विनती करत तुमसे तुमही नेनका

य मरखा प्रान। तुमारो होऊ तुमे छोड कित जाऊं पाऊ मान

इछा फल सब तान। मदन सेवगकी अरज दीन दुनियां मत

अवल करहो दान॥ राग भैरव॥ चौताल॥ सलिला अलह सला

म महम्मद अरबी रसूल। जाकी प्रीतमें रच्यो संसार सकरमी

६

रहिए उनहीके उर आप होउज ॥ राग भैरव ॥ प्रथम उठ भोर

ही नाम लेत अलिन वी फान माहरमन ऊमैंन नैन दोउ जगके

निस्तारवे को तिहारी आस ॥ नरके जहरने सधाजे मोन दीन अ

ज मेरी दाता पात साह हिंदल वली हो मोगत गुन गयान गुण

की गास ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ सुरन जा अली वली सांचे

क॰
रा॰स॰

खुन लीजे कीजे निहाल एक पल में सदा अली वली रवी नुलसफी

सफर को दीजिए अन धन सुख संपत अब ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥

ऐ मन सुमरन करो प्रथम नाम । करीम रहीम सब जगके दाता

हरी पल छीन अष्ट जाम । वाकि कुदरत को उन जाने जाको पू

जन सब जग धाम ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ हजरत अली इमाम

67

८

ओंकार राखो सब मूल ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ न्हसकल आ

शान कीजे वेगी अलह साहब वाले रसूल केहै मेरी सो । मो

मन की चिंता बिरजाय इरव पापकटे याकरीम यारहीम रहमा

नरब । अरजकरत तिहारे दरबारजो आय वाको देत एक

छिनमै । राज पाट अरब खरब मांगत हौं मेवाना नमदाना

क॰
रा॰स॰

माह जिफ वलमसरी वेदवल वसरी ॥ राग भैरव ॥ चौतारा ॥

माह अलाव दीन मोज दरीया रोशन जेभीर रसूल आल ॥ मेड

गरीव वेगरीव निवाज चर न्यामत दे ॥ राग भैरव ॥ चौतारा ॥

वेकरीम करनको नंदा वकमन हारा नव निधको । सोई सत्ता

र पाक पर वर दिगार सव भेदको वेम हकीम करमको नंदा

६८

हसन हुसैन मदत कीजिए मेरी सबे श्याम। जलालदीन मह

म्मद बाकर मसादक जाफर नबहो श्यामहोय श्यामहोय ॥

राग भैरव॥चौताल॥ हजरत महम्मद रसूल अली वली मघद्

ल पाजे हसन बसरी हजरत अबदुल वाहद वैनजेद् फलवैन।

या अली बलतीन इबराहीम अथम करम करम कीजे मो पर

क॰
रा॰सं॰

निरंजन निराकार कहे वहे हझूल हले ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥

मोसौं ज्यौं अवध वद गाए सांझ किए आए भोर भए । मोसौं को

वन्दर नार जहां नम विरमाए पसे सुख पाए । प्रात उठ आए

हो मेरे कौंन तीया रंग राते । अंजन अधरन तंबोलननि शिनैना

नींद घुमाते ॥ राग भैरव ॥ ताल चौताल ॥ पिय प्रवीन परम

69

वकसन हार ।। राग भैरव ।। चौताला ।। मेरे मन सुमरन करो ना

हे अलह नाम लेजा मे होवे सब तेरे काम । महम्मद रसूल पंज

तन पाक चारो यार और हाज दे इमाम ।। राग भैरव ।। चौताला ।।

जोन महम्मद रच्यो अरस कुरस लोह कलम सबसे पहले ।।

अवने आप प्रगट कियो नूरदीप करम जब करम भयो कबीर

चातुर मोहन सूरत नागर । रोम रोम चाहे वरनन जाए मोपै

एसे स्याम आगर ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ वेदन दरद दूरि करो

हजरत मेरा ख़बरकहो स्समरत हजरत इमाम कासमर सद

सांचे हो तुम पीर । जेई फल मांगा सोई फल पावे राज पाट सु।

ख नसीर । नैन सैंनके प्रभ रहीम करम कीजे पापन दहन शरीर ॥

कृ॰
रा॰म॰

वनचरन और व्रज बीथन आय रोकत आंगन बैठे। न काहूकी कान करत ना डरत पसोही उत गारो उमैंडे। प्रभु लरनको कहा खोर दीजे आली बीपे गोकुल गावको प्यारोही पैंडे॥ राग भैरव॥ रूपकताल॥ मुरली बजावै आप न गावै नैन प्यारे नचावै यह सवही तीयनके मनको रिझावै। उर उर आवै पत घट

॥१॥

८८

फव पद ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ अनत रिन मान आप पिय भोर

हो मेरे । मोहि तो सुध भूल गई री मोहन मुख हेरे । जिय की औ

रसों मेरुको हमसों कहत नहैं टेरे । मान मैन प्रभु ताहि पै सिधारी

पर अमन रह्यो जिन तन तन नेरे ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥

अब मेरा साथा सब लिए फिरत माई पैंडेरी पैंडे । जल थल

क॰
रा॰ सं॰

जपरंगे तपरंगे तीरथ व्रत नेम रंगे सबै मई प्रेम प्रेम रंगे ॥ जी
व जंत पत्तरा पशु पक ईश्वर रंग रंगे सुरनर मुनि संग रंगे वैज
प्रभु कुल रंग रंगे ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ माई काहेकुं कसे
श्रवही जैसो मोहे जिनवर जो लाल नन कोरी चितवो ॥ मन मोह
न माने मार कीछवि रीजत प्रेत मत गत सय व्रय विसारी

२५२

काहूके चटन उगावै रसना प्रेम जनावै । मोहिनी मूरत सावरी

मूरत देखतही मन ललचावै । नैननसैनके प्रभुतम बहुनायक

सब हीनके मन भावै ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ पहो ज्ञान रंग था

न रंगे मनरंगे अब [illegible] अंग नरंगे ॥ प्रथम राम कृस्न रंगे रहीम

करीम रंगे घट घट ब्रह्म रंगे रोम रोम मन रंगे हरि मेरा रंगा रंगे ॥

क॰
रा॰सं॰

या मैं मैं सबही मिल चलिए याही मैं बडाई ॥ राग भैरव ॥ ति

ताल ॥ इत मां नउत साह अकबर दोदर सउयों देखे सोई होत

पवित्र इंद और जन मंद सरनके बरषावे उपन आनंद । वेति सिर

हरन प उरव भंजननता कि सैं हे करीय नसैं हृदि नौ मकरंद ॥

वह सहस किरन प्रकास कीनो अति त्रय ओइ मया यरजग वंद ।

सब ब्रजहूं भलजैहैरी तोहि सिख देवो । लगन सो फल ताकी
कहा कहिपरी अब लोगन सुंदर साखि भयो प्रेम बीजको बोइबो
॥ परम रुचि रह्यो साहजहां तिनको पंच सब जूते सरस भूप व
स करके मन गात मन हर लेबो ॥ राग भैरव ॥ ताल तिताला ॥
बारबार बरजी मैं ने यह कौन बनराई ॥ ज्यौं ज्यौं साहकी हकीम

क॰
रा॰स॰

पीउ अव गीउ नाम तुम राण रहीम मौला ॥ राग भैरव ॥ तिताला

लायदे खोखोरी माई प्यारे को वदन ॥ स्याम विरह मोहे व्यापत है

वाही की शरन ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ कौन सौतन मानी सांचि

कहो मन भावन । निशि की जागी अनुरागी आवे झुकन ला

गी नव तुम आप मेरे वचन बनावन ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥

तोन मैंन कहे कहो लो भुलात करे कादन हार विकारउरवर्डद

राग भैरव ॥ तिनारा ॥ करम करकरीम न्हे सतार गफार भुथा

र वेदे कों रहें न्हे मा तेहरी पाक परवर दिगार मौला ॥ जोई जोई

मांगनउ न्हमपे सोई सोई मव ड्कम होय विह सिह नव निय

वहो उनियों दीन ईमान सहत औरजीवन न्हकन खबे संपत

क॰
रा॰स॰

मसीरजा जाको दरस देखें जायदा लीद दोंम ॥ हजरत नकी अली नकी हजरत हसन असगरी इमाम महम्मद मैंदी साहब जमानदे सब संपत संतत रावो सिद्ध लोकमाम ॥ खोजापीर निजाम दीन औलीया नें ससार परवर दिगार करीम रहीम द री याई पीर रोसन गाजीधाम ॥ हैदर रदसल गोस कुतब

७५

महम्मद नवी हवीव अलहके साह मर्दान अली वली मरदक्र

फरदा लिद हसन हजरत हसन हूजरक ईमाम ॥ संसारके

साहव हूसैन सैयद सहजादे जेन लावदीन दीन पर्ण महम्मद

वाकर करतार कीनें मन चिने करन काम ॥ हजरत जाफर

सादक साचो सीदक ईमाम मसिकाजम हजरत अली विन

क॰
रा॰ स॰

रसके कुंवर रस भीजे । नवल कुंजन में नागर वन सागर ने
रोही ध्यान लाडलीला उल डाय लीजे ॥ राग भैरव ॥ ज॰ ति
ताल ॥ मुरली बाजे गाजेहो मुख मोहन के गोपीरी ऊभीज
रही रस गोनन । हरजने भन सुन कै आई भई मगन मनदे
कोनन ॥ राग भैरव ॥ तिताल ॥ जनम जनम को मै मान

दीन अलाफकीर तानसेनकों दीजे राग देस तीनग्राम ॥ राग भै

रव ॥ तिताल ॥ ध्रुवपद ॥ माई काहे कों कान्ह अबही जो मोहे

जिन वरज्यौ ललननकों काहे चबर ॥ मदन मोहनने म्वर प्यारे

की प्रीति मनयात सब विसारे भलजा परी मोहे सबव दाई अ

तर ॥ राग भैरव ॥ चौ० ॥ तिताल ॥ मानकाहे कों कीजे श्रीराधे

कं
रा॰कं

राग भैरव ॥ तिताला ॥ प्रथम आदेश गुरु के परम गुरु को । रैन
करन प्रभ एक सहस्र साखी महिमा पावै अक्षयहू विथ दिनौं तु
न अत पति सबको ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ अंजन रेषना टेक
लाइरी लील मिला वरेकेल कीए ॥ जुगल कमल मथ पसे ला
गत मानैं सोभा देत सोमली लीक दीए ॥ राग भैरव ॥ तिताला

हेनेरी आली जो ह्रुदाय जानो गिरि आलिता है अब गिन
झेरी चातर अत ॥ अपनें सोरु सुनें हम मेरोइ जानत सम
झन सकत गाफो मानहोत कौंन जगत ॥ राग भैरव ॥ ति
ताग ॥ राम हमयो ही भले अबयोंही भली हो राम ॥ जोगत
गई सोगत आई हमारी सेंवासें अबमोही तो रैन दिन यहकाम

क॰
रा॰सं॰

य जियकीन पावै पने पर मोहि गिवजावै हनी होवे आवै पैसी हा
रान जनावै॥ राग भैरव॥ गितताल॥ रैन गंवाय आए मेरे प्यारे स
व निशि जागत गई। नैननमें नींद भरे आलस जंभात जातका
ह प्रियारस वस कर लई॥ राग भैरव॥ लालके संग लल नारैन
जागी और लाल लोचन लागोही आलीरी मानों वधूप हूप सीठे

78

लोचन रूमरहेरी हरि संग जागत। कमल खीन भए सरमजेंगो

लजाय गए सफरि डरि देखत खंजन भाजत। त्रिय सब सके

लि बसके चाविह सहस कान कौंनै लागत। जीवन निरिथ

र प्रभु प्रेम समुद्र रंगरूकोरन साजत॥ राग भैरव॥ तिताला॥

अपती कहि और पियकी कहीप रीनो पैवातकहीन आवै। पि

क॰
रा॰सं॰

राई। ज्यौंज्यौं प्यारेकी प्रकृति त्यौंही पैचलिए अवयाहीमें वडाई ॥
धन तेरो रूप सुहाग भाग यातें सोतें चटहू लागे माई। धन तेरो ल
हनो जाके साह आजम कृपाकरे सुखदाई॥ राग भैरव ॥ तिहारा
जन मरकोमैं मान दानोरी आली जो कुटाय जानोगी वाहै अव
गिन उरी वातर अत ॥ अपनें मोहटनैं तुम मेरो हू जानत

४१

ना मथ धरी पसी सोभा मानौं भंवर लपटात उन मथ उड परे रंग

म जीटे । उनके हे के भेष रहिहैं मेरे जान खंजन कमल मीन

मृग लागे वसीटे । शाह अकबर पिय कौं मोहन दीजियत अक

सानैं नीदन अचानैं अलख लाडे धन वाट छाविले फिले विनव

न मीठे ॥ राग भैरव ॥ तिताल ॥ वार वार वरजी तोहि यह कौन बन

क॰
रा॰म॰

एसो जान सब भय अपनें परापल्यावोरी सबके अनेक तोझा वर देत केवन कीप्यारी ॥ राग भैरव ॥ जलद ॥ तिताला ॥ दाता तेरा करम ने सलार पाक पर वर दिगार ॥ ने करीम रहीम तेरा न्हैका वक्सनहार ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ हजरत इमाम अली नसीरजानमकों मानतहैं सबल वली पंजतन पाकहा

80

२०

समझत सकत गा फो मान होन कौन जवान ॥ राग भैरव ॥

निताग ॥ सो जागे मोरे भाग भागप वलमा भोर भए तुम आप

हम सों अवध वद अनन विरम रहे उनके संग रस पागे ॥ राग भै

रव ॥ निताग ॥ वह छन इच्छा पुजी प्यारे नेरे मनके मन चिते

कारज भए रोग दोष सब हर गए मंगलगावै नर नारी ॥ नेही

क॰
रा॰सं॰

रह मन इछा पूजी प्यारे तेरे मनकी मन चिंते कारज भये रोग दोष सब हूर गए मंगल गावो नर नारी ॥ तेही एसो जान सब भए अपनें पराए भयोरे सभके वने मनो छावर ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ मेरेतो आपही भोरे सब निश अनतही वस । तेरत ही मानि रिन सों कैसे डरत लिए सो आस सब हेरे ॥ ध्यारोजा ।

जदे इमाम ॥ वाकै दरमा हमसैं मांगन त्यामन नाल वली प

महम्मद इलाही हजरत इमाम अमीर के लाड लेजाम ॥ राग भै

रव ॥ तिताल ॥ सकरगंज पीर तिहारे प्यारे आज जन्या मन मोरे

पाप ॥ अरा रज गविजमते डरव से सरमिंदगी दारेव ले कुमरी

सफत हस्तो नो वेंदगी दारेलाप ॥ राग भैरव ॥ तिताल ॥

क॰
रा॰ स॰

भ्रुलोक लियो चिरंजी रहो साह साहीब किरान सो दिलीपत
विरंच रच्यो नवियो ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ विराज सिंघासन
बैठे गाजे जग जीवन सकल दुसमनकों । रोज रोज नौरोज
होत छन अष्ट दिशा पाल लास करत छन देशन के नरेश
आप चरन परसनकों । दशों दिशाके गनी मन मिल मान

८

म जानत जन बरी हम सेवा जगावेकी गरज हैरे। शाहजहां

पिय पैन गई तुमारी चोगि वोहरे॥ राग भैरव॥ तिताला॥

सकल जगतकी इछा करनकों विधाना एक तोहे कियो।

ग्रन समा धान सब विधको ज्ञान स्वर ज्ञाता ध्यान तातें शाह

जहां सिरछत्र दियो। श्रप वल भुज वल दल वल करके भू

क॰
ग॰स॰

जाकौं आपबल दियो पहो आपबल दियौं । सगा पन सगा मेंगाई सिर मोर थोल सिर सिंगी सांई पातसा किए वडाई चारौं चक म नि सहाई तेरी है वडाई ॥ जग पर कियो कर सिमर स्वर थर तेरे क्र ल हो ते आए तिमिर लंग अमर बाबर हमों उदीन हार जाके साह अक वर ताके साह जहांगीर नरपति नर ॥ गावगाने लांगे

४३

लपने दानलए हरपन भूत्रपन आनंद भयो मन हरखन कों ॥

वडे जीय सह सरसना को संतान सहन प्रथी पन नर को नर

शाह जहें जहें लो रवि ससिन भरहे श्रोर वसुधा वर सदा वरस

दिन दिन वर मनकों ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ कउषा ॥ पज

हांगीर को साह जहें जिन जग पर कियो कर साह मरदीन

के·
रा·सं·

हिपनरहे ॥ साह वहा उर अतिविचित्र मासों रसही रस निवहे ॥

राग भैरव ॥ तिताला ॥ तै जनम करन हार मोही जनम दियो

संसारमैं तो पर वलि जैहै अव ॥ और जो वचन मो मन आगे

अति कठिन लागत तिनकों छिनहूमैं सुदिष्ट करन सलार

दीजेसव ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ मेरे आप भोरे हरे सव निश

8

उरन मोन हीन शृंगार करन राज तेज काय दायम ऊनब श्र

वर ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ प्यारी बोली ते चलरी हो हित भई

कहतहैं तो सोंमान जिनगहे ॥ नीचीनार करा करहि सुंदर

उंचेचि तेतेकमो ननजेहीहे तेरे जीयमें सोतें वेग उत्तर देहे ॥

सबहीतियनमै तोहीसों भाव रहे पिय जियकी तासों तेहठकर

क॰
रा॰ स॰

राग हिंडोल मिल गाई ॥ उतम मधु रितु फूली इन कामकी वे
ली पसे पिय तिय दोउ भोन एक ठाई। अति सरव दया दोउ विव
घन राई सुल तान सलेम पिय हमीहि मनाई॥ राग भैरव॥ति
नाय॥ कर जोर मोर जे भानी पैंडानी कामन कामकी वफा
एकमान। ध्यान मोह पलक मथ वरनी पैंच खेंचलेगो अति

८५

अवनन ही जागे ॥ स्वरन जहां मानिनीन सो कैसे हूं न लिए मास

स्वर हेरे आगे ॥ राग भैरव ॥ बिलावल ॥ वन वन वनता आई है

पिय मन भाई सोनन मथ खेलन लाल भंवर मानों फूली फूल

वारी ॥ एकनसौं नैन सैन एकनसौं मीठे बैन एकन कौं पाछे

ते अंक भरत अचानक भरत अचानक छबि भई हूनी हूले

क॰
रा॰म॰

तिताला॥ अधरन लाली सो कहूं कहूं रही मानों चरी लाल चूनी ॥ प्रीतम मिलके चीन दशपन लेदेखत याते मुसक्यात छ्वि भ ई हूनी॥ राग भैरव॥ तिताला॥ प्रथम नाम लेले मन मेरे अल्ला हो अकबर। और जेजे वाते विकारन न मनतें दूर् करो ध्यान जेहे जी कर कीजे हरदम एकत कबर। जिननोडे एसो कीनें

४६

वन रागे वान ॥ राग भैरव ॥ थी· तिनारा ॥ प्यारी तेरो प्यारी आ
ये प्यारी प्यारी वातैं कर प्यारे कौं मनाईये । अनेक भांतन कर
प्यारे कौं रिझाइए आलिए सो प्यारी कहं वर वैठे पाईये । लाइ
सनझाइए कौन भांतन कर सावदे वुलाईये । साह वहादर
तेरे रस वस भए अनरस कर कर सो नन हुसाईये ॥ राग भैरव

क॰
रा॰सं॰

हे निसतार लीजे म्हां जपत हैं तिहारे नामकी । इतनी अरज सु न लीजे जगमैं राखलीजे लाज काहू कोन कीजे मोहताज अंतके समैं दीजे आस राखत हैं तुमते कौशरके जामकी ॥ राग भैरव ॥ तितारा ॥ दम्पत क्रीडा करत अनेक कौतक निशा बीती रैन सारी ॥ जुगल किशोरी मानो मावडन बोले जबही पियारा तबही

दीनों पीठ पान रयोने कौन वकवर। रहीम करीम सनार जवा

र संचो जाके दो उसमै निजल गोलन खवर॥राग भैरव॥ति

नारा॥ लोयन लाल लाल सव निश जागे है हो कौन सेग॥

ज्पकन प्यारे तुमारे श्रोर सियल देखि यनहै श्रेग श्रेग॥

राग भैरव॥तिनारा॥ याहै दो कनार साहव ज्जुल्फ कारमो

क
रा॰मं॰

निश दिन हसत बोलत डोलत तेरेही गुण गाव॥ मैं कहा कीनो सजनी री उर सूजी पगो री तेरे पाव॥ राग भैरव॥ ताल रूलफाकता॥ मोसें जो अवथ वद गए सांझके भोरही आए। ऐसी काहू बन्दर नार जहां नमर सब सकिए ऐसे नेह नए॥ राग भैरव॥ रूलफाकता॥ आजकौं जग आप पाप मैं तवही बात करत हो

४४

८८

कसकत प्यारी । कबहूं लेत हसाय हसाय विजाय रिसाय रीझ
रीझ हसत दोउ भारी । यह प्रकार विक्रम साह रीझ देख देख स
खि हारी ।। राग भैरव ।। तिताला ।। ताथ पखावज बाजे आवज था
वज मिलत पखावज नीकी नीकी तानसों ।। बीन रबाब सुर बीन
सुर मंदर और ततकी तांन वितनकी मनसों ।। राग भैरव ।। ति०

कं
रा-सं

वङ्गन तेरी अकेला ॥ राग भैरव ॥ खलफाकला ॥ हजरत पीर मुर
तजा अलि जीहैं सेवक तुमारौ तिनकौं ॥ हौ मांगत तुमपै इतनौ
इच्छा देया मेरौ हितकौं ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ पउर पावै मोहे
यह जान पिय विदेश गवन कीनौ । एकनो अंध्यारी कारि वि
जुरी चमके हूजे दम कदम कवि रहजगावै ॥ राग भैरव ॥ रूप

81

नो नराए । एसी कौन विधा संगा ब्रम बिरमाए अब भलो मना वन

आए ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ प्यारे तेही ब्रम तेही बिस्न तेही रुद्र

तेही गरू तेही चेला ॥ तेही जल तेही थल तेही अवल तेही प्रवल

तेही छैल तेही थल वेला । तेही ऊंच तेही नीच पाप पुण्य तेही

बीच तेही सौ मेला । तानसैन करे प्रभ कहो लो वखानू तेही

क॰
रा॰स॰

झिमि झिमि रस बुंदन । मुरली की धुन सोई गरजन तरफन न
उन मुसकान दशन श्रीपवन पंथ गीव रह्यो पोहो प गुंदन ॥
राग भैरव ॥ रूपकनार ॥ हलाकि नहल किन रोवन है हरि करा
विजाय । हौं जो अकेली सीकर पाई वडुनकी अथकाई जाके अस
अनेन हाथ योवन है माई ॥ राग भैरव ॥ रूपकनार ॥ उमड जो

१०

९

कनाल ॥ कान्हाने अब घर उगारो पसारो कैसे होय निरवारो । य
ह सब घेरी करत है तेरो रस अन रस कौन मंत्र पढ डारो ॥ मुरली
बजाय कीनी सब बोरी लाज दई तज अपने अपने मे विसारो ॥
तान सैनके प्रभु कहत नमही सो नम जीतो हम हारो ॥ राग भै
रव ॥ रूपकनाल ॥ कान्ह खेलत आयो होवन जिम बरसन लागो।

क॰
रा॰स॰

पप म गा म म ग रे सा ॥ राग भैरव ॥ ख्याल फाकना ॥ एक ओंकार निरं
कार जाको सब जगमें विस्तार । यह प्रतक्ष देख भयो प्रतीत ना
कों स्मरों वारंवार ॥ राग भैरव ॥ ख्याल फाकना ॥ प्रथम उदीपन
कैसे होन कौंन राग कौंन स्वरतें आज स्वरज गाईए । सा रे ग म प
ध नी सा सम स्वरके भेद भिन्न भिन्न करके समझाईए ॥ राग भै

वन घन आयो होत संग दामनी कौन सोई दसन जलक कोकला

ग्रीव कीलक मानौं वै सवयार ले आई। छव झकोर वरसन वहू

और जब भरवा से लागत तन इह विय वरषा रित आई॥ राग भैर

व॥ रूपकताल॥ निसा गम धधध धम गरे सानी धध धधनी सारे

सानीध धम धनी साध नीसा॥ मगरे सानीध सानी नीधध धम

कां
रा.सं

सकल कला पूरन करत आस । निहचेही धरत ध्यान सुमरन कर
मन मान देखत दर्शन गई त्रास । हरे दुख द्वंद सोहत जटा गंगा हे
रु माल गल सोहे बाघंबर वास । हर हर करत हरे पाप मिटे स
कल दुख संताप लहे मन हुलास । गोपालसैन सेवा ध्यावक म
न इछा फल पावे होय कैलास निवास ॥ राग भैरव ॥ ॐ ॥

१२

रव॥ खलफाकता॥ रंग उगान सौं गाय सुनावै ताल मूल सुर सं

गत आवै। उगान तिगान चौगान सो भेद बजावै जब लागडाट परमो

नन देखावै। अपनैं मावतैंन गुनी कहावै ताल मूल मूलको औरो

न पावै। तान मैंन कहे होवै गुनी जन छत्र पति अकबर को रिझा

वै॥ राग भैरव॥ खलफाकता॥ हों ओंकार महादेव शंकर नम

रा॰गे॰
स॰

राग गंधार ताल ॥३॥ सवैया ॥ पाउ परें मन हार
दौं पलका परजाय दियो भय भीने ॥ सोय गई
कहि केसर ऐसे हूं कौरहो कोरक सोहन कीने
सरसमै सुरतै सों सावर्के छिनमे हरिमानि
सबै सबलीने ॥ एक उसासमही के उससे
सिवारेई सगोंय विदा करि दीने ॥ ॥ ॥

अथ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ सवैया ॥ मोहिवो मो
हनकी गतिको गतिही पढो बैन कहा धौं पढै
गी गजोग उरो जनकी उपजै दिन कहि मटै श्रेगि
या न मटैगी ॥ नैननकी गति गूढ़ चला चल
केशावदास प्रकास बढैगी ॥ माई कहो यह मा
यगी दीपति जो दिनहै हरि भाति बढैगी ॥

रा॰गं॰
स॰

२

राग गंधार ताल ॥३॥ सवैया ॥ बोलीनहैा देब
लाय रहे हरि पाय परे प्रकटो लिये ओटी। केसव
भेटि देको भरि अंक कुअरवरहे जकमै नहि छोटी।
रूपे विनै वेकौ केतो कियो सिरचांपि उठाय प्रेमद
लि दोटी। मैभरि चित नजन विसोनबही गहि
नैनन लाजनि गोटी ॥ राग गंधार ताल ॥३॥

२

रागगौंचार माल॥२॥ सवैया॥ यन्त्र भृथरि
लोचन लोलसी मेलि सकांइ कटाक्षकी कोर
काकी॥ सब माधुरि वानी वसी चतुराई यौ केश
मोहन नाम [illegible]की॥ कृष्ठंतहूलनै तन लाज विदा
जगि वा[illegible]ह सबै ऊरमकी॥ नवठौंडसि वाल
हिं वालकता हति यैग अनंगकी फौज चकी

रा·गं·
स·

३

सवैया ॥ आजमैं देषीहै गोप सुता इक डोयन मैं
ही भूरीरकी गाई ॥ देषनरी ठहिये द्युतिदेहकी
देहविदै जैसल देहली ह्नहाई ॥ एकटकी लंबक बि
लोकि रहे जरत बारो विलोकि विलोकनि काई
केसव दास कलानिध वक लिजिय काम कि
मेरो कन्हाई ॥ राग गंधारनामा॥१३॥ सवैया ॥

सवैया ॥ बैलिन बाल बुलावत हू नष रेष लिषे
सुव प्रेम परेषो ॥ आपन हाथ विलोकि विलो
कि कही नव केसव बुद्धि वसेषो ॥ छोटी बडी वि
धि रेष लिषी जग आपुकी रेष सु कौन जलेषो
प्रेम ते बोल सह्यो न परयो ब्रजनाथ कह्यो पि
य कैसी है देषो ॥ राग गंधार ताल तिताल ॥

रा·गे·
म·

हैगति मंद मनोहर केसव आनंद कंद हिये उलहे

हैं। औरु बिलासिनि कोमल स[illegible]ा

सनि गाके रहे हैं। देक बिलोकनिको छबिलो

कि ह्लानकों नंद उमाह रहे हैं। पईनोकानकी जा

त कसावन फूलनके बिधि भूलि कहे हैं ॥ राग

गंधार ताल ॥३॥ सवैया॥ मोहिन गाय ब

कान्ह भले जू भली समझाई हौं मोहि समुद्र को जौ उमह्यो है ॥ केसव आपनो मानिक सो मन हाथ पराये है कौन लह्यो है ॥ नैननसो मिल है कहि [illegible] बैनन को मिलिवो [illegible] ह्यो है ॥ जारु कसौ [illegible] जैसो सखी सकु [illegible] ल ने ऐसो कह्यो है ॥ राग [illegible] पार नाल ॥१३॥ सवैया ॥

रा॰गं॰
स॰

5

लियेउदि यागेके केस आपुहि आसन दीनै । आप
हि जाइ गंगाजि मैले जल पानकौ भाजन लाइ दी
नौ । कौस वस्त्र के [illegible] मो जयदेव छविकौ करली
जन लीनौ । तातैं गाती रति है सो कह्यो हरि मैं तो
रह्यौ अपराध न कीनौ ॥ राग गंधार ताल आड
तीन गोविंद । सवैया ॥ विनवौं द्विज वांपं हमापं

५

जावत नाचत नाच अनेक सिंगार बनायो ॥ जी

हूजै आनकौ आनिवौ कहूंजोपै नेरो नऊन भयो

मन भायो । भावै सनेह करिवो करि भा[illegible]

भाग बडे बल नैं करि पायो ॥ कान्ह भयौ हूयेज

बर नि मारी सचाह निरै अब प[illegible] गुण[illegible]गा

गम [illegible]यार सला ॥२॥ सवैया ॥ आवत दीष

रा.मे.
मे.

जू देषौ मवै रिन वान सनै जूसनी सवरीहैं ॥
[illegible] ऊकु श्रोक दैहैं सवरी श्रव सौंर कवी वकरी
नम रीहैं । [illegible] कनै [illegible] सवकेसव रू
री मवै रमसौंज करीहैं । [illegible] किया [illegible]
री नो रसो [illegible] वके रसिके कोरहीरै ॥ [illegible]
[illegible] ॥२॥ सवैया॥ वैठी सषीन की ।

6

हमें रो तुल्ला पैमें बोलौ वसे निज मौनें ।। मोंह
अनेकनि आवइ अंक कंरौ रमिकौ प्रनि रैन
को गेनें ।। स्वाम्नें घाऊ वसाइ पिरी जन्न आ
ईसे केशव [illegible] हो मोनें । मोहन के मनको ले
रमी सकतै यह यो हिव ईमिव कौनें ।। राग
गंधार ताल ।। ३ ।। सवैया ।। हिनकें रनदेषइ

रा॰ गं॰
स॰

उमगी । एक दिनै सुसकाय ढेनै उनवानन कहै वड़
आयटगी । ताक चकोर विलोचन भासि वहै दि
सनै प्रेम री उमगी । सखि आज गई हो मी गोकल
हौं सब री मिलि देज को वांदकरी ।। राग वे
[illegible] ताल ।। ३ ।। सवैया ।। हौं सखि पाइ सिंगार
रही सिख सौवै न पसिख मैं कहूं सिषाई । मैं वहूनै उघ

7

सोमै सभा सब हौ के हौने नन साऊघमे । हेऊँतै ना न

कस्यायक कै मन ही मन केशव दास हेसे । देवतीन

है सब देखि उ न यि य वि.. ए विलावति मैं विल मे

कोई जा नै नही हत हे ति कवे किन के हरि छो वे

न के रिक मे ॥ राग गंधार ताल ॥३॥ सवैया ॥

केशव रायकी सौं इ कैकै कछू एक न आगमे हो

रा·गं·
स·

८

वोल हसैंसौं हैं । देखहु यौं इक वारस कौवन आरस

लोवन आवसी सौं हैं ॥ आपज वैसेही साजसौं आ

जु [illegible] लि गई छिप कालिकी सौं हैं ॥ वाग गं

[illegible] नाल भई ॥ सवैया ॥ वैठि हुती ब्रजनारिन

मै वनि श्री वृषभान कुमारि सुभागी । खेलमि

ली सखि यौं पुर वासि भई नहि खेलपरी प्रगुरावी

याउही देख्योपे केशव केहू उटेवन जाई। दंउदि
से बिन साथ निहू संग छूटत क्यौं खेल की खेल
नाई। देषह देमथकी घट कोटि मिटे नचटे विष
की विष नाई॥ राग गंधार ताल ३। सवैया। के
शव सैंरन सौं रस रासि रस्यो रसबाढ सवे हम सौं
हैं। हैं मन मैलेन जो लोकहू अब छाडहू बोलिबो

रा॰गे॰
स

नैहे मरा आयगये किधौं आवेहिंगे सजनी स्वव
दाइ ॥ आयन नंदकुमार सवार सकौन विचार
[illegible] लगाई ॥ राग गंधार ताल ३ ॥ सवैया ॥ के
पाव जीवनजो ह्रजको निज जीवडुंते अति वा
पहि आवे । जापर देव अदेव कुमार निवारत मा
ई नवार लगावे । ताहृ विपैंनॄ गवारि कीवेदी मरु

१

८

पीछेते केसव बोलि उठे हरिके विन बानरी आज
रि जागी। आनन काहू कवे हरिके हर माधरा
सी सरसी रस लागी॥ राग बंधाव माल॥३॥
सवैया॥ सखी भूलि गई भलय किधों काहू
कि भूलेई डोलत बाटन पाई। मौन भये कियौ
केशव काहूसौं भेट भई कोऊ भामनि भाई। आव

मूरति कोहै। कंज विराजति गोप वधू कमलाजन
कंजकटी मन मोहै ॥ रागगंधारनाल ॥३॥ सवैया ॥
पायपरे हैं ते छीन मयो करिकै सब के हूं नमै रगदी
नी। तेरी सखी सिख सी चीन एक हैरो घडे की सिखसी
विजलीनी। हेरन नैद सरोज समीर जौं ठे डावदेह भई
सबहीनी। लैउलटी जकरी विधि सो कछु सोय न

दस पाय जेंवाय दिषावै । ऐसौ नो वची ग्रवहास स

निहू ग्रैसे ग्रौर जुदे षै नो ऊनर ग्रावै ॥ राग सेपा

र ताल ३ ॥ सवैया ॥ भाषनि है सषवैन सषीन

मैं [illegible]रिये ग्रभिलाषनियौ है । कोमल हास

नि नैन विलासनि ग्रंग सुकासनि कोमन मो

है । सूरति वैन कियौं तुलसी तुलसी वनमे रति

रा॰ गे॰
स॰

११

श्याम काहूके प्रेम पगी हैं ॥ राग केदार ताल ॥३॥
सवैया ॥ केसव कैसेहूं रूप अनूप मिल्यौ मन
भावतौ भाग भयौ री । जानै को माई कहा भ
यौ कैसेहूं जो यौ थीकौ आप जयौ मट होरी ॥
नाकडू नून अंजौ हमिहौ लै जड मेरौ मोहन पा
य पर्यौ री । कान्ह हौ नै हूट नरौ कठौर इते विर

ह्वै उलटी विधि कीनी ॥ राग गंधार नाल ॥ ३ ॥

सवैया ॥ आज कहूं धाइवे यों हरि श्रौर सी मा

नो महावर माहि रंगी हैं ॥ मोहन मोहि मी ला

वान मोहि उते पर मोहन मोहि लगी हैं । मेरी

सौं मोहसों मानहू वेगि हिये रस रोस की री

तिजगी हैं । मेरे वियोग के तेज तची कियों के

रा. गे. से.

12

रागा गेयार नाल ॥२॥ सवैया ॥ फूल मे फूल सवा म ऊवासकी भाकसीमे भये भौन सभागे । के झाव वाग मझो वनसौ तवकी चवकी जौन्ह संचे अंग दागे । नेह लगे उवना ख्वकौ निस नाह वरी कक हूं प्रन मागे ॥ मानि सो गीन विवी विसरी सिंगारेई सिंगार अंगारसो लागे ॥ रागा गेयार

१२

होतलहूंनजहोरी ॥ रागगेयाव नाला ॥३॥
सवैया ॥ श्रीपिंदै श्रायउह्रे उनसैं यह भोजन
कै श्रवह्री हम श्रेहै। ताकह्नतो श्रवलौं वहराउ
कै राषी वहलाइ महकरिमैं हैं। वै है कहा इनकी
ढिगकैशाव जाइनहीं कोऊ नायजकै है। जानत
हौं उन आषिनितै श्रम श्रोउमगे वह्रहौ भनिरहैं।

रा॰गं॰
स॰

13

सवैया ॥ गोप बडे बडे बैठे अथाइनि केशव का
र सभा अवगाही ॥ खेलन बालक जाल ग्वा
लीनमै बाल बिलोकि बिकाही ॥ आवनजा
नि लगाई चहे दिस हेरत मै परिचानन काही ॥
चंदसौ आनन काढि कहो चखी सजनौ कछू
लोही किनाही ॥ राग गौयासताल ॥३॥ सवैया।

नाल ।। ३४ ।। सवैया ।। लाडिली लीलिक लोचि लरी
कहूं लाल लके कहूं षेपि लगायकै ।। आजतो
केसव कैसेहूं लै कयं लागत देतिन देषहु आयकै
वेग चलौ उठि आई लिवावन दैरि अकेली परैं
अकुलायकै ।। भूलेहूं गोकुल गाउं मैं गोविंद
कीजै गुरुजन गाउ वगायकै ।। राग गंधार नाल

रा॰गो॰
म॰

न्ह कियो लखि लालच केनो ॥ ह्माह्मकै ह्माबिरहे
सुनि केशव पाय परेनो परेई रहेनो । ह्मौं नोयहै
नवंहीकी विचारति होनो गुमानकैयो याहीनो
पनो ॥ लामी लटै मन पावति देह जनैक वडी वि
थी श्रोथैं न देनो ॥ इति राग गैयार नाइका नाइ
क सवैया समाप्तम् ॥ शुभमस्तुयात् ॥ ॥

14

हौन केहा अवैके समके समजेन नवै जवरे समस्र
जाए ॥ एकहि वेक विलोकनि माहि अनेक अमो
ल विवेक विकाए ॥ जान पयो नजनावङ्कन जनमा
वधि लौ उहि जानिहौ पाए । वान वनाय वनाय क
हौ कहौ लेऊं मनाय मनाय ज्यौं आए ॥ राग गयार
नाल ॥३॥ सवैया । भूलेहूं भूपेनहौ चितयो उहका

रा.म.
स.

राग मधु माल ॥ ॥ सवैया ॥ पाउ परैं मन
हार करैं पलका परवाय दियो भय भीने । सो
य गई कहि केशव कैसे हू कौं रही कोरक सौं हन
कीने । साहस कै सब सौं सब कै छिन मै हरी
मानि सबै सब लीने ॥ एक उसास ही के उ
ससे सिगरेई सगाथ विदा करि दीने ॥ ॥

म

अथ राग मधु सवैया परिछेद ३ ताल। ।मोहिबो
मोहनकी गतिको गतिही पढ़ेगा वैन कहा यौं प
ढैगी । ऊप ऊधो जनकी उपजै दिन कहि मढै श्रुगि
या न मढैगी। नैननकी गति गूढ़ चला चलके
भाव दास अकाम चढैगी ॥ माई कहो यह मा
यगी दीपति जो दिन है इहि भांति चढैगी ॥ ॥

रा॰म
म॰

2

राग मधु सवैया ।। ताल। ।। बोली नहीं देव

लाय रहे हरि पायपरे अरुडो लिये डोडी। केसव

भेटि देको भरि अंक कुडाइ रहे जकमै नहि छो

डी। रुपै चितै देकों केतो कियो सिर चांपि उठा

य अंगरहृ निहोरी। मै भरि चित नकुन चितोन

रही गहि नैननि लाजनि गोरी ।। राग मधु ।।

म
२

राग मधु सवैया माल ॥ ॥ चन्द्रमुषि

लोचन लोल सो मेलि सकोंड कटाछको को

रकसी । सव माधुरि वानी वसी चतुराईयो के

स मोहन नाह पसी । ऊव नेह नैने नन लाज वि

राजै हैं वार गहे हैं वडे और मसी । नवसी इति वा

लहिं वाल कला हति ओग अनंग की फौज वसी

री॰म॰
स॰

३

मै देषी है गोपसुता इक होयन ऐसी ग्रहीरकी जाई॰
देषत ही रहिये तुनि देहकी देषेन औरन देषी सुहाई॰
पकंही वंक विलोकनि ऊपर वारौं विलोकि त्रिलोक
नि काई। केसव दास कलानिध वरु ह्वै किय काम
किसोर कन्हाई ॥ सवैया ॥ कान्हभले जुभली सषि
जाई हौं मोहि ममइकोजो उमसोरो। केशव आप

म
३

सवैया। ताल। ।वोलै न बोल उलाव तहूं न षरेष
लिषे भव प्रेम परेषौ। आपन हाय विलोकि किलो
कि करी नव केसव उढि वसेषौ। छोटी वडी विधि
रेष लिषी जग आपकी रेष हु कौन जलेषौ॥ प्रेम
ते बोल सहो न परो अकुलाय करो पियके सो
है देषौ॥ राग मधु सवैया॥ ताल॥ ॥ आज

रा॰म॰
म॰

वेक विलोकनि को अविलोकि सुमा कहै नेदकु

मारु रहैहैं। पहै नो कामके वान कहावन फूल

नके विधि भूलि करैहैं॥ सवैया॥ गोहिन गा

य वजावन नाचनवार अनेक सिंगार वनायो।

जीहूसे आनकी आनिवी कुडोपि नेरो नजन भ

यो मन भायो। भावे सुनेकरिवो करी भामिनि गा

५

नो मानि कसो मन हाथपराय दैकौ नै लह्योहै ॥
नैनन सो मिलवौ करियै अब वैनन को मिलिवो
नौ रह्योहै । जाइ कह्यो तुम जैसो सषी सठ ऐहै ग
पाल मै ऐसो कह्योहै ॥ सवैया ॥ हैगति मंद म
नोहर केसव आनंद कंद हियै उलहैहैं । भौंह वि
लासनि कोमल हासनि अंग सुबासनि गाढे गहैहैं

रा.म.
स.

करो हसि मैनो इतो अपराधन कीनौ ॥ सवैया ॥ वि
नवै विनवो पै हसाएं हसैं हो बला पनैं बोलौ रहो
नित मौने । मैं हू अनेकनि आवहु ऐकक रौ रतिको
अति रैनकी रौने ॥ घवा पनैं चाड बसाइ विरी जब
आई हौ केशव आज ही गौने । मोहन के मनको मो
हनी सकै सो यहूयो सिष ई सिष कौने ॥ सवैया ॥

8

म
५.

य बडे बसैनै करि पायो । कान्हमैया सबै जवारनि
नारी सवारि तिहै अब पार लगायो ॥ सवैया ॥
आवत देषि लिये उठि आगेकै केश आउहि आस
न दीनै । आपहि पाइ पषारि भलै जल पानकौ
भाजन लाइन दीनै । बीरा बनाइकै आगे धरे ज
ब वै हरिकौ कर दीनन लीनै । वाहेगाही हरि ऐसो

रा॰ म॰
म॰

सैनै नन माफबसै । हकै नैबान वसाय कहै म
नही मन केशव दास हसै । खिलनि है इन खिल उ
नै पियचित खिलावति यौं बिलसै कोई जानै नही
दगदौरि कवै किनकै हरि आंषिन खु निकसै ॥
सवैया ॥ केशव रायकी सौंह कैकै कछु एकन
आपमे होउपरी । एक चितै मम काय है न उनवा

6

४८

तिनकै इन देषङ्कजनू देष्यो सबै हितबात सबै जेग
नी मबहीहैं । यह तो कछु ग्रोरु वहै सबही ग्रबसी
ह करो बकरी जनहीहैं । समझाइ कहो समझोस
बकेसब हूटोसबै इन सौंनकहीहैं । मान कियो
ग्रपमान करो नोहसो ग्रबके इसिके कोवहीहै ॥
सवैया ॥ वैठी सपीन कीसोभै सभा सबही के

रा॰म॰
म॰

छलकी छलताई। देषहु देमभकी घटकोटि मिटैन
घटै विषकी विषताई॥ सवैया॥ केशव औरनसौं
रसरासि रस्यो रसवाउ सवै हमसौं हैं। हौं मनमें लैन
जो लोकक्छु सब ब्याउड्डु वोलिवो बोल हसौंहैं। देषहु
यौंइकवारस कोचन आरस लोचन आरसी सौंहैं॥
आपज वैसेही साजसौ आज सभूलि गई पियका॥

नकैहै बड़ भागपरी । चारु चकोर विलोचन भामि
चहूं दिसनैन अंगुरी पसरी । सखि आज गई होती मो
कलहैं सवही मिलि हैजको चांदकरी ॥ सवैया
हैं सब पाउ सिषाउ रही सिष सीषे न ए नै हूं सिषा
ई । मै बहु तै उपपाइ ही देष्यो पै केशव केहूं छूटे
वन जाई । दंड दिये विन साधनि हूं संग छूटनकों

रा॰म॰
म॰

काह्न किभूलेई डोलत न बाटत पाई। भौन भये कियौ केशव काह्न सौं भेट भई कोऊ भामिनि भाई। आवत हे मग आय गये कियौं आवहिंगे सजनी सुखदाई॥ आयन नंदकुमार सवार सु कौन विचार अबेर लगाई॥ सवैया॥ केशव जीवन जो ब्रजको निज जीव ज्ञे ते प्रतिवा पहिं भावै। जा पर देव अदेव कु

8

८८

ल्हिकी सौंहैं ॥ सवैया ॥ वैढिइती हजनारिनमैं व

नि श्रीहृषभान कुमारिभागी । खेलनिही सखि

वौपर वारि भई नहि खेल खरी अनुरागी । पीछे

ने केसव बोलि उठे सनिकै विन वानवि आ नरिजा

गी । जानिन काहू कहै हरिके स्वर मारगही सवसी

हगलागी ॥ सवैया ॥ सषी भूलि गाई भलप कियौं

रा०म०
सं०

किधौं तुलसी तुलसी वनमैं रति कोहैं ॥ कुंज वि
राजति गोप वधु कमला जनु कंज कुटी मदसोहैं ॥
सवैया ॥ पांय परे हैते प्रीतम त्यों करि केशव के
हूंनमें दृगदीनी । तेरी सषी सिष सीषीन एक हे ये
षडूंकी सिष सीषिवु एकहूं रोषडूंकी लीनी । चंद
दंन चंद सरोज समीरजरै डरुदेह भई सुषहीनी । मे

१

स
२

मारनि वारन माई न वार लगावै । ताहूरी पैनहू गवा

रिकी वेटी मङ्गावर पाय जेवाय दिषावै । ह्वैनोव

वी अव हासनिहूं ऐसे औरज देषे नोऊ नर आवै ॥

सवैया ॥ भाषनिहू मधुवैन सषीन सों लाषहि

ये अभि लाषनियो है । कोमल हासनि नैनवि

लासनि अंग सुवासनि को मन मोहै । मूरति वैन

रा॰म॰
स॰

सवैया ॥ केशव कैसेहु सरव शगण मिल्यो मन भाव
नो भाग भन्यौ री । जानै को माई कहा भयो कौं हूजो
श्रोपीको आभ ऊघो सट ह्यौ री ॥ ताकहू नैन अजो
हमिबो लै जऊ मेरो मोहन पाय पन्यौ री ॥ काठहू
ते हठ तेरो कठोर इतै विरहानल हैन जन्यौ री ॥
सवैया ॥ आयिदै आय उहां उनसों यह भोजन कैय

१०

उलटी जकरी विधि मोकहुं न्यायन हीं उलटी विधिकी

नी ॥ सवैया ॥ आज कछू अखियां हरि औरसी माने

महावर माहिं रंगी हैं । मोहन मोहिसी लागत मोहि

रहेनेपर मोहन मोहि लगी हैं । मेरी सौं मोहसौं मान

डु वे गिहियं रस रोसकी रीति जगी हैं । मेरे वियोग

के तेज नची किधौं केशव काहुके प्रेम पगी हैं ॥

रा°म°
सं°

॥

द्दोगे। नेरू लगपो उवनाइ रमैं। निस नाहचरी ककहू
अनरागे। गारि सो गीन विरी विससी सिगरेई सिं
गार श्रंगार सो लागे। सवैया॥ लाडिली लीलिक
लोरि लरी कहू लाल लखे कहो अंगि लगायकै॥
आजनी केशव कैसेहू लै हपं लागन देतिन देषढ
आयकै। वेगावलौ उठि आई लिवावन दौरि अकेली

वैरी हम थैहैं । ताकहूं तौ अवलौं वहराइकै राषीवरया
इमह करिमैंहैं । वैठेकहूं इनकी फिरा केशव जाइ
नहीं कोऊ जाय जकैहैं ॥ जानन दैहौ उन आषिनि ने
अब अंगमगे वडहायौ अतिरैहैं ॥ सवैया ॥ फूलके
फूलसवास जवासनी भाकसीसे भये भौन सभागे-
केशव वाग मही वनसौ जरसी वपी जोन्ह सवै अंग

रा म
स

12

नोही किनाही ॥ सवैया ॥ हीनकहा अबके समझे
समझेन नवे जबहे समझाए। एकहि बेक विलोक
ति माहिं अनेक अमोल विवेक विकाए। जान पन्यो
व जनावऊ जनमावथि लीउ हि जानि हो पाए। वात
वनाय वनायकहा कहो लेऊ मनाय मनाय जोंआप

इति राग मध्य सवैया परिछेदः समापतम ॥ शुभं

पहौं अजलायकै । भूलेहू गोकुल गाउमै गोविंदकी
जै गुकरन गाइ चरायकै । सवैया ॥ गोप वडेवडे वै
ठे अथाइनि केशव कोर सभा अवगाही । खेलत वा
लक जाल गलीनमै बाल विलोकि विकाही । आव
वन जानि लगाई चहू दिस घूंघटमै पहिचानन चा
ही । चंदसो आननकाढि कहो चली सूकन है कछू

रा०मं

एको रसमंजरीमें प्रेकृत जो बनो कह्यौहै। याहि
नी मधुमाधवी सवैया नाल ।२। यत्न भ्रूयरि
लोचन लोलसो मेलि म्रकोड कटाक्षकी कोर
कढी। माव माधुरि बानी बसी बनराईयाके
श मोहन लाख पढी॥ कुच तेहू लखे नन
लाज बिराजति बारगहे चढे ओर मढी =

रागिनी मधुमाधवी सवैया ताल। ३। मोहिवो मो
हनकी गतिकी गतिही पढ्योवैन कहा यौं पढै
गी। ओप उरोजनकी उपजै दिन काहि मटै श्रेणि
या नमटैगी। नैनन की गति गूढ चलाचलके
शवदास प्रकास वढैगी। माई कहो यह माय
गी दीपति जो दिनहै इहि भांति वढैगी। नवव

रा॰मं॰

2

सोईहै ॥ नाहिकरो जिन नागरिनह गजराज दि
यो नव संक्रम कोईहै ॥ रागिनी मधुमाधवीस
वैयाताल ॥ ३ ॥ पाइ परैं मन हारकरैं पलका प
र पाय दियो भयभीने । सोय गई कहि केशवकै
मेंहूं कौरही कोरक मौंहन कीने । साहसकै म
रवसौं सब छैकिनमै हरि मानि सबै सखलीने

२

नवढी इति बालहूँ बालकता हति श्रेगा अनेग
की फौज वढी ॥ रागिनी मधुमाधवी सवैया
ताल । २ । ऊरू उरोजनके परसे तिस भौहि च
ढी नवढी छिन छोहै । दैरद वक्रद छेवनही
रस रीति गही उनही मन मोहै । नीवी कीनी
वि छुवै छवि औरसी पेलन पानि पिया पह

रा॰म॰

ह्योन पस्यो अकुलाय कह्यो पिय कैसी हैं देषौ ॥

रागिनी मधुमाधवी सवैया ताल ३ । आज मैं दे

षी हैं गोप सुता इक होय न ऐसी शरीर की ज्याई ।

देषत ही रहिये उनि देह की देषत और न देषी सु

हाई । एक ही वेक विलोकनि ऊपर वारौं विलो

कि विलोक निकाई । केसवदास कला निय व

३

म॰ ३

एक उमा सखी के उनमे सिगरेई सगेय विदा करि
दीने । रागिनी मधुमाधवी सवैया ताल ।३। वै
लैन वाल उला वनहू नषरेष लिषै अव प्रेम परे
षे। आपन हाथ विलोकि विलोकि कही तव के
सव उहि वसेषे । छोटी वडी विधिरेष लिषी ज
ग आपकी रेष सकोन जलेषै । प्रेमने वोल स

रा॰ मं॰

५

बिंद सौं है मोनो बेद सो देष्यौ । रागिनी मधुमाधवी
सी बैयी नाल ।३। कान्हभले जू भली समझाई
हौं मोहि सम्रदकौ जो उमह्यो है । केशव आप
नो मानिक सो मन हाथ पराये दै कौने लह्यो है ।
नैनन ही मिलबो करिये श्रवबैननकौ मिलिबो
नौ रह्यो है । जाइ कह्यौ तुम जैसो सषी सह्रु से

ह हूकिय कामकि मेरो कन्हाई ॥ रागिनी मधु
माधवी सवैया नाल । ३ । ज्यौं ज्यौं झूला ससो के
सव दास विलास निवास हियै प्रवेश्यौ । त्यौं त्यौं
बढ्यौ उर कंप कछू भ्रम भीन भयौ किधौं सौन
विसेष्यौ । सुदिन होत सषी बरजौ मेरे नैन सरोज
नि सोच कै लेष्यौ । नैंन कह्यौ सब मोहन को ग्रह

रा॰मं॰

लि कहेहैं ॥ रागिनी मधुमाधवी सवैया ना

ल ॥ ३ ॥ मोहन पाय बजावत नाचत चार अ

नेक सिंगार बनायो । जीहमैं आनकैं आनि

बौ छोडोयै नेरो नऊन भयो मनभायो । भा

वै स्नेह करिबो करि भामिनि भागबडे बसमैं

करि पायो ॥ कान्हसौं स्हयेनु चाहति नाही ।

द्वै गुपाल मैं ऐसो कह्यौ है। रागिनी मधुमाधवी
सवैया नाल।२। है गति मंद मनोहर केसव आनं
द के दहिये उलहै हैं। भौंह बिलासनि कोमल हा
सनि अंग सुबासनि गाढे गहे हैं। बंक बिलोक
नि को अवलोकि हमारऊ नैंद उमाह रहे हैं।
पईनो काम के बान कह्यावत फूलन के बिधि मं

म
१

रा-मं

द्वार समीप सिंगार किये कियौं संदर नाई ॥
रागिनी मधुमाधवी मलैया लिनारी ॥३॥
आवत देषि लिये उठि आगेंकै केश आछु हिआ
सन दीनौ। आछु हि पाई पषारि भलै जलपा
न कौ भाजन लाइन दीनौ ॥ बीरा बनाइकै
आगे धरे जब वे हरिकी कर बीजन ली०

सवारुति नारी सवारुतिहै अब पाइ लगायो ॥
रागिनी मधुमाधवी सवैया ताल । ३ । आजु वि
राजत है करि के सब श्रीवृषभान कुमारि कन्हाई
बानि विरंचि बरहि क्रम कामरची छबिचारु ब
हि बनाई । अंग बिलोकि बिलोकि मैं ऐसी को ना
रि नहि जहि नारि तिकाई ॥ मूरति वेन सि

रा॰म॰

ही गौनै। मोहन के मन को मोहनी सकै हो यह सिष ईसिषकौ नै॥ रागिनी मधुमाधवी सवैया ताल।२। हिनकै इन देषहु जू देष्यो सबै हित वा न सबै जु इनी सब ही है। बहतो कछु श्रौरु व है सब ही अब मौह करौ बकरी जनहीं है॥ सब जाइ करौ मनुजी सब केशव झूठो सबै हम

नौ। वाहेगाही हरि ऐसो कह्यो हसि मैनो हनो प्र
पलायन कीनो ॥ रागिनी मधुमाधवी सवैया
लाल। ३। चितवै चित चौंप हसाय हसो होउतला
पनै बोलौ रहौ निज मौनै। सौंह अनेकनि आ
वइ अंक करौ रति कौ अति रैन कौ गौनै। छवा
पनै घाइ वयाइ गिरी जव आईहो केशव आज

रा॰म॰

8

भुकी घटकोटि मिटै न घटै विषकी विषताई ५
रागिनी मधुमाधवी सवैया ताल। ३। केशो श्री
रन मैं रसि रासि रस्यो रसवाउ सबै हमसौंहैं। हौं म
न मै लेन जो लौ कछु अब छाउ ऊ बोलिबो बोल
हसौंहैं। देषहु यौं इक राम को बन आरसलोचन आर
सीसौंहैं। आपुन बैसही साजसौं आजसु भूलि गई

म ८

सौं जु कहीहैं। मान कियो अब मान करौ तो हसो

अब के हसिके को रहीहैं। रागिनी मधुमाधवी

सवैया नाल। ३। ही सखि पाइ बही सिष सीषि न

पसिषनेहू सिषाई। मेव हूते डखे पाइही देष्यो

पै केशव केहू कटेव न जाई। देह दिये विन साथ

निहू संग कूटन को षलको षलनाई। देषहू देम

रा॰ म॰

१

छै निकसै । रागिनी मधुमाधवी सवैया ता॰ १३
बैठि कुंजनी ब्रज नारिन में वनि श्री वृषभान कुमारि
सुभागी । खेलति री सखि चौपरि चारि भई नहि खे
लवेरी अनुरागी । पीछे तें के सो बोलि उठे सखिनि के
चित चातुरि आन री जागी । जानि तकाउ कै बेरी
के सब भाग गही सरमी हग लागी ॥ इति संपूर्णम्

पिय काल्हि की सौंहैं । रागिनी मधुमाधवी सौं वे
या ताल । २ । बैठी सषीन की सौं भै सभा सबहीं के
स नैनन माझ बसै । तूऊँ नै बात बसाय कहै स
नेंही मनें केशव दास हसै । खेलति है इन षेल
उनै पिय बिन खिलावनि यौं बिलसै । कोई
जानै नहीं हग दौरि कवै किन कै हरि ओगि बिन

रा.म.
क.

सी माला प्रेमकी सी माला अजलौं न देखी सु
नि जैसी आज दीसी है ॥ राग मधु कवित ता
ल। । चंचलन हूजै नाथ अंचरा न खूजै हाय
मोपै नेकु सारिका ऊं सुकनौ सुवायो जू । मंद
करौं दीप दुति चंद मुख देखिय न दौरि कै दुराई
आऊं द्वारे तें दिखायो जू । मृगराज मराल बाल बा

अथ रागमय कवित परिछेदमाह ताल। ॥ सक
ता मनिन कीहै सक थरीसी नाक दोत दाहौं दामनी
हसनी वनीसीहै ॥ मोहनके मंडनके अथरोन की
सी रेष सकुटी सवेष भाव भेद छवि छीसीहै वि
न चनराई उजकीसी उजकेसे अरु कच सकुची
नो नैन जैसे उजकीसीहै ॥ केशव दास हपकी

म २

रा॰म॰
क॰

२

ब्रजतो नहीं अबहूंतै देषियत उरउठनयोहै। यह
सिथिलन गईलाज जेच भारी भई कियोयाने बा
ज भयो महावर दयोहै। श्रोघनकी मेरी फाटन
सी आवनहै जाननहैं। रीढलागि केशो जोकि ग
योहै ॥ राग मध कवित नाल। ॥ साव
दे मषीन वीव दैके मोहै षायकै षवाय क॰ष

म॰
२

हिये बिहारी देके भाषा नबेहे केशव हमोह मन

भायोजू। कुलके निवास ऐसे वचन विलास स

निमेषतनो मरतिहे ने स्याम सवे पायोजू ॥ ४॥

राग मलार कवित्त लाल ॥ ॥ इत उतचाहि

देख्यो जब कोऊ दिग नाहि बारबार जिय कहो

हिये कहा भयोहे। अब लौंना देषनिहि रहो क

रा.म.
कं

गंग मध्य कवित नाल। ॥ चंदकैसो भाग भाल

भ्रकुटी कमान कीसी मैन कैसे पैने सरनैनन

विलासहैं। नासिका सरोज गंध वाहसे सुगंध

वाहु दाडयोसे दसन केसोवी जरीसो हासहैं॥

भाई कीसी ग्रीव भुजपानसो उदर और पंकज

सेपाइगति हंसकीसी जासहैं। देषीहै गुपालए

म.
३

खाइ वर कीनी बस बसै है । कोमल म्रनालका
सी मलकाकी मालकासी बालिका जडारी मीं
टि मानस किपसै है । जानैको विमान भयोके
गाव सैनै को वान देषौ आनि गात जान भयो कि
यौं ग्रसै है । वित्रसी जराषी यह वित्रनी विवित्र
गति कहैं यौं रसिक नपयामै कौन रसै है ॥

रा.म.
कं.

जानकी चलनि चाह पल पल अनि पनि बन पति पारिबौ। केशोदास सविलास करहु अथरिया ये इहि विधि सोवहु सिंगारनि सिंगारिबौ ॥ राग मध्य कविन ताल। ॥ केशोदास सविलास मंदहास जन अवलोकनि अलापनि कौ आनंद अपारहै ॥ बहिरनि मान अरुअंतर

५

क गोपिकामैं देवनासी सोनेसे सरीरसब सौंधे

कोसो वासहै ॥ राग मधु कवित ताल ।

प्रथम सकल सुचि मजन अमल वासजाव

क सुदेस केस पास को सुधारिबौ । अंग राग

भूषण विविध मुषवास राग कज्जल कलित

लोल लोचन निहारिबौ । बोलनि हसनि मृदु

रा॰म॰
कं

ल वल वीर कौसो मान कोसो मघ मह्यो मोहि म
न भायोहै ॥ घलसो प्रवल सील अनल सेवल
विन जलसे अमल तेज तेज कौसो गायोहै । के
शोदास वसन प्रकासके प्रकासघोष घर घर
घट घट घेरु घनो छायोहै । रति कीसो रतिना
थ रूप रतिनाथ कोसो कहो केसो राइ रूठ ।

नि मान छनि रनि बिपरीतिनिकौ विविधि विचा
रहै ॥ छूटि जाति लाज जहां भूषण सदेस के
स छूटिजात हार सब मिटत सिंगारहै ॥ कूजि
कूजि उठै रति कूजि नति सबन घग सोई तौ
सरति साखि औक बिवहारहै ॥ रागमय
कबित ताल॥ ॥ तान कोसो गान सब व

रा०म०
कं०

6

पति देवता बषानी है ॥ ऐसी बानैं कौंन जन मा

नी मुनि मेरी रानी उनके तो मेरी बानी बेदकी

सी बानी है ॥ राम भृगु कवित नाल। । कै

धौ गरुड़ काज कैधौ कूटोन सषा समाज कैधौ

कहू आज बन बासर बिभानैं ने । दीनौं नै न

मोय किधौ काहूसो भयो बिरोध उपज्यो प्रबोध

कौन परि पायौहै ॥ राग मधु कवित माल

। ॥ चोली कोसो पान नाहिं करत संवारि

बोई दर्पन ज्यौं नाही मोज मूरती समानी है ॥

तेरे मनोरथ भगीरथ रथ पीछे डोलत गया।

ल मेरो गंगा कोसो पानी है । तेरी निय दे

वनाये पायो पति केशोराय पतिनी वड़त

राम॰
क॰

की। केसोदास तामैं उरी दीपकी सिषासी दौरौ उ
रावति नील वास इति अंग अंगकी। पौन पा
नि पंछी पसू वासमैं सवद सुनि जिन नित चौं
कि चौंकि चाहै चोप मेनकी। नंदलाल प्रागम
बिलोके केऊजाल बाल लीनी गति नहि का
ल पिंजर पतंगकी ॥ रागमयु कवितता॰

७

किधौ उर अवदातनैं । मोहे मैन देह किधौ मो
हूसौं कपट नेह किधौ देषिमेह अनिडरे अपि
गातनैं । किधौ मेरी प्रीतकी प्रतीत लेन केशो
राय ब्रजहूंन आय मन ल्यौं कौने बातनैं ॥
राग मधु कवित नाल । । चंदन विट वशको
मल विमल दल ललित वलित लता लपटी लवंग

रा०म०
क०
४

ग्वान मनायो मन ऐसो नाहि कहुं पछे पीछै पछि
तानतै है ॥ राग मधु कविन माल ॥ ॥ आ
घन ज्यौं सुजनन काननमैं सुनि यत जैसे के
शोराय नम लोगनमैं गायेहैं ॥ वेसकी
विसारे सथी काकज्यौं भ्रमत फिरै ज्हठे सो
ठे मीन पान ईठ डीठ हायेहैं । हरिहरि करतनहीं

म०
८

कवित्त ॥ बार बार बोल्यो जब बोल्यो न विहसि

नव बालक ज्यौं बोलि बेको कन बिललान है ।

ज्यौं ज्यौं परे पायन त्यौं पाहन ते पीन भयो होत

कहा किये अब मांगन सौं मान है । केशोदास स

ब छाई कीनो हठ है सो हेत मोह छांडि जियति

ये बिन कहा जान है । ऐसे प्यारे पियहू कौ मा।

रा॰म॰
क॰

१

फूल माल गोरि डारी वीरा बगराइकै । लै लै टीह
साम तजि विविध विलास हास के सो दास है उदा
सचली अकुलाइकै ॥ मेरे के से केत न हूनो का
न्हजू सो बोली ऊनो मो सो जोर कर हनो हनो उराव
पाइकै ॥ राग मधु कवित ताल ॥ ॥ लो
ने हम मोल अनबोली आई जानो मोह मोहि

दौरि दौरि गहो पाय जो नैन कठोर दौर जानि जि
य पायेहो । काको घर बालवे को वसे कहो बन
स्याम वेहें जो अमन स्यान मेरे घर आयेहो ।। राग
मधुकविन नाल ।। ।। देषति उदधि जात दे
षि देषि निज गात चंपक के पान कहू लिष्यो है व
नाइकै । सकल सुगंध झारि काको मारि भनि

रा॰म॰
क॰

10

नैनन की गुनराई बैनन की वनराई गानकी गु

राई न डरनि डनि चालकी। अपने चरित्रनि के

चित्रन विचित्र चित्र चित्रनी ज्यौं मोहै साथ अलिका

गुआलकी। वेदके समान वाह चायसोवफो फि

रनि करकै निहारे मृगनैनन को पालकी ॥

कीजेपे पान प्राण प्यारे आईहैंजुआई अलवेलि

म
२०

घन स्याम माला बोलि लाई है ॥ देष्यो है है ऊब
जसें देह ऊन देषी पैरे देषी कैसे बाट केसौदास
नी दिषाई है । ऊंचे नीचे बीच कीच कंटकनि पीरे
पग साहस गयंद मनि अनि सावदाई है । भारी
यह कारी निसि निपट अकेली तम नाही आग
नाथ साथ प्रेम जस हाई है ॥ रागमय कवित

रा.म.
कं.

मंदज्यौं। निमर वियोग भले लोचन चकोर फले
आई वक्र चंद चंद्रावलि चलि चंदज्यौं॥ राग म
ध कवित्त॥ ताल॥ ॥ उरजन उरगाव
पत फनि चरनन देषनि विविध निसिवरदि
स चारके। गान तिन लगत ममलधार ध्वन तिन
झिल्लीगण घोष निरघोष जलधारके॥ जा

म र
१२

ग्वालि कालकी ॥ राग मधु कवित मोला। ।
बेंदन चकार चारु श्रेवर के उरहार समन
सिंगार सोहै आनंदके कंदज्यौं। वारो कोटि
रति नाथ्य वानामै बजाय गाय मराज मवाल
साथ्य वानी जगावंदज्यौं। चौकि चौकि चकईसी
सौतिनिकी हती चली सौतैं भई दीन अर्विंदउति

रा॰म॰
क॰

|2

आनि नीके है को लागनहैं सीनाजुको हून गौनकै
मे उर आनियै। आखिन जो देखियन सोई सोवी के
श्रोदास काननकी सूनी सोवी कवहू नमानियै।
गोपालकी उलटाए यौंही उलटावतिहै आजलो
नो वैसैई हैं कान्हि कीन जानियै॥ इति राग
मध कवित समापतम॥ सुभम॥

प॰
१२

ननिन भूषण गिरन पट फाटनन केटक अ
टक उर उरज उजारके। प्रेतनको एकै नारिकौ
नैपनै सीखौ यह जोग कोसौ मार श्रमि मार
श्रमिसारके ॥ राग मधु कवित्त नाल॥ ॥
हरि मेहि तूसौं भ्रम भूलिहून कीजै मनहोनो क
रि हिय हूनै होन हितहानी है। लोकमै अलोक

रा॰कृ॰
तुं॰

जे पद सेवत बीति कल्प जग सो कुबजा उर लावत रे । जो सुख ब्रह्म लोक मैं नाही सो कुबरी सुख पावत रे । मगरे ब्रज को राज दीयो है हम लषि जोग पठावत रे । कुमरी ॥ हरि सुख मोर नीरली यो नव नैं भवन नही भावत । गावै गुदरी मैं कहै याकी सोच समक वऊन आवत रे ॥ कुमरी ॥ तेरी गति अपरंपार ॥

म
८

अथ राग मधु हमरी परिछेद माह ताल ।३। सोव

राजी होइये जामे यारे जान । इनमानी परभानडी

आया झूठे करे को वाखान । प्रकट प्रकार करी

छेक जग पीक लोक अथवान । इनमें झूठ नही

निलजी काई रंगीला शीतमरी आन ।। राग मधु

हमरी ताल ।३।। कवन वचन बिलना वनेर । उयो

राग
ठु

२

रीरे ज्ञान करो भव पार परोरे । प्यारेरे करुणा सा
गर तिन पालो सब संसार रे । ऐसे मधु सूदन म
नावरे ॥ राग ठुमरी ॥ मोरी गली पाय फेराजो
हो मोरी म० ॥ हृदयायो चढ कर आप मोरे वाल
म लोक जाने अमरावहो ॥ राग ठुमरी ॥
नई लगन हम जानी रे । जो तुम रसीयो बोली

म
२

अन प्रवेउ जिन रच्यो है ब्रलेउ अदजोति निरंजन
निराकार। जाकों कोउ न पायो पारे। निगम
गाँव पार न पावै ब्रह्मा मावे उचारे। ध्यान धरे जा
को पंचानन श्रीपत जश अन अभे भक्त दातार।
मन राम कृल राम कृल ध्यावे सोई। महाराज पक
रे वे हरि प्रसन्न होवेंगे। मन वच क्रम सों याद क

रा॰म॰
ठुं॰
३

ठुमरी ॥ उमगै उमगै आवै गोरीया जीया राह मारहे ॥ कहा कहुं कछु बसनहीं मेरो तन का रो मन पीय राह मारहे ॥ रूपानंद सकल बेहो रोके मोही लीयो हेमहीयराह मारोहे ॥ इति रागमध्य ठुमरी परिछेदः समाप्तः ॥ शुभे

५४५

बोलै तमंहूते नारमयांनीहो ॥ राग मध्रु ठुमरी
माला ३। मैंगावैं नंहीं जईहूराम ॥ जोगावनेकी
वान वलैहै मापरटैंना वलैहूराम ॥ राग ठुमरी।
कारीरे वदरीया रामकैसी उमड आई ॥ सांवनकी
दिन आई पीया मिले वनथाई। अरे वहे झरवै आम
न भावन विना सना मेंढिवाहो रामकैसी ॥ राग

रा॰ म॰
शे॰

पडाँ रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ १॥
राग मधु शैार ताल ॥ ३ ॥ गर्बहै तलकबी
बन जारा औार खेपभी तेरी भारीहै ॥ अयगा
फिल तेऊमेंभी चफला एक औार बडा बोपारी
है। क्या शाकर मिसरी कंट गिरि क्या साहर मी
टा खारीहै। क्या दाख मनका सौंठ मिरच क्या के

अथ राग मधु योरग जल परिछेदमाह ताला २

हेकसिरसिह वाको छोड मियां मत देस विदेस

फिरे मारा ॥ कज्जाक अजलका लूटैहै दिन

रात वजा करन कारा । क्या भैसा वछिया बैल

२७. अन्तर क्या गाने पल्ला सिर भारा । क्या गेहूं चांव

१.४. ल मोठ मटर क्या आराम भांको क्या अगारा । सवदाट

रा॰म॰
शे
2

दैपरगजल ताल॥३॥ हर मंजिल में अब साथ
नेरे यह जितना डेरा डंडा है। जर दाम दिरम
का भंडा है वे पूक सिपर और खांडा है। जब ना
यक तनका निकल गया जो मुल्कों मुल्कों हांडा
है। फिर हंडा है न भंडा है ने हलवा है ने मांडा
है।४। रागमध ताल।३। शेर॥ जब चलने

सर लैंगा सुधारी है ॥२॥ रागा मधु शैरखा जन
नाल ॥२॥ नवपियाला देवें नभरेजो पूरब
पछम जावेगा । या सद वक्त करलावेगा या
घाट वाढा पावेगा । बटमार अजल्का रस्तेमें ज
व भाला मारगिरावेगा । धन दौलत नाली नोना
का एक भनगा पासन जावेगा ॥२॥ रागा मधु

रा.म.
शे.

३

भारीके ॥ जवकाल लूटैगा आनपड़ा फिर हन
है कौनपारीके । क्या साज जड़ाऊ जर जेवर क्या गो
हे यान कीनारीके । क्या घोडे जीन स्वनहरीके
क्या हाथी लाला अंबारीके ॥ ६ ॥ राग मध
धोपद ताल ॥ २ ॥ जो खेप भरे तूं जाना है यह
खेप मियां मन जान अपनी । अबकोई घडी प

३

चलने रस्तेमें यह गौन नेरी फल जावेगी। एक
वर्षीया नेरी महीपर फिर चरने बासन आवेगी
यह विपजो नने लोटीहै सबहि सखोमें बट जावे
गी। ये सुन जवाई बेटा का बनजारा न वासन
आवेगी ॥५॥ राग मझ शेरबाजल नाला ३॥
कौं नाहक बोऊ उटानाहै रन गौनों भारी

८

रा॰म॰
मे॰

५

मुह देखजलके भालौंके । क्याडिवे हीरे मोतीके
क्याफेर रखेजांने मालोंके । क्याउक बेला शाम
शज्वर क्या नखते शाल दुशालोंके । ८ ॥ राग
मधु षेपर ताल ॥ ३ ॥ कछुकामन आवेगा
तेरे यह लाल जमर्रद सीमोजर ॥ सवप्र
जी वाटमैं विखरेंगी जव प्रान वनेगो जोऊ

४

ल सायतमें यह रेच वदनकी है रेचनी ।। क्या
थाल कटोरा चांदीका क्या पीतलका ढकना
ढकनी । क्या बरतन सोने रूपेके क्या मटी
की हडिया चपनी ।।७।। राग मधु शोरगाजल
नाला ।।२।। मगहूर वहो नलबागोंपर मन भू
ल भरोसे फालोंके । सब पना तोडके भागेंगे

रा॰म॰
शे॰

जब मत्र औरजल । घरबार मुतरी चौपाये क्या खो
या ननसार क्या मलमल । क्या बिलबनन
कीये रेशमके क्या लाल पलेगका रंगमहल
१०॥ रागमधु माल ॥ ॥ खेयर ॥ कौं उ
खन मको बनबनाई है रवेभनेरे ननकापेला
नेऊंची गफी उठानाई यहांगोकगफेने मह

५६

पर। क्या मसनेद तकिए मुल्क मकान क्या
चौकी कुरसी नाबत कुनर। क्या माल खजा
ना मुलक मकां दौलत हशमत फौज लशक
र॥१९॥ राग भैरु शेर गजल ताल॥३॥ यह
धूम धड़का साथ लिये क्यों फिरता है जंगल
जंगल। एक भमगा पास आवेगा मौकूफ हुआ

रा॰म॰
शे
6

ऽ्र अकेला जंगलमें लवाक कलन्दर कीफाके
गा। उस जंगलमे जब आइनजीर एक भनगाआ
नन ऊंकेगा ॥१४॥ राग मध शेर नाल ॥२॥
यह पैंठ अजाईबहै दुनियांकी और क्या क्या
जिनस इकठीहै। इहामालकी सीका मीठाहै
और बीज किसिकी लहीहै। कछ पकनाहै।

६

खोला । क्यारे नीरे खंदे करेंद वहांका कोट कोश

रा श्रम मोला । क्याडजी रहला नोण किला का

शी माहाहूरौर गोला ।।१।। राग मध शैरगाजल

नाल ।।२।। अब काल फिरा कर चावक को

घट वैल वदन काहांकेगा । कोई नाज सभे

टेगा नेग कोई मीन सिये औरहांकेगा ।। हो

ग॰ म॰
श्रो॰

गुदड़ी ओढ़के जाता है। कोई भाई बाप चाचा मामा को
ई मातो पुन करता है। जब देखा हुवनो आखिर
कोमे खिसाई है ने जाता है। ग़ल शोर॥ कोई मेहम
हाजन लावे पती जब कोई पमसारी है॥ यहां
वाजा किसी का हलका है और रुखो किसी की भा
री है॥ क्या जाने कोन खरीदे है और किसने जि

ऊख बनताहै पकवान मिठाईपड़ीहै। जबदेखा
हैवतो आखिरकोने लड्डा भाउन भड़ीहै। गुल
शोर वेहला आगाहवा शोरकी चड पानी मड़ीहै
इस देख उके ईस दुनियांको सबयोखेकीयसी
हीहै। कोइनाजावटी देहं सहंसकर कोई नावेन
गा डावन खानाहै। कोई कपडे रंगे पहरतीहै कोई

रा॰म॰
शे॰

8

ह्वनो आखिरको कक्कु लेना एक न देनादो १५
रागमधुशेर-नाल॥३॥ रम्मल नज्मीआ
निलहै और फाजिल मला स्यानाहै ॥ को
ई आमिल कामिल दाना कोई मस्त मिडा
दीवानाहै। नावीज फनीला फाल फसे औ
र जाउ मेनर लानाहै। जबदेखो ह्वनो आ

नस उतारी है । जब देखा छूवनो आखिर को द

लाल न कोई ओपारी है ॥ १३ ॥ राग मधु नाल

औरगजल । कोई फूलके बैठे मसनंदपर कोई

रोवे अपनी दौलतको । कोई बोले अपना मजूसे

लो और मेरा है सो मजूको दो । कोई लड़ना है को

ई मरना है जगा देरूक और नारूकको । जबदेव

रा॰म॰
शे॰

१

टोप बनानाहै कोई बाथा फिरा ग्रम्मामाहै। कोई
साफ बरहना फिरनाहैने पगाडी न पाजामाहै।
कम खोवे गाजी ओर गाफ्का तिनक जीयाहै है
गामाहै। जब देखा हूबनो आखिरकोने पगाडी
हैनजामाहै॥२८॥ राग मध शेर गजल॥
नाल॥३॥ कोई बाल बढ़ाए फिरनाहै कोई शिर

ाविरको सबही ला मकार वखानाहै ॥२६॥ राग

मध्य शैरगजल। ताल।३॥ कोई लोटे ऊंचे

गलियोंमे नैयार किसीका घेराहै। नितक

जीये जगडे बलैहै यह मेराहै यह तेराहै। जबटे

खो खबनो आविरकोन मेराहै नतेराहै ॥२७॥

राग मध्य शैरगजल ताल।३॥ कोघी टोपी

रा॰म॰
शे॰

10

लगाताहै। जबदेखा ह्वनो आखिर सबजगाऊ
रह्या जाताहै ५॥ राग मधु माला ३॥ शेर॥
कोईबेचेमेय मशराब यफहम करी हथ दहीकी
फेरीहै। कोई पह्लासिरपर लाताहै कोईलादेबे
लमकेरीहै। कोईझगडे अपनी जागहपर य
ह मेरीहै यहतेरीहै। जबदेखा ह्वनो आखिर

८ १२

को छोट सुटानाहै। जब देखो हिवनी आखिर

को सब छोड अकेला जानाहै ॥ १९ ॥ राग स

ग शैरवाजल ताल। ३ ॥ कोई रोनाहै कोई

हसनाहै कोई नाचेहै कोई गानाहै। कोई छी

ने झपटले भागे कोई योसका डर दिखलाता

है। कोई माल शवटा कर्ताहै कोई झेंजी झलफ

रा॰ म॰
शे॰

खिन भली है ।२२। राग मधु नाल ॥३॥ शोर ॥
कही वान श्रदेरन टाट पगाजी कही दमर खिच
मरवे नकला है । कही रीक रुपये का खिरदा
कही कौड़ी पैसा थैला है । कही कुटना ख्वाज पि
टारी है कही विकना खोट खिदेला है । जब दे खो
खूब नो आखिर को ने पीठी खोट न चर खो है २२

कौन तेरी है न मेरी है न तेरी है ॥२१॥ गाथा म

थु औरगजल । नाला २ ॥ कही बलीटेकी धू

नी है कही खोसी कउवकी झली है । कही च

लनी छाज पिटारी है कहिं झल्हावकी झली है

न बकारी बैंगन सागहरा गड गाडा गाजर मूली

है । जबदेखा हवनो आखिरको सब निकरी दे

रा॰म॰
शे॰

12

गजल ताल । ३ ॥ अब किसका रंग बुरा कहिये
और किसका रूप भला कहिये । एक दमकी पैठ
लगी है यह अब वो हम जाव रचा कहिये । ऐसे रतन
माणा देन लाल जीव अवजा कहिये रजा कहिये । क
हुवान नहीं वन आनेकी उपवाप भला है क्या क
हिये । गल घोर वहला आग रखा औरकी वडया

राग मध शैरवाजल । नाल ।३। कोई सिक
रा बाज उठाता है कोई हाथमें रखके चलती
है । शाहबाज कोइले बैठा है और दौड किसीने
उलती है । हैनार किसीके हाथोमें और नाचती
फिरत चलती है । जब देखा ढुबको आखिर
कोने रेशम सनन सनली है ।४। राग मध

रा॰म॰
शे॰

13

गुरु दयानी खोनि येवावा। नन हर्वा ऊबरी पी
ठऊई चोडेपर जीन यदी वावा।२८॥ गरा सथु
शेर गजल नाला।१॥ जव जीने का नम हाव मनदे
शौवनेका महमान करो। खैरात करो इहमान
करो याप्रत्र करो यादान करो। ऊबलन
फ नहीं अवजीनेमें अववलनेका सामान करो

१३(

नी सही है। हम देख चुके इस तड़नित्रों को सब ये
खेकीस टहीं है ॥२५॥ राग मधु पैर गजल ॥ ना
ला ॥१॥ बटमार अजल्का आ पहुंचा टुक इसको देख
डरो बाबा। अब अशक बहाओ आखोंसे और आहें
सर्द भरो बाबा। दिल हाथ उठाकर जीने से ले बस
मन मार मरो बाबा। जब बाप की खातिर रोते थे

रा॰ म॰
शे॰

14

मथ शेरगजल नाला ३। यह प्रम वडून हूदाउ
ठूला अब कोस मारो जेर करो। अब माल इकठा
करतेथ अब जनका अपने फेर करो। गाफ दू
टा लशकर भागडका अब तानमें नम शे शेर
करो ॥ नम माफ लडाई हार डके अब भाग
नेमें मन देर करो ॥२५॥ ॥ राग मथ-

२७ राग मझ और गजल। ताल ३॥ दिल काटो
अपना जीनेसे अब और गलेको मत काटो अब
चाट फूनाकी इक बबाको और खून किसीका
मत चाटो। सुन छोडो हिस्से बखेरेकी और सभा
जी अपनी हमबांटो॥ नाकेद बखेरे क्रटब
वे [illegible] अब और डलनी मत कांटो॥२८॥ राग

रा॰ म॰
शे॰

न करो। और पीपले मुहसे रोटीको मल मल मल
कर हलकान करो। अब आप कुएं तलाब पानी सेम
न पानीका नुकसान करो। कछु लाभ नहीं इस
जीनेसे अब मरनेसे पहचान करो॥३१॥ इति
रागमधुमय शेर गजल समापनम्॥

15

१५

सिर कांपा चोटी बालरूप भइ पीला पलकैं आ

नकुकी ॥ कद देषा कानरूप बहरे और आंखें

भीतर चलाय गई । षाव नींद गई और भूख बन्दी

दिल खसलरूप आवाज नहीं ॥ जो होनी थी सो

हो गुजरी अब चलने में कछु देर नहीं ॥ ३ ॥

इस पांव चिमटकर चलने से मनचले को डेरा

रा॰ टे॰
ठु॰
2

रे। जान करी भव पार परीरे। प्यारेरे करुणा सागर
तिन पालो सब संसाररे। पैसे मधुसूदन मुरारेरे॥
राग देवशाख ठुमरी ताल॥३॥ मोरी गली पा
य फेरा जो हो मोरी गा॥ इयांयो वद कर आप
मोरे बालम लोक जाने अमरावही॥ राग ठुमरी
नई लगन हम जानीरे। जोबन रसीयो बोली

पार। अनअछेद जिनरच्योहै अखेद अदजोति नि
रंजन निराकार। जाकौ कोउन पायो पारहै। निग
म गावै पारन पावै ब्रह्मा मुखवेदउचरै। ध्यानधरैजा
कौ पंचानन श्रीपत जस अत अभै भक्त दातार। म
नयामक्रस्न रामक्रस्न ध्यावै सोई। मन्त्रा जपकरै
वे हरिप्रसन्न होवैंगे। मन वच क्रमसौ यादकरो

रा॰दे॰ डु॰

री ताल । २ ॥ उमगी उमगी आवै गोरीया जीया राहमारहे ॥ कहा कहें कछु बसनहीं मेरो न न कारो मन पीय राहमारहे ॥ हस्तानंद हक न नहीं रोके मोही लीयो हेमहीयराहमारोहे ॥ इति देवगधार रागस्य डुमरी परिच्छेदः समाप्त ॥ शुभम ॥

बोलो तुम हमसे ना रसयानी हो ॥ राग ठुमरी ॥ मैंरा

बैनं नहीं जई हूं राम । जो गावने की बान चलै है ना

परहोंना चलै हूं राम ॥ राग ठुमरी ॥ कारी रे बदरी

या राम कैसी उमड आई । सावन की रित आई पी

या मिले बन धाई ॥ अरे बहे अरबे आमन भावन वि

ना सखा मे दिवारी राम कैसी ॥ राग देवशाख ठुम

सू॰ रा॰

राग कान्हडा सूरदासकृत ॥ राग भैरव ताल ३ ॥

सै नि सै रे सै निधनि सै गं मंगंरे गंसै मं
भक्त अंग अवि गत गति कछु कहत न आवै। जौं

ध नि सै नि सै रे सै नि सै ध सै नि सै
गूंगे मीठे फल के रस अंतर गत ही भावै। परम स्वा

नि ध पै मं गं मं ध पै नि मं गंरे गंमं मं ध
द सबही जु निरंतर अमित तोष उपजावै मन बा

नि सै नि सै रे सै नि सै ध सै
नी कौं अगम अगोचर सो जानै जो पावै। रूप रे

राग कान्हडा ताल तीन ॥ सूरदासकृत ॥ निसरेगगरेसानिसरेसनिध। मपधनि
सरेसनिमपधमगरेस। निसरेगमपधपमगरेस। मपधनिसरेसनिधपमगरेसा।
निसरे ॥

अथ स्वरसागर प्रारंभः ॥ राग कल्यान ॥ राग भैरव ताल ३॥ चरन कमल बंदौं हरि राइ। जाकी कृपा कटाछ अंध कौं सब कछु दरसाइ। बहरै सुनै मूक कहै बोलै रंक चलै सिर छत्र धराइ॥ सूरदास स्वामी करुनामै बारबार बंदौं तिहि पाइ।

राग कल्यान ताल तीन। सूरदासकृत॥ सरेगमपमगगरेसा। पधनिसानिधनि सानिधपमगमपधमगरेसा। सरेगमपधपमगरेनिरेगरेसा। पधनिसानिधनि सानिधपमगमपधमगरेसा।

रा॰म॰
लो॰

२

रदानी। यालाली याली याला लोम याला लाला
ले लोम् यालाले लोम् यालाली याले दिर लोम्
नोम् ननाना नोम् नाना नाना नाना ना दिर दि
म त नाना दिम नान नाना दानी ॥ राग मध्य लो
री माद्रा ताल। ॥ वडो रघुवीर रणधीर गड ले
कको संग लक्ष्मन वडो धनुष धारी ॥ पग्र

२

नखेन बैठके इत मिल काज । गाइन गुणीओ

ननद वसी लवा सभसखी अन मिल करत जब

ब सदारंग मिल गाऊ वजाऊ तोन तेहूर मदी

ल रोसाज ॥ तराना ॥ दानी उदे ताना दिरना

दीम दिम त ना नाना नाना नाना ना दीम दानी

नादिर दिर तुम दिर दिर तुम दिर दिर दीमतद

गी.गो.
टी.

मिनौ॥ हरिरिह दिशतो मम सुभियम्।१०।न
दल मौक्तिक पत्रगा हारिणौ। शुभ वन्तरदेशा दे
वेन धारिणौ। कनक कांचहरि ध्रककटि हारी
णौ॥ हरि रिह दिशतो मम सुभियम्॥११॥
मधु करो चितया वनमालया विलसिता वन
रयाश्रिय भवासजा उरसि जृंभतया थिक

यिनौ। हरि हरौ दिशतां मम सुप्रियम् ८ कु

न गजेंद्र महेंद्र विमोहनौ। कमल कल्पल

स च्छवि वीलनौ। हृदि परस्पर रूप निरी

क्षणौ। हरि हरौ दिशतां मम सुप्रियम्॥९॥

विविध रत्न किरीट सदोलसन्नव निशाकर

शोभित शेखरौ विशद नेत्र युगत्रिक भो

रा.म.
हे.

५

ह्रागेगे ॥ हरि हरौ दिशतां मम स श्रियम् ॥१४
जनक राज महीश्वर राजयो ऋषि समाज महो
न करं तजै । अपिल वाय मयो जगदीश्वरौ ।
हरि हरौ दिशतां मम स श्रियम् ॥१५॥ अ
विदितादि मनंन नयो शनौ भ्रमदनेक ज
ग जनित श्रियं अभिमता मनन्ने नन मा

८४

शोभिनौ हरिहरौ दिशतां मम हृत्प्रियम् ॥ १२ ॥
पद पयोज समभ्यितयाजटा वननदी परिजृं
भित यावया दिवि भवाप गया शुभ ललितौ
हरि हरौ दिशतां मम हृत्प्रियम् ॥ १३ ॥ शम
दमोक नराक्त विकारिणौ ॥ सकल लोक
समस्थिति कारिणौ ॥ जलधि भूधर राजवि

5

या यिनौ ।। हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियम् १८
मथित भक्त मरीचि महाधरान्मक रगौ शा
मथा शमथा वगौ स्वभगा वीश गवीश स्वप
न्नगौ ।। हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियम् १९
उदधि देवनदी रय पोयकौ । सकल नाक स
नातन बोधकौ स्फुटनिजात्मजना ।

ष्ठितै। हरिहरौ दिशतां मम स्व प्रियम् ॥१६॥ स

नियमा गम गीत गुणगणिकौ। प्रकृति निर्गुण

वास्तव रूपकौ। फणिशिरःस्तन सौभग शा

लिनौ। हरिहरौ दिशतां मम स्व प्रियम् ॥१७॥

स्मर मद त्रिपुर स्मय हारिणौ। मख मदांध

नरांधक दारिणौ। स्मरयता स्मर सौख्य वि

गा·म·
हे·

6

ह्यौ दिशानो मम ह प्रियम् २२ फनि मरौवि सिह

यंचमि गिंड्रिये रनु गतात्म नया रव सर्वकान्

विदयनो विषयान्प्रयिनात्मकान् ॥ हरि ह

यौ दिशानो मम ह प्रियम् ॥ २३ ॥ सकलक

न्टे मावे त्रिपटी पयौ मद मदात्मक मंसरति मा

हिताै प्रव मय त्रय नुथ्ये पदा निगो ॥

न्म विशोषको । हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियं प्र-
णियति पूर्वक तुह चरावरौ नटव स्थूल स्थानात्म
स्था मरौ । नियत सेविड पात्र परापरौ ।। हरि
हरौ दिशतां मम स्वश्रियम् ।२१।। स्वयन मान
स्था स्वर रत्नमा मणि महर्षि मवोम्म वनो
गिरं ।। अविषयं महिमान मपा गतौ ।। हरि

रा॰मं॰
ह॰

हरि हरौ दिशन्तो मम सुश्रियम् ।२६। मद विद

न्य विवोय स्वात्मकौ हरि हराङ्ख्य मायिक

विग्रहौ स्कनि निरूपित केवल चिद्धनौ हरि ह

रौ दिशन्तो मम सुश्रियं २७ प्रनवरतात्र शाशि

प्रति विंव वस्तुनि मति प्रफलन्ममम विलक्ष

णे मति विवास पर्वपरि वायकौ । हरि हरौ

हरि हरौ दिशतां मम सुश्रियम् २४ विलस

दनन्य मयादि विलक्षणौ । करण मानस बुद्धि

परौ वरौ । निज महिम्नि सदायति सल्लसौ ॥

हरि हरौ दिशतां मम सुश्रियम् २५ उदित

विषय विकल्प विकस्वरौ । नटदपत्राप पटु स्व

निरीक्षणौ । परम तत्व विकाश विचक्षणौ ।

गी॰ म॰
टी॰
४

मम हृ प्रियम् ३ः अविदितौ विषयोन् मया
न्तस्तया परि निमीलित तृहि विलोचनैः
उपगतावपि निनयम लालितौ ॥ हरिहृदौदि
शानो मम हृ प्रियम् ३॥ विगत भेद नयोलसि
ते ३ः यिके मनसिनवमशीमक वाकानः क
विभिः ताकलितैकय मनी निजे ॥ हरिहृदौ

दिशानो ममस्व श्रियम् २८। समपत्राय त्रुथैः

कृति नेतिने स्वहपदैः परि दृष्य मशोषकें। स्व

हृदि निश्चित शाश्व नवकौ। हरि हरौ दिशा

नो मम स्व श्रियम् २९ जल तरंग करज भजे

गम गगान पुष्प वदाहित विम्बकौ। प्रति

विसृष्ठ नरौरि निरंजनौ॥ हरि हरौ दिशानो

रा॰म॰
हृ॰
१

त् ३४ पठन्तियो विहिना चरणोश्चितौ न्टप
ति रोग्ग जयन्परि मंजसा सविषयै रिव पंचभि
रणयो नहि कदापरिभिः परि भूयते ॥ ३५
इति रामम ह्र हरि हर परिच्छेदः समाप्तं
शुभं भूयात् ॥ ॥

दिशतो मम स्व श्रियम् २२ प्रतिदिन मष्टकमी हृदये
पठेति ह्री हृदयो स्तव महानाम भेदाः स्वर
मविर् मिरार्थेनोऽभिदोस्ते विगलित भेद वि
भावना भवंति स्तत यन मति मान हृदयेयोप्य
रि परिवार जया यजेन्न कामः परिषदि विद्वेषो
विजेन्न कामान् पठति समस्त मेघेनि सर्वमेत

वेद्रौ । हरिद्रौ दिशानो मम स्त्रियम ॥२॥

दरगादारि कजा स्पहि पवाभी पवञ्जूल शि

नो ऊश पाशकैः उमकृणा च मचेदिक यो।

चिनौ ॥ हरि द्रौ दिशानो मम स्त्रिये ॥३॥

स्वभग केत्र शिविदि शिरोपर कवि मस्रो द

र केथर रोविषी मचन जन्त्र ममन्नन वा।

अथ राग मधुहरिहर परिच्छेदमाह ताल । २ ॥

जलधिजा गिरिजा समले क्रतो । विदिन मार

ऊमार समऊवो । विहिन वारण गाण मस्र

श्रियो । हरिहरो दिशतो मम स्व श्रियम् । १ ।

सजल नूतन नील पयोधर ॥ रंजन रम्यम

हीधर सन्निभो ॥ सदय भक्त निरी तण

गा.म.
ह.
२

कौ ॥ हरिहरौ दिशतां मम सुश्रियम् ॥ ६ ॥ प्र
सित कुंतल पिंग कपर्दकौ । कुटिल केशपि
शंग जटाधरौ । सरस विक्रम धूम शिरोरु
हौ ॥ हरिहरौ दिशतां मम सुश्रियम् ॥ ७ ॥
भुजग राज खगेंद्र महाजिना सनशयो शर
णा गतवत्सलौ ॥ सुखदा भयदान विधा

२

नमौ । हरिहरौ दिशतां ममह श्रियम् ४ सु
रभि चंदन भूति विभूषितौ । कनक कंकण
पन्नग कंकणौ कमन कांचन कुंडलि कुंड
लौ । हरिहरौ दिशतां ममह श्रियम् ॥ ५॥
ग्रथित पीन पयोरुह दिगंबरौ । स्रवे शशांक
शशि धृति संदधौ । विधि कृते घनशेखर मौलि

रा॰म॰
लो
3

ज पीआ सरूप सावरे ठोटे नैननमें भरो ॥ टो
ना ॥ टोना कामन कर समझावरे काहू देखता
जावरे ॥ जंत्र मंत्र डार सखीरी रूके नीको पीआ
गरलावरे ॥ इति राग मध लोरी कृलनाजगा
लछंद नवाना सादरा जंत्र टोना समापते ॥

३

दल ग्रहमाहें जोधावली लीपे पकीने पकवल आ
पिक भारी। सेम परनी परयो सुर वादर ब्रुपिजे
हाथ पैवान लीपे पालारी। देर चक्र ग्रौर जव
मार लेका लई सकल संसार जैजै कारी। जन।
नवेली अकेली चलो स्याम मथ मानी लेगार जा
पे। गागर भर भर थर आवै मोरा कछुना विसा

सै नि ध | नि सै सै नि ध | प म ग प ध प नि ध

स्:रा· ढिठाई । सुतको वरन आनि उर अंतर बोले वचन

म | ग ग ग | म ध नि नि | सै | नि

सकल सुघटाई । सिव विरंचि मारन को यापसो

2

सै ग | सै सै नि ध | नि सै ग प म | ग

गतिकाहू देवन पाई । विन वदले उपकार कर

म नि सै ग सै | नि ध ग म | म ध नि

नेहे स्वारथ विना करत मिताई । रावण अरिको

सै नि | सै ग नि | सै स नि ध म

अनुज विभीषण तोको मिले भरथ कीनाई । व

मप। मपनिसनिसगरेसनिधपमगरेसासगमप। मपनिसनिसगरेसनिधपमगरेस
सगमप। मपनिसनिसगरेसनिधधपमगरेसमगगमप। मपनिसनिसगरेसनिध
पमगरेससगमप।। ॐ ।।

ष गुन ज्ञान जगति बिबु निरालंब मन बचन न यावै
सब बिधि अगम बिचारहै तातैं सुरसगुन लीला
परगावै । रागमारूसुरदासकृत । रागभैरव ना-
भक्त वत्सल श्रेय वासुदेव की बरी बड़ाई । जगत
पिता जगदीस जगत गुरु अपने भक्त की सहित

गमपधनिसरेनिधपमगरेस। मपधनिधपनिसरेनिधपमगरेस॥ रागमारू ताल ३॥
पमपनिसनिधपमगरेससमप। मपनिसनिसगरेसनिधपमगरेससग॥

स॰ग॰ षट जस कहे निरगुण हि बनावै । सोई सगुण के

नंद की दांवरी बंधावै । उग्रसेन की आपदा सुन

सुन बिलखावै । कंस मार राजा कियो आपन सि

र नावै । जरा संध की बंध काट नृप जल सुमावै

असमै वन निगले पितामाको सापन सावै ॥

३

सनिसनिधपमगमपमगरेस । मगमपपनिसनिधपमगमपमगरेस । गमपनिसा

निसनिधपमगमपमगरेसा । गमपधनिसनिसनिधपमगमपमगरेस । निसनिध

पपनिससगमपमगरेसा । मगमपमपनिसनिधपमगमपमगरेस ॥

ज॰

की कपट करि मारन आई सो हरि जू बैकुंठ पठाई

बिन दीने ही देत सूरप्रभु ऐसे हैं जदुनाथ गुसाई

राग धनासिरी सूरदासकृत। राग भैरव ताल ॥

करनी करुणा सिंधु की कछु कहत न आवै। कप

ट हेत पर सेवकी जननी गति पावै। वेद उप नि

सगमधमधपनिनिसनिधपमगरेससगमध। मधनिसनिसगरेसनिधपमगमगरेस

सगमध। राग धनासिरी ताल ३ सूरदासकृत सरगम॥ निसागमधपमधनिधधमग

मधमगरेस। निसनिधधनिससगमधमगरेस। पमगमधधनि॥

सू॰ग॰

पै मे ग मे धे धे नि धे मे ग रे ग मे
वैननी कौऊले पहुंचावै ॥ रागमाह सुरदास

मै नि
कृत ॥ रागभैरव ताल १ ॥ ऐसो कौन करहै

धे नि सै रे ग मे ग रे धे पै मे ग मे ग ग रे ग
और भक्त काजे ॥ जैसे यरै जगदीस जीयमो

५

मे ग रे मे मे नि धे नि सै नि सै रे
ऊलावै । हिरन कशिप बधकौ उदय भ्रह प्रस

रे रे सै नि धे पै मे पै धे पै मे मे नि धे
लौ इतनौ प्रह्लाद बिन बरन लायौ ॥ भौरके

निसनिधपमगमगमगरेस ॥ रागमाह सुरदसकृत ताल३ सरगम ॥ मपधनिसनि
धपमगरेससपमपधनिसनिसगरेसनिधपमगरेस। मपनिसनिसनिसगरेसनिसनिध
पमगरेससमप। मप ॥

मे नि धे से नि से नि से नि से निधे पे धे पे

उदरै सोकसमुद्रतें पैरव गहल्यावै । जैसे मैंगे पं

मे गे मे धे धे नि पे गे रे गे मे मे नि धे धे नि से

वल्लको हमवन उढियावै । वहुन पांसतें व्र

धे नि से रे से नि निधे नि रे से

जपतिहि छिन मांऊ छुडावै ॥ डुषित गांयें

धे से मे गेमे धे धेनि धे गे रे गेमे मे धे नि

टहि जानके श्रापन उटयावै ॥ कलमैं नामा

से नि से रे से नि निधे से नि धे

प्रगटायो ताको छान छवावै ॥ सूरदासकी

गमपपमपनिसनिधपमगमपमगरेस। निसनिधपपनिसगमपमगरेस। गम
पधनिसनिसनिसनिधपमगमपमगरेस। मगमपधपमपधनिसधपमगम
पमगरेस। निसनिध पनिससगमपमगरेस। गमपधनिसा।

म-ग

पे पि मे ग रे से मे पे नि मे
पेंडकी वेषजमनेक गायो ॥ लाजके साजमैं

नि पे रे मे नि पे पे पि से ग मे ग रे से
कुनी ज्यों द्रोपदी वखों तन चीरनद्दी अंतपायो ॥

पे पि पे पि मे रे ग म रे से से नि प नि से
गौरगाके जोरमैं मोर चुरनी किये वसो हिज डा

रे ग म ग रे मे नि पे से नि से रे से नि
रका हार टाको । जोर अंजल मिले कोर नेडुतल

पे पे पि मे ग रे से पे पि मे
ये इंदकी विभवनै अधिक टाको । सक्रके दान

~~निसनिसगरेसनिधपमगरेसमध~~। निधपमगरेसमध। मधपनिसनिसगरेसनिध
पमगरेसमध। मधपनिसनिसगरेसनिधपमगरेसमध। मधपनिसनिसगरेसनि
धपमगरेसमध। मधप ॥

परैनै धीर सबहूनन जीवभनै भगट करजन बु

डायौ ॥ ग्रसौ गज गाह लै चल्यौ पाताल कौ का

लके त्रासमुखनाम गायौ । छाडि सुख धाम

अरु गरुड तजि सांवरौ पवनके गवनतैं अधि

क धायौ ॥ कौप कौरव गहे केस जब सभामैं

निसनिसगरेसनिधपमगरेसमपा। निसनिसनिधपगरेसनिसनिधपमगरेसमप।
मपधनिससनिसगरेसनिधपमगरेसमप। मपधनिसनिसगरेस ॥

रे रे गम म म प म ग म ध नि

स्थ:गा थायोहो । दीन वेषहरि भक्त कृपण निधि वेद पुरा

म गरे गम म निध नि सं सं नि

नन गायहो । सुत कुबेरके मत्त मगन भये विष

सं रे रे नि सं संनिध नि सं निध प ग

रसनैना छायहो । मुनि सरापते भये जलमल त

म ध ध धनिध प मगरे गम म नि ध नि सं

रु निरि हित श्राप वयायहो । वल्ल कुवोल डुबे

सं नि सं रे सं निध नि सं

ल किज दिषन नोके नेडुल षायहो । संपन दई वो

सरेगमगरेस।पधनिसधनिसरेसनिधपमगमपधनिसनिधप।पमधनिसधनि
सरेसनिधपमगमपधनिसनिधप।धपमगरेगमगरेससनिधसरेगमगरेस।पम
धनिसधनिरेसनिधपमगमपधनिसनिधप। धपमग॥

6

को मान स्वारन किये गहौ गिरि पान जस ज
गन छायो । यहै जिय जानके ग्रंथ वेड गास ने
सूर कामी जटल सरन आयो ॥ रागिनीरामक
ली सूरदास कृत । रागभैरव ताल ३ । जेहों ज
हो सुमरे हरि गिरिहं गिरिहं विधि नरहो नेसै उधि
निसनिसमगरेसनिधपमगरेसमप । मपधनिसनिसमगरेसनिधपमगरेसमप ॥
रागिनी रामकली तालचा सरगम सूरदासकृत ॥ सगमपधनिसनिधपमगमध
पमगरेसनिध ॥

स्हृ.ग. हौं। तुम मोसे अपराधी माधव केतक स्वर्ग पठाए हो।
सूरदास प्रभु भक्तवछल तुम पावन नाम कहायै हो।
रागायनासिरी। राग भैरव ताल । देषो देषो एक सुभा
उ। अति गंभीर उदार उदधि सम निजानि सिरो मनराउ।
तिनकासो अपने जनको गुण मानत मेरु समान। स

स॥ पमधनिसधनिरेसनिधपमगमपधनिसनिधप। धपमगरेगमगरेससनिधसरेग
मगरेस॥ रागिनीधनासि ताल ३। सरगम सूरदासकृत॥ निसगमपमगमगरेस। निसनिधप
निसनिसगमपमगमपमगरेस। पमगमधनिसनिसनिधपमपधपनिधपमगरेस। प



कौ पतनी कोमन अभिलाषि उगायेहो। जबगजग

हो ग्राह जल भीतर नव हरि नाम उकारयो हो गरुड

छाडि धाजरकै धायसे ततकाल उबारयो हो। कला

निधान सकल गुण सागर गुरुयौ कहा पढायेहो।

तिहि उपकार सुनक सुत जावै सो जमपुर नस्मायो

गरेगमगरेससनिधसरेगमगरेस। पमपनिसपनिसरेसनिधपमगमपधनिसनिधप।
धपमगरेगमगरेससनिधनिससरेगमगरेस। पमपनिसपनिसरेसनिधपमगमपध
निसनिधपमप। धपमगरेगमगरेससनिधससरेगमगरे॥

ध नि ध नि स ग रे ग पै म गरे

सू॰ग॰ नट। रागभैरवताल। हरसों ठाकुर औरन जनकों॰

मे मे नि ध नि मै पै पै म ग म ध पै रे ध नि ध

जिहि जिहि विधि सेवक सुषपावैं तिहि विधि राष

पै मे मे गरे मे ध नि स नि से

त तिनकों। भूषवहुभोजनजउदरकों तृषानोय

रे नि नि ध नि से नि ध पै म ग मे ध

पटननकों। लगोफिरत सुरभीजों सुतसंगउदित

पै नि पै मे गरे मे नि ध नि से नि

गवनरदहवनकों। परमउदारचतुरचिंतामनकोटि

राग नट ताल ३ सरगम सूरदासकृत॥ गमपमगरेससरेसनिधपसरेगामपमरेस। पनिसनिध
निसरेसनिधपमरेगमपमरेस। पनिसपनिसरेसनिधपमरेगमपमरेस। पनिसपनिसरेसनि
पधमरे

8

सै यै पै मै गै मै सै यै नि मै गै गै यै सै मै
ऊल समनदूगत ग्रणरायपहिं हृदनल्य भगवान । वद
यै नि सै नि सै रै रै सै नि नि
न प्रसन्न कमलज्यों मन मुरव देषनहोसे जैसे । वि
सै यै पै मै गै मै यै यै पै सै यै मै सै रै
मारवभये श्रीकृपानिमबदू फिरिविन वैनो तैसे·
मै नि यै नि सै नि सै रै नि सै यै
भक विरहकातर करुणामें डौलन पीछे लागे ।
नि सै यै पै मै गै यै यै नि य पै म गै रै
सूरदास ऐसे स्वामी कों देहिं पीठ सुअभागे । राग
मगमपनिसनिसनिपपमपनिपपमगरेस। पमगमपनिसनिसनिपपमपनिपपमपमग
रेस। पमगमपपनिसनिसनिपपमपनिपपमगरेस। निसगमपमपनिपपमगमपमगरे
सनिसागरेस। पमगमपनिसनिसनिपपमपनिपपमगरेसा॥

स्:गं

श्रीमुख ज्ञान धनको होई । ग्राहि गहै गज पन मकरा

यौ ह्याथ वकले पायो । तजि वैकुंठ गरुड न जिश्री न

जि निकट दासके आयो । दुरवासाको साप निवार्यो

अंवरीष पनि राखी । ब्रह्म लोक परजंत फिरौ नरदेव

मनी जन साखी । राषा गटरतैला जरत पंडुसुतनकी पिवल

नाथउवारे । सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे

निसगगमपमगरेस। पमगमपनिसनिसनिपपमपनिपपमगमपमगरेस। पमगमपनिसनिसनिपप
मपनिपपमगमपमगरेस। पमगमपनिसनिसनिपपमपनिपपमगमपमगरेस। मगमपपपमप
निसनिपपमगमपमगरेसनिसगरेस। पमगमपनिसनिसनिपपमपनिसनिपपमगरेस। पनिससनि
सनिपपमपनिसनिपपमगरेस॥

१

मे से से नि नि ध नि से से रे नि ध ग मे ध ध नि ध

उमेर तियनकौं राखुति है जनकौ परतिज्ञा हाथ पसार

पै मे ग रे मे नि ध नि से नि से

न कनकौं। संकट परे नरम उठि धावन परम सुभट

रे से नि प नि से नि ध पै ग मे ध पै ध नि

निज पनकौं। कोटिक करै एक नहि मानै सूर महा

ध पै मे ग रे

कृत चनकौं ॥ राग धनासिरी। राग भैरव ताल ॥

ध नि ध नि से ग रे ग मे मे ग रे गे मे मे नि से से नि ध पै मे

हरि सौ मी तन देख्यौ कोई। अंतकाल सुमरन निरि

सरेमपमरेस। पनिससरेसपनिसरेसनिपपपपमरेगमपमरेस। पपनिससपनिसरेसनिपपमरेग मपमरेस। पपनिसपनिसरेसनिपपपपमरेगमपमरेस॥ राग धनासिरी तालरसरगम सूर दासकृत॥ निसगमपपपमगमपमगरेस। निसनिपपनिस ॥

सू॰
रा॰ सं

ग म— प प— म—— ग— रे— स— नि ध नि स ग म— ग म ध नि स— रे—

बरनिन जाइ भजनकी महिमा बारं बार बषानो । ध्रुव रज एत वि

स— नि ध प— म ग ग रे ग— म— ग म ग म ध प— म— ग रे— स—

दुर दासी सुत कौन कौन श्रृ गानो । जुग जुग बिरद यहै चलि आ

— नि ध— नि स ग म— म— ध नि स— रे स— नि— ध— प—

यो भक्तन हाथ विकानो । राज सूयमें चरन पषारन स्याम लिये कर

म— ग म— ध प म— ग रे स नि ध नि स— ग— म— ग म ध नि

पानो । रसना एक अनेक स्याम गुन कहां लौं करौं बषानो । सूरदास

स— रे स— नि— ध प— म—

प्रभुकी महिमा है साषज वेद पुरानो ९ ॥ राग बिलावल ॥

गमपनिसा मपनिसा निधपप निसा गरेसा निध मगमपगरेसा— मगमपनिसा निधपमगमपमगरे सा निसा गरेसा
मपगमपनिसा मपनिसा निधपपनि सा गरेसा निधपपमगमपगरेसा मगमपनिसा निधपमगमगरेसा निसा गरेसा
गमपनिसा मपनिसा निधपपनिसा गरेसा निधपमगमपगरेसा गमपनिसा मपनिसा निधपपनिसा गरेसा निधपमगमप
गरेसा ॥

10

अंकों से अष्टपदी के अक्षरों की गिनती समझकर सरगम के स्वरों का संबंध लगा लेना

रागधनासिरी सूरदासकृत । अबक्रम पूर्व के भैरवराग रामे भक्त

सां नि धा नि सां ग म म— धा— नि— सं— नि— सां निसां नि धा पा मा—

बछल निज बानो ॥ जाति गोत कुल नाम गनत नहीं रंक होइ कै रानो

मा पा धा पा मा— गा रे सां— नि धा नि सां गा मा गा रे सां मा— धा नि—

ब्रह्मादिक सिव कौन जाति प्रभु हौं अजान नहिं जानो । महिमा जहां

सं— रे सां नि धा पा पा मा गा— मा— ग —मा —पा— मा— गा रे सां नि धा नि

नहीं प्रभु नाहीं सो हैता को मानो । प्रगट खंभ ते दई दिखाई जद्यपि

सां— गा मा— ग मा धा— नि सां— रे— —सा निधा पा मा— गा— मा—

कुल को दानो । रघुकुल राघव कृष्ण सदाई गोकुल कीनो थानो ।

धनासिरी नि स ग म प म ग म प ग रे सा नि स नि ध प नि सा नि सा ग रे सा नि स

स ग म प म ग रे सा ॥ स्थाई ग म प ॥ नि स म प नि स नि ध प प नि स ग रे स नि ध

स॰
रा॰ म॰

सा ग मा प पै म ग रे

रागसारंग ॥ रागभैरव ॥ गोविंद प्रीत सबनि

ग म ग रे सा प नि सा सा नि प पै म ग रे सा ग म ग रे सा

की मानत । जिहिं जिहिं भाव करै जन सेवा अंतर गतकी जानत ।

ग म प पै म प नि सा नि प पै म ग रे ग रे सा प नि सा सा नि

सबरी कटुक बेरतज मीठे चाख गोद भरि ल्याई । जूठेकी कछु संक

प पै म ग रे ग रे सै ग म प पै म प नि सा नि प पै

न मानी भक्ष कीये सम भाई । संतन भक्त मित्र हितकारी स्याम विदु

म ग रे सै प नि सा नि प पै म ग रे ग म पै म ग रे सा ग म

रके प्राए । अन रस वाको प्रीत निरंतर सागमगन कै धाई । कौरव

सा रे सा रे सा नि निसा सा रे प म रे सा ॥ म प निसा निसा रे सा नि प सा नि प म रे सा रे म प नि प सा नि प म रे म प नि सा सा निसा रे सा नि प सा नि
प म रे म प नि प सा नि प म रे ॥ म प नि सा सा सा निसा रे सा नि प सा नि प म रे रे म प नि प सा नि प म रे ॥ म प नि सा सा निसा रे सा नि प सा नि
प म रे रे म प नि प सा नि प म रे ॥ म रे म म म प म प प प प म रे सा रे प म रे सा निसा सा रे म प म रे सा ॥ म प नि सा सा सा रे सा नि प सा नि प म रे सा
सा रे म प नि प सा नि प म रे ॥ म प नि सा सा रे सा नि नि प सा नि प म रे सा रे म प नि प सा नि प म रे ॥

सा— गै रे गै मा— गा रे सा——

राग भैरव ॥ काहूके कुल तन नाहि विचारत ।

सा ग रे सा नी धा— नी— सा—— गै मा नी धा पा— मगे रे सा गै म

अब गतको गति कही परतन नही व्याध अजा मिल तारत । कौन

धा पा— मा— गै रे स नी— धा नी सा गै मा— गै रे स गै मा— धा— नी सा—

यौ जात अरु पात विदुरको ताहीके पग धारत । भोजन करत तुष्ट घ

— नी— सा — नी धा पा मा— गै रे सा गै मा धा— पा मा ग रे सा नी धा नी सा गै

र उनके राजमान भंग टारत । ओछे जनम करमके ओछे ओछे ही

मा— ग रे सा गै मा— धा नी सा— सा—— नी धा पा—— मा ग रे— सा

अनुसारत । यहै सुभाव सूरके प्रभुको भक्त वत्सल प्रन पारत ॥१॥

सारेगमगरेसासारेसासानिधनिधपरेसा । पपधनिसारेसासासारेगगरेसानिधपधगपध

निसारेसानिधपगरेसा । पपधनिसारेसासासारेगगरेसानिधपपधगपधनिसारेसानिधप

गरेसा ॥ राग बिलावल ताल तीन सूरदासकृत ॥

सू॑
रा॰के॰

ग म प म ग रे सा ग म म ध नि॰ सा— निधप म ग रे सा ग म प——

को गर्ब प्रहारयौ । कृपाकरी प्रह्लाद भक्त कौ षंभ फारि उदर नषहि

म ग रे सा ग म प—— ध प म ग रे ग म ध प म ग रे ग म

विदारयौ । नर हरि रूप धरयो करुणा करि छिनक माहि हिरना कुस

ग रे सां ग म म ध निसा निध प म ग रे सा—— ग म प म म ग रे सा

मारयौ । ग्रास ग्रसत गज कौ जल बूडत नाम लेत वाकौ दुष टारयौ ।

म ध नि सा सा नि ध प म ध प म ग सा ग रे सा

सूरस्याम विन ओर करै को रंग भूम मैं कंस पछारयौं ॥१३॥ रागकेदार॥

12

रागभैरव॥ जनकी ओर कौन पति राषै ॥

यो पै मो यो नि सा नि यो पै मो गे रे सा यो नि सा सा नि यो पै
काज चलै रिष आपन मांग पवहि प्रचाप । सूरदास करुणा निधान
मो ग मो गे रे गे मो गे रे सा
प्रभु जुग जुग भक्त वढाप ८ ॥ रागरामकली ॥ रागभैरव ॥

सां— ग मा— पं— धा पा मा गा रे सा रे सा सां— नि धा पां म
सरन गये को कोन उवारयों । जब जब भीर परी

धा नि— सां ग— म— पां— ध प म ग रे सा ग म म पं— ध पं— म ग रे
संतनको चक्र सुदरसन तहां संभारयों । भयो प्रसादजु अंबरीसको

ग म पं— म ग— रे सां ग म धा नि सां नि ध पं म ग रे सा
दुरवासाको क्रोध निवारयों । ग्वारनि हेत धरयों गोवरधन प्रगट इंद्र

म प ग म प प ध प ध प निसा निधप ॥ पध निसा निधा निसारे निसा निधा प ग म प प ध प ध प नि सा नि ध प ॥ पध निसा पसारे
ग रे सा नि ध प ग म प प ध ध ध निसा निध पध निसा निध निसारे निसा निधा म प ग म प प धा धा निसा निध प ॥ पध निसा धनि
सारे निसा निध प ग म प प ध ध निसा निध प म ध निसा निध निसारे निसा निध म प ग म प ग म प प प ध ध निसा निध प प म ध
निसा निधा निसारे नि सा निधा प ग म प प ध ध निसा निधा प ध नि सा सा ध नि सारे निसा निधा प ग म प प ध ध ध निसा नि ध प ॥

सू॰
रा॰सं॰

सुमिरत नव हरि रूपज कीनो । जग जानत जदुनाथ जिते

जन निज भुज श्रम सुख पायौ । ऐसो को जेहि सरन गयें सु

ष करत सूर दन गायौ ॥ १४ ॥ राग रामकली ॥ राग भैरव ॥

ग रे सा नि ध नि सा सा रे ग म म ग रे सा ॥ म ध

श्रीवन काहू जन की पीर । जब जब

नि सा नि ध नि सा रे नि सा नि ध प म ग रे ग म ग रे सा म ध नि सा

दीन दुखी भयो तब तब कृपा करी बल वीर । गज बल हीन

13

१३।८

जात पांति कुल का नन मानत वेद पुरा ननि साखै । जिहिं कुल राज

द्वार का कीनो स्वकुल सापतें नास्यौ । सोई मन अंबरीस के कारन

तीन भवन भ्रमत्रास्यौ । जांको चरनोदक सिव सिरधर तीन लोक

हित कारी । तिन प्रभु पंडु सुतनिके कारन निज कर चरन पषारे

वारहि वरष देव देवकी कंस महा डर दीनो । तिन प्रभु प्रल्हादहि

सू॰
रा॰ सं॰

सुदामा कियो अजांची । इन्साम नकर बसन कुटा बत सु
मिरत नाम द्रौपदी वांची । हरि वर नारि विंद तजि लागत
अनत कहें तिहि की मन कांची । सुर दास भगवंत भजन
जे तिनकी लोक चहूं जग पांवी ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ भक्ति
महिमा ॥ राग भैरव ॥ हरिके जनम

14

५४

ग म ग रे सा

करावै ८५ ॥ राग केदारा ॥ ताला भैरव ॥

सा नि ध नि सा सा रे ग म ग रे सा म ध नि सा सा नि सा रे सा नि ध

ठकुरायत गिरिधरजूकी सांची। कौरव जीत जुधिष्ठिर राजा

प म ग रे ग म ग रे सा म ध नि सा सा रे सा नि ध प

कौरव तीन लोकमैं मांची । ब्रह्म रुद्र डर डरत कालके काल

म ग रे ग म ग रे सा ग म ध प ध नि सा नि ध प म

डरत भव भेगाकी आंची । रावण सो नृप जानत जानैं मा

ग रे ग म ग रे सा म ध नि सा नि रे सा नि ध प म

या विषम सीस धरि नांची । गुरुजन आन दिये जम पुरतें विप्र

सू॑
रा-स

15

म ग स ध प ध नि सा नि ध प म ग रे ग म ग रे सा म ध नि

मुनिमद मेट दासव्रत राख्यौ अंबरीष हित कारी। लाषा वट्ह

सा नि ध नि सा सा नि सा नि ध प म म ग रे ग म ग रे सा। म ध नि सा नि ध नि सा रे

ते मत्रु सैनतें पांडव विपत निवारी। वकासु फांस व्रज पति

नि सा नि ध प म ग रे ग म ग रे सा म ध नि सा नि ध नि सा

मुकरायौ दावा नल ज्वष दास्यौ। चर श्राप वसु देव देवकी

नि सा नि ध प म ग रे ग म ग रे सा म ध नि सा नि ध नि सा नि ध प म

कंस महा षल मास्यौ। सो श्रीपति जुग जुग सुमिरन वस वेद

ग रे म म ग रे सा म ध नि सा सा नि ध नि सा नि ध प म ग रे

विमल जस गावै। असरन सरन सूरजा चन हैं कौ जो सुरन

१८

बिलोकत सौ दिन तब हरि सरन परयौ । करुणा सिंधु दयाल

दरसि दे सब संताप हरयौ । गोपी ग्वाल गाइ गो सुत हित सात

दिवस गिर लीनौ । मागध हत्यौ भक्त न्द्रप कीनौ मदन कवि

प्रछन दीनौ । भौमासुर बधि रथ्यौ अमर हित भक्त बचन प्र

ति पाल्यौ । सुमिरत नाम द्रुपद तनया कौ पट अनेक बिस्तारयौ

सूर
रा-स
16

सिला तरी जल माहिसेन बंधे लिवह बदन अहल्या नारी।

जो रघुनाथ सरन तक आयै तिनको सकल आपदा टारी।

जिन गोविंद अविल अव राख्यौ रव ससिदै पदछन हारी।

सूरदास भगवंत भजन बिन चरनी जननि बोक कत मारी

२० ॥ राग सारंग ॥ राग भैरव ॥

वैनै अपिकारी। ब्रह्मा महा देवनै को वड तिनके सेवक भ्रम
न भिषारी। जाचक पै जाचक कहा जाचै जोजाचै सोरसना हारी
गनका हत सो भनही पावन जिन्हि जलको जन पिनारी। ति
नकी साषि देवि हिरना कुस रावण कुटंब सहित भिये षारी
जिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषन सो अजहू राजारी ॥

सू०
रा०स०

17

च्छै । कौन विरक्त अधिक नारदतैं निस दिन भ्रमित फिरै
अधम ते कौन अजा मिलहू तें जम जहां त्रास डरै । सूरदास
भगवंत भजन बिन फिर फिर जठर जरै ८० ॥ राग देवगं
धार ॥ राग भैरव ॥ जाको मन मोह
न अंग करै । ताको के सषि मैं नहीं सिर तैं जो जग वैर परै ॥

जापर दीनानाथ ढरै । सोई कुलीन बड़ो सुंदर सोई जिहिं
पर कृपा करै । राजा कौन बड़ो रावणतें गरबहि गरब गरै ।
रंकब कौन सुदामा हूंतें आप समान करै । रूपव कौन अधि
क सीता तें जनम वियोग भरै । अधिक रूप कौन कुबजा
तें हरिपति पाइ बरै । जोगी कौन बड़ो संकरतें ताको काम

सू॰
रा॰सा॰

हौं पै जो सुर पति कोप्यो ब्रज ऊपर काहियौं कछुन स
रै । राषे ब्रज जन नंद के लाला गिरि धरि विरद धरै । जा
को विरद है गर्व प्रहारी सो कैसे विसरै । सूरदास भगवंत
भजन कर सरन गहे उबरै १९ ॥ राग केदार ॥ राग भैरव
जोको हरि ब्रत्री कार कियौ । ताके

18

१८२

हिरन कशिप परि हारि यकौ प्रह्लादन नैक डरै । आज
हेलौं उत्तान पाद सुत राज करत न मरै । राषी लाज द्रुपद
तनया की कोपिन चीर हरै । दुरजो धनको मान भंग क
र वसन प्रवाह भरै । विप्र भक्त न्रप श्रेय रूप दियो वलि
पफि वेद ररै । दीन दयाल कृपाल कृपा निधि कापै क

सूरदास प्रभु वछलहै उपमा कौंन कियो २॥ राग विलावल॥ राग भैरव॥ कहा कमी जाकै राम धनी। मनसा नाथ मनोरथ प्ररवै सुष निधान जाकै मौ जजनी। अरथ धरम अरु काम मोछ फल चारि पदारथ देनछनी। कहा क्रपनकी माया केती करत फिरत

सू० रा० स०

१७

२६

कोटि विघन हरि हरिकै अभय प्रताप दियौ । दुरवासा
अंबरीष सतायौ सो हरि सरन गयौ । परनिंदा राषी मन मो
हन फिर नाँपै पठयौ । निकस षंभतैं नाथ निरंतर अपनो
राषि लियौ । बहुत त्रासना दै प्रह्लादहि निसेक कियौ ॥
म्रतक भये सब सषा जि वाये विषजल जाइ पियौ ॥

सू॰
रा॰म॰

कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्रान पति प्यारे । जे पद प
दम सदा शिवको धन सिंधु सुता उरतें नहीं टारे । जे पद पद
म परम परस जल पावन सुरसरि दरस कटत अघभारे ॥
जे पद पदम परस रिष पतनी बल नृप व्याधि पतित बहु
तारे । जे पद पदम रमत वृंदावन अहि सिर धरि अगनित

२०

२॰

अपनी अपनी । षाइन सकै षरच नहीं जानै जैसें भवंरा सिर

रहति मनी । आनंद मगन राम गुण गावै दुष संतापकी

काट ननी । सूर कहत जे भजत राम गुण तिनसों हरिसों

सदा बनी २१ ॥ राग केदारा ॥ विनतीग्रंथ राग भैरव ॥

वंदौं मै चरन सरोज तुमारे । सुंदर स्याम

सू॰
रा॰सं॰

८१

आवै ग्रेथा जरा जोई । पतित अजामिल दासी कुबजा तिन
हूके कल मल सब डोई । रंक सुधामा कियो इंद्र सम पांडव
हित कौरव दल षोई । बालक म्रतक जिवाइ दिये द्विजजो
आये हर वौरे रोई । सूरदास प्रभु इच्छा पूरन श्रीगोपाल सि
मरत सब कोई २३ ॥ राग केदार ॥

रिपु मारे । जे पद पदम रमन पंडव दल हूत भए सब का

ज सवारे । जे पद पदम परसि ब्रज भामिन सरवस दै सुध

सदन विसारे । सूरदास तेई पद पंकज त्रिविध ताप दुष ह

रन हमारे २२ ॥राग धनासिरी ॥

हरि जू तुम तैं कहा न होई । बोलै गुंगा पंगु गिरि लंघै अरु

ग॰भा॰

निज हिये है। तिनको विवेक करि अंतर

करण मोहि अतिही अमोल नग भिन्न भि

न्न कये है। आपको दरिद्र गयो थम उपका

र हेतन गही निगल करि उगलिन ग

[illegible]दिये है। भेदर कहत यह बानी यों प्र

गट भई और कोउ हानि कर रंक जीव।

28

मधु मनका सुबास कौं भमर लेत हैं सैही
विचार करि भिन्न भिन्न कीजिये। हेदराक
ह्रत तातें वचन अनेक भांति वचनमें व
चन विविक करि लीजियै॥ रागमाल
कौश तान चार॥ प्रथम गुरुदेव मुख
तें उचार कर्यौ वेद तो वचन आई लगौ।

रा॰मा॰ चनतें रामगे वचनतें मरिजाइ वचनतें

रोषरू। सेंदरकरत यह बचनहीकों।

मेदऐसो वचनतें बंधहोत वचनतें मो

घरू॥ राग मालकौंश ताल चार। वच

नतें गुरुशिष्य बापपूत प्यारे होत ब

चनतें बहुविधि होत उतपात है। इति

२म २ग २सां २ग

जियेहै ॥ रागमालकौश ताल चार ॥ ब

२म २ग २म २प २नि मं प २म २ग २सां २नि

चनतें छुरिमिले बचनतें हरहोइ ब

२प २नि २सां २म २प २म २ग २सां

चनतें राग बढै बचनतें दोषचन्हा । इति ।

२म २प २नि २सां २ग २सां २नि २म २प

स्याई । बचनतें ज्वाला उठे बचनतें सीतल

२ग २म २प २नि २ध २म २ग २म २ग

होइ । बचनतें मंदिते माव बचनहीतें सो

२सां २ग २म २ग २म २प २नि २ध

चन्हा । इत्यंतरा । बचनतें प्यारोलगे ब

रा॰मा॰

रागमालकौशतालचार। वचन विवेक
किये वचनमें भेदहै॰ एकतो वचनहैनि
करमहीमें वहिजाहि करत बहुत विधि
स्वर्गकीउ भेदहै। इतिस्थाई। एकहैं व
चन हठईश्वर उपासनामें तिनमें ताम
कलही वासनाको भेदहै॥ इतिअंतरा॥

28

स्याई। वचनतैं नारी अरु पुरुष सनेह अ

ति वचनतैं दोउ आप आपमैं विमानतैहे।

इत्यतरा। वचनतैं सब आइराजाकेहन्न

रहौंहि वचनतैं वाकरउ छोडिकैं परा

नहै। हंद्दर सु वचनसुननत अति सावहो

इ कुवचन सुनतही प्रीति घट जातहै।

ग॰ मा॰

२ग २सै २म २प २नि ३सै
दहतहै। इतिस्याई। वचनतें बेधन करत

३ग ३सै २नि २प २म २ग २म २प २म
हे अनेक विधि वचनतें त्याग करि बनमें

२ग २सै २म २ग २प २म २ग २म
रहतहै। इत्यलम्। वचनतें उरके ग्रहरह

२प २नि २प २म २ग २सै २नि २प २म
रके वचनहीतें वचनतें भांति भांति से

२ग २सै २म २प २नि ३सै ३ग ३म
कट सहतहै। वचनतें जीव भयो वचन

३ग ३सै २नि २प २म २ग २म २प २म २ग
ते ब्रह्म होत भेदर वचन भेद बेदयों कर

३१

एकहै वचननामें एकही ग्रंवेद चलन है
दर कहत यों बतायो ग्रंत भेद है। वचन
ग्रनेकही प्रकार सब दोविय तन वचनवि
वेक किये वचनमें भेद है॥ राग माल।
कौषा ताल वार। वचनते जोग करे वच
नतें जगकरें वचनते नपकारि देह कौं।

गा.मा. लिए विललावै। याहीतें मेंदर निरगुण

त्यागि सु निरमल एक निरंजन ध्यावै॥

राग मालकौंश ताल चार। कोटिक बात

बनाइ कहे कहो होत भया सबही मनरे

जन। इति स्थाई। शास्तर स्मृत ग्रह वेद

पुरान बखानत है प्रतिशाय लक ग्रेजन.

३४

न है ॥ राग माल कौशा ताल चार ॥ निर्गुण

उपासना छेग । इंद्र वेद । ब्रह्मा कुलाल

रचे बहु भाजन कर्मनि के बस मोहन मा

वे ॥ विष्णु संकट आइ सहे गर्भ काडु को ·

रन क काडु सतावै । डुनि स्याई छेनता । छ्रु

दर भूत पिशाचनि के पति पामक पाल

२सै २नि २प |२म २प २नि २प २म २ग २सै
रा॰मा॰ गनगंजन रंजन सोजु फावै प्रभुजै। इन्हे

|२म २ग २म २प २नि २प |२म २ग २म
तना। भंजन सोजु भैलो रस मोहि जु विउ

२प २म २ग २सै |२म २प २नि २सै
जन सो कत इन प्रभुजै। ग्रंजन सोजु बढै

२नि २प २म| २ग २म २ग २म २ग २सै
हवि हेदर ग्रंजन सोजु निरंजन हजै ॥

२म| २प २नि २प
राग मालकोश ताल चार। जो प्रभु मो उ

२म २ग २म २प २नि |२प २म २ग २सै
लाति भई यह सो प्रभु है उरदह हमारे ॥

31

इतिश्रेतरा। पानी मैं बूडत पानी गहे कंनण

र पहेंचतहै मनि मैंजन। मेंदर तै लगि

श्रोधेकी नेवरी नै लौंन यावत एक निरं

जन॥ राग मालकौश ताल चार। मेंजन

से जमसो मल मैंजन मजन सोज कहे

गति गूंजे। इति स्थाई। गंजन सो इंद्रिय।

रा॰मा॰ आवत सो सब जानकै जेनन माया। इतिया

है। आवै नजाइ मरे नही जीवत अच्युत ए

क निरंजन राया। इत्यंतरा। ज्यौं नहनन

रहे रस एकही आवत जात फिरे सब का

या। सो परंब्रह्म सदा सिर ऊपर खेवरता

अभुसों मन लाया॥ राग मालकौसताल

३२

32

इति स्थाई। जो प्रभु है सबके सिर ऊपर जा

प्रभुकौं हम देइ सिर धारे। इत्यंतरा। रूप

न रेख प्रलेख प्रावेडित भिन्न रहे सबका

रज मारे। नाम निरंजन है तिनकौं प्रेनि

से दवल प्रभुकौं बलिहारे॥ राग माल

कौशि ताल चार। जो उपजै विनसे गुन

रा.मा.

के मन मानत सोई ॥ राग माल कौशताल
वार। देवन के सिर देव विराजत ईश्व
र के सिर ईश्वर कहिये। इतिश्याई। ला
लन के सिर लाल निरंतर छबनि के
सिर छब सु लहिये। इत्येतता। पाका।
नि के सिर पाक सिरोमनि देखि विचा

33

वार। जो उपजो कछु आहि जहां लगि सो
सब नाम निरंतर होई। इतिस्याई। रूप
यहो सब हेतहि निह चल तीन हु लोक
गने कहा कोई। इत्यंतरा। राजस नामस
सात्विक जे गुण देखत कालग्रसे पुनि।
कोई। आपुहि एकरहे जु निरंजन सेदर

रा॰मा॰ तरा। जोबन को रस अनेन कहे गुण याहीतें

सहेट कहे यत नामी। ऐसो अभुसिन के सिर

उपर क्यों धरिहे तिनकी कहि स्वामी ॥

राग माल कै कोश नाल चार परी हुतानको

ऐग। इंट अब छेद ॥ प्रानकी श्रोरनिहार

नही जैसें जान परिबन एक बनीको ॥

३५

रि वहे हृढ गहिये। हेदर एक सदासिर

ऊपर ग्रीर कछू हमकौ नहि चहिये ॥२॥

राग मालकौश ताल चार॥ शेष महेश

गणेश जहोलगि बिल बिरंचि इकेसि

र स्वामी। इनतिध्याई। व्यापक बल अखंड

अनाब्रत बाहिर भीतर ग्रंतरजामी। इनके

रा॰मा॰ उपासत सो मति मंद कजी हत होई। श्रुति

स्याई। जो अपने भरता रहिं छाँडि भए।

विभचारनि कामिनि कोई। इत्यं तरा। वे

दन नाहिन आदर मान। फिरे विस खोय

पनी पति खोई। डूबि मरे किन कूप मे

फार कहा जग जीवन है सठ सोई॥

35

इतिस्याई। होतअनादर ऐसीदी भांतिज

पीछे फिरे पुनि हरमतीको। इत्यंतरा

नेकहीमें हरवोहै जानताविसे अथविंदज

जोगजनतीको। राम हदेतें गराजन संट

रएकरती वित्र एकरतीको॥ रागमा।

लकेषातालबार। जो हरिकैं ततिस्थान

रा-मा-

भावे जो हरिकों तजि आनहि धावे ॥२॥ राग माल कौश ताल चार। पूरन काम सदा सुखधाम निरंजन रामहे सिरजन हारो। सेवक होइ रह्यो सबको तिन कुंजरकी टहिं देत पहारो। भंजन दुखदरिद्र निवारन चिंत करे नित सोक सवारो ॥ ::

36

राग मालकौशा ताल चार। एक सही सब
के उर अंतरता प्रभु कौं कहि काहि न गावै
इति स्याई। संकट मांहि सहाय करै प्रति
सो अपने पति कौं सरावै। इत्यंतरा। चा
रि पदारथ और जहां लगि आठहूं सिद्धि
नवौं निधि पावै। सुंदर ब्यार पलो तिनके

रा॰मा॰ कौं नहि तो सपने अभिलाषे। सुंदर अमृत

पान कियो नकहि कौन हला हल चाषे।

राग मालकौश ताल चार॰ मनहर छंद॰

काहेकौं फिरत नर भटकत ठौर ठौर डा

गरकी ठोर देवी देव सब जानिये। इति

श्याई। जोग जग्य जप तप तीरथ ब्रतादि

ऐसे प्रभु तजि आन उपासत संदरहु है तिन
को मुख कारो ॥ राग मालकौश ताल ध
होइ अनन्य भजे भगवंतहि और कछु उ
रमें नहि लावे। इति स्याई। देवीय देव ज
हो लगि हैं उरके तिनसों कछु दीनन माषे
इत्यंतरा। जोगहु जग अनादि क्रियातिन

रा॰मा॰ ताल चार ॥ पतिही सो प्रेम होइ पतिही
सो नेम होइ पतिही सो छेम होइ पतिही
सो रति है । इति स्याई । पतिही है जज्ञ यो
ग पतिही है रस भोग पतिही है जप तप
पतिही को जानति है । इत्यंतरा । पतिही है
ज्ञान ध्यान पतिही है पुन्य दान पतिही

38

दान तिनहूंको फल सोउ मिथ्याई बखा
निये ।। इत्यंतरा । सकल उपाय तजिए
क राम नाम भजि याहि उपदेश सनिह
दै मोहि आनिये । ताहिते सम्पति करि
हेदर विश्वास धरि और कोउ कहै कछु
ताकी नहि मानिये ।। राग मालकौश

रा. प्रि.

राग रूपष लाल ।३। सवैया ।। पाइ परैं मनुहा
र करैं पलका पर पाय दियो भय भीने ।। सो
य गई कहि केशव कैसे हू कौरही कोरक सौं
हन कीने । हाह सके सषसौं सषछ्वै छिनमें
हरि मानि सबै सुषलीने । एक उसासही के
उससे सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ।

अथ हरषरागसा परिछेद माहनाल ।३। सवैया

मोहिबो मोहनकी गतिको गतिही पढ़्यो बैन
कहा यौं पढ़ैगी । ऊंप डरो जनकी उपजै दिन
कहि मटै श्रंगियान मढ़ैगी । नैननकी गतिगू
ढ चला चल केशवदास चढ़ैगी । माई कहांय
ह मायगी दीपनि जो दिन है रहि भांति चढ़ैगी ।

रा॰ २॰

रागन्नरष नाला३। सवैया॥ बोलीन होवे उलाय रहे हरि पायपरे प्रकडोलिये ओझी। केसव भेदविको भरि प्रेक कुडारहे जकमै नहिछोडी। सूयेविमै वकों केनो कियो सिरवाधि उटाय ग्रेगहनि टोडी। मैभरिचित नकृन विमौन वह्नी गहिनैननिलाजनिगोडी। रागन्नरष तिनारा॥३॥

2

राग हरष ताल ।३। सवैया ।। चन्द्र मुखरि लो
चन लोलसी मेलि सुकोउ कटाक्षकी कोरक
पी ।। सुख माधुरि वानी वसी चन्द्रराई धी केश
मोहन नाम्ह पफी । कुच नेहू नैन नन लाज विरा
जनि धार गहे वंडू गैर मफी । नवफी इति वाल
हिं वालकनाहनि अंग अनेग की फौज वफी ।।

रा॰ह॰

सवैया। आजु मैं देषी है गोप सुता इक होय न पै री सो अहीर की जाई। देषन ही रहिये इनि देह की दे षै न औरन देषी सुहाई। एक ही वेर विलोकनि ऊपर वारौं विलोकि विलोकनि काई। केसव दास कलानिध वह दूजिय काम कि मेरी कन्हाई॥ राग हरष ताल॥३॥ सवैया॥

3

सवैया ॥ बोलै न बाल बुलावत है नखरेख लिखै भ
व प्रेम परेखै। आपन हाथ विलोकि विलोकि
कही नख केसव ऊरि बसेखै। छोटी बडी बिधि
रेख लिखी जग आयु की रेख सकै न जु लेखै ॥ प्रे
म के बोल सखोप न पठ्यो अकुलाय कह्यो पि
य कैसी है देखै ॥ राग हरख नाल ॥ ३ ॥

रा° ह°

सवैया ॥ हेगति मंद मनोहर केसव आनंद हियेउल

हैहैं । भोह विलासनि कोमल हासनि अंग सुवा

सनि गाढे गहैहैं । वंक विलोकनि को अविलो

कि समाकके मंदक्रमाकरहैहैं । पईनो कामके

वान कहावन फलनके विधि भूलि कहैहैं ॥

राग हरष नाला २ ॥ सवैया ॥ नोहिन गाय व

कान्ह भले जू भली समझाई हौं मोहि समद्र को
जो उसह्यो है। केसव आपनौं मानि कसो मन
हाथ पराए दै कौने लह्यो है। नैनन सो मिलवौ
करिये अब वैनन कौ मिलिवो नौ रह्यो है ॥
जाइ कह्यौ तुम जैसो सखी सठ ऐसे हे गुपाल
मै ऐसो कह्यो है ॥ राग हूवष ताल ॥ ३ ॥

रा॰ह॰

5

लिये उठि आगे ह्वै केश आप ही आसन दीनो। आ
पुहि पाइ पषारि भले जल पान कौ भोजन लाइ न
दीनो। बीरा बनाइ कै आगे धरे जब वै हरि कौ कर
बीजन लीनो। वाहि गही हरि ऐसो कह्यो हमि मै
नो इनो अपराधन कीनो॥ राग हरष ताल।
॥३॥ सवैया॥ चितवौ चित बोप हमाप

जोवन नाषन वार अनेक सिंगार बनायो। जो
ह्मैं अानकौ आनिवौ छ्ल्लोषें नेरो नऊन भ
यो मन भायो। भावे सनें करिवौ करि भामि
नि भाग वडे वसनैं करि पायो। कान्हमो सू
धे अवाहनि नाह्ली सुवाहनि हैं अवपाइलगा
यो॥ रागरुाषनाला॥३॥ सवैया॥ आवन देषि

रा॰ इ॰
6

ऊज्ज देख्यौ सबै छिनबान सबौ ज्यु सबनी सबही हैं॰

यहलौ कछु औरु वैहै सबही अब सौंह करौ बक

री जतनरी हैं। समजोर कहै। समजी सब केसव

छूटी सबै इन सौं जकरी हैं। मान कियो अपमा

न करौ मो हमो अब के हसि के को रही हैं॥ ग॥

हाथ नाल।३। सवैया॥ वैठी सखीन की।

हसैा हो बलापैने बोलौ रहो लिन मौने। सोह
अनेकनि आवइ ठेक करो रनिको अति रैन
की गैने। षवापनें षाइ बस्याइ विरी जन आई
हो केशव आजही मौने। मोहन के मन को
मोहनी मकही गइ यो सिष ई सिष कौने ॥
राग हरषनाल ॥३॥ सवैया। हिन के रनदेष

रा॰ह॰

7

हो उपरी । एक दिनै समसकाय इनै उनवानकै है
रूभायपरी । चारु चकोर विलोचन भाषिव
हूं दिसमैं भ्रुगुरी पसरी । सषि आज गई होतीगो
कुलहैं सबरी मिलि दैनको चांदकरी ॥ राग
हरष नाल ॥ १ ॥ सवैया ॥ हैं सुष पाइ सिंगार र
ही सिष सीष नए सिषनै हूं सिंगार । सैव हूंतै उष

सोभै सभा सबही के सुनै नन माझ बसै । बूझै तें
बात बनाय कहै मनही मन केशव दास हसै ॥
खेलति है उत खेल उतै पियबिन खिलावति यों बि
लसै कोई जानै नहीं टग दोरि कवै किनकै हरी श्रो
खिनछै निकसै ॥ राग हरख नाल ॥ ३ ॥ सवैया ।
केशव रायकी सोंह कैके कन्हु एकन आपसे

रा॰कृ॰ बोलत हसौं है। देषहू पीइक बारसको वन आरस

लोचन आरसी सौं है। आपज वैसें ही साज सौं आ

ज सब भूलि गई पिय कालिहकी सौं हैं ॥ रागाहर

षताल ३। सवैया ॥ बैठि ह्ती व्रजनारिन में

बनि श्री वृषभानकुमारि सभागी। खेलति

ही सखि बीषरवारि भई नहिं खेलषरी अनुरागी

8

पाइरी देषोपै केशव केहू जटे वनजाई। हेरहिये

विन साथ निहू सेग कूटन कौं पलको पलनाई

देषड दैमधको घटकोटि मिटैन घटै विषको वि

ष नाई॥ रागा इरष नाल। ३। सवैया॥ केशव

श्रौरन सौं रस रासि रस्यो रस चाउ सवै इनसौं रं

सैं मनमै लेन जो लोकहू अव श्राइहू बोलिबो

रा॰ ह॰

१

मग आय गये किधौं आवेंहिंगे सजनी सुषदाई। आयन लैर कुमार सवार स कौन विचार अवेर लगाई ॥ राम ह २७ तिनालाः २ ॥ सवैया ॥ केश व जीवन जो ब्रजको निज जीवडु ते अति वापहि भावै। जापर देव अदेव कुमारनि वारन मांई न वार लगावै। नाहरिपै नृ गवारिकी वेटी महा

पीछेते केशव बोलि उठे सखिनिकै चित चातुरी आन
रि जागी। जानि न काहू कवै हरिके सर मारग ही
मरसी दृग लागी॥ राग हरष नाल।२॥ सवैया
सखी भूलि गई मलय किधौं काहूकि मलेई।
डोलत न बोलत न पाई। मीन भये किधौं केशव
काहूसौं भेट भई कोऊ भामनि भाई॥ आवन है

रा० कृ०

80

ऊँज विराजति गोपवधू कमला जनु केजऊटी म
हूसोहैं ॥ रागकल्याण ताल ३ ॥ सवैया ॥ पाय परे
हूते पीतम त्यौं कहि केशवके हूनमै टवादीनी । न
री सखी सिष सीषीन एक हू राघऊ की सिष सीषिज
लीनी । चेटन चेट सरोज समीर जरे डरवे देह भई
सुघरीनी । मै उलटी जकरी विधि सोकऊ गोय न

वर पाय केवाय दिषावै। ह्वैं तो ववी अवरास निहै

थैमे औरउ जु देषै तो अतर आवै॥ राग ङ्षवनाल

सवैया॥ भाव मिहै लषवैन लषीनसौं लाषहिये

अभि लाषनिषोहै। कोमल हासनि नैन विला

सनि श्रेरा स्ववामनि कोमन मोहै॥ स्वरनि वे

न कियों तुलसी तुलसी वनमैं रति म्रानिको है

गा॰ह॰

व कान्हके प्रेम पगीहैं ॥ राग हरष ताल । ३ । मैं वे

या ॥ केशव कैमेहूं ह्रदय प्राप मिल्यौ मन भा

वतो भाग भहौरी । जानैको माई कहा भयो

कैयोंहूं जो श्रीपतीको आप कृयो सटहौरी ॥ ला

कडु तन मन भयौ हसिबोले जन मेरो मोहन पा

य परहौरी । काढहुंतें रुठ तेरो कठोर हते विर

११२

ही उलटी विधि कीनी ॥ रागगौरष नालाइ ॥ सवै

या ॥ याऊं कछु अंखियां हरि ओरसी मानोम

हावर माहि देगीहैं । मोहन मोहिसी लागत

मोहि ऐसेपर मोहन मोहि लगीहैं । मेरी सौं

मोहसौं मानऊ येगि हिये रस रोमकी रीति

जगीहैं । मौ वियोगके तेज नची कियो केश

रा ह्र.

12

राग ह्रख माल ।३। सवैया ॥ फूलसे फूल सुवा
स कुवासली भाकलीसे भये भौन सुभागे । केश
व बाग महा बनसों मरली वध्ी जौन्ह सबै अंग
रागे । नेह लग्यो उरना हरषैां निस नाह वरीक
कहूं अनुरागे । गावैं सो गीन विरी विससीसि
रहेई सिंगार अंगार सो लागे ॥ राग ह्रख

हेनलहूेनजस्यौरी ॥ रागा ह्रषनाल ॥ २ ॥ सवैया

थैपिंदै धाय ज्हा उनसौं यह भोजनके अवहीं ह

म धुहैं । ताकऊनौ अवलौं वह्नाइके गाषी वस्ला

ई महकाविमैं है । वैठकह्रा इनकी ह्रिया केश

व नाऊनहीं कोऊ जायजकैहैं । जाननहैं उन

ग्राषिनिमैं अहृ ग्रेऊमगो वऊलो भनिवैहैं ॥

ग॰ हं॰

13

नाल ॥ ३ ॥ सवैया ॥ गोप बडे बडे बैठे अथाइनि

केशव कारि सभा अवगाहैं । खेलत बालक जा

ल गलीनमें बाल विलोकि विकाहैं । आवत

जानि लगाई चहूं दिस हूं घटमैं पहिचानत छा

हैं । चेटसैं आनन काढि कसै चली सूझत है

कछू नाहि कि नाहैं ॥ राग हरषनाः ॥ ३ ॥ सवैया

१२

नाल ।३। सवैया ॥ लाडिली लील कलोरि ल
ली कहुं लाल लखे कहूं अंगि लगायकै । आज
लौ केसव कैसेहूं ले रूपं नागन देनिन देखअघा
यकै । वेग चलौ उठि आई लिवावन दौरि अके
ली पठैं अकुलायकै । भूलेहूं गोकुल गाउं मे
गोविंद कीजै गुरु न गाइ चरायकै ॥ ७ ॥ रूप ४

रा॰ह॰

यो इह्लकान्ह कियो लवि लालच केनो। ह्राहाके ह्रारिरहे प्रति केशव पाय परेनो परेई रहेनो॥ हौं जो यरे नवहीको विचारति होतो गुमानकों याह्री नो पनो। लामी लटे ग्रन पानरि देहजेने क वडी विधी ग्रौषे नदेनो॥ इति राग ह्राष सवैया नाइका नाइक समाप्तम॥ ॥ ॥

१४

होत न कहा अब के समझे समझे न तैं जब है स
मझाय। एकहिं वेक विलोकनि माहिं अनेक अ
मोल विवेक विकाय। जान पर्यो न जनावहूं जू
जनमगावयि लैउहि जानि है पाय। बात बनाय
बनाय कहै सो लेहु मनाय मनाय ज्यौं आय॥ राग
हरषनाला। २। सवैया॥ भूले हूं भूपे नहीं विन

रा रा॰

पनक्ष मातान प्रिय किधौ सूरज अमलहै। सब

बिध समरथ राजे राजा दसरथ भागी रथी

पथ गामी गंगा कोसौ जलहै ।।९।। दोहरा ताल।३।।

जद्यपि ईंधन जरिगये अरिगनके सब दास।

तदपि प्रता पानल नकी पल पल होत प्र

काश ।।१०।। तोमर छंद ताल तीन।३। वड भाग राज

रागिणी बंगाली ।। राग चंद्रिकापारी छेद मा

ह । ताल कंपा ।। विजया छेड ।। विधके समा

नहै विमानी क्रनरा रहै सविबुध विबुध जत

मेहसे चंचुलहै । दीपति दिपति ग्रति सनै

दीप दीपि पत हसरी दिलीप सो सदछना ।

को वलहै । सागर उजागरकि वडु वाहनी को

रा

रा॰

2

मनमाऊ होइ सकहिमो धनिमोज आपनो
लहियो ।१४। छंद दोधक रागमगण जवते व
न माही।राघम वैनकरै बहुधाही।राग क्रमा
रहमै न्रपदीजै।तौपरि सरन जगण करीजै।
।१५। तोमर छंद । इहबात सुनी न्रप नायज
वै । सरसेल गेग्राघर चितसवै । सुघते कक्कु ।

सराइ। करि जोरिकै परि पाइ॥ हसिकै कह्यो म
षिमित्र। अब बैठ राज पवित्र॥२॥ मुनि उवाच
छंद ताल। सुनिदो नमो नव हंस। रघु वंसकै
अव तंस। मनमाक जौ अतिनेहू। इकबात मो
गे देहू॥३॥ नृप उवाच दोदक छंद ताल॥ तीन॥
सुमति महा रिष सुनजै॥ तन धन सममह गनजै।

रा
रा॰

3

मन गयंदन। जिन वेधत सरलछलक न्रप कु
वरि कुवर मनि। तिन बानन वाराह वेधन
हिमारति सिंचन। न्रपनाथ नाथ दसरथ
अकथ कथत बात यहमोनिधे। म्रगराजि
राजि कुल सकल यह बालक हइनजा
निधें। १८। छंद ताल । राजनिमैं नम

बातन जाइ कही अपराध विना सिष देह दही ।
१८। छंद । अतिकोमलके सब बालकता ब
उड़छर रक्षक बालिकता । हमही चलिहै
सिष संग अबै । सजि सैन चलौं चतुरंग सबै ।
१०। छंद जिन राघन हवि उरष रनन हर
नीहरि नेदन तिनन करत संघाऱ करा मद

रा मैंज कह्यौं रिषि दीन सलीजै। प्रान।
रा॰ दियें धन जाहि दिये सब। के
सब राम नजाहि दिये अब
। २० । रिषि उवाच छंद ताल

राज बडे ग्रति । मैम्रह मांगेगो

हदेज्ञ महा मति । देव महाइ

कहैानर नाइक । हैयह काइज

रामहीं लाइक । १९ । छंद नाल

रा
रा०

कोप उ[illegible]च्यौ उर आइ । राजा दसरथ सो कह्यौ । वचन वसिष्ट वनाइ । २३ । इति राम चंद्रिका परिछेद: ॥

राजत जौधन धामतजे सवानादि तजी सुत

सोचुतज्यो तव श्रापुनपोजत ज्यौ जग वंदहि

सज्जन पकरज्यो हरी वंदहि।२१। राज्ज वहै वह

साज्जवहै पुरु।धाम वहै वह वंस वहै गृह फू

टैसौं फूटेई वांधतहो मन।छांडतहो प्रभ सत

सनातन।२२।दोहरा।जान्यौ विरवा मित्रके ।

रा॰ दे॰
स॰

श्यामलिया सवैया लाल॥ ॥ पाइ परै मन हार
करैं पलका परजाय दियो सुख भीने ॥ सोयगा
ई कालि के पट जैसे हूँ कै रही कोरक सौरस कीने
साहस कै सखवैं मरवैं के तिनमे हरि नाति
सवै सखि लीने ॥ एक उमासह्नी के उससे
सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ॥ ॥

अथ राग देवगाविस सवैया परिछेद आठ माला ॥

मोहिवो मोहन की गति को गतिहरी पडो बैन कहा
यौं पढैगी । जोप उरोजन की उपजै दिन काहि मढैगे
गियान मढैगी ॥ नैनन की गति गूढ चला चलैके
शवदास अकास चढैगी ॥ माई कहो यह मायकी
दीपति जो दिन है इहि भांति बढैगी ॥ राग देव

रा॰ दे॰
स॰
2

राग देवगांधार सवैया ताल। ॥ बोली नवे
लेउ लाय रहे हरि पायपरे अरुडोलिये डोडी। केस
व भेटि देको अति अंक लुकाइ रहे जकौ मैं नहि छो
री। रहे विचि बेकौं कोतो कियो सिर चापि उमाय
बे रहे ति लोडी ॥ १ ॥ मै अति चित लजत तिवोनव
ली गहि नैननि लाजनि गोडी ॥ राग देवगांधार

राग देवगाविस सवैया ताल ॥ ॥ यन्त्र मूयरि
लोचन लोलसो मेलि चकोड कमल छको कोर क
को ॥ भाव माधुरि वानी वनी उनवाईसी केशसो
रुक नासक चढी ॥ कन्ज तंह नैने नन लाज विराज
ति नर गाते चढ़ें रेयमली ॥ नवछी डुमि ताल
दि तालकला झति श्रंग अनेग की फौज चढी ॥

ग॰ टै॰
स॰

३

मैं देषीहै गोपसुता इक हो पदन ग्रैमजी असीसकी जा
ई। देवता सी दहिये इति देहकी देषेते औरन देषीस
नाई॥ पकरिस बकविलोकनि ऊपर वारों विलोकिवि
लै लासकाई। केशवदास कलानिध वक हरिजूबका
नकि मेरो कन्हाई॥ सवैया॥ कान्हभले जुभली सन्त
नाई हैं मोहि समद की जो उनयो सो। केशव आप

सवैया।माला। । बोलै न बाल बुलावत हूं बृषवेष
लिषै भव प्रेम परेषौ ॥ आपन आप विलोकि विलो
कि कही नव केसव बुद्धि वसेषौ ॥ छोटी बडी विधि
वेद लिषी जग आपकी रेष सु कौन उलेषौ ॥ प्रेमसे
बोल सक्यो न सक्यो मुकलाय कह्यो पियकै मी है
देषौ ॥ राग देवगांधार सवैया माला ॥ आजु

रा॰ दे॰
म॰

५

वैके विलोकनिको अविलोकि सुमालतें नंदकुमा
रु बहेहैं ॥ पईनो कामके बान कसावन फूलनके
विधि भूलि कै रहेहैं ॥ सवैया ॥ गोहिन गाय ब
जावत नाचत वार अनेक सिंगार बनायो ॥ सो
हमे आनको आनिबौ कसौंपै नेरो नऊन भयो
मनभायो ॥ भावै सनेहु कौसिबो करि भामिनि भा

गो मानि कसो मन न्हाय पगार ईकौं नै लखो हो। नैन

नसों मिलवो क विषै सब वैनन कौ मिलिवो नौ रहो

हो॥ जाइ कहौ मन मैं सो सबी सङ्ग ऐसे गुपाल

अ ऐसो रंग मैं॥ सवैया॥ है गति मंद मनोहर

पै सब आनंद कंद लिये उलहै हैं॥ ओर विला

सिनि कोमल हासनि ऐसे सुवासनि गाफे गहै हैं

रा॰ दे॰
स॰

5

सो हसिमैनो हनो मयगायन कीनो ॥ सवैया ॥ चित
है चित चाप हमायं हमैा सो तुलाएरें बोलो बहोगि
न सोवे ॥ सोह ग्रदेकति आवइ येककरो रतिको
पुनि देसकी होने ॥ बचाएतें घाइ वसाइ चिरी जन
माईहै केशव आजही होने । मोहनके मनको मोह
नी सकहे घरयो मिष दृष्टिसम कोने ॥ सवैया ॥

ग बडे बसतै करि पायो ॥ कान्हसों ह्वयै जु चाहति
नाँही सुदाम तिहैं भव पार लगायो ॥ सवैया ॥ आव
त देषि लिये उठि आगेह्वै केशव आदरि आसन दी
नो ॥ आदरि पांइ पषारि भलै जल पानको भाज
न लाइन दीनो ॥ बीरा बनाइकै आगेधरे जब वे
हरिको कर बीजन लीनो । बाहै गही हरि ऐसोक

रा॰ द्दे
मा॰

6

रैनन माऊउदै । तृऊैनै बाज उसाय कहै मनही

सन केसाव [illegible]सै । विलहिरै सन ठेल ठैनै पि

य जिन जिहा[illegible]सौं विलसै कोई जानै नही ह

म सैनि [illegible]दै वि[illegible] [illegible] ठैकिनछै निकसै । स

दैया । केसाव स्यली [illegible]ठैदै कछू एक[illegible] अाउ

नै सोउपरी । एक दिनै [illegible]सकाय रहै उतवा

तिनकैं इन देषइजन् देष्यौ सबै तिनवात सबैरौ जस
नौ सवरीहैं ॥ पहलौ कछु बैर वहै सवरी पवैसों
सकबै नकरी जनरीहैं ॥ समझाइ कहैरौ समझौंस
व केसाव कहौ सबै समझैं नकरीहैं ॥ मान कियो
अपमान करौ ... मे अबके रसिके को रहीहैं ॥
सवैया ॥ बैरी सहीन कोपे रमा सवरी केव

रा॰ दे॰
स॰

छलकी छलनाई । देषहु दै मधुकी घटकोटि मिटै न
घटै विषकी विषनाई ॥ सवैया ॥ केशव औरन सौं
रस रासि ह्यो रसवाउ सबै रसमोहैं । सौं मन मैं लेन
जो लोकहू सब छाडहू बोलिबो बोल हसौंहैं । देषहु
धौइक बावलं कोवन आनन लोचन औरसो सोहैं ॥
आपुज्ज वैसेही लाजसौ आज सभूलि गई पिय का

ते कहै बड भायपगो ॥ लाल चकोर विलोचन भा

नि वहै दिसै वेसरी परसौ ॥ सखि आ [illegible]आई झेमी

मेकलसे स[illegible] [illegible] देस को बोदकरी ॥ सवैया

सें रूप पाइ [illegible] [illegible] सिख सीखे नए जेहूं सिखाई॰

मै बड है [illegible] [illegible] देखो पै केसव केहूं कहे न

जाई ॥ देखि लिये बिन साथ जिन्हें तेऊ छूटन क्यों

रा॰ दे॰
स॰
४

काहू निरखेई खेलन बाटन माई । मीन भये किधौं
केशव कान्हसों येद भई कोऊ आमति भाई । आव
न है मना आय नायें किधौं आवेहिंगे सजनी सावद
है । आयन भेद कमार सवार ह कौन विचार अवेर
लगाई ॥ सवैया ॥ केशव न जीवन जो हजको नि
ह जीवक है ते भनि बा उहि भावे । जावर देव अदेवक

लिहकी मोहैं ॥ सवैया ॥ वैठिऊंची हुतनागरिन मे व
ति श्रीवृषभान कुमारि भागी । खेलनि सो सखिवो
घर चोरभई नहि खेल खिरी अनुरागी ॥ पीछेते के
तव बोलि उठे हसिकै विन चावरि आनरि जागी ।
आनिन काहू कवै हरिके घर मारगासी मरली हग
लागी ॥ सवैया ॥ भयो भूलि गई भलप कियौं

रा॰ दे॰
सू॰

१

यौं तुलसी तुलसी बनमैं बसि कोऊ हैं ॥ कुंज बि
राजति गोप वधू कमला जनु कुंज कुटी मह
रो हैं ॥ सवैया ॥ पांय परे हंसे प्रीतम त्यौं क
हि केशव के हंसनैं हगादीनी ॥ नेकी सखी सिष
सोषीन एक हूं रोष पहूंकी लिष लौघि जलीनी ॥ चंद्र
वंदन गोज सखी जैसै उरु देह भई सखी लीनी ॥ मै

५

गावति गावन गाई नखचलमावै । नाच्यरि पैनै गवा

रि की वेटी महावर पाय कै चाल दिखावै ।। दौरि तो दवी

भ्रव हासनि हूं ऐसे औरजु देखै सो उमर आवै ।। सवै

या ।। भावनि है हावै वेन सघीन सौं लाघ हिये श्रु

मि लाघनियोरै है ।। कोमल हासनि नैन विलास

नि ऐन सुवासनि कोमन मोहै ।। मूरति वैन वि

रा॰ह॰
म॰

सवैया॥ केसव कैसे हू एक उपाय मिलै मन भाव
तो भाग भयौरी॥ जानें को माई कहा भयो कौं हू जो
नैन भावतो भयो भटक्योरी॥ ना कहू नैन अंजो
हसिहौंन ते उझके री सो मोहन पायपर्योरी॥ कान्ह
है हट नेरो लखौ इते विरहानल हूं न जर्योरी॥
सवैया॥ सौंपि है आयउ सैन सौं पग मोजन के

उलटी उकती विधि मोकहु मांघ न सीठ लखी विधि
कीनी ॥ सवैया ॥ आस कछू पूछिये हरि औरसी
[illegible]सो मनभावन आहि रंगीहैं । सोहन मोहिनी लावन
मोहि हे नैन परमोहन मोहि लगीहैं । मेरी सौं मोहू सौं
मानहु वेगि हिये रस रीस की रीति जगीहैं । ऐसे वि
योग के नैन न वीक्रिये केशव काहूके प्रेम पगीहैं॥

रा॰ भं॰

सनान हित सोवर धाया । क्रोध विवस के ।

पत सब काया ॥ तेहि सोवर जल जाय नि ।

हारा । क्रिमी रुधिर मय परम खारा । दसा

देखि प्रभु मुनिवर जाना । प्रति प्रवरज ।

निज मानस माना । इहि गति कवन हे

त प्रभु भये । सोचि सोचि विसमय वस

अथ भक्ति माल परिछेद माह बंगाली रागि
नी ताल ३ । चौपई दसा दस तहि राषि ।
प्रवीना । आसन पावरि गवन तहं कीना ।
तद्यपि प्रती बिंब जोई तासा । पखो चवन म
निवर सविरासा । तहितें लोभ कीन मति ।
भारी । बहु विधि ताम्र वदन त्रिसकारी । पुनि

ग॰
भ॰
2

र बान धृत बाहु अजाना । निदरत मदन ।
कोटि छबि नाना । प्रेमे राम रूप हग देखी ।
परम आनन्द शबरि जिय लेखी । हरषि म
गन करताल बजाई ।। निरत करत सन्मु
ख प्रभु आई । दोहा गयो भूलि परिधान त
न निर तति अंङ्गन माहिं । तदपि ।। ।

रहेत यथि करि मनान जल तामा। आय भवन
निज मति गुण गामा। समय ताहि प्रभु रवि
कुल भाना। सहित अनुज निज लखन सुजा
ना। आश्रम रुचिर तास चलि आये। शवरि
सुख वचन सुहाये। तव यन वरन अरन हग
केजा। जटा कीट सिर किलष विभंजा। धन

रा
म॰

3

स्याम कृपाला । राम चंद्र खंडिन खेल मा ।
ला । मन्मथ ठाउ तोर सोई आजू । किंनर
नाग मनुज सुर राजू । भई तुमार सरन ।
मन कामा । दरसै दीन घाल प्रभु रामा ।
इनकर सब प्रतिघी मनकारा । करहु से
प्रीति विविध परकारा । प्रम सुनि सावरि

३४

मगन आनन्द सर भई नहत कोई नाहि । ९ ।

चौपई प्रेम विवस नहि मगन निहारी । बो

ले वचन वदन छित धारी । मनहु प्रवीन

धावीर वडभागन । श्री रघुवीर चरन अनुरा

गन । देवहु सावधान है सीला । परि हरि

मेल निरत निज लीला । अखिल लोक वि

रा॰
भ॰
५

अमिय समाना ॥ सादर रागिव श्रग्र भगवा
ना ॥ पानि जोरि मनभाव प्रभु ठाढी । बर
निन जाय प्रीति उर गाढी । नाथ नाथ न
गर पुर ग्राम न जानहुं । सदा निवास विपुन ति
न मानहुं । दीन मलीन मंद लघु जाती ।
कृपण पोच निंदित सब भाती । मोपे पथ्यासाक

निरत गात धरना। परी दंडवत रघुपति चर

ना। उठी कुटीर पुनि अन्तर धाई। पावन

कलित कुसा मन लाई। दीन बिछाय सा

म कहं सोई। बैठे धाल मुदित मन होई।

संजुत भक्ति चरन जलजारन। लगी प्रेम ।

जुत करन पखारन। तिन्ह बदरि फल ।

रा
भ॰

भवन मृद मन मन अनकूला । मधुर जाति
प्रीति करहिं प्रसंसा । हंस वंस ते जसि प्र
ति करहिं प्रसंसा । बदरि लाय मंजुल फ
ल आना । अयहान करि भावरि सुजाना । प्र
भु हिं देत मख मधुर बखानी । नव अनन्न ज
त सारंग पानी । परम प्रेम मय सो फल खायेराम

बहुराई । इह सेवा ठाकर बनि आई । पै नहिं

उचित नाथ अस सेवा । इह अपराध छमहु

मम देवा । सानि बनीत मधु मंजुल बानी ।

ताहू प्रेम परम रससानी । हरषे दीन या

ल अग गंजन । राम अकाम भक्त मन रंज

न । प्रीति पूर्वक तेफल मूला । बाघ ।

रा
पु॰

भ्रमायो । इंद्रभजी गरकी अबला बुधमो
हत ताहिके बीच उपायो । दोहा । (ताला ३ ॥) याविध
के अबलाहने नपी बडे बलवान । गुला
ब सिंह वैरागको करे व्रफ अभिमान
। १७ । सवैया । (रूपतार) हत आश्रय यदीपि ने भज
मै जग जीतनको बल आप धरे । जगहो

अथ प्रबोधचंद्र नाटक परिछेद माह

रागिनी बेंगाली सवैया ताल।फेरा गीत

म नार सुजार मारे मरजाइ भयो सर मो

ह चलायो। वेद पढे चतुरानन जो रति

के हितसो इहिता प्रगटायो। कौन ग्रंथ

धन पाउधरे जगमो सर जोहि कोवीत

रा॰
प्र॰

सुनाए। ते रंगमही पहिले हमने सब
बैर बैरहितेसदबाए। कौन अहे जग
भीतरि सोहम जीवत ताहिको नाम।
अलाए। वाम उठू तजि चिंत सदा तु
मकौं मनमें अदीति डरपाए।८।
दोहा कोप अगारी रहे जो कौन अहिंसा

२

२नि २सा २नि २प २म २ग २म २प २म
हि सहाइक जाहि वली प्रीतिना प्रीतिने

२ग २रे २सा २सा २म २ग २म २प २नि
बलवंत डरे । हनीये यम आदिक आठ

२प २म २ग २म २ग २रे २ग २सा २म २प
वजीर विवेक सहाइक बैट रे । बड़ ने

२नि २सा २नि २प २म २ग २म २ग २म
ग उपाय करे हनियो इहते डरमे हम

२ग २सा २म २प २नि २प
नीत डरे । १८ । सवैया भामनि राइ वि

२म २ग २रे २ग २म २प २म २ग २रे
वेकहके यम आदिक आठ प्रमान स

सा
प्र

धनिलोभ अलाप फार यमादि वजीर।
लप बहि कान इकंत समंत दिखाप।
मोह महीप अधरम वजीर यमादिक गो
पलगे तिन पाप जो यम नेम कहे ज।
गमै हरिके हितनाहि सलोक दिषाप
।२२। दोहा ताल ।शम दम और विवे

६

हास विलासनकेल अलि गननाहिइ
केत सबाति कहे । जनसंघवंत कहा ।
वन जे तजि सोय तपोवन जाइ वहे । वि
न माहि चिंतारत जो जवनी षिणमै म
णता विकारगहे । २१ । सवैया नाल ।
मोह श्रमात समात सरमद दंभ तथा

गा॰ समाधि सुनो चित्तहोइ इकागर तौ उ।
प॰ पजाए चित्त भीतर रेच विकार करे इ
नको जड़मूल खदेड उडाए। इन जीत
न हेत रची अबला यम नेम तवै हम
रे बस आए।२०। सवैया हरि विलोक
न नारिनको नाहि सभाषन हररहे ।

नारि। ब्रह्मचरज कौ मै हने षिनमै

डारे मारि। लोभ जवै करमै धरे चेड

हास वलधार। सत असते यम षग

ह भामनि भप निहार। ८९। सवैया

यमनेम आसन प्राणयमे प्रतिहार

वली जगध्यान लगाए। धारण और

रा
प्र॰

मन पूरब ईश्वर संगकियो निजनारि बषा
नन ताहि समाया। जिनते उत्पति भई।
हमरी मन नाम वही सततताहि उपाया।
मन तीनहु लोकह आप रचे पुनि ताहि
विषे जलदोष उपाई मन एक प्रहनकहे
पतिनी सुनि हत तथा जग हमरा गाई।

5

4

क लेकाम क्रोध मद्मान। मै सुनयो नि
जकानमै एको जन्मस्थान। २२। सवैया
ताल । उत्पत्तिको थान सु एक ग्रहे
मनसो जग भीतर तात भ्रलाया हमहे
पुनि भ्रात विमात सुनो वह गोप प्रकार
बने अवगाथा। २३। सवैया ताल ।

ग
पु.

नमरो पुत्र मोन करो मम पद्ध उचारा आ
तनमै इह भांति सवै हन मोह सनयो य
ह कान मजारा कवि सिंघ गलाब कहै
रति नाहि सनो रति वैरऊ कारणभारा।
२५। सवैया नाल । जो इक आमिषते
निपजे तिन वैर प्रसिध कियो जगमाही।

सवैया ताल । मोह प्रधान प्रहतरवी कु
लतीनइलोकन माहि फिलाई । सविवेक
प्रधान निहत जनी कुल सो विरली जग
माहि चलाई ।२४। सवैया ताल । हत
प्रारप जौ इह भांति अहे जग भीतरि एक
ह तात समाग । किह कारण वैर भयो

रा॰म॰
ट॰

कविगाने ॥ मिजत करदि वारिवे पैयां नापउरी
वे मियां रव करेन्त मिस्ठे आवे नैयनादे ॥ ८
पा ॥ केह्रा जाडडा कीता वेदिलव कदराना जाने
हर कदर मियां ॥ वेषनन्द मस्ताक जिमे रा इस्क
लगा मन लीना दिलन् ॥ टपा ॥ चल उठ करदी
दर यारा मियां ॥ दोस्न यारेदा आमदा जोदा मियां ।

अथ राग मधु टपा परिछेद माह ।ताल। ३१॥ लो

डे वेखन दिनेगामेन॥ बद्धवेषा बारिवे राझन

न हवीं वे मेरा ओर वरवनले साडी बोगा॥ टपा॥

आयानि सभालवो राझन यार किऊ याने न्‌यार

हीरनि मानिनवि किं फकूदा पीर दिलदि जुई आसा

व॥ टपा॥ सयाने वेलियावे हरनया वसदे लो

रा·म·
ट·

२

म्हांके वेवो नैडा मांवरो थांमै डियाने जिंदडी दिवा।
नी मैंडा जिंडरे। टपा। जाडुडाक मालकी नाये॥
इस्कलगा मैंडा जीनव मोदाके झाहाल जिगरपर
वी नावे॥ टपा॥ कौन गत भई मोरी आन ना मिलै
पिया मोको। उन विन कलन परत नप लछिनके
नैरण विङ्गाय आन मिलै पिया मोको॥ टपा॥

२

बाग वस्लादे निवे वेषन वलिय हो मियां मैं डा दिल
परदा वजार मियां ॥ ट्या ॥ देखणा दिदार जाणे
दा परख ले परखोले छू मियां ॥ खोटा खरा पय
वोन गोरि मियां सोई यावि मन ईमान ध्यां गाढा ॥
ट्या ॥ कि जाल माडे वे मियां यो किसदी यारी
टाले विसडे नाल न जाणे नाम न जाणे की कवे

रा॰म॰
ट॰

३

भ माक मोहि विन वढ़यो दियो झेवे ढोलामैं ॥ ट
पा॥ जिंद मोड़ियागी दे नाल लगिवे ॥ आदा रंग
वे जटमैं पावांगे लगावो विन डिठेओ मैडमी।
टपा॥ मधि आंदी मेरे प्यारेन राम किथेवे गावि
ओ॥ आप छुड जादे वारी नाल मेरी होमफूड
घकेदीमैं हारिओ। टपा॥ कीना वेकरेजा मारहा पा

३

मार चला कीतो छोडि चलावे भजन् इस्क मारी वो

कीतो मियो । ईयाद् वा यद सनमेरी दाइ फिरयाद

मो मेरी मियो ॥ टप ॥ वेडनदा पर वेला वे भला मि

यो वे मान चाक चाक जबावो भांदा कोईवे ॥ ओटा

नियोंदा माडे जवे शोरी लगि मरूवन पाक ॥ ट

पा ॥ मोवे फोला मनपर वो दियो ॥ ओष लडो दि

रा०म०
ट०

लवे पल जपकन आपडेरे ॥ टपा ॥ पलक दरे आ

ऊ मेवा माई ॥ जो बाइ जग राज कर बोई कार मभ

कदरत उ मि नाई । टपा । भई लीझे वो मरी विनदेवे

नेकना सहाय ॥ जवने गमन कीनो विदेशा वा भव

न आवे कछु नहिंवा ॥ टपा ॥ मया मय मेरे मरो

रे यानि मामरे मानी ॥ परामें परें परें पराय

४

रहा राम खोवो ॥ कीपछु देवारीआ जंयदि लवें
कारहा हैंनै यारियां दे नाल गुजारदा ॥ टपा ॥
गोरि नगरि आमैं नारहैंगि नेमा अनन करदस
भोगा । सदारंगा रस रंगा कराई हमको दीनी बहुत
विसेरा । टपा । आज मोरन गाजैं आये पियारवाव
रमैरे । अंग संगा रंग लागैं प्रघट डरावन गाने छिन

गमं
ट

5

89

म धामरे सामरे सानी । सारे गामधे सगारे मगाधे

धाम धाम पेप धानी साध साध पगाधेरे मदारेग

मोरी पकन मानी । टपा । पग मधरि सानि पेरे

मपगा धेरे । रीसमाध सोवैगानि साध साध

सानी धापम गारे ॥ इति रागमधु टप्पापरि

च्छेदः समाप्तः ॥ शुभं भूयात् ॥

रा
भ०
6

ष दरस प्रभ दृगनन देखी । निज निज जनम

सफल तिन लेखी । निकर मनिन कहूं तव

रघुनंदन । संजुत लषन चरन करि वंदन । हृषि

त कमल वदन भगवाना ।। सादर करि ।

प्रबोध विधि नाना । कहणा इहि दे ।

खि रघु राई । बोले वदन विप्र ।।

रोम जल हरष समाये। दोहा यद्यपि नीच

नसिद्धतै। तद्यपि प्रति सनमान। कीनो ताहि

कृपानिधि भक्ति विवस भगवान। चौपई

बहुरि दंड कारण्य मजारा। रहे जवन मुनि

विविध प्रकारा। दरसन राम देत सबदा।

ये। आश्रम छाडि सकल चलि आये। दि

रा०ष
स०

को रसमंजरीमें श्रंकत जो वरनो कह्यौहै ॥ राग घट सवैया लाल ॥३॥ यन्नम्रूयरि लोचन लोलसो मेलि सकोर कटाक्षकी कोर कफ्री० न्नवे माधुरि वानी वसी वनराईयो केश मोर न नारु पक्री ॥ ऊच नेहू नैनै नन लाज विराजति वारवाईहै वङ्रम डोर मक्री ॥

ग्रथ राग षट् सँवैया लिलारा । ३ । मोहिवे मोह
नकी गतिको गतिहू पढो बैनकहा यौं पढैगी
ओप उरो जनकी उपजै दिनकहि मैं श्रेणिया
नैमटैगी । नैननकीगति गरूफ बला चलके श
वदास प्रकास चढैगी । माई कहो यह भायगी
दीपति जो हिनदै इहि भाति चढैगी । नववधू

रा.ष.
स.

2

नाहि करो जिन नागरिन्ह गजराज दियो नव
छेकुसकोहै ॥ राग षट् सवैया माला ३ ॥
पाइ परैं मन हाव करैं पलका पर पाय दियो
भय भीने ॥ सोई गई कहि केशव कैसेहूं
कौंवरी कोरक सौंहन कीने । साहस कै म
खसौं मषछकै छिनमै हरि मानि सबै सखलीने

नवफी इनि वालहिं वालकता हनि अंग अंनेग
की फौज वफी ॥ राग षट् सवैया तितारा २।
उरु उरोजनके परसे विस भौहि चफी नव
फी छिनछोहै। देवद वब्हृद हेव नहीं रमरी
ति गाही उनहीं मन मोहै । नीवी कौनी विछु
वे छवि औरसौ पेलत पानि पियापह मोहै ॥

ग॰प्र
म॰

न परहो अकुलाय कह्यो पियकैसीहै देषौ ॥
राग षट् सवैया ताल ॥ ३ ॥ आजमै देषीहै
गोपसुता इकहोयन औसी शरीरकी जाई ॥
देषतही रहिये इति देहकी देषैन औरन देषी
सुहाई । एकहीटेक विलोकनि ऊपरवारौ विलो
कि विलोकनि काई । केसवदास कलानिथ वा ।

३

एक उसासमैंहीके उससे सिगरेई सुगंध विदा करिदी
नै ॥ राग षट् सवैया निनारा ॥ ३ ॥ बौलैनवा
ल तुला वनहूं नथरेष लिषै सब प्रेम परेषौ । आ
पन हास्य विलोकि विलोकि कही नवके सब
उद्वि वसेषौ । कोटी वही विधिरेष लिषौ जबा
आएकी रेषह कौन जु लेषौ । प्रेमने बाल सष्यो

रा.च.
स.

विट मैोंड़ सोनो छंदमो देख्यो ॥ रागा षट सवैया
नाल ॥३॥ कान्हभले जुभली समझाई हौं मो
हि समझेको जो उमह्योहै। केशव आपनो मा
निकसो मन हाथ पराये दै कौनै लह्योहै। नै
ननही मिलबो करियै अब नैननको मिलिबो
नीरह्योहै। जाइ कह्यो तुम जैसो सषी मझु ये।

रु बूझिय कामकि मेरो कन्हाई ॥ राग षट्
सवैया तिताल ॥३॥ ज्यौं ज्यौं उलास सौं के
सब दास विलास निवास हियै अवरेष्यौ। त्यौं
त्यौं बरष्यौ उर कंप कछू भ्रम भीन भयौ कियौं सी
न विसेष्यौ। सुद्दिन होन सषी बरसी मेरे नैन सरोज
नि सांव कै लेष्यौ। नैंन कह्यो सब मोहन को मुख

रा॰ष॰
स॰

कहैहैं ॥ रागषट सवैया ताल ।३। तोहितण

य बजावत नाचत वार अनेक सिंगार बनाये

जीहमै आनकौ आनिबौ छोडोपै तेरो न

जन भयो मनभायो ॥ भावै सनेह करि

बो करि भामिनि भागवडे बसनैं करिपा

यो ॥ कान्हसौं सुधेज वाहति नाही ०

५

है गुपाल मै ऐसो कह्यौ है ॥ राग षट् सवैया
निनाथ ॥ ३ ॥ हेरनि मंद मनोहर के सब आनंद
कंद हिये उलहे हैं । भौंह बिलासनि कोमल हास
नि अंग सुबासनि गाढे गहे हैं । बंक बिलोकनि
को अविलोकि सुमारु कै नंद जमारु रहे हैं । प
ऐनो कामके बान कहावत फूलन के विधि मूलि

रा॰ष
स॰
6

समीप सिचार किये कियौ हृदय नाई ॥ः
राग षट् सवैया निनारा ॥ २ ॥ आवत दे
खिलिये उठि आगेहै केश आगुहि आसन
दीनै ॥ आगुहि पाई पखारि भलै जल पान
कौ भाजन लाइन दीनै ॥ बीरा बनाइकै
आगे धरे जब वै हरिकौ कर बीजन ली।

६

खवाइनि नारी खवाइनिहै अब पाइ लगायो ॥
राग षट सवैया तिताग ॥ ३ ॥ आज विराजत
है कहि केसव श्री वृषभान कुमारि कन्हाई । वा
नि विरंचि वहि कम कामरवी खविवारि सउछि
वनाई ॥ अंग विलोकि विलोकिमे अैसीको ना
रि नहि जहि नारि निवाई ॥ मूरति वेत सिंचार

रा·ष·
म·

नै ॥ मोहनके मनकी मोहनी सूकहो यह

सिष ईसिष कीनै ॥ रागषट सवैया नाल

३॥ हिनके इन देषहूजू देषो सबै हितवात

सुनो जसुनो सवहीहै ॥ यहनो कछु श्रीमव

है सबहो अब मोह कौ वकरी जतहीहे । मतु

जाइ कहो समझी सव केशव झूठी सबै हम

८

नौ । वाहेवाह्रौ हरि ऐसो कह्यो हसि मैनो इनो अप
रायन कीनौ ॥ राग षट् सवैया निनारा ॥ ३ ॥:
चितवै चित बांधे हसाधे हसै होडलापनै वोलौ
रहै निन मौने । सौंह अनेकनि आवडु ऐकक
रै रतिकौ प्रति रैन कौ रौने ॥ घवाघनै घाङ्ग
वस्याइ विरीजन आईहै केशव आजरुरी गौ

रा·ष
स

चट्ताल ।१। सवैया ॥ वैठिहुती ब्रजनारिन
मै वलि श्री वृषभान कुमारि सुभागी । षेलति
ही सषि चौपर चारि भई नहि खेल खरी अनुरा
गी । पीकै ने केसो बोलि उठै सुनि कै विन वान
रि आतुरी जागी । जानि न काहु कहै हरि के सुर
मारगही तरसी टग लागी । इति सवैया संपूर्ण ।

पिय कालि की सौंहैं ॥ राग षट सवैया नाल ।१।
बैठी सषीन कीसौ भै सभा सवहीं केस नैनन सा
ऊबसै । हूऊैनै गात वसाय कैहै सबहीं सन के
भाव दास हसै । खिलतिहै इत षेल ऊैत पिय चित
खिलावति यौ बिलसै । कोई जानै नहीं दग दोरि
कैवे कितहै हरी अंषिवन कै निकसै ॥ राग

रा॰मा॰

39

स्वाति हेतकै सनेही प्रगट जगत मांहि प
कसीपहू सरो सवाम कउ कहियै। रवि
कौ सनेह पुनि कंवल सरोवरमैं ससि॰
कौ सनेही उ चकोर जैसैं रहियै। तैसैंही
सेवग एक प्रभुसौं सनेह करि और कछु
देखि काहू वोर नहि वहियै॥ रागमाल

हे तीरथ न्हान पतिही को मतिहै। पति
बिन पतिनोहि पतिबिन गतिनाहि स्रे
दर सकल बिधि एक पतिब्रतिहै॥२०॥
मालकौंश ताल चार। जलकौ सनेही
मीन बिछुरत तजे प्राण मनि बिन अ
हि जैसे जीवन हिलहिये॥ इतियादि।

रा॰मा॰

जबते गये बिछोह कलन परत मोहिला

ते हूं पूछत तोहि किन बिरमाये हैं। मे

दर बिरहनी के मोच माबी बारबार हम

कौ बिसारि अब कोन के कहाये हैं ॥ रा

गमाल कौषा ताल चार ॥ हमकौ तोरे

न दिन मेक मन मांहि रहे उनकी तोबा

40

कैषुनाल चार अेगाविरह उराहनेकोअे
ग मनहर छंद। पीवेकौ अेदेसो भारीतो
सो कहौं सषि प्यारी यारी तोरि गए स्तो
अेनहून आयेहैं। इतिस्याइ। मेरोतो जीव
न आन निसिदिन वहे ध्यान सावसौनक
हूं आन नैनन फर लायेहैं॥ इत्येतरा॥

गा॰मा॰

जुतो हे तब आपने हाथसों लगाइये॥ राग

माल कोश ताल चार। सोसों कहे और सो

हीवासों कहे औरसी ही जासों कहे ताही।

कैं प्रतीतकैसे होतहे। इतिस्याइ। काहू

कौं समासकरे काहूसों उदास फिरे का

हूके तोरसबस एक भेक पोतहे। इतो

५१

तातिमैं नीक कछू न पाइये। इति स्यार्इ। क

बहूं मेदेसा मानि अधिक उछाह होइ क

बहूं क रोइ रोइ आंसुन बहाइये। इत्यंत

ता। औरन के सब सुहोइ रहे प्यारे लाल

आवन की कहि कहि हमकौं सुनाइये

मेदर कहत ताहि काटिये जु कौन भांति

ग॰मा॰

अनूप पाटी पढे है। इतिसथाई। स्रवे और
बैन और नैन और सैन और मन और तन औ
र जेऊ मोहि कछे है। इत्यंतरा। हाथ और
पाव और सीस रू श्रवन और नाव सिख
रोम रोम कलई सों मढे है। ऐसी तो कहे
रता स्वानी न देखी जगत में सेवक कहत॰

42

नरा। दगाबाजीउ विधातो मनकीनहरि
होइ काहूके ग्रंथेरीं चर काहूके उदोतहै
सेदर कहत नोके पीरसो करे पुकार जा
को डव वपूरि गयो ताकैं भई वीनहै ॥ रा
ग माल कौषा नाल चार। हिये और जियो
और लिये और दिये और किये और कोनउ

रा॰मा॰ चलत नही पावरी पियारो नहि पावरी जह
र बांढि पावरी। दोरत नही नावरी पुका॰
रिकै सु नावरी संदर कोउ नावरी बूडत रा
खि नावरी॥ राग मालकोश ताल चार॰श्री
वदमारको ध्रुव। भू भूल्यो फिरे भ्रमतें करत
कछु ओर ओर करत न ताप हरि करत सेवा

43

काहू वजहीके कठे है ॥ राग मालकौश ।
ताल चार ॥ भई हौ ग्रनिबावरी बिरह द्ये
री चावरी चलत हू बावरी परैगी जाइ बा
वरी । इत्यंतरा । फिरतिहौ उतावरी लग
न नही तावरी सु वाहीको बतावरी । ब
लोहे नात तावरी घके है दोउ पावरी ॥

रा॰मा॰

रिगधो वापके॥ राग मालकौश ताल चा
र॥ इंद्रबकेद। पानउहे ज पियूष पिवे
नित दानउहे ज दरिद्र हि भाने। इतिस्था
ई। कानउहे सनिये जसकेशवमानउ
हे करिये मनमाने। इत्यंतरा। तानउहे
सवतान विकावत तानउहे जगदीस।

५५

पकों। इतिस्याई। दत्तभयो रहे प्रतिदत्त
परमापति जैसैं देत परदत्तना नदेत्तना
दे आपकों। इत्यंतरा। सेदर कहत ऐसें
जानेन जगति कछु ओर जाप जपेन जप
न निज जापकौं। बालक यौं जवा भयो
वयबीते बृद्ध भयो वपुरूप होइकें बिस

रा॰मा॰

45

त्वहि जानत जगउहेन जगदीस जनैहै ॥
रक्तउहे हरिसौं रति संदर भक्तउहे भगवे
न भजैहै ॥ राग मालकौश ताल चार । चा
पउहे कासिये रिपु ऊपर दापउहे दालका
रहि मारे । इतिस्याई । छापउहे हरिछा
पदई सिरथापउहे थाप औरन यारे । जा

हिंजाने। बीनउहे मनवेधत सुंदर सुजान
उहे उपजैन प्रजाने॥ राग मालकौश ता
ल चार॥ सुरउहे मनकौं बसरावत कु
रउहे रनमों फलजेहे। इतिस्थाई। त्याग
उहे अनुराग नहीं कहुं भारग उहे मन॥
मोहन जोहे। इत्यंतरा। ततउहे निजत

ग०मा०

सों नहि सोना। इत्यंतरा। मौनउहे जो लिए हर
रि बोलत लोनउहे सब ओर ग्रलोना। मौन
उहे गुरु संत मिलें जब संदर सी नहि कोना
राग माल कोश नाल वार। कारउहे ग्रवि
कार रहे नितसारउहे जो ग्रसार के ग्रंतर
हिं नाहि। इतिस्थाई। नादउहे सुनि के म०

46

पउहे जपिये प्रजपानित स्वापउहे निज।
स्वाप विचारे। बापउहे सबकौ प्रभु सेव
र पापहरै ग्रह तापनिवारै॥ राग मालकौ
श ताल चार। भौनउहे भयनाहि न जाम
हि गौनउहे फिर होइ नगौना। इतिस्थाई
बौनउहे बसिये विषया रस रौनउहे प्रभु

रा॰मा॰ न छोडत नामसउ हे फिर होडत नामा ॥ इति

भाई। पामसउ हे मनपास लगे जमपासि

कटे भ्रमके नितपामा। इत्यंतरा। व्यामसउ

हे गृह बामतजे बनबास नही जिहिठाह

र बामा। दासउ हे जु उदास रहे हरिदास

सदाकहि संदरदासा॥ राग मालकोश

47

नरंजन ज्ञानउहे सतइ गावेग्रीतिउहे न
ग्रनीतधरे उर नीतिउहे न ग्रनीतिन भावे·
इस्पेतरा। नेतउहे लगि ग्रेतन हूटत संत
उहे ग्रपनो सतगावे। नादउहे सनिवाद
तजे सब स्वादउहे रस सुंदर गावे।। ४४
मालकौश ताल चार। ष्यामउहे नउभास

रा.मा.

48

कारज सारे॥ राग मालकौंस ताल चार॥
जोबन जोबन जोइ गयो सब जोबन जोबन
कै बेर गयो। इतनि आई। जोबन जोबन जो
इ यहाँ धन खोवत खोवत तें सब खोयो
इत्यनरा। जोबन जोबन बीत गयो दिन
जोबन जोबन ले विषबोयो। सुंदर सुंदर

तालचार ।। स्रोत्रउहे स्रुतिसार सुने नितनै

नउहे निजरूप निहारे । इतिस्याई । नाक

उहे हरिनाकहि गावत जीभउहे जगदीस

उचारे । इत्यंतगा । हाथउहे करिये हरि ।

कोकृत पांवउहे हरिको पथधारे । सीस

उहे करि स्याम समरपन संदरयौं सब ।

रा॰मा॰ बनकेबन नाघो। जागत जागत जागपरो
जब सेंदर सेंदर सेंदर पायो॥ राग माल।
कौशताल बार। स्यामनकौअंग॥ सोई
सखी सहियिर है जाइ रनमें सुनत नगारे
चोट विगसे कमल नाव अधिक उछाह
फल्यो माइहन तनमैं॥ इतिस्याई। फेरी

राम भजो नहि ढोवत ढोवत बोझ हि ढो

यो ॥ राग मालकौश ताल चार। देखत दे

खत देखत मारग थकत थकत आयो ॥

इति स्थाई। थकत थकत थक परी सब

गावत गावत गोविंद गायो। इत्यंतरा॥

सोचत सोचत शुद्ध भयो पुनि नावत ना

ग॰मा॰

घनाल चार ॥ हाथ में गहौ खड्ग मारिबे
कौं एक पग तन मन आमनो समरपन
कीनौ है । इतिमयाई । आगैं करिमीचकौं
परयौ है जाडे की रनबीच टूकि टूकि हो
ईकैं भगायरन दीनौ है । इत्यंनरा । खोर
लौन स्वामिकौ हराम खोर कैसैं होइ ।

58

नब सोगीन ब कोउ नहि धीर धरे कायर
के पाय मान होत देखि मन मैं। इत्यंतरा।
टूटिकै पतंग जैसें परत पावक माहिं ऐ
सै टूटि परे बहु सावन के गन मैं। मारि म
सान करि मंदर ज हारे स्वामि सोई सू
रबीर हू पिर है जाइ रन मैं। रागमाल को

ग॰मा॰ न जरत जहो दलहै। इतिस्याई। वाजत ज

काठ सहनाई सीथराग धुनि सुनत हीका

यरकी छुटि जात कलहै। इत्येतरा। कल

कत बरछी तरछी तरवार बहै मारमार

करत परत खलभलहै। ऐसें जुद्धमें अडि

ग सेंदर सुभट सोई हरमांहि सुरवोकहा

51

नाम जाद जगत में नीको पन नीनो है ।

सेदर कहत ऐसो कोऊ एक सरवरीश

सिकों उतारिको सजम जाइ लीनो है ॥

राग मालकौश ताल चार । स्वरमो हिस

र वो कहावत सकल है· पांव रोपि रहे

रनमांहि रज पता कोऊ हय गय गाजव

रा॰मा॰

त्येतरा। मनमें उछाहरतमोहि टुकटूकक

होय निरभय निसंकवाकें वहुत डरहै।

सुंदर कहत कडू देहको ममत्वनोहि सूर

वाके देखियत सीस बिनु धरहै॥ रागमा

लकोषा नाल चार॥ ऐसो सूरबीर धीरनी

र जाइ मारिहै॰ नफवेको चावजाकेंताकि

S2

वत सकल है ॥ राग मालकौश ताल चार

सुरवोके देवियत मीस विनयर है॰ प्रस

न वसन बहू भूषण सकल श्वेग संपति वि

विध भांति भरौ सब थर है। इतिश्याई।

श्रवनन गारो सुनि छिनक मैं छोडि जात

ऐसें नहि जाने कछू आगें मोहि मर है। इ

रा॰मा॰

ताहि नें कछून सोच पोच ऐसो सूरवीर धीर।

धीर जाइ मारिहै॥ राग मालकौश ताल वा

र॥ सोई सूरवीर धीर स्वामि के हजूर है।

अधिक आनान बाढ़ मनमें उछाह किये

दियो रामराजा सब बरषत नूर है। इति

स्याई। काढे जब करवाल वाल ढाढे होर

S3

43

ताकि करे घाव आगे धरि पाव फिरि पीछें
नसै भारिहै। इतिस्याई। हाथ लियें हति
यार तीरथ लगायो धार वार नहि लागे स
ब पिसुन प्रहारिहै। इत्येतरा। चोट नहि
गावे कछु लोट पोट होइ जात चोट नहि
हके सीस रिपु को उतारिहै। सुंदर कहत

ग.मा. र कोऊ कोटिनमैं एक है। ज्ञान को कवच

ग्रेग काऊ मान होइ भेगटोप सीस फलक

न परम विवेक है। इति स्पाई। तीन्हे ताजी

ग्र मवार लियो मम मेर मार ग्राग़ें ही कीं पा

व थेरे भागनें कीटे क है। इत्येतरा। छुट.

न बे पुक वान बीते जहां जमसान देखि

SЧ

नब प्रतिविकराल प्रतिदेखित कहत हैं।
इत्यंतरा। नैकनउ मासलेत फौजकौ फ
टायदेत बिननहि छोडे मारिकरै चकचौ
रहै। सुंदर कहत ताकी कीरति प्रसिद्ध।
होइ सोइ सूरवीर धीर स्वामिके हरन रहै।
राग मालकौस ताल चार।। ऐसौ सूरवी

ग॰मा॰

रसौं। इत्यंतरा। साधु आठौ जाम बैठो मनही
मैं जुद्ध करै जाकैं मोह माया नाही देखिये
शरीरसौं। सूरवीर भूमि पर दौरि कै डरि
लरि सायनि कौप करि गाव धरि धीरसौं॰
सेदर कहत नाहो काहू कौन पोवटि को।
साधु का संग्राम है अधिक सूरवीरसौं॥ ग

55

कै छिसून दल मारत अनेक है। सुंदर सक
ल लोक मोहिता काजे जे कार ऐसो सूरवी
र कोउ कोटिन मैं एक है॥ राग मालकोश
ताल चार॥ साधुकौ संग्राम है अधिक सू
रवीरसौं। सूरवीर रिपु कौन सूनौ देखि
चोट करै मारे तब ताकि ताकि तरवार नी

रा॰मा॰ कोउ सुभट जगतमैंन देखियत जाके आ
गे कालहू केपायकै परान्यो है ॥ राग मा
लकौश ताल चार ॥ कामसो प्रबल महा
जीते जिन तीनोलोक सु तो एक मायुके
विचार आगें हारयोहै। इतिस्थाई। क्रोध।
सो करालजाके देखत न धारे धीरसो क

गा माल कौशनाल वार ॥ मायुमोन सूर

वीर कोउ हम जान्युहै॰ खैंच करडी कमा

न तान कौ लगायो बान माह्यो महाबली

मन नगात जिन गान्युहै । इतिसयाई । तो

के प्रगवानी पंचनो धाउ कतल किये श्री

र रहेयो परह्यो मब श्रीरिदल भन्युहै । श्रेसो॰

रा॰मा॰ सब मारिकैं निचिंत होइ सो तो है॰मारे का॥
म क्रोध निज लोभ मोह पी मउरे इंद्री उ क
तल करि कियो रजपु तो है। इति स्याई ॥
मारो मद मेत मन मारो अहंकार मीर मारे
मद मछर उ ग्रे सो रन हू तो है॥ इत्यंतरा।
मारी आसा तृश्ना जिन यापनी सापनी दो

57

उ साधु क्षमाकी हाथी यारमें विदा हौ है।
इत्येतरा। लोभसौ सुभट साधु तोषसौं ति
रायदियो मोहसौन पति साधु ज्ञानसौं ग्र
हा हौ है। सुंदर कहत ऐसो साधु कोउ सू
रवीर ताकि ताकि सबही पिसुन दल मा
र्यौ है॥ राग मालकौषा ताल चाच॥ बेरी

गा॰मा॰

सो लगायेहै। इतिस्थाई। औरऊ अनेकवै
री मारे सब युद्ध करि काम क्रोध लोभमो
ह विवादकै बहायेहै। इत्यंतरा। कियेहै से
ग्राम जिन दीयेहैं भगायदल ऐसे महासु
भट जे ग्रंथनिमैं गायेहै। सुंदर कहत श्री
र सूरयौंही खपिगये माथु सूरवीर वेई

58

उ सबकौं अहार निज पद दई पढ़े तो है। भेद
र कहत ऐसा साधकोउ सूरबीर बेरी स
ब मारिकैं निचिंत होइ सो तो है॥ राग मा
लकौष ताल चार॥ साधु सूरबीर बैइज
गतमैं आयेहैं। कियेजिन मन हाथ इंद्रा
न कौ सब साथ हेरि हेरि आपनेई नाथ

रा·मा·

कबहूं तो करे जो रसावयान सोक मोर स
दा एक हाथमैं अंकुश ग्रहतानहै। खेद
र कहत और काहूके न वस होइ ऐसोकौ
न खरबीर साधुके समानहै॥ राग माल
कौश ताल चार॥ साधुकौ संग सदा अ
तिनीकौ· प्रीति प्रचंड लगै परंब्रलहि।

59

जगतमें आयेहैं॥राग मालकौश ताल चौं॰

ऐसेकौन सूरवीर साधुके समानहैं॰ महा

मत्त हाथी मन राख्योहै पकरि जिन अति

ही प्रचंड जामें वहत गुमानहैं। इतिस्था

ई। काम क्रोध लोभ मोह बांधे चारों पा

नि छूटि नेन पावै नेक आन पीलवानहैं॰

रा॰मा॰

60

जगमांहि बडो सत संगा॰ जो कोउ जाइ।
मिले उनसों नरहो तप विंच लगे हरि रं
गा। इतिस्याई। हैत कलंक सबै मिटजा
त जु नीच है जाद कैं होत उतंगा। इत्येत
गा। ज्यों जल घोर मलीन महाअति गंग
मिलैं होइ जात है गंगा। सुंदर सुद्धकै

और सबै कछु लागत फीकौं। शुद्ध हृदय
मति होइ सो निर्मल द्वैत प्रभाव मिटै म
नजीकौं। गोपीनाथ अनंत चलै जहां सु
दर जैसें प्रवाह नदीकौं। नाहिनो जानि
करौ निसिवासर साधुकौ संग सदाप्रति
नीकौं॥ राग मालकोश ताल चार॥ है

रा॰मा॰ सूद्र मिले जब गंगाहि होत पवित्र बहै जल सोई। सेदर जाति सुभाव मिटे सब साधु के संगतै साधुहि होई॥ राग मालकौश ताल चार॥ संतनकौ ज्ञ प्रभाव है ऐसो॰ जो कोउ आवत है उनके ढिग ताहि सुना वत शबद संदेसो। इति स्याई। ताहि कैं

61

ननकाल महे जगमोहि बडो मत मेगा ॥
राग मालकोश ताल चार । साधुके संगतें
साधुहि होई॰ ज्यों लट भ्रंग करे अपने स
मता मन भिन्न कहे नहि कोई । इतिस्था
ई । ज्यों द्रुम औरअनेकहि भांतिन चेदन
के ढिग चेदन होई । इत्यंतरा । ज्यों जल

रा॰मा॰

62

नित मैन समागम कीजै। इतिस्थाई। अंत
रमेटि निरंतर व्है केविलै उनकों अपनों
मन दीजै। वे भाव बढ़ाय उचार करैं कछु मै
अनया मसुधा रस पीजै। सुंदर सब प्रका
श नहे उर और अज्ञान सबै तम छीजै॥
राग मालकौश ताल चार॥ नादिनतैं

तैसीही औषध लावत जाहिं कैं रोगहि जा
नत जैसो। इत्यंतरा। करम कलेकहीका
टत है सबसहू कौं पुनि केचन तैसो। से
दर वस्तु विचारत हैं नित सेतन कौ उप
भाव है ऐसो।।राग मालकौश ताल चा
र।। जो परब्रह्म मिल्यौ कोउ चाहत तौ

रा॰मा॰ रागमालकौशताल चार ॥ संतसदासब

को हित वक्त जानत हैं नर बूडत काढि

डारत स्याई। दे उपदेस मिटाइ सबै भ्रमले

करि ज्ञान जहा नहिं चाढि। इत्यंतरा॰ये

विषया सुख नाहिन छोडत ज्यों कपि

मूठ गहे सठ गाढि। हेदरयो इन विकौ सु

63

सपसंग मिल्यो तब ता दिनतें श्रम भाग गा

यो है। इति स्याई। और उपाय घके सब

ही जब संतन ग्रह ज्ञान दियो है। इत्यंतरा

यो तपवारहि कौं करि छुवत एक अमो

लिकलाल लयो है। कौन प्रकार रहे।

रजनी तम संदर सूर प्रकाश भयो है ॥

रा॰मा॰

वावे। सेदरवारवारकहे नहीलागत या
नरदेह अभय पद पावे॥ राग मालकौषा
ताल चार॥ मेतनकी गति कौं कोउ जा
ने ज्यौं हम खोहि पिवे। इनिस्याई। अह
श्रोछहिं ते मेंहिं सबलोक बखाने। इ
लोतरा। ज्यौं जल में शशिके प्रतिबिंबहि

64

खे मानन हाटहि हाट विकावत ग्राछै ॥ रा

ग मालकौश ताल चार ॥ सो ग्रनया मत

रे भव सागर जो मनमें गनमैं चलि ग्रावे ॥

इति ग्र्याई । जो कनि हारन भेद करे क

छु ग्राइ चढे निहिं नाव चढावे । ब्राह्मण

क्षत्रिय वैस सूद हकु वोगलाहे पार ले

रा॰मा॰ गत भीख हिं तौ नहि लाजै। इतिस्थाई। जो

स्वासेज पटंबर लावत चंदन तो ग्रति॰

राजै। इति अंतरा। जो कोउ आइ कहै मुख

तें कछु जानत नाहि बयार सी बाजै। सु

दर सेष भाय हूँ रिभयो सब जो कछु साधु

करै सोई छाजै॥ राग मालकौश तालष

65

१५५

ग्राप समा जल नेत्र ख्रवाने। ज्यौं खगको
ह घरा परदीसत संदर पंखी उडे ग्रसमा
ने। त्यौं सठ देहनके कृत देखन सेतन
की गति कैयौं कोउ जाने॥ राग मालकौ
श ताल वार॥ जो कछु साधु करे सोई।
काजै॰ जो खपरा कब्लै घर डोलत मो

देखन उसब जानहु साधुके लछन॥ राग
मालकोश ताल चार॥ तात मिले पुनि।
मात मिले सुत भ्रात मिले जुवती सुखदा
ई। इति स्थाई। राज मिले गजबाज मिले
सब साज मिले मनबांछित होई। इतं
तरा। लोक मिले सुरलोक मिले विधि

ये सबजानहू सायुके ललन॰ कोउकनि
दत कोउक बेदत कोउक ग्राइकें देत॰
हे भलन। इतिम्याई। कोउक ग्राइ लगा
वत वेदन कोउक डारत धूरि ततलन॰
कोउकहे यह सराव दीस कोउकहे यह
ग्राहि विवलन। सेंदर काङ्ग सी रागन॰

रा॰मा॰

67

कहो द्विजनहूं भणते कहो पार जाइय तहै॰ इत्येतरा। परहु भणते कहा पार्तिहु भ णते कहा परतरा भणते कहो कैसो प्रचार य तहै। छुटिवेकी सुंदर उपाय एक मा धुमेरा तिनकी कृपाते अति सुख पाइय तहै॥ राग माल कौशि ताल चार। इंद्रा

लोकमिले वेकुंठहि जाई। सुंदर ओर मि
ले सबही साव उलभ साधु समागमभा
ई॥ राग मालकौश ताल चार मनहरके
द॥ देवन्ह भणते इंद्रन्ह भणते कहा वि
घिन्हके लोकतें बहारि आइय नहे। इति
स्याई। मानष भणते कहा भूपति भणते

रा॰मा॰

है। संदर कहत जाकौं भयौं ब्रह्मानंद सु

ख सोई साधु जगत जनम जीत गयो है ॥

68

राग मालकौश ताल चार ॥ भूलि जैसो ध

न जाके सूलमे संसार सुख भूले जैसो भा

ग देखि प्रेनक सीयारी है। इति स्थाई। पा

प जैसी प्रभुताई सांप जैसो सनमान बडा

नी सिंगार करि चंदन लगायो अंगवाहि।
देखि इंद्र अति काम सम भयो है। सूकरी इं
कर्दमके चहलेमैं लोटकरि आगैं जाइ सू
करको मन हरि लियो है। इतिख्याई अतना
जैसो भाव सूकरकों तैसो भाव मघवा।
कों तैसो भाव नर पशु पंछिन कों दयो है

रा॰मा॰ ऐसो कोउ साधु सोतो रामजी को प्यारो है ॥

कामहीन क्रोध जाकै लोभहीन मोहता

कै मेदहीन मछर कोउ न विकारो है ॥ ३

निस्याई । दुखहीन सावमाने पापहीन

पुनजाने हरषन सोक प्राने देहहीनन्या

रो है । दुसेतरा । निंदामैं प्रसंसा करे राग

ईद्रे वीकुनी सीनागनी सीनारीहे। इतोत
रा। ग्रप्रि जेसो इंद्रलोक विद्रजेसो विधि
लोक कीरति कलक जेसी सिद्धि सीटडा
रीहे। वामनान कोउ बाकी प्रेमी मनि।
सदा सो जाकी सुंदर कहत नाहि बेदना
हमारी है ॥ राग मालकौश ताल चार॥

रा॰ मा॰

20

इति स्याई। आठौं नाम जप तप आठौं नाम
लीयो व्रत आठौं नाम तीरथ करत है न्हा
नन्न। आठौं नाम पूजाविधि आठौं नामआ
रतीऊ आठौं नाम दंडवत सुमिरन ध्या॰
नन्न। सेंदर कहत तिनाकिया आठौं ना
म सब सोई साधु जाके उर एक भगावा

हीन दोषधरे लेनहीन देन ताके कछून

प्रमारेहे। सुंदर कहत ताको अगम अ

गाध गत ऐसो कोउ साधु सोतो रामजी

को प्यारेहे॥ राग मालकोश तालचार

आठौं जाम जम नेम आठोजाम रहे प्रेम

आठौं जाम सो जग कीयो बहु दानजू॥

रा॰मा॰ 72

त्यौंही सोतहे। इत्येतरा। जैसैं वायुबाद
र बाबिर कें उडाइ देत रवि तो प्रकाशमा
हि सदा उदोतहै। सेंदव करत भरमम
नमै बिलाइ जात साधुहीके संगतें स्व
रूप ज्ञान होतहै॥ रागमालकौश ता
ल जत॥ सेनजन प्राणहैं सोपर उपका

नन्त ॥ राग मालकौंश ताल चार । साधु
हीके संगतें स्वरूप ज्ञान होतहै, जैसें
आरसीको मैल काटत सिकल करत
खमैंन फेर कोउ नहै वाको पोतहै ॥
इतिस्थाई । जैसें वेद नैनमे मलाक मे
लि सद्रु करे पटल गराते नहो ज्योंको

रा॰मा॰ ग्रंथकारकौं। हेदर कहत है सबवासी सुख
सागरके संतजन आए है सोपर उपकार
कौं ॥ राग मालकौश तालजत॥ संतन
के समकहो ग्रौर कहा दीजिये। हीराही
न लालहीन पारसमन चिंतामनि ग्रौरऊ
ग्रनेकन कहो कहा कीजिये। इतिश्याई॰

73

रकौं॰ मनककदाउरजी बमलजिबाए जि॰
न बरषत बानी म्रब मेघके सीधारकौं।
हतिस्याई। देत उपदेश कोऊ स्वारथन
लबलेस निसदिन करतहै ब्रह्मरी वि
चारकौं। इत्येतरा। औरउ सेदेह नमिटा
वत निमिष मांहि भ्रम मिटावतहै जैसे

रा॰मा॰ मालकौश ताल तिताल ॥ मेंतनकी महि

माती श्री मव गाई है॰ तिन तन मन प्राण

दीन्हे सब मेरे हेत औरउ ममत्व बुद्धि भ्रा

पनी उठाई है। इति स्थाई। जागत हूं सोव

त हूं गावत हैं मेरे गुणमें रोई भजन ध्या

न हमरी न काई है। इत्यंतरा। तिनके तो

७५

कामधेनु सुरतरु चंदन नदी समुद्र नौका
जहाज बैठि कबहूंक छीजिये। इत्यंतरा-
पृथ्वी अप तेज वायु व्योम लौं सकल जड
चेद सूर सीतल तपत गुन लीजिये। खेद
र विचार हम सोधि सब देखि लोक संत-
न के सम कहौ और कहा दीजिये॥ २।

ग·मा·

लेत सीलहै संतोष लेत क्षमा दया धर्मले
त पापतें डरत है। इतिस्याई। इंद्रिनकौं
छेरिलेत मनहैकौं फेरिलेत जोगकीज
गतिलेत ध्यानले धरत है। इतिध्येनग·
गुरुकौ वचनलेत हरिजूको नामलेत
आत्माकौं सोधिलेत भौजल तरत है॥

75

मै पीछें फिरतहौ निसिदिन संदर क
हत मेरी उनते बडाई है। वहै प्रियमे
रे मैंहू उनके अधीन सदा संतनकीम
हिमा तो श्रीसुख गाई है॥ राग माल
कौश ताल तिताल॥ संतजन निसि
दिन लैबोई करतहैं। प्रथम सजस।

रा॰मा॰

बहु भगत देत प्रेमकी प्रतीत देत अभयम
रते है। ज्ञान देत ध्यान देत आत्मा विचार
देत ब्रह्मकौं बताइ देत ब्रह्ममैं रहते है॥
सुंदर कहत जग संत कछु देत नांहि से
तजन निसिदिन देवोई करत है॥ राग
मालकौशा ताल तिताल॥ साधुकि पदी

76

संदर कहत जग संत कछु लेत नहि संत
जन निसिदिन ले बोई करत है॥ राग मा
लकौंश ताल तिताला॥ संत जन निसदि
न देबोई करत है॰ सावो उपदेस देत भ
ली सी बिदेत समता सबुद्धि देत कुमति ह
रत है। इति स्याई। सावगादि वायदेत भा

रा॰मा॰ सेदरकहत तातैं निंदाईकौ जानिहै। भा
वमैं तो अंतरहो राति और दिन जैसो सा
धुकी परीक्षा कोउ कैसे करि जानिहै॥

77

राग मालकौश ताल तिताल॥ कूपमे
कौ मेंडका तो कूपको सराहत है॰ राजहं
स सौं कहे कि तो कते रोसर है। इति ख्याई॰

ना कोउ कैसैं कर जानिहै। जगत व्याहार।

सब देखत है उपरको एतहू करन कौन

नैक पहिचानिहै। इति स्याई। छादनके

भोजनके हलन चलन कछु और को

उक्रियाकै तो सोई वो बखानिहै। इत्यंत

रा। आपनेई गुणनि आरोप अज्ञानीनर

रा॰मा॰ राग मालकौश ताल तिताला। कोउ साधु

भजनी कहूं तो लय लीन इति कव है। ग्रा

स्य कर्म यक्का याई दायै है। इति स्याई॰

जैसें कोउ मारगमें चलते त्रावट परे फे

रि करि उ देनव उहें पघलायो है। इति

प्रेतरा। जैसें कोउ चंद्रमाकी प्रनिकला

78

मसका कहत मेवी मरभरको उनडेमेया

गे गरुडकी केती एक नरहै। इल्येतरा॰

गवैरेंडगोलीकौं छुराइ करि माने मोद

मयुपकौं निंदत सुगंध जाकौ घरहै।

आपनी नजानै गति संतनकौ नामथ

रे हेदर कहत देखो ऐसो मूढ नरहै।

रा॰ मा॰

२१

ही महा पापी वाकैं न नाव सिव की चहै।
इतिस्याई। उही गुरद्रोही गउ ब्राह्मण कौ
हनन हार उही आत्मा कौ घाती हिंसा वा
के वी चहै। इत्यंतरा। उही ग्रथ कौ मसद्द
उही ग्रथ कौ पहार हेदर कहत वा की बु
री भांति सी चहै। उही है मलेछ उही वेशा

तीन लोक संदर सकल लोक हिती याकौ

नयो है। देवकौ देवानन गायो सो कहो भ

यो वीर पीतरि को मोल सो तो नाही कछु

भयो है॥ राग मालकौश ताल तिताला॥

संतन की निंदा करे सोतो महा नीच है॥

उही दगाबाज उही कुष्टी कलंक भयो उ

रा॰मा॰ कर्मै परैजाइ उपरतें जमहूकी मारबहू

खाई है। इत्यंतरा। ताके पीछे भूतप्रेत

थावर जंगम जोनि महे गो संकट तब।

पीछें पछिताई है। वेदन कहत और भ

गते अनंत उवसंतनकौं निंदे ताकौ स

त्यानास जाई है॥ राग मालकौश ताल॰

80

ल बुरे तें बुरो संतन की निंदा करै सो तो

महा नीच है ॥ राग मालकोश ताल ति

ताला ॥ संतन की निंदे तो की सत्यानास

जाइ है· परि है वज्राग ताके उपरि ग्रवा

न चक धूरि उडि जात कहूं ठाहर न पाइ

है। इति स्याई। पीछे के उजग महानर

रा॰मा॰

पाम कोटि पाइहै परमपद संत संगहीतें
जोकी ऐसी मति जागीहै। सुंदर कहत
नकौ तुरत कल्यान होइ संतन कौ उप
गहे सोई बडभागीहै॥ राग मालकौश
ताल तिताला॥ संतनकी सेवा करै सोइ
निसतरिहै॰ जोग जग जप तप तीरथव

81

निनारा। संतनकौ गुण गाइ सोइ बडभा
गीहै॰ ताहीकौं भगति भाव उपजिहै य
नयास जोकी मति संतन सौं सदा अनुरा
गीहै। इतिस्याई। अति सबपावै तोके।
इव सब हरिकैर औरउ काहू कि जिनि
निंदा सब त्यागीहै। इत्येतरा। संसारके

रा॰मा॰ करि येतर न राखि कछु संतन की सेवा कु
रै सोइ निमतरि है॥ राग मालकौश ताल
तिताल। भक्ति तान मिश्रित को खेल। बैठ
त रामही उठत रामही बोलत रामही रा
म रहो है। इति स्थाई। जीवन रामही पी
वन रामही धीमति रामही राम रहो है।

तादि दान साधन सकल नहि जोकी सर
भरिहै। इतिस्याई। और कोउ देवी देव
उपासना अनेक भांति सेवक सब हरि क
रि मिनतेनि उरहै। इत्यंतरा। सबही के
सी सपथ खाउ देउ साक्षि होइ सेवक कह
त सो तो जन्मन भरिहै। मन वच क्रम।

रा॰ मा॰ ही पेवड्डरामही बकड्डेराम रामही माजे॰

इतिष्ठेतरा। पेटड्डरामही पीठड्ड रामही

रोमड्डरामही रामही वाजे। ध्रनेतड्डेराम।

निरंतर रामही संदर रामही रामविराजे॰

राग मालकौश ताल तिताग॥ भूमिड्डेरा

मही आपड्ड रामही तेजड्डे रामही वायुड्डे

83

इत्येतरा। जागत रामही सोवत रामही जो
वत रामही रामकहो है। देतड़ रामही ले
तहू रामही देदत रामही रामलहो है।। रा
ग। मालकौश ताल तिताल।। श्रोत्रड़ राम
ही नेत्रड़ रामही वक्तड़ रामही रामही गा
जे। इतिस्थाई। सीसड़ रामही हाथड़ राम

रा॰मा॰

84

नेकहूं रामही शेषहूं राम अशेषहू रामे। उ
त्पतरा। मनहूं राम अमौनहूं रामही मौन-
हूं रामहूं भौनहूं रामे। बाहिर रामही भीत
र रामहीं सुंदर रामही है जग जामें॥ राग
माल कौशु नाल मिलाया॥ दूरहूं राम न
जीकहूं रामही देसहूं राम परदेसहू रामे।

रामे। इतिस्थाई। धोमड्रे रामही चेदड्रे राम
ही लवड्रे रामही सोतन ध्यामे। इत्यंतरा।
श्रादिड्रे रामही श्वेतड्रु रामही रोमरोम रो
म रथ्यामे॥ राग मालकौश ताल तिताला
देवड्रे राम श्रदेवड्रे रामही लेवड्रे राम
श्रलेवड्रे रामे। इतिस्थाई। एकड्रे रामश्र

जनराम सेवारनरामे। इतिस्यार्द। हृष्टहे
राम श्रहृष्टहेरामह्री दृष्टहराम करे सब
कामे। इत्यंतरा। वर्णाहेराम श्रवर्णाहेराम
ह्री रक्तन पीतन स्वेतन स्यामे। ष्टून्याहे
राम श्रष्टून्यहेरामह्री सुंदरराम ह्री नाम
श्रनामे॥ राग मालकोष ताल तिताला॰

इतिस्याई। पूरबनामही पछिमनाहीदछि
णनामही उतरयामे। इत्येतरा। आगेंड्ढ
मही पीछैंनामही व्यापकनामहीहै वन
ग्रामे। केंदर नाम दसोंदिस पूरण स्वरा
ड्ढनाम पताड्ढनामे॥ राग मालकौशताल
तिताला॥ आपड्ढनाम उपावतनामहीमे

रा·मा·

86

थेहिं बोल ॥ रागमालकौग्र लाल तितारा
थ्या तीनलोक कौ देखे बहारा सुनै बहु
त निधि नाद। इतिस्याई। नकटा वासस
कलकीलै वै गूंगा करै बहुत सै वाद ॥
इत्यंतरा। टूटा पकरि उठावै परवत पं
गुल कौ नत्य प्रहलाद। जो कोउ याकौ

विपर्ययेण ॥ या श्रवन कूं देष सुने पुनि नै

नकूं जिह्वा सूंघ नासिका बोल । इतिस्या

ई । गुदा खाय इंद्री जल पीवै विन ही हाथ

सुमेरहि तोल । इत्येतरा । ऊंचे पाइ मूंढ

नीचे कहूं विचरत तीन लोक में डोल । सु

दरदास कहै सुनि ज्ञानी भली भांति या श्र

रा·मा·

87

नमेवे हाइ सजाने मंदर ऐसा उलटा ख्या
ल।। राग मालकौश ताल तिताला।छंद
ही मोक समुद्र समानो राई मांहि समानो
मेरु।इति ख्याई।पानी मांहिते विकाढू
डी पाहन तिरत मे[2]गी[1]ला वेरु।इत्यंतरा
तीन लोक मैं भयात मास सरज कियो

अरथ विचारै सुंदर सोई पावै स्वाद।कुंज
रकौं कीरी गिलि बैठी सिंघहि खाइ अ
घानो स्याल। इति स्याई। मछरी अगनि
मांहि सुख पायौ जल मैं हुती बहुत बेहा
ल। इत्यंतरा। पंगु चढ्यौ परबत के ऊपर
मृतकहि देखि डरानो काल। जो कौं अ

रा॰मा॰

88

ने मोगहिं खोई बेटे अपनो खोयो बाप। बे
दव जोया अर्थहिं बूझे सो पंडित सो जानै
आप॥ राग मालकौश ताल तितारा॥
सुंदर कहे सुनौ रे संतो तिनकौं कोउन
लागैगे पेच। इति स्याई। देव माहि ते देव
ल प्रगट्यो देवल माहि ते प्रगट्यो देव।

सकल ग्रंथेन। सुरष होइ सो ग्रन्थहि पा
वै भेद्र कहे शब्दमैं फेन।। राग माल
कौश ताल तिताग।। सक्खरी बगुलाको
गहि खायौ सुविखायो कारो सांप। इ
तिस्याइ। सुगौंपकरि विलैया खाई ता
के सुये गयौ संताप। इत्यंतरा। वेटीग्रप

रा॰मा॰

89

तें उपजै सूर। इतिस्याई। सूरमांहि सीत
लता उपजी सीतलतामैं स्वाद भरपूर॥
इत्यंतरा। ता स्वादकौ न अंत होइ न कबहू
सदा एक रस निकट न दूर। सुंदर कहे
सत्य यहू यौंही या महिं तीन जानहू॰
कूर॥ राग मालकौश ताल तितालो।।

इत्येतरा। शिष्य ग्रहहिं उपदेशन लागौ
राजा कैरै एककी सेव। वेश्या पुत्र पेग्र ठ
क जायो ताकौं ग्रर लोव मटकी टेव। मे
दर करे सपंडित ताता जो कोउ याकौ
जानै भेव॥ राग मालकौश ताल तिताल
कमल मांहितैं पानी उपज्यौ पानी मांहि

रा॰मा॰

१०

८॥ राग मालकौषा ताल तिताला। कप
डा धोबीकौं गहि धोवै मोटी वगुरी गढै
कुह्मार। इतिस्थाई। सोई विचारी दर
जीहिं सीवै सोना तावै पकरि सुनार॥
इत्यंतरा। लकरी बढाईकौं गहिछी
लेबाल सो बैठी दवै लुहार। हेदरा

हंसचढ्यौ ब्रह्मा के ऊपर गरुडचढ्यौ पु

नि हरि के पीठ। इति ख्याई। बैलचढ्यौ

है शिव के ऊपर मोहम देख्यौ अपनी

दीठ। इति श्रेतरा। देवचढ्यौ पानी के।

ऊपर नरावचढ्यौ आयनपैं नीठ। खेद

म एक अवे भाइवा पानी माहि जले श्रेणी

रा॰मा॰ ऐसो कोउ एक बाजै पौन। सुंदर कहै न

माने कोउ तातै एकहि बैठि गह्यु मौन॥

राग मालकौश ताल तिताला। रजनी मो

हि दिवस हम देख्यौ दिवस मोहि हम

देखी रात। ऋतिस्थाई। तेल भर्यौ सेपू

रण तामैं दीपक जरै जरै तिहि बात॥

91

स कही सो तानी जो कोउ याको करै विचा

र।। राग मालकौश ताल तिताला। जाग

र मांहि बहुत सुख पायो तो हर मोहि व

से सब कौन। इति स्थाई। लागी सबै।

मिठाई खारी मीठो लागो एक वहू लौ

न। इत्यंतरा। परबत उडे रुई थिर बैठी

रा॰मा॰ सखी कर लाग्यौ निसिदिन एक सार।

इत्येतरा। कोसा पहैौ बीजली उपर की

यो सरव कुटब महार। संदर ग्रथ ग्रन

एम याकौ पंडित होइ सोई करे विचार

राग मालकौश ताल तिताला। वाडीमा

ही माली निपज्यो हाली मांही निपज्यो।

92

इत्यंतरा। पुरुष एक पानीमें अगदोंका
नि गुरुंका कैसी जान। सुंदर सोईलहे
अरघकौं जो नित करे पराई जान॥ताग
मालकौषा ताल तिताग। उनयो मेघ
घटा बडे दिसतें वरषन लागेगो अवेहि
नधार। इतिस्याई। बूडो मेरु नदी सब

रा॰मा॰ गान मथन करि लकडी काढी सो वह।
लकडी प्राण प्रचार। इतिस्याई। पानी॰
मथ करि चीकनिका हो सो ह्नत खावै
वारे वार। इत्येतरा। दूध दहीकी इच्छा
भागी जाकौ मथन सफ संसार। से दर
सब नौ भये सारबारे विना रहीन एकल

93

चित। इतिस्याई। हेमहि उलटि स्योम रे
ग लागैयो भमर उलटि करह्रवा सेत। इ
न्येतरा। ससिह्र उलटि राहकौं ग्रासोस्र
र उलटि करि ग्रासैयो केत। सेदर सष्ट्रा
प कौ तनि भाग्यो नितुरा सेती बांध्योहे
त॥ राग मालकौश ताल तिताला। ग्र

ग.मा. जग जीवैना यव हूतनकी हविवलाय॥ राग
मालकौश ताल तितारा॥ निरदय होईत
रे पसु ग्रातक दयावंत हूडे भवमोहि। इ
तिस्याई। लोभीलगे मवनकौं प्यारोनिलो
भीकौं टैरहि नोहि। इत्येनवा। मिथ्यावा
दी मिले वलकौ मत्यकहैते जमपुरमोहि

९४

गार॥ राग मालकौश नाल मिलाया। पव
मांहि झोली गही राखी जोगी भिक्षा मा
गन जाय। इतिस्याई। जागे जगत सोवै
ई गोरख ऐसे सबद सुनावै आय। इत्य
तरा। भिक्षा परै बहुत विधि ताकौ सोध
ह भिक्षा चलहि खाय। सेदर जोगीजन

रा॰मा॰

१६

को कीयो नाम। ऐसी विधि चरखै जो हमा
रै सब मैं सोवै सुंदरदास ॥ राग माल।
कौष नाल निनारा। परधन हरै करपर
निंदा परथी कौं रावै ग्रह मोहि। इनि ष्या
ई। मांस खाइ मदरा पुनि पीवै नाहि म
क्ति कौ संसय नाहि। इनौ नरा। एकरस

सेदर धूपमांहि सीतलता जलन रहेते वै

टे छांहि ॥ राग मालकौश ताल तिताला

माया पापतने घीउमदानी हवावत चली

समके पास। इतिस्याई। बहु विचारी व

ड़ि बबेलावर जाके कहे चलतहे खास

भाई भलो खरो हितकारी सरब कुटंब।

रा० मा०

वैदी कोति। इत्यंतरा। नैन्हो नारन दूटे क
वड़े पूनी बूटे दिवस नहि राति। सेदवि
पिसीं बुने जलाहा खोसा निपजै ऊंचीजाति
राग मालकौशा ताल तिताला। घर घरफि
रे कुवारी कन्या जने जने सीं करती सेवा।
इतिध्याई। वेश्या सोती भई पतिवरतो

98

रहे करम सब त्यागे ताकी संगत पापन
माहि। ऐसी करै सो संत कहावै सुंदर प्र
वर उपजि मरि जाहि॥ राग मालकौश।
ताल तिताला। बड़ही चरखा भल्यो सेवा
री फिरनैं लाग्यो नीकी भांति। इति स्थाई।
बड़ सासन कौं कहि समझावै तूं मेरे टग।

रा॰मा॰ री मोही हेडियारोंथी म्हालन आकयतु त्या

चोइ। इत्येतरा। लकरी मोही हूलहो दी

यो रोटी उपर नवा चढाइ। है दर जीमन

मतिहाव पायो अवकैं भोजन कियो अ

याइ॥ राग मालकोश नाल तिलारा। बे

ल उलटि नायककों लाग्यो वस्त्र मोरि भ

97

क पुरुषके लागी ग्रेगा। इति ग्रेतरा। कलि

युग मोही सत जग थापो पापी उदो धर्म

कौ भंग। संदर कहे सो ग्रव थहि पावै जो

नीकें करि तजे ग्रनंग॥ राग मालकौश्रा

ताल तितारा। विप्र रसोई करनें लागो

तोके भीतर वेठो ग्राइ। इति स्याई॥ विव

रा॰मा॰

98

जीकौं आयो परीनाचरा भारीभेंट। हूतिसया
हूं। भली वस्त कळुलीन्ही विंच गठरिया
बांधी ग्रैठ। उत्तोंतरा। मौदा कियो चल्यो
पुनिघरकौं लेखो कियो वरतले बैठ।
सेदर साहु खुशी अतिहूवो वेल गयो पु
जी में पैठ॥ राग मालकौंश ताल तिताला

रिगोन प्रपार। इतिस्याई। भली भांति को

सोदा कीयो आपहि सेनरया संसार। इतो

नरा। नायक नीष सिंह रयत डोले मांहि

मिलो नीको भरतार। दूजी नाइ साहकों

सौंपी सुंदर सिरतें उतरयो भार।। गाथा सा

लकैशा ताल तिनारा। वनिक एक वनि

रा.मा.

११

राग मालकोश ताल तिताला। राजा फिरे बि
पतिको मारो घर घर टूकरा मांगा भीख।
इतिस्थाई। पाया पयादो निसिदिन डोले।
छोरा बालि सके नही बीख। इतिअंतरा।
शाक अरंड की लकरी बींखे कांडे बहुत र
स भरी ईख। सेंदर कोउ जगत मे बिरला

पहरायत ख्वर मस्यो साहको रक्षा करवेनैं
न्नाको चोर। इतिस्याई। कोतवालकाले
करिबांध्यो छूटीनही सोफ धोर भोर। इ
तोतरा। राजा गोव छोडिकर भागोइवै
सकल जगतमैं सोर। इत्यंतरा। परजा सु
खी भई नगरमैं संदर कोई जलमनडोर।

रा० मा०

100

रि नहि उपजै संदर साव मैं रेह समाइ ॥ रा

ग मालकौश ताल तिताल । स्वसम पसै

नोहकै पीछे कसै तो न माने भौंडी रांड ॥

इति स्थाई । जित तित फिरै भट कितीयौं

ही तै तो किये जगत मैं भांड । इत्यंतरा ॥

तैाठ भ्रावन भागी तेरी है गिल बैठीसारी

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

या म्हराव कौं लवि सीव ।। राग मालकौश
ताल तिताग । पानी जरे पुकारे निसिदिन
ताकौं अगनि बुझावै आई । इतिस्थाई । ऊंसी
तल ते तप्त भयो कौं वारं वार कहे सम्झ
ताइ । इत्यंतरा । मेरी लपट तोहि जो लागे
तो तूं भी मत लहै जाइ । कबहूं जरनि फे

रा॰मा॰ काल परै नही कबहूं सदा समिल रहै दह

राइ। सेदर डारी नकोउ दीसै सुदरयसुव

मैं रहे समाइ॥ राग मालकौश ताल तिता

ला। एक अहेडी बनमैं आयो खेलनलागैघे

रली सिकार। इतिस्याई। भाकौ सिंह।

आइ पुनि मारी मारी बहुत मृगनि की

१०१

मोउ। सुंदर कहै सीष सुनि मेरी अब तू
घर घर फिर बोल्योंउ ॥ राग मालकोष
ताल तिताला ॥ पंथी मांहि पंथी चलि आ
यौ सो बहु पंथ लाग्यौ नहि जाइ। इति।
स्याई। वाही पंथ चल्यौ उठि पंथी निरभ
य देस मैं पहुच्यौ आइ। इत्यौनरा। तहांउ

रा.मा.

बघहि सुंदर मानसरोवर तेहि । इहांतवा
कागकवी हरखिविषई जेते सब ढौरि करक
हि जाहि ।। राग मालकौषा नाम नितावा।
नहहोंहि हिंस भ्रष्टक्रिया करि कष्टकियें
नहि पावै ढौर । इति स्याई । महि मो सक
ल भई तिनकेरी रह परमानिनरमबसि

102

डार। प्रेमें सकल माहि छबि लायो सुंदर या
रहि कियो लहाव।। राग मालकौश ताल
तिताला। शुक के वचन अमृतमय प्रेमको
किल यार रहे मनमोहि। इति स्याई। सा
रो सने भागवत कबहुं मानसतोइ पावै
नोहि। इतोनता। हेमबरी सकनाफलप

रा॰मा॰ छिगुन ग्रह काल बिचारे सोइ। इतोनरा॥
एक का मन वही बनि आवै मन मैं सब स
नि ताहि होइ। सेवग दास कहै सुनि पंडित
राम नाम बिन भक्ति न होइ॥ राग माल कौ
ग्रामाल तितारा अपने भाव कौ ग्रंग। एक
ही आपनो भाव जसो तसो बुद्धि के जोर तैं

र सौर। जिन तिन फिरन नहीं कछु स्रौर।
र तिनकौ कोउ न घालै कौर। सुंदरदास
कहे समुझावै ऐसौ कोउ करौ मति स्रौर।
राग माल कौ ग्रन्थ नाल तिताल। शास्त्र वेद
पुराण पढे किन पुनि व्याकरन पढै ते
कोइ। इति स्याई। सवैया कवैनहे षट्कर्म

रा॰मा॰

Lob

मनरुत खेद। जैसे खानकाचके सदन म
ध्य देखि श्रोर मूंखि भूखि मरत करत श्र
भिमानन्ह। इतिस्याई। जैसे गज फटिक
सिलामैं प्रतिबिंबि देत जैसे सिंह कूप मो
हि उफकि भुलानन्ह। इत्यंतरा। जैसे को
उ फेरिबान फिरत सपेषि जग तैसैही वे

विभ्रम भासै। इतिस्याई। जो यह कूरतौ कू
र उहां पुनि याके विजैतें उहां पुनि कोमै
इतिश्वेतता। जो यह साधुतौ साधु उहां पु
नि याके हसैतें उहां पुनि हासै। जैसे कोई स्व
च्छ करै स्वच्छ सुंदर तैसे कोई दरपन मांहि स्व
च्छ भासै॥ राग मालकौ पुनाल तिलाय॥४५

गा॰ मा॰

405

ए ह्याव डाव दीठ स्वरग नरक वेय मोक्षकू
को जावहै। इत्येतरा। देवता असुर भूत प्रेत
कीट कुंजर उप मोश्रग पक्षी वोन स्वकर
बिलावहै। संदर करत यह एकई अनेक
रूप जाई कछु दोविये स्वप्न एनोई भावहै
राग मालकौश ताल तिताग। याहीकेजा

दर सावते तेरोई अमानन्द। आपहीको भरम

सोतो दूसरो दिखाइ देत आपुकों निवारी

कोऊ दूसरो न आनन्द।। राग मालकोश।

ताल तितारा। नीच ऊंच बुरो भलो सज

न दुर्जन पुनि पंडित मूरख सत्रु मित्र रंक

राव है। इतिस्थाई। मान अपमान पुनि पा

रा॰ मा॰

१०४

आत्मा विख्यात है। याही ब्रह्म याही हृदया

ही॥ स देखियत याही देव दैत्य नर स्मक

ल सेव्यात है॥ राग मालकौश ताल तिताल

याहीको तो भाव याहि सेक उपजावत है।

याहीको तो भाव याही निसेक करत है॥

इति स्याई। याहीको तो भाव याकों वायुकों

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

गतकाम याहीकैं जागत क्रोध याहीकै जा
गत लोभ याही मोह मानतै है। इतिस्याई।
याकौ याही वैरी होत याकौ याही मित्र हो
त याकौ याही सुखदेत याकौ याही दुख
दानी है। इत्येतरा। याहीकौ प्रभाव सोतो
याहीकौ दिखाई देत सुंदर कहत यह।

रा॰मा॰

107

षा ताल जत। आपहीको भाव सोतो आप
कौं प्रगट होत आपही आगे पकरि आप
मन लायोहे। इतिस्याई। देवी अन्य देव
कोउ भावकौं उपासेनाहि कहेमेंतोप्रत्र
यन इनहीतें पायोहे। इत्येतत्। जेसेंब
न हाइकौं वचोर करि माने मोद आपही

धारमें वहाय देत सुंदर याहीको भावया
ही लेतहे। इत्यंतरा। याहीको तो भाव
याको भूत प्रेत होइ लागै याहीको तो भा
व याही कुमति हरतहे। याहीकोतोभा
वयाकों वायुको वहूरा करै याहीको तो
भावयाही थिरके धरतहे॥ रागमालको

ग॰मा॰

108

देहिं आडेते आडेहेती छेतें नीछे। इतोतरा

बाहिर भीतर भीतर बाहिर ज्यों कोईजानी

त्यों करिईछे। जैसोंई आपनो भावहै से

टरते सोईहेहग बोलिकें वीछे॥ राग

मालकौ आताल जत॥ आपने भावतें ह

रमोदीमत आपनो भावतें चंद्र सो भासे॥

को मान फेरि लोहू चाट खायो है। तैसें ही

सेंदर यह आपही चेतन्य आहि आपने अ

ज्ञान करि अोरसों बंधायो है॥ राग माल

कौंष ताल जत ईदव छंद। नीचतें नी

चरु ऊंचतें उपर आगेते आगेंहे पीछेतें पी

छो। इति स्याई। हरितें हरिन नीचतें नी

रा॰मा॰

नेक कहे कल लेत रही सबकी सब माह
थिरी। हरके फरके फिरही फिरजात भई ट
टकी पिंजरा की थिरी। झुक झूम झुकी उ
झकी झिझकी झझरी न झरी नवझोक
फिरी॥ राग मालकौश ताल जत॥ उधोके
मोले आये पानी रे॰ मोहे जोग कथा न सोहा

इतिस्याई। आपुने भावतें तारआनेतन्ह आ
पुने भावतें विठलतासे। इन्हेंतरा। आपुने
भावतें न्रहे नेजहे आपुने भावते जोतिष
कासे। नैमोही नेडन। राग मालकोश ना
लजत। कछुको हरकी सरकोन कथा।
बहुभावनतो भहगाय गीरी। छिनएकन

रा॰ मा॰

कैसेके दाग मिटाउं ॥ राग मालकौश ताल जत ॥ सईयो मोरे वारीके भंवरा कालिन। कलीन रसलैरी। छोडत नाही सभावश्र पनों बहु कोट जतन कहे हारी। कर जोरे पाय परी बहुभांतन श्रोर कोरि मन हारी। हपरंग करमकी रेखा श्रेरेटारी टरत

110

नीरे जब सुध आवै वारी स्यामकी विरहज

गावत छातीरे॥ राग मालकौश ताल जत

चल बसीए वह गाम जहां न बजे बांसरी।

बन बन डार कटाऊं बांस सब जो कानन

सुनाऊं। काहेके बिरह बिथा तन उपजे।

काहेके नीर बहाऊं। रूप रंग बैरन बांसरी

रा॰ मा॰

लकौशमालजत। देखो देखोरी कन्हैया

ईत आवैरी। सोवत देखी पाय मोर मन

ख माहीं लगावैरी। एत उत फिरे नहीं।

ठेरे नहीं नागर पुनि पुनि मोहे जगावैरी

कोयित देख मोहि प्रत चंचल बंसीमधु

र बजावैरी॥ राग मालकौशमालजत।

नहीं टारी ॥ राग मालकौस ताल जत । नीं
द नहीं आवैरे सजनी बिन प्रीतम मोरे नै
न । नेक पलक नहीं लागल मोरी जागी
ल सारी रैन । एक तो बिरहा आनेदही ।
मोही दूजे सतावै मैन । हरपरंग जिनके ।
पीय घरहै सोवतहै सुख चैन ॥ राग मा

रा॰मा॰

राग मालकौश ताल जत। निरछी नगारी या मोरे बालमकी बिदेशीया। बाराबरस परसईयो मोरे ग्राइ नजानु कहे बाट बसे हो॥ राग मालकौश तात जत। रतनारे नैणो तुम काहे लगाए। चंचल ग्रोट छबी ले नैणो तुंघट ग्रोट छिपाए॥ राग माल

112

तुम होरी कहो लगाए मतवारे नैणां । चंच
ल ओट उमग भरे नैणां घूंघट ओट छि
पाए । तुम होरी कहो लगाए मतवारे नै
णां ॥ राग मालकौश ताल जत । प्रेमीया
छिपाए जोबनाते गोरी । मधुमाती वह
चाल चलत है देखत मन ललचाए॰ प्रेमी॰

कीसी तरकछु इयो ॥ राग मालकौश ताल

जत। झुक चलोरी दोउ जोबना उमगोजा

य। छाड्के चल तरवार मोरे मजनी से

नीयामें कैसे माय ॥ सईयो राजी मे रही

उँ तेरी मरजामें। हम सेती तुम काहेबि

मानें बात कहो ग्रल गरजीमें ॥ उयोवा

कौशा ताल जत। मैबिरान भए हो सइयो
तोरे सेजवा। नाम मसरीया मोहेन भावै।
डो गौडे बाकी रोटी। झिया एसे चाहे जाकी
कमरकी छोटी॥ राग मालकौशा ताल ज
त। नींदरी न आवै सारी रात मोरे बालम।
मोरे पिछवरीया पीपरीको बिरवापीपरा

री राग रागनी नोन। जैसें बधिक विचारत
नाहि मारत नाहि मारत है शिर नोन। पि
य विन प्रान प्राणपति हेरि सो बिन वो थे॰
वे य जोन। जब श्रीकृस्न पोतना मारी सूर
दास प्रभु विचो प्रोन॥ राग मालकोस ता
ल जत॥ मावीरी हम चरननकी दासी॥

वरी भई मेरी जान। कहोके कौन्ह कहोके
वासी कौ मोहि पहचान। अब यह वेलफ
लैया सके वाहि कहि हित जान। काकेक
हे को मेटे सो लाप कासों कहों हित जो
न। ज्यो अपनी रिझ आन ढिग वैठो भव
राहि रस छान। वैन बजाय हहो मनमे

रा॰मा॰

११८

जम ठौर ठौर म्हरत ग्रबनासी ॥ राग माल॰ कौशा ताल जत ॥ बिनती मानले पीयमो री सीस धरतहूं तेरे चरनन पर । हूं हट॰ खिल दरसदे मोंकूं मैं बल जाउं तेरे हूंह ट खिलन पर । हितसे मिलत रहो मोरन म्रबको दोउ जगवारूं हितके मिलनपर॰

जैलों चरनन देखे उनके तैलों जीयकोंर
हत उदासी। भटक भटक जिन जाग्रोको
उ तीरथ सनत रहोरे जोगी सन्यासी। कहा
होत तीरथकों ब्रमरे गरे परी मायाकी फा
सी। लाख फेरी करवत लों जगासें कालेक
रेहो करवत कासी। उनके दयासे देखेका

रा॰ मा॰

116

हरि वर ग्रनत थीय चढावो। हर हर करम्र

न्हवा हत हरकीं मलया गिरही चढावो

ग्रक धतूरा वेलकी पाती कनकले सु॰

मन संघावो। धूप दीप नैवेद देहि के

पुन निज सीस निवावो। ग्राम पास फे

रनारी देगाल बाल गाल बजावो। शिव

कब रैहै पापपाछे केतोरे आगे सीस धर पर·
बकसदे औ गुण काजम को कृपान छोडे
रहो चरनन पर।। राग मालकौश ताल जत
अरे मन साच चाहो तो शिव पारबती को।
ध्यावौं। सेत स्वरती का कुंठ छानि जल मा
निके मूरत बनावौं। आवाहन हरकीकरि

रा॰मा॰

वार वल जोही॥ राग माल कौश ताल जत॰ नैना मैनि पट विकट छवि अटके। वारी जव दन कमल दल लोचन जमुनानिक ट नटके। सोवत जागत विहरत निसि॰ दिन ध्यान वेसी वटके। मीरांके प्रभु गि रि धर नागर वटके॥ राग माल कौश ता

117

शिवके मनकी जानतहै भक्ति भावकोभा
वो॥ राग मालकोश ताल जत। सबीरी
वह सूरत मन माही। जब सें निरखी मो
हनी मूरत और मोही भावत नाही। वह
चितवन वह हंसन मनोहर वहकातव
ह चाही। कृस्नानंद आनंद मै डोलत वार

ग॰सा॰ सो करो भलाए किन कोउ ङाव नहीपावै

तन मन धन जोबन सब झूठो कोउ का

मन आवै। तन छूटे धन कौन कामकौ

काहेको कृपा कहावै। जोकौ मन हरि

सो रंग रच्यो ताकौ छूटन भावै। सूरदा

स प्रभ तिहारे दरसकूं विमल विमल।

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

लजत। जो कोई कानही आज मिलावै॰ त
न मन सौं जाउं बलिहारी प्रणाम सुंदर प
रसावै। विन मोहन सोहन दिन सजनी
ब्रज अंगना नसोहावै। रूप राम अब आय
मिले मन इछा फलपावै॥ हमरी लाल॰
जत। औसर बारबार नही आवै। जो जाने

रा॰मा॰ गत भूलानो काहेरे नर तूं घरवानों। काहे।

११९

कबीर सुनो भाई साधो हरिके हाथ काहेन

विकानों॥ राग मालकौश ताल जत। थ्रे॰

होरे मोबरे मो कहीयो बिरह विथा भई मो

रीरे। डावरीयो विरहाके सागर भेवर मद

न चाहे बोरीरे। जोगकीए विरहा नहीं छु

जमगावै ॥ राग मालकौश ताल जत ॥ हम
तो एकही कर जानों । दोय कहे तोईकों
दुवधा है जिन हरि नाम न जानों । एकही
पवन एकही पानी एकही जोत संसार
मानों । एक मटीके घडे घडोला एकही
उपावन हारसै मानों । मायादेख कर ज

रा.मा. वेसी वटके निकट हरिठाढे छिन लई.

मटकीरे। उरजन लोक चवाव करतहैसा

मन नेद हटकीरे। बलदास कवि कहाव

विनेवा नगर नटकीरे॥ राग मालकौश

ताल जत॥ यव नेदगइयो लेहों संभार.

हम तो तेरे प्रान प्रगटे चराईहैं दिनचार.

120

टे करे तोरण बन्द तोरीरे। अब उधो सुधो

होय बोला विनती करे कर जोरीरे। गा

वै गुदर कुब जाके कारन आजहूं न कीए

बज फेरीरे॥ राग मालकौश ताल जत।

सूरत मेरी मोहन सौं अटकीरे। जबसें आ

ट मरेज भए हो व्याकुल फिरों भटकीरे।

ग॰मा॰

१२१

चले ब्रज तज कपट का कद फार ॥ गाग मा

लकोश्रा नाल जत। मेरे राम मेरे घटही मे

बसता है। जोगी होके मठे विच बैठा लेबी

माला जपता है। साच नही उसके ग्रेयरयों

का साहीब मिलता है। जोगी होके जटा

बटाई नेगे पैरो फिरता है। हाथ बोय उप

दूध दही सब चोर चोर खायो हम जो की

यो प्रतपार। हिरदै सोच गुन हमारो अब

डारी है न विसार। ग्वाल बाल सब पठा।

दीने लीने भर छेकबार। मात जसोदा छा

रे छाडी दीनो छेखडार। को पिता को पुत्र

का को देखों हिरदै विचार। हरके प्रभ

रा॰मा॰

122

ताल जत॥ मै पीयके ढूंढन जाउं जोगनी

याके भेषकिए। सगरी रैन मोहे तलफत

बीती भोर भए पीय लायो हीए॥ ठुमरी॥

मेरे मन वही सुरत बसी। जबसे निरखे।

गिरिधर प्यारे वह चितवन वह हंसी। गु

न निधान परवीन सुंदर छब दिलपरल

रकों करता योंका साहिब मिलताहै। सुला

होके बोग जो देता योंका साह ववेराहै।

चीटीके पगनूपर बाजे उसकी साहिब सु

नताहै। सबके अंदर सबसों न्यारो परव

नकों का पैसाहै। कहे कबीर सुनोभाईसा

धो हरि जैसाके तैसाहै।। राग मालकौश।

रा॰मा॰ मै तुजे परवारी मेरा लालबना। सिर सोहे
गुजराती चीराहाथों तेरे सब जपना। मै तु
जे परवारी मेरा लालबना॥ राग मालकौ
श ताल जत॥ वियोगी देवराकोने नरा॰
रीयालोभणरे। वो जलमें हाटल वोज
लमें वाटल वोजलमें सारा जमानारेवि॥

123

सी। कलानंद ग्रानंद विरहथे मै उर विच
विन्ह थसी॥ यह जोबनामे कैसेगाउं कै
सेगाउं कैसेगाउं। जो पवनके लागे फको
रारी मै कैसेगाउं। उमगे नीर भए तनसा
गर विरहा रहत तन हेगाउं यह जोबना
मे कैसे गाउं॥ राग मालकौशा तालजत

रा॰मा॰ मे यहे आगे पांव ॥ रागमालकौशाना

ल जत। झमका तेरे नैणां दावा हवाह

वे। तेरे माव परवे मरमोहे कोनोमोहे

बुहेवाला चमका ॥ रामारे भईलीवद

नाम हमरे भईयो मो परचे नाही हूत

र भूमर भई। आसारामवे निरगुण गा

124

राग मालकौंश ताल जत ॥ कौन बगीयां।
लोभानारे हीरा मन तोता। आंबके पोकेन
रीयरबाया चोंच टूट पछतायारे॥ कैसा
है सागर ताल गगरीया ना डूबे बालम।
गगरी फुक के भरने लागी बिछुवन ला
गे पांव। भरत भरत मोरी कमर पी रानीके

रा॰मा॰

125

तैं कहा सुनावो बांचत नैन पीरा नेहो। यह
उपदेस देहु जाय कुबजा जाके रूपकलभा
नेहो। सूरदास गोपी सब खोटे लमनीप
कै रंग रंगा नेहो॥ राग मालकौश ताल
जत। सरजन वाह मरा मीत रे बालमवा
मोरा। गड पर बाजे बाजना रे नगर सोहा

वतकाअपली ॥ राग मालकौश ताल ज
त । विनपीया मोहे नही चैन कैसी कहे
मै सजनी । हमसो अपथ बथनन निरम
र हे कैसे कटैगी कठन रैन ॥ जाओजाओ
उधो हम जानेहो । गुनन भरे मोहे जानप
रे हो कपटी परम सयानेहो । जोगकी बा

रा॰मा॰ सब जडाई मोतीडा मेगायो लालडी मडी। नगीनेमे॥ ५ नरवेशि वरटरे। उरहोत

नन नाप तरतही आनंद रहै नित चटरे॰

हर हर करत सकल भय भाजत जमकी

त्रास मिटरे। जानकी नाथ सेवक शोक

रको कबहूं ना होवै चटरे॥ राग माल

126

वन लोग काहूकी वरजी नारहे मोरे न
नदल बोले बोलरे सरजन वासोरा ॥रा
ग मालकौश ताल जत। मनलागा देव
र सो क्या जालम भो जाईरे। धीरेसे टटी
या खोल मोरे देवरा खटकासने नेराभा
ईरे। लिखि भेजी नेरे सरत नगीनेमें वि

रा॰मा॰ धारन गटत नही करम जउ कुबा। कह

127

त कबीर सुन भाई साधो सेतन के साव

प्रभूत रस ब्रुरा॥ राग माल कौश ताल॰

जत। सुनहो भरत चरनाओ करम यी

सी लिखीयो। हिरदे सोच जिन करो स

दा आनंद मै रहीयो। पालागन परना।

कौशा ताल जत। बोलो रामपी जरकेस

ग्रा। मूढ तान चेत कर देखो येथा करा।

त सकल जग मग्रा। काल मे जारी लेजा

यगी हार चले जैसे जनारी को जुवा। गा

उम्हत हार कट हारा साजो ग्रवझे चैतन

नी चल नही ज़ुवा। चोंपसाखी जो रही ग्रा

वाला पनमें विलरहेहै विछुरन सुनतडाव होय। विछुरी विद्या सोइपैजाने जाकों विछुरन होय॥ राग मालकोश तालज त। जबे भरत घरजाय मातासों कहारे सोई। विछुरी सीता रामलछमन सी। दोउ भाउ भाई। बैठे केकई राजकरोत

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

मतीनौं मातानमों कहीयो। जाय अयोध्या

राजकरो तुम विलखन नहीयो॥ राग

मालकौश ताल जत। फेरो पिठ चले ह

म बनकों तजो हमारो नेहोय। नवेभर

त उठकहा सेग हम तुमरे चलवे वाट

चलत डाव होय। सेवा हम तुमरे करवे

रा॰मा॰

129

जग हसा हसन दीजे कोई रामजीन हसो
चाहीये रेबाबा। ग्रगन जरत प्रलाद उबा
रे मीरो बोष ग्रम्हन कर पाइ रेबाबा॥ रा
ग मालकौश ताल जत॥ हरि बिन को
राखिपत मेरी। ग्रेय ग्रेय ग्रेयको उष ड
पासन आन सभा में घेरी। भीषमद्रोण

म दशरथ त्यागे प्रान। ऊंचे नीचे महल दे
खि के कौन हमारो काम। नथ तज सवा
हात भू विर्ई दे राम चरन चित लाई। पैक
रमा कर पूज पावरी भरत कीन परणा
म। धोंधी दास विरह वियोगी जे बोली सी
ता राम॥ राग माल कौषा ताल जत। सब

रा.मा. पहोय गए परवत ठेरी ॥ राग मालकौश
ताल जत ॥ प्रभुसे कहीयो समकाय रे उधो.
को उाव देवि ब्रजबंधु प्रनको सबै रहे बिल
खाय। गोपिन छांडी ब्रज गोकुलमें रहे
द्वारका जाय। गावे गदद प्रभुसंग गयो.
हों आयो पहचाय ॥ राग मालकौश ता.ज.

करतनमे जोधा तिनइन पाछी फेरी। ओमनि

भ्रष्टमई सबहीन कोप करलई जो चेरी॥

श्री विश्वास रहो जीय मेरे हरि हिरदे मैं टेरी।

हो जडनाथ द्वारकावासी बूडत गोविन्द ही

बैरी। तज खगराय ग्रातुर उठ्याए तपत

हरन जनन केरी। सुरदासप्रभु बसनबडा

रा॰मा॰

१३१

हो जानेहो पछानेहो। जेसे हरि तैसे तमसे
बकनिपट तबर मानेहो। हेमसे जोग भो
ग ऊबजा सेवाही के रूप लुभानेहो। हर॰
दास मतलबी मधुकर मधुबन मोहभुला
नेहो॥ राग मालकौष ताल जत ठुमरी॰
जाग जागरे मुसाफिर जागरे। बीतीरैण

राम मोकों दरशन दीजे रूप सलौने नैन। बरन सकल हौं एक जीभसों चलत नही मेरे बैन। बेद कहत जनी को जठर में निरखत मन नही चैन। प्रेम रंग निसिदिन रटना मिलन चाहत मन नैन॥ राग मालकौश ताल जत। जाजारे उधो हम जाने

क॰
रा॰स॰

नलापङ्कीसनी । हरस्याद्के ऊनम् शोरदरबाहो अजब कारंहे म
स्कल माजराप॥ राग भैरव॥ तिलाना॥ इद्दीमइइदीमहै याहै जानं
म कन वेवफाई निनंरंगसो॥ या इलाही दिन मौलाहू मिसन या पीरो
याने वाजेनाइद तानेरे ददददरानी॥ राग भैरव॥ जलद॥ तिताला॥
पीत मनकी तुम सन मोरी हरनारायणा अनेक नामनर हर ॥ ॥

160

तोन दिरन देनाय लीय लाय लाले उदानी तुम तोन दिरन देना देना

देना तोन देरना यिनि लेनानानेनेनदारे दानी ननन दिरने तान देरन

दे दानी ॥ आहे दीम दीम यिनि लिनि लानी तोन दिरना दिरना रेना दानी

॥ यललीयलाम् ४ यला यला यलललललललललेदरदरहरा

के श्रामदी खोदवलकीपसाद ॥ राग भैरव ॥ जद बादशाहे मुफ

कं
रा॰ सं॰

करङ्के सदारंगीले वलमा मोरे एजीमोरे मनकी ईछ्यरीयो ॥ राग भैरव ॥

एकताल ॥ नैना तेरे सवही निशरङ्ग मलिपकायम जंगलालनके संग

जागे ॥ उनींदे अरसानेक जरारिमदछ्के औ़र अति काम रस पागे ॥

राग भैरव ॥ एकताल ॥ मोपै कृ दिष्टकीजे मन मोहन माधो ॥

तुमहो सकल देवनके ईश मेरीइछ्याकामना साधो ॥ राग भैरव ॥

161

६६

त्वमरीनोरस बतियां कौन सोकह्यो मन ॥ राग भैरव ॥ ज॰ ॥ तिताला ॥

माइरी मोरी सखिनिसे जइर लागत पिय बिन मइको अंखियन नींद

न आवै ॥ कौन सौत विरमाए सजनी अजहूं न आए महर बानपी

अबमोह इखनमे उनके पइना होले गहे ॥ राग भैरव ॥ जलद तिता॰

आनंद भइल मोरेमन चित आए मोरे पास पगाए ॥ रसन नोख्वा बर

क॰
रा॰सं॰

जानदे छोडदे मोरी रे अचरवा फिर लेंगरवा ॥ अब निरखिहो मोरी

सासननदीया करेंच वावक वहूवहीयो मरक हिले नहो गरवाल

गाय चरचाकरे सबचरके लो गावा ॥ राग भैरव ॥ ॥ अब

मैं तोसों कहत हूं प्यारे ने कन मोरी मान ॥ वाहू औरकन जात हो वल

मा सदा रंगीले अनरस पागी जान ॥ राग भैरव ॥ जलद तिताला ॥

16

जलद तिताला॥ कौंलो दिन बौरा उमाई उन बिन कौं समझत नाहीं

॥ पहिरात दिन ध्यान करत हे मोहि कों कठिन मन परत समझत

नाहीं॥ राग भैरव॥ज॰ तिताला॥ प्यारे महीं सात भोरी सी बनियां क

रन लागे रसिक रसिले हरजन वासो बनीयां॥ आज जनत मबिनक

लन परत नहे कैसे भरों दिन रनीयां॥ राग भैरव॥ जलद तिताला॥

क॰
रा॰सं॰

पल उपकत आप। ज्ञानदास अब एसे कीनों जो मोहे ठगे पाप॥रा
ग भैरव॥ताल सवारी॥ वन वारी आलिरी भोरही वनजात रही रात
अन संग औचक भेद भइलीमरा॥ रूप सरूप ब भगनट नागर आगा
र सब गुन सागर नाव सिव रूप सभगा अंगा। सवारी। रैन जागी व
नी सचर वनाके संग। रस भरे देखोरी सुभ दिन के सरीया =

163

लंगर वाढिठही मोसों कहतहै अनोखीवात । छांड औरमग मेरेही

आवत औरसवोले सात ॥ राग भैरव ॥ ज॰ति॰ ॥ प्यारी हनले मोरी

वात अवनों सों रंगरस करऊं साथ ॥ चरी एक कुंज महल पग धारो

हाहा छिन अपराध ॥ राग भैरव ॥ जलद तिताला ॥ पियरवा चरमोरे

अंग संग रंगलागे आजनो जागे आप । प्रगट ङरावन जात बिन्हलखे

क॰
रा॰स॰

मनकी सबही आस॥ राग भैरव॥ तिताला॥ भई लाली बशी मोर प्यारे अ
व जिन बोलो जान दे बरवा मोहे। दीपक जोत भई पियराई निरखो नै
न उघार स्याम तुम अव जिन रोको मोहे तेरी सोहे। रस चोरी चोरी कर
नहीं मोहन गुरु जन और सब ब्रजके लोग बासा मननदीया जोहे।
उझर जायगी रस चर चेरो ज्ञान दास यह नहीं

१६
१६४

वागे नीके लागे ललित केगान मोहै हाथउमंग ॥ राग भैरव ॥ एकता-

टीमत दीमत ननन उदानी दानी तदानी हिनी लाला तदेरे दानी ॥ जहो

कोइ दाद नहीं देवनहो कि याद क्याकीजे अनिफ आनिफ से मही है ॥

राग भैरव ॥ तिताय ॥ आनंद भई लमोरे मन चितका जपी आए मोरे

पास । पग पर मन नेवछावर कराइं सदा रंगीले वाल मवा मोरे सजी

का॰
रा॰स॰

रटसन भई प्रीतमसेंमे चेरी ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ पिय विन रहो न

जाय सजनी घरी घरी पल छिन निस दिन रटला गिरहे । औरन के

वस भए वलमवा मोहि सनकाहु नहीं प्रछन वनीयां वनीयां रह

न उनकैसी करुं सहेली दहे ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ वहुत दिना नम

छिप रवैहे प्रवनोर मनेपापहो । सीसकी चादरमहपरलेकर प्रहेमद

165

१६५

कबहु वातें प्रगट भए ते दिन दिन अधिक लजैहै ॥ राग भैरव ॥ निता-

एसी मोरी बलीयन परमन ए अरुझे पलवहे परी वस कहो केसी करुं।

कहा कहों अखियन को रीत वस भई स्याम छवि निरख संग नहीं छु-

वि फिरत नहीं फरुं। नैन सुंदर ही मन शुखपनी मानत नाही काहु

की हेरी ॥ दास हरि मन वचन कीये कहूं पिय चासे चित वनही द

क॰
रा॰सं॰

नातिलिलाना नारनदानी। ग्रदन नेत तनित नित नित नितन तदर दानी।

द्द्नेद्द्नेद्द्नेननननननग्रदननेतनननननतनेतनेतननारेनारे

नारे नारे नेतनदरदानी॥ राग भैरव॥ जलदतिनारा॥ बैल वागाग

र मोरी उतारो कौंन प्यारेरे। गागरी उतार तपानि नाही छलके

मैवल जाउं तिसारेरे॥ राग भैरव॥ जलद॰ग॰॥ हज रत मह बूब

166

२६६

वन वन आपहो। अह दशम दमलक नमहो के सब कछु महीक

हाहो। कहा कहौं मैक माल नमारा इहां महमद नाम धरायहो॥राग

भैरव॥तिताला॥री मैं पाउं पाउं हजरत ख्वाज दीन शकरगंज ख

लनान मसायक महबूब इलाही। निजामदीन औलिया अमीर ख

सरो केवल जाही॥ राग भैरव॥पी॰तिताला॥ दानी पिति लीनी ला

२६७

क॰
रा॰सं

विरमाए। सब निशवीनी गिनत तारे कवन नीया विरमाए प्यारे॥ राग भैरव॥ तिताल॥ हो पिया अनत रैन जागे आए। हम सो अवध बद अजत विरमरहे जावक भाल लगाए॥ राग भैरव॥ तिताल॥ लालन म आए भोर भई लवावन तारस आवै दरसन पायारे॥ नेह लगी लाग्रीनल गरहीरसकी वतियां करत मोसो मीठी मीठी प्यारे ॥ ॥

167

इलाही निजामदीन औलिया जरजरीजर वकस। तहे लो वडाई क

रहें तिहारी पीर मेरे सर सरी सरको सकस॥ राग भैरव॥ तिताल॥

परी मैंतो रहीहों वदन निहारवा पर गई वलिहार॥ जहां देखत हैं

प्यारे भर रहो वाकी सूरत मूरत को कोउन पाव प पारा वार॥

राग भैरव॥ तिताल॥ आज भोर ही आए पिय मेरे घर कवन तिया

क॰
रा॰मं॰

मैउन दिन लाए॥ राग भैरव॥ अ॰ चौताल॥ प्यारी री मधुर बोल देत

बोल रैन तो योही बिहानी अरे वाला कहा जो कहे तेरे मधुर की वानी।

तेजो वात कहत तो तरंगनी भोर भए अाए लाल जब बितियां झुठ ठ

हानी॥ राग भैरव॥ अ॰ ॥ अबतो जानेदे मोहे प्यारी

रैन रही पीउ॥ फीको भयो तेवोलन लागे मोर हो वन लागि भोर

168

१८८

राग भैरव ॥ तिताला ॥ भई लारी भोर गजर बाबा जन लागिला श्रा

वो वल माहिल मिल गार वालागे तोर । पार परो सन लोग वा जाग

ल सासन नदीया करही सोर ॥ राग भैरव । तिताला ॥ माईरी मोरी

ह्व निसेज डरलागत पिय विन मइकें श्रोविघन नीदन आए । कौन

सोत विरमाए सजनी अजहूं न आए चार मिहरवान पियते महोवत

कं
रा॰सं

अब कहा होत बात बनाय। तुम हो रसिया दौर दौरके रस लेवे को चस

को कैसे जीय ते जाय। याहि सोच में जीय जात है मेरो हाहा तेरे हों

काम की नाहीं रस खेल उनहीं संग खेलिए जासों नयो हित लाय॰

राग भैरव॥ होरी॰ ॥ आप हो मेरे जामनी जागे अब तो या के

बैन करत अनोखे। रस करो जाय अपनी प्यारी सों काम जेब =

169

सासन नदके डरनें कांपनहै मेरोजीउ ॥ राग भैरव ॥ ॥ महा

देव शिव शंकर पिनाक पानी । आडंवर वाघंवर जटा जूट गंगा सेत

अर्द्ध ग भवानी ॥ राग भैरव ॥ होरी ॥ आपहो भोरहीलला मेरे रैनके

जागे नींदके माते कड़े होरी मनाय मनाय । उर उपटी माल नैन

लागि पीक लाल अधरन पैकाजर कोटी को कहे देन पह लहाए

का·
रा·स·

दिर दिर दिरनानन दिरन तोंय नेरे दानी नन दिरना दानी। बहार आ
मद मया जेजीर दगुल सन नेदवा गंवाईन सालत नवीव नोरे मनज्ञ
नद॥ राग भैरव॥ वसंत·तिताल॥ कोयल बोले माइ मोरे फिरा
लालकी वासपाई। अंबुवा मोरा नेदे सबा फलाने मथ मानी वसंत
रितु आई॥ राग भैरव॥ तिताल॥ कैसे जोउ भई ली भोर निरख

170

८०

वनआए अवचोरवे काम नेह रंग उनसंग उपज्यो ज्यौंहे हित तिहारे

लेवे । मकरन्द कौंवल जाऊं वेकहे देतहे अनराग जागे नैन देवे

राग भैरव ॥ ॥ मुरली वजावै अनगावै नैन मोरही नचावै

यह विध तियनके मनही रिझावै । दौर हारका ह्रकप चनच्चट आवे

वटही उपावे रसनामैं प्रेम जनावै ॥ राग भैरव ॥ धमार ॥ ॥

क॰
ग॰स॰

खवेसंपनचैन॥ राग भैरव॥ फ ॥ सागमपधमगरेसागरेसा

नीधपमधनीसारेगरेसा॥ रेगरेसाधपधनीधधपमगमपधनीसारे

गरेसारेनीगमगरेगरेगसानीधपमगमपधनीधपमगरेरेगमगरे

सा॥ राग भैरव॥ मवारी॥ ॥ ध्रनी उठो स्वनीपांयांग्गी वोरांफग्ग

देमनावग्गनचल्हेजीदाजीवमाय स्याल पाय पाय पल्हे स्वाक पैरीले

171

न हीसब वगरकी लगाई फरीदल मोहो जानों चर। सबै रैन ग्रथक म्ह

खलीनें मोसों तिहारी रहि लीनिशका पनहै सबनके उर॥ राग भैरव

॥ मोसों नेहलाला गिला रखोम इसन पीयरवा ग्रव जिन तोरे॥

हौंतो वनीरहौं चेरी तेरी कैसे जीवन होवे मोकों नमजो छोरे॥ राग

भैरव॥ ॥ करत रहत हो प्यारे नम छूटै वैन॥ सहारंगीले

क॰
रा॰स॰

सैवी खोन सवाद श्रोवो मैंदी ॥ राग भैरव ॥ सवारी ॥ नोरी वारी फूल

रही हो ठेमलोया महकर रही ली सुगंध । फूल भई है न ईन वेलरीयां री

सब वरन वरन के अंग ॥ राग भैरव ॥ सवारी ॥ डुमडुम वाजे रे वाजवा

जेरे मंदिल राम जन के घर काज ॥ सब सखियन मिल देहो म

वारखोन वल वना पाया राज ॥ राग भैरव ॥ सवारी ॥ ॥

132

सिरान मलि समजाय रिजाय मिलि ॥ राग भैरव ॥ सवारी ॥ अनन

जाय विलम रहिलापी उनाजान कौंननीयाके संग ॥ हमसो अवध व

दि औरन सों रंग रस करन फिरन सखियन सैंन पन पढंग ॥ राग भैर

व ॥ सवारी ॥ दीमन नानन दिरनानन दिर दिरनानन दिरनानादानी

घारे मन यलाल लेही ॥ नदिनकों चैनन रानको ख्याव आंखोंमे जव

क॰
रा॰स॰

यो। श्रम श्रनसौ चंमीच बोझंगी श्रेडुबावोनो सोहू वैदि खंझावरीयो ॥

राग भैरवा॥स॰ ॥ पिव भोर्हही श्राप श्रनमो मनभाए लागनरंग

सवाए। जावक तिलक लगाए श्रधरन श्रंजन लाए बोलत मधुर सुहाए

राग भैरवा॥स॰। ।प्यारे मोरे जिननौरा मोसौं नेहरा। नमविन मोहे

कलन परत है भावत नाहीं गेहरा॥ भैरव॰स॰॥ करतरहो प्यारे निनरार

173

परी माई होपह हेंगी चोलरा हरियाला चोलरा चोला सो पचरंग पाग

मै पियाकों वंधाउं सव सोतनचर सालरा॥ राग भैरव॥ ताल खेमसा

करत रहत हो प्यारे मोसों तुम नित हित चितके झूठे झूठे वैन॥ औरे

नही तै जीयकी वात नित उठ विरह जात डराय डराय करत हो नैन

सैन॥ राग भैरव॥ सवारी॥ राधे तेरी अंगन अमरत फलियो डाल

क॰
रा॰म॰

जर वकसपीर। जोई जोई धावै तैई तैई फल पावै मेरे मनकी मुराद भ
रदीजे अमीर॥ राग भैरव॥ताल सवारी॥ अनत जाय विलम रहि
लाए उनजानौ कौन तियाके संग। हमसौ अवध वद कहि औरनसौ
रस रंग करत सखियन सौं नए नए ढंग॥ राग भैरव॥ सवारी॥ तोरी
वारी फूल रही मलिया मह कर हीली सुगंध। फूल भई हैन ईन वेल

१३४

अवध वद निशाके सिधारे आपहो मनसार॥ राग भैरव॥ धी- तिताला

साजन लागो गरे उरव हूर करो परे। ज्यों चरी स्वाव मन वीने सोई कोा

न करे अंतरस्व गेय परे॥ राग भैरव॥ तिताला॥ वनेके लागारी ला

गारी टोना॥ जव मेरा नशा वना आवै अकेला पटिया ग्रे थावै स्वगंथ

सना॥ राग भैरव॥ सवारी॥ हजरत निजामदीन चिश्ति जरजरी

क॰
रा॰सं॰

मन वैरागी मेरा करनार मन वैरागी। निसदिन सुमरन ध्यान हरिका चरननमें अनुरागी॥ राग भैरव॥ तिताला॥ जोगी यारा वला भोरही आएमेरे। भिक्षा देंदे लैदावी नाही विना वन करन विनेरे॥ राग भैरव तिताला॥ या अली या नवी मुसकल आसान देहो स्वाद मनकी। तुम विन मीत नहीं औरन आसरा एसे समै मेरी वाहं गहो

1725

१८५

रीयां अब बरन बरन के रंग ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ भए भोर प्यारे चिरि

यां बोलन लागि गावत गुनी भैरव राग ॥ बंदिजन बिरदत और गुरु

जन गुरजन जागे बाजत म्रदंग धुम किटनक धिलांग ॥ राग भैरव

तिताला ॥ भोर भईल आवत सरसाने दरस आपते लालन आए ॥ नेह

लागिला प्रीतम रससे बतीयां करन मोसों मीठी चाहे ॥ राग भैरव ॥ ति-

क॰
रा॰सं॰

मानी अपनैं पियाके संग प्रमाको उहाँ वैहमरा डुरजन सोतनडरे।
अनंद भोगवा करङ् मोरे मन रहस रहस कर अपनैं पीतमसो काहू
सों मोरा जिनडरे॥ राग भैरव॥ तालतिताल॥ जाईए खलमान
के वारने॥ दिनवर दिलारो आकवत खैरचाहे इमानजके वा
रने॥ राग भैरव॥ तालतिताल॥ रोउ अन राग भरे आपंरंग

176

सुथनरही तनकी ॥ राग भैरव ॥ तिनारा ॥ सगारी रयनके जागे पा

गे सुहर सुरजन वान वलमा भोरही भोरमेरेही आप ॥ हसन और

वसन करलीनी विरिया वोलन तनमन यनना ब्रावर कराए ॥ रा

गभैरव ॥ तिनारा ॥ मेरो जियगोर करलेदानारवसाेई । देदिलादे

हुकम करदे अन यान परामगसाई ॥ राग भैरव ॥ तिनारा ॥ रानी

क॰
रा॰स॰

पद पंकज की रेणु की वलि मैं । सोई सुकृत सोई पुनीत सोई कुल वं
ना । जाके निस दिन ना रहे कृस्न नाम विना । जोग जग्य तीरथ व्रत कृ
स्न नाम माँही । विना कृस्न नाम कलि उद्धार औरनाँही । सब साधन
कौ सार कृस्न कबहूँन विसरैए । कृस्न नाम लैलै भव सागर कौ
तरीए ॥ श्री गोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी ॥ ॥

1727

भवन भाग मचवासे भील विलागान महलहै ॥ वैठे एक आसन पे प

क सेग एकरंग उठोन परन अंगको मलक हलहै ॥ एकन ले अनर

लगायो देवदोउनपे छिरकम गुलाव किए वीजलो वहलहै । लेवीन

परवीन परवीनो साविआलाप समझे सुर अंजननें गंजन महलहै ॥

राग भैरव ॥ तिताग ॥ श्री कृष्ण नाम रसना रटसोई धन्य कलिमे । जाके

का॰
रा॰सं॰

रघु कुल मनको सुहाग कुल सब नेत्रनको नेत्र कुल सब मे

उन सुधार ॥ यह राम राघ कहत कुलनाही जपत भगवान

कुल बारंबार ॥ राग भैरव ॥ एकताला ॥ हरे हरे हरे कुल कुल

राम राम राम ॥ नारायण नारायण वासुदेव वासुदेव गिरि वर्

धर गिरि वर धर श्याम श्याम श्याम । दीनबंधु दीनबंधु बैकुंठ धाम

178

१८२

उद्दरे जन सूर दास नाकि वलिहारी ॥ राग भैरव ॥ एकनारा ॥ कृस्न

नाम भावै मोहि कृस्न नाम भावै ॥ वलि हारि नाकी ज्यो कृस्न नाम

गावै । वस्तुधाको सार कृस्न मेरे मनको आधार कृस्न श्रवण मंगल

रूप कृस्न सव विचार ॥ मंत्रनको मूल कृस्न हरन सकल खल

कृस्न व्रज समद्रको वार कृस्न शिवको आधार ॥ मेरे रसनाको भा

क॰
रा॰सं

नारी। वेद भणत ब्रह्म भूले भूले ब्रह्मचारी। सुनतही आनंद भयो ला
गिहै करारी। रंभा सब नाल हू की भूलि निज कारी। जमुनाजल उ
लटवह्यो सुधिन संभारी। श्रीवृंदावन वंसी बाजी तीन लोक प्यारी॥ ग्वा
ल बाल मगन भए ब्रज की सब नारी। सुंदर स्याम मोहनी मूरति नट
वर वपुधारी॥ ललितकिशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी॥ः

129

होत प्रात बड भनीत लेत हरिको नाम। दामोदर दामोदर चक्रपानि चक्र

पानि नरहर हरि नरहर हरि मररिपु मुरारी। मधुसूदन मधुसूदन सांव

रे वनवारी। जमुना के तीरे तीरे ब्रंदावन धाम। सूरस्याम रटत रहत रा

धा वरनाम। भोर उठ सुमरन करो होय सव ही काम।। राग भैरव।। एक-

वांसुरी बजाई आज रंग सों मुरारी।। शिव समाधि भूलि गई मुनिमन

का॰
रा॰सा॰

सोहनी सूरत भेंभी शेखियों चफियां रंग सवाया। सोंधे भीने वाल सजन दे सखियां गर लाया॥ मनदी मुराद हासिलां सब पिय खुशाल पाया। तन मन धन सदके कीती जीवड़ा घोल घुमाया। सांवलि सूरत माधुरी मूरत देख छवि सुख पाया॥ राग भैरवा त्रि॰॥ विरहीन के खुभ हात श्याम जागी डलही। गुरुजन की संक मान भोरही उठ जागी।

180

१८०।८८

रागभैरव॥तिताला॥ दधके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलके। सीस

मुकट लटा छुटी और छुटी अलके। सुर नर मुनि द्वार ठाडे दरस कार

न किलके। नासिकाके मोति सोहै बीच लाल ललके। कट पीत ब

मुरली कर श्रवण कुंडल झलके। सूरदास मदन मोहन दरस देहो

मलके॥राग भैरव॥ भोर कही मेरे भाग जागे सांवरसे सजन आया।

क॰
रा॰स॰

भीतरतें निकसी नंदरानी मोतिन थाल भरायोहै । भिक्षा लेहोजा

वो आसनतें बालक मेरो डरायोहै । नाचाहो तेरी दुनियां दौलत

नाचाहो तेरी मायाहै । जावो लेआवो अपने बालककों मै दरसन

कों आयाहै ॥ पांच वेर पर करमा करकें सिंहनाद वजायाहै ॥

देवकी नंदन केस निकंदन नंदकों लाल कहायाहै ॥ ॥

18

१८८

रमक झमक आयके जसोदाके पाय लागी। देत असीस नंदरानी अव

चल सुहागी। चिरंजीव रहो सुंदर जोरी निरख निरख हिय सिराई।

स्यामा श्याम छवि देख वलि वलि वलि जाई॥ राग भैरव॥ तिताला॥

देखोरी एक वाला जोगी मेरे द्वारे आयो है। दिगंबर ओढे वाघंबर सीस

गंगा लिपटायो है। माथे उनके तिलक चंद्रमा जोगी जटा वढायो है।

क॰
रा॰स॰

मोक्यो। तबही तत्काल राम कहन पठवाय मोक्यो। घरघर आनंद
होत अचरज यह कियो बाल। तबही सीय पाय लागा आसिहै गवज
य माल। जैजैजै कार होत बाजे बहुबाजा॥ अवधके स्वामी जीत
आय अयोध्याके राजा॥ राग भैरव॥ ॥ ख्यालो मानो आ
वै कान्हो पाकलीवेराने॥ बास लियामै भैरव गावै उठिके प्रभाते।

182

श्रवण लाग कछु मंत्र सुनाया है सिवालक किल कायाहै । सूरदास

प्रभु दरसन करके शंकर नाम बनायाहै ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ द

शरथ सुत देखे देख जनक सुता मोही । धनुष बान कोई चढावै मे

रे पति योही । सीताजु कहे पिताजीसें धनुष भनत होजो । ऐसो

वर राम साज तिलक कोसजो । सीताजुके वचन सुनन सबही सुखे

८४

क॰
रा॰स॰

लटकी। चरन दास सुख देव कहत हैं चित चोहट में मटकी पटकी

राग भैरव॥ तिताला॥ मोहन मेरी मटकी फोरी सुनो जसोदा मा

ईहो। एसो लङको दधि को फङचो मागत हूय मचाई हो। मटकी ऊ

टक फेर सटकी श्रव नहीं देत घराई हो। लेकर लठिया जशोधा उठिक

न तैने धूम मचाई हो। भोर ही मो कों देत उलहना सब ग्वालन घर श्राई है

185

समसखोई सखिहसि नहीं बोलें इह साथे। हारउचारीके पाप लागिवा

सवलीने साथे। सोनपकीथा अहीडे अहीर आनी जाने। नरसीयानों

स्वामी रिझो अविलाने गाने॥ राग भैरव॥ तिताला॥ बीराफेंटा सवरा

यवके नाक बुलाकी अधर मटकी। मंद मंद मुसकात कन्हैया कुंड

ल चपलासी चटकी। सवतन आछे सजे आभूषण कटि ऊपर झुल्के

कं
रा॰सं

ऊरोखे वाहींतें हरि जीला थोरी । महावानो चरमें महा चनेरा हरि चोर
चोर दधिला थोरी । अपने हारमें कव कोटा फी वांह पकर हरि सा थोरी ।
मीरांके प्रभु गिरिधर मिलियो विरह वाजने वांधोरी ॥ राग भैरव ॥ निता
रा॥ हलवे हलवे हलवे हरजी माके मंदिरी पत्र महीलोजी माफिरे पलकांसे
वालहा थारी उगार वहारुंजी ॥ घडी घडी पल पल छिन छिन

184

खनरी माई वावा ढूढाई वाकि दधि नहीं खाईहो। सव ग्वालिनी नटख

टहो हमसौं घर पकर ले आईहो। ननंद खरलीया देर दई रे सवकी मन

वौराईहो। ग्यान दास वलि हारी कवकी मोहन की वनराईहो॥ राग

भैरव॥ तिरा॥ आज सखि मोरे अनंद भयो है घर मैं मोहन आयो री॥

वनजो इ वृंदावन जोइ जोइ विरज सव आयो री। सनवे सलीए अजव

क॰
रा॰स॰

गाने सामसदीयो । नरसैया माए भरि सारी मा वडली दशमासदीयो ॥

राग भैरव ॥ तिताला ॥ नवल लाल लाडले दोउ रंग महल जागे । स्रम

नरत नौरै नैन मैनके रसपागे । ननकी जोत जग मगात म्राव मधंकमा

नै । चिरीयनके चुचुहान भोर भयो जानें ॥ आस पास रूपरास सहचरी

चहुं ओरे । उमगी आयो आनंद उरजुगल वोहजोरे । अतिउदार छवि

185

निसदिन थारो रूप निहारेंजी । भाव श्रीन नैणा नर निरखे ह्माने वा
ल्हा लागोजी । नारन नरनेनं निरंजन नट वरवाङव खोनाजी । नर
सीनो स्वामी सांवलियो घट घट अंतर छायाजी ।। राग भैरव ।। तिताला
वासनहीयो वैसवके रीतहो नवसीप वासडीयां । जी भडली जपमाला
ना करें नेजी भडली खासडीयां । सास उसारे सुमरन ना कस्यो यमणात

का॰
रा॰ स॰

हूते सोई सीता पदवाम चिन्ह विंशती न स्वस्त काष्ट कौंन श्री विराजे ॥

हूल मुसल सर्पवान श्वेवारि पद्म जान वज्र वज्र उर्द्धरेख कल्प हूत ख्रा

जे ॥ अंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन चमर छत्र पुरुष रेख माला

जव दंतण पद्मभाजे ॥ गोपद जट क्षितपताक जेबु फल अर्द्ध इंदु

शेष षष्ट कौंन नयगदास विंडराजे ॥ सर्ज शाक्त सुधा कुंद विवल

186

(८६

अपार कौंन पै कहि आवै। शंभु सेष सारदा नहीं निगम पार पावै।

बोलत अति मधुरे बैन अति सुहावन लागे। राम सखि राम सीया

आलस सब भागे॥ राग भैरव॥ तिताला॥ राम चरण चिन्ह चिंन

न सब विघ सुख साजे। रघुवर के चरण कमल श्रेकन जन नि

रख अमल धरि पद चिन्ह राम संतन हित काजे। राम चरण दा

रा०स०
७२

भजन रस लीन। संडामर्क जो पढ़न लागो तब यह उमरदीन। राम कृस्न अवतार मनोहर भक्तनकेहित काज। सोई सार जगतमें कहियत सबो देव द्विजरा ज। एही बात जगत में नीको सोई पढत हम आज। जबहीं विप्रकह्यो जो असुरसो पुत्र पढत बिनकाज। तबहि असुर प्रहलाद बुलाये लिये गोद भरि अंक। कहो पुत्र तुम कहा पढ़ोहो पढ़न कह्यो निसंक। श्रवन कीरतन स्मरन पादरत अरचन बंदन दास।

ताडन करो संहार । जब मेरे जनको उबरैं है छिनमे।
हि देहों मार । जब प्रहलाद प्रगट याके ग्रह पांच व
र्षके भये हैं । आदर बहु कीनों राजाने पढन विप्र गृ
ह गये हैं । जब वह विप्र पढावै कछु मनके चित य
रि रावै । जब जब वह जाय तबहि सबहिनसों राम ग
म सब भावै । लरिका और पढत शालामें तिनहि क
रत उपदेस । हरिको भजन करो सबही मिल और जग
त सब लेस । यहि विधि कर उपदेश सबनको किये

ना॰ म॰
५४

रो नाना भांति प्रहारो । तज न ध्यान भई श्रंगनकी जहां तहां राम बचायो । तब न्टप श्राप शस्त्र कर गहकै बहु नहिं त्रास दिवायो । कहां है रामकृस्न वह तेरो यों क हि गरजन कीनी । घट घट जल थल व्योम धरनि में व्यापक यह धुनि लीनी । तब लै खड्ग खंभमें मारो भयो शब्दअतिभारी । प्रगटभये नरहरि वपु धरि हरि कट कट करि उच्चारी । पकरलियो छिनमाह्यो असुरबल । डारो नाव बिदारी । रुधिर पान करि श्रांत मालधरि जैजै

साख्य औरु आत्मा नैवेदन प्रेमलछना जास । सुनो पि
ताहीं यही पढ्यो हूं और बात नहिजानूं । इनतें और
मोहिजो कहियत सोकबहूं नहिं मानूं । दीनों पटा
क रूप यवनीपर कह्यो विप्रसों रीझय । रेमूरख तूं
कहापढायो कैसें देउ मोहि रीझय । जो यह मेरो वै
री कहियत ताको नाम पढायो । देहु गिराय याहि ।
परवततें तिन गत जीव करायो । दीनों डार सैलतें
ऊपर पुन जल भीतर डारो । डार अग्निमें शासन मा

रा॰स॰
५५

मही आदि अखंड अनूपम अशरन शरन मरार। देवदेव परमेश्वर पूरन भगत हेत अवतार। जहां जहां भीर पर त भक्तनको तहां तहां होत सहाय। अस्तुति कर मनहर ष बढायो लेहनजीभ कराय। तब बोले नरसिंह कृपा कर सुनो भक्त मम बात। मन्वंतरको राज्य दीयो तोहि य ह्यो सीस पर हात। निरगुन सगुन होय मैं देख्यो तोसो भक्तन पाऊं। जाहं जाहं भीर परत भक्तनको तहां प्रगट हो आऊं। सुन प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी तोको कबहूं न।

शबद उचारी । मारो दैत्य दुष्ट एक तिनमें जे नृसिंह

वपु धारे । पुहुपन वृष्टि करत सुर नर मुनि भये भक्त

रखवारे । रमा निकट नहि आवत हरिके ऐसो वपु ह

रि धारो । अज सनकादि देव नारद मुनि जात न तू

पनिहारो । अपनी अपनी अस्तुति करकै सबहिन य

है सुनायो । गंधरब विद्याधर चारन विमल विमल यश गायो

तब प्रहलाद आय हरिपदसो शीश नाय यह भाख्यो ।

जैजैजै जगदीस जगत गुरु मोर अधम प्रन राख्यो । वे

रा॰स॰

८६

96

अथवामनचरित्र ।। अदिती अविन भई कश्यपसों बिनती
करी सुनाय । तब कश्यप मुनि कह्यो पयोब्रत विधि सों
करो बनाय । ताकी कूख जनम हरि लीन्हों श्री वामन सु
खदाय । श्रवण द्वादशी शुभ दिन धरो विप्र हरि रूप ।
शिव विरंचि सनकादिक आये वेदन को सब भूप । य
ज्ञ उपवीत विधोक्त कियो विधि सब सुरभिक्षा दीनी
वामन रूप चलि हरि द्विजवर बलिको मनसुख कीनी
दंडकमंडल हाथ विराजत और ओढ़ें मृगछाला । य

त्यागे । जैसे धेनु बछा को चाटत तैसे मैं अनुरागें । जो मांगी सो देहुं वर तेही नहि विलंब कछु लागें । तब प्र हलाद यही बर मांग्यो चरन कमल अनुरागें । किर्पा करि दीन्हो करुना निधि अटल भक्ति थिर राज । अंतर ध्यान भये हरि तहते सफल भये सब काज ॥ इति न्र सिंह परिछेदः ॥ ॥

रा॰स॰ ट प्रमान। तब बोले बामन यह बानी सुन प्रहलाद कुलभू
५८ प। बहुत प्रतिग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप। ती
९७ नपाउं वसुधा हम पावें परत कुटी इक कारन। जब नृ
प भव संकल्प कियो है लागो देह पसारन। एक पाउं में
वसुधा नापी एक पाउं सुरलोक। एक पाउं दीजे बलिरा
जा तबहूं हो विनशोक। तोपे देह हमारी द्विजवर सो
संकल्प न कीन्हो। सुन प्रसन्न बामन यो बोले तैंमोह्वं व
स कीन्हो। सदा द्वार तेरे ठाढो ह्वै दरशन देहों तोहि।

रिबटु रूप चले वामनजू अंबुज नैन विशाला । सूरजको
प्रकाश अंगमें कटि मेखला विराजै । करी वेद धुनि बट
पढावैपैं मनहु महा घन गाजै । सुनि याये तबही बलि
राजा आय चरण शिर नायौ । बिनती करी बहुत सुख
मानौ आज भयौ मनभायौ । चलिये विप्र यज्ञ शालामें
जहाँ द्विजवर सबराजैं । आये बलि सभा में वामन सूर
जतेज विराजैं । तब नृप कह्यौ कहु द्विज मांगौ रतन
भूमि मणि दान । हय गज हेम रतन पाटंबर देहौं अग

रा॰स॰
१८
98

वामन सुखसुख दाय ॥ इति वामन परिछेदः ॥
शुद्ध परशुराम विप्र । दुष्ट नृपति जब बैठे भुवपर यदि
भृगुपति को रूप । छिनमें सबको मारउतारो परशु रा
म द्विजभूप ॥ इति परशुराम परिछेदः ॥

माया काल कबहूं नहि व्यापे सुमिरन करते मोहि । सु
तल लोकमें थिरकर थाप्यो जहं विभूति अतिभारी । ता
हिके गदा द्वारपर् ठाढ़े वामन बलि मुरारी । स्वर्ग लो
क दीन्हें सुरपति को पुनि थिरकर कर थाप्यो । निगम
नेति कहि रटत निरंतर देवशत्रु सब कांप्यो । वामन रूप
बलिहरि जिनको जश जगगावे । शेष सहस मुख रट
त निरंतर सुरपति किमपावे । पुन बलि राजहि स्वर्ग
लोकमें थापेंगे हरिराय । सर्व भौम अवतार धरेंगे श्री

रा॰स॰ न क सु न ना के प र न को म। इत्याभोगः। श्री र ज के

५५

११

स भ स त ही च त र हो स ग टे स यो ध्या धा म ॥

राग भैरव ताल गीत ध्रुवपद शांत रस ॥ सि म र न

तैं कर मन बा व रे श्री रा म चंद्र ना म कों। इति

स्थायी। य न इ च्छा कर दि न घ ट त जा ते रै न ग

ग म

श्रीरामचंद्रस्तुतिः राग भैरव चौताल ध्रुवपद ॥ सू र

पं प पं म म रे ग म ग रे सं सं ध सं सं ग म म ग

ज वं शा न मो गु रु इ ष्ट ह मा ऽऽ रे द शा र थ सु त

म पं म सं म प नि सं सं नि सं

गं जा रा म। इतिअस्थायी। जा न की ना थ ना थ।

रे रे रे सं सं नि पं म म पं प रे सं सं

त्रि भ व न के मो ह न सुं द र श्या ऽऽऽऽ म। इतिअं

प पं प म म पं म म ग रे म म ग रे म

तरः। ल क्ष्म ण भ र त श त्रु घ्न ह नु मा न जा।

रा०म० कहे बाल नि थ कर हे त ह रि श्रे थे मो श्रे य न या व

१००

100

रै ।। भैरव राग ताल श्री राम चंद्र परिछेद ।।

पुष्य नक्षत्र नौमी जु परम दिन लगन सुद्ध सुभ वार

प्रगट भये दशरथ गेह पूरन चतुर ब्यूह अवतार

निफूले दशरथ मन ही म न कौशिल्या सुख पायो

टनीश्रायनमें विघयोंके लालचमें फसोनहिया

दकरतायोमको। इतिश्रेतता। समप्रत्रमित्रक

लत्रवेपुपथिकसेगामनोवसेग्रवजानग्र

पनेहेतकरकरमोपापमेंजावरे। जानता

भीश्रेतमहेतकोनहितनककरतविचाररे।

रा॰स॰
२१

101

के दसरथ सुत करत केल स्वछंद। घुटुरुन चलत कन
क आंगन मै कोशल्या छवि देखत। नील नलिन तन।
पीत झगुलिया घन दामिन दुति पेखत। कबहुं क मा
खन रोटी लैकै खेल करत पुन मांगत। माख छुवत ज
ननी ममझावत आय कंठ पुन लागत। काग भुसंड
दशाको आये पांचवर्षलो देखे। अस्तुतिकरी आपु व
र पायो जन्म सुफल करे लेखे। किर्पा करि निज धा
म पठायो अपनो रूप दिखाय। वाके आश्रम कोउ व

सौमित्रा केकई मन आनंद यह सबहिन सुतजायो। गु
रु वशिष्ट नारद मुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी। राम
वेद विख्यात नाम यह सब मुनि की साथि लीनी। देत
दान न्टपराज द्विजनको सरभी हेम अपार। सब सुंद॥
रि मिलि मंगल गावत कंचन कलश उआर। आये दे
व और मुनि जन सब दे असीस सुख भारी। अपने अप
ने धाम चले सब परम मोद हृषिकारी। मन वांछित
फल सब हित पायो भयो सबन आनंद। बाल रूप कै

रा॰स॰
१०२

पर परम मनोहर गोरोचनको दीनो। मानो तीन लोक
की शोभा अधिक उदय सो कीनो। खंजन नैन बीच ना
शापुट राजत यह अनुहार। खंजन जुग मनो लरत ल
राई कीर बुझावत रार। नाशाके वेसर में मोती बरन।
विराजत चार। मनो जीव शनि शुक्र एक ह्वै बेठे रवि
के द्वार। कुंडल ललित कपोल विराजत झलकत आ
भागंड। इंदीबर परमनो देखिय रविकी किरन अखे
ड। अरुण अधर दमकत दसनावलि चारु चबुक मस

सनहै माया लगनन नाय । प्रात काल उठ जननि जगाव
न उठो मेरे बारे राम । उठि बैठे दंतवनलै आई करी म
खारी स्याम । चारो भ्रात मिलकरत कलेउ मधु मेवा प
कवान । जल आचमन आरती करके फिर कीन्हों अस्नना
न । करत शृंगार चार भैया मिल शोभा वरनि न जाई ।
चित्र विचित्र सीस चौतनियां हेइ थनुक छवि छाई । अ
लकावलि मक्रावलि गुंथी और सुरंग विराजे । मनहुं स
रसुती यारसरस्वती यमुना मध्यविराजे । तिलक भाल

रा॰स॰
१०३

103

वै। रामचंद्रकी देख माधुरी दरपन देख दिखावै। निज प्रतिबिंब विलोक मुकामैं हंसत राम सुख राम। तैसे ई लछमन भरत शत्रुहन खिलत डोलत धाम। दशरथराय न्हाय भोजनको बैठे अपने धाम। लावोवेगि राम लछमनको सुनिआये सुखनाम। बैठे संग बाबाके चारों भैया जेवनलागे। दशरथराय आपजेनहै अति आनंद अनुरागे। लघुलघु ग्रास राम मुख मेलत आपिता मुखलेवत। बाल केलि को बिसद परम सुख

कान अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिम बीज समा
न। कंठ सिरी विच पदक विराजत बहुमणि मुक्ता हा
र। दहिना वर्त देत भुवतारे सकल नाचत बहुवार। र
तन जडित केकन वाजूबंद नगन मुद्रिका सोहे। उर
उर मनु मदन विटपतरु विकच देख मन मोहे। क
टि किंकिणि रुणझु नुहानि ननकी हेम करन किल
कारी। नूपुर धुनि पग लालि पन्हैया उपमा कौन वि
चारी। भूषन बसन आदि सब रच रच माना लाड लडा

रा०म० २०४

104

कबहुंक चार आत मिलि आगिया जात परम सुखपावत
हरिन आदि बहु जन्त किये बध निज सुरलोक पठाव
न। यहि बिधि बन उपवन बहु क्रीडा करी राम सुख
दाई। बालमीक मुनि कही कृपा कर कछुक सुर जो
गाई। मै माऊ जननी टेरत है कहांगये चारोंभाई। भू
खलगीहुहै लालनको अबलावो वेग बुलाई। इतने मा
फ चार भइया मिल आये अपने धाम। साव देखत आरती
उतारत कौशल्या अभिराम। सौमित्राकेकै सुख पावत।

साव समद्ध न्टप फेलत। दाल भात कढी सलोनी ग्रह
नाना पकवान। ग्रारोगत न्टप चारि पुत्र मिलि ग्रति ग्रा
नंद निधान। ग्रचवन कर पुन जल ग्रचवायो जब न्टप
बीरा लीनो। राम लछमन भरत शत्रुहन सबहिन ग्र-
चवन कीनो। बीराखाय चले खेलनको मिलिकै चारो
बीर। साखा संग सब मिले बराबर ग्राये सरजू तीर।
तीर चलावत सिछा सिखावत यगनिसान देखरावत।
कबहुंक साथुग्रस्व चढि ग्रापुन नानाभांति नचावत।

रा॰म॰
१०५
105

शरथ (राय) बहुत पूजाविधि किये प्रसन्न हुलास । भोजन क
र जबही जु विराजे तब भाखे मुनिराय । यज्ञ सुफल ।
कीजै मेरो अब दीजै राम पठाय । तब नृपकह्यो रामहै
बालक मोको आज्ञा कीजै । तब द्विज कह्यो राम परमेश्व
र बचन मान यह लीजै । गुरु वसिष्ठ सब विध समझा
ये राम लछमन संग दीन्हे । मारग में अहल्या उद्धारी ना
वक निज पद दीने । विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या
धनुष प्रकार । मारग में ताडका जु आई धाई बदन प

बहुविध लाड लडावत। मधु मेवा पकवान मिठाई।
अपने हाथ जेवावत। चारौं भ्रातन मित जानिके जन-
नी तब पोढ़ाये। चांपत चरण जननी अब अपनी कछु
क मधुर स्वरगाये। आई नींद राम सोवपायो दिनको।
श्रम बिसरायो। जागे भोर दौरि जननीने अपने कंठ ल
गायो। विश्वामित्र बडे मुनि कहियत यज्ञकरत निज
धाम। मारिच श्रौर सुबाहु महासुर विघन करत दिन
याम। परब्रह्म अवतार जानकै आये न्टपके पास। द

रा०स०
१०६
106

कत जनक नगरकी नार। बिनबनि कृपा राम अवलोक
न दीनो सुख जु अपार। कियो सनमान बिदेह नृपति
ने उपबनबासो कीनो। देखन राम चले निज पुरको सु
ख सबहिन को दीनो। सब पुर देखि धनुष पुनदेख्यो
देखे महल सुरंग। अदभुत नगर विदेह विलोकत सु
ख पायो सब अंग। कहत नारि सब जनक नगरकी वि
धि सो गोद पसार। सीताजूको बर यह चाहिये है जोरी
सुकुमार। अपने धाम फिरत दोउ आये जान भे कछु सो

रा०८७४

मार। तिनमैं राम चक्र सों मारी नेक न लागी वार। दी
न्ही भक्ति जानि निजमहिमा आये रिषिके द्वार। कीन्हे।
विप्र यज्ञ परि एरन असुर विघनको आये। आग्नि बान
कर दहन कियोहै एक समुद्र पठाये। जनक विदेह
कियो जु स्वयंवर बहु नृप विप्र बुलाये। तोरन धनुष
देव त्र्यंबक को काहू जतन न पाये। विश्वा मित्र मुनि बे
गि बुलाये सकल सिष्य लै संग। राम लछमन संगलिये
आपने चले प्रेम रस रंग। जहा तहा उत्फक फरोखा कों

रा॰म॰ दन समान। दोनों भ्रात संग में लीन्हे आये राजकुमार। ज
९०
107
हां बैठे सब भूपकोप सों बाढ्यो गरब अपार। अपने अ
पने भुजबल तोलत तोरन धनुष प्रचार। कछुनहि च
लत विमाने भये सब रहे बहुत पचिहार। सीता कहत
सहेलिनसों पुनि यही करत रघुनंद। तबउन कह्यो सक
ल सुखसागर सोये परम आनंद। बार बार जिये सोच क
रतहै विधिसों वचन उचारी। मन क्रम वचन येहै बरदी॰
नो मांगत गोद पसारी। एक बार सुर देवी पूजत भयो॰

ज्ञ । कर डंडोत परसि पद ऋषिके बैठे उपवन मांझ।
संध्या भई कृत्य नित करके कीनो ऋषि परनाम । पौढे
जाय चरन सेवा द्विज करके अति बिसराम । ब्रह्ममुहूर
त भयो सवेरो जागे दोऊ भाई । कर परनाम देव गुरु ।
द्विज को जल स्नान कराई । आये भूप देश देशन के
जुरी सभा अति भारी।तहां बुलाये सकल द्विजनको जन
क मेंझारी । कौशिक मुनि तह छविसो पधारे लिये शि
ष्य संगसमाज । चले नित्य आन्हिकसब कर द्विज उर आने

रा॰म॰
१०८

108

तबही अकुलाने लीन्हो सारंगपानी। छिनमें कर लेकै ज
चढ़ायो देतहै सब भूप। उठेव तोर अघात शबद भयो जे
में कालको रूप। सबही दिशा भई अति आतुर परसराम
सुनि पायो। परशु सम्हार सिष्य संगलेके दिगही मानहु
आयो। जैजै कार भयो जगती पर जनकराज अति हरषे।
सुर विमान सब कौतुक भूले जे पुन सुमनन वरषे। ज
नक राज तब विप्र पठाये वेग बरात बुलाई। दशरथ रा
ज बाजि गज लैके सबही सौ जनु राई। खेलत चली ब

दरस साचि मोह । तादिनते छिनकलन परतहै सत्य क
हत हो तोह । सब न्टपवे धनुष नहि टूट्यो तब विदेह ।
उख पायो । क्रोध बचन करि सबसें बोले तजी कोउनर
हायो । यह सुनि लछमन भये क्रोध युत विषम बचन
यो बोले । सूरज बंश न्टपति भूतल पर जाके बलबिन
तोले । कितक बात यह धनुष रुद्रको सकल विश्वकर
लेहों । आज्ञा पाय देवरघुपतिकी छनक मांझ हटगेहो
सबके मनको दोख श्रेदेसो सीता आरत जानी । राम चेद्र ।

जा गनपति सूरज शुक्र महेश। दीनो दान बहुत विप्र
न को राजा मिथिल नरेश। उतसव भयो परम आने
द को बहुत दाय जो दीनों। भये विदा दशरथ न्टप त
पसो गमन अवध पुरकीनों। म्टगुपति आय जानि जब
रघुपति मिले याय शिरनाय। दशरथ राय विनय ब
हुकीन्ही जिय में अति उरपाय। तब मुनि कह्यो यतु
क कैयो तोरे रुद्र परमगुरु मेरे। राम चंद्र पूरण प्रभुधो
तम नेक नयन जब हेरे। लीन्ही प्रेमसेंच म्टगुपतिको

रान विपुलयन जुरे मनुज नहि पार । शोभा सिंधु कह
न नहि आवै बरनन करत उचार । गुरु वसिष्ट मुनि
लगन दियो शुभ नक्षत्र शुभवार । आये जान नृपति
मनमाने कीन्हो अति मनुहार । व्याह केलि भाव वर
नन कीन्हो मुनि वालमीक अपार । सो भाव हरकहो
वहकीरत जगतकरी विस्तार । वेद शास्त्र मथकरी ।
व्याह विधि सोईकीन्ही नृप राय । राम लछमन अरु
भरत शत्रुहन चारोदियो विवाय । होम हवन द्विजए

रा०म० आज्ञा मानी जियमें बचन धरी। यह भू भार उतारन र
११० घुपति बहुत रूखिन सावदेन। बनबासको चले सि
११० या सैग सखनिधि राजिव नैन। मारगमें हरिकृपाक
रीहै परम भक्त एकजान। तहांते गये जु चित्रकूटको
जहो मुनिनकी खान। बालमीक मुनि बसत निरंत
र राममंत्र उचार। ताको फल यह आज भयो मोहि द
रसन दीयो कुमार। पूजा कर पधराय भवन में राम
चेद्र परनाम। कियो विविध विध पूजा करके रूखि।

अपने रूप समायो । करो जाय तप शैल महेंद्रपै मुनि ।
मुनि वर शिर नायो । अति आनंद अयोध्या आयो कियो
नगर शृंगार । कदली खंभ चौक मोतिनके बांधी बंदन
वार । कियो प्रवेश राज भवनन में रामचंद्र सुखरास ।
अद्भुत भवन विराजित रतनन सूरज कोटि प्रकाश ।
द्वादश वर्ष विराजे बालक पितुभूभार हरो । कैकेईके
बचन प्रमाण नृप तब यह काज करो । बचन सत्र ।
क नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । रामचंद्र पितु ।

रा॰स॰
१११

ल खाये। वेदरीति करि रघु पति सब विधि मरजादाअ
नुसार। बहुत भाँति सब विध समझाये भरत करी
मनुहार। गुरु वशिष्ठ मुनि कह्यौ भरतसों राम ब्रह्म
अवतार। बनमें जाय बहुत मुनि तारे हरकैं भुवभा
र। पुन निज विश्वरूपजो अपनौ सो हरिजाय देखा॰
यो। आज्ञा पाय चले निजपुरकौ अभहि गौन समझा
यो। कछु दिन बसे जो चित्रकूट में रामचंद्र सहभ्रात।
नहांते चलेदंडका बनको सुखनिधि सोबल गात।

बरनन शिर नाम। बहुत दिवसलो बसे जगत गुरु। चित्र कूट निज धाम। किये सनाथ बहुत मुनि कुल को बहुविध एरे काम। भरत जान जियमे रघु पति को दुःसह परम वियोग। आये धाय संगसबलेके पुरवा सी सह लोग। बिन दशरथ सब चले भरतही कोस ल पुरके बासी। आये रामचंद्र आवदेख्यो सबको मि टी उदासी। रामचंद्र पुनि सब जन देखे पिता न देख न पाये। एक्षी बात कह्यो तब काहू मन बहु विषवि

रा॰स॰ बेग सबारो हरकरी भुवभार। लोपामुद्रा दिव्य वस्त्र ले
१२२ दीने जनक कुमार। सूर्पनखा जब जाय पुकारी नाक
कान ले हात। रावन क्रोध कियो अतिभारी अघरफर
क अतिगात। गयो मारीच आश्रमहि तबही बाने बहु
समझायो। तब मारीच कह्यो दशकंधर विनती बहुत
करायो। रामचंद्र अवतार कहतहै सुनि नारद मुनिपास
प्रकट भये निशचर मानन को सुनि वह भयो उदास।
कलगहि खेडगतीरब करिहो सुन मारिच डर मान्यो।

मारग में बहुमुनिजन तारे अरु विराध रिपु मारे। बेद
न कर सरभंग माहामुनि अपने दोष निवारे। दरशन
दीयो सुतीछन गौतम पंचवटी पगधारे। तहां सूर्पन
खा उपजे नारी करि बिन नाक उधारे। यह सुनि ख
र दूषन प्रबलदल आये छिनमें राम संघारे। कीन्हें काज
सकल सुरनिको भुवके भार उतारे। मुनि अगस्त आ
श्रम जु गये हरि बहुविध पूजा कीन्ही। दिव्य बसन
दीने जब मुनिने फिर यह आज्ञा दीन्ही। दशकंधरको।

रा॰स॰ आये परम पुरुष बडभागा। जब माया सीता नहि देखी
११३
जियमें भये उदास। पूछन लगे राम द्रुम गन सो बहुत
113
बढी उरवास। मारगमें जटायु खग देख्यो विकलभयो
तन हीन। विनती करी राम मैं तासों बहुत लराई कीन
जब तन तज्यो गृध्र रघुपति तब बहुत करम विधकी
नी। जान्यो सखा राय दशरथको अपनी सदगति दीनी
मारगमें कबंध रिपुमारेव सुरपति काज सवारेव। पंपा
सर हरि तुरत पधारे जलको दोषनिवारेव। शबरी प

रा॰१५
स॰१६

रामचंद्रके हाथ महंगो परम पुरष फल जान्यो । क
पट कुरंग रूप धरि आयो सीता बिनती कीन्ही । राम।
चंद्र करसाय कलैकेमारनकी विध कीन्ही । मारच य
नघ बानले ताको लछमन नाम पुकारेव । लछमन
नाम सुनत तहां आयें मन दुष्ट विचारेव । धरिके कप
ट भेष भिक्षुकको दशकंधर तहां आयो । हरि लीन्ही
छिनमें माया करि अपने रथ बैठायो । चल्यो भाज्यो गो
मायु जेत ज्यौं लेके हरिको भाग । इतने रामचंद्र तहां

114

न अतिभारी । सीताकी सुधलेन चले कपि ढूंढत विपिन मझारी । जलनिध तीर गये सब कपि मिल सुनि संपात कि बानी । लंक बसत सीता रिपु बनमें सब बानर यह जानी । राम चरण कर सुमिरन मनमें चले पवनसुत धाय । राम प्रताप विघन सब मेटे पहुंचे नगर समाय धरि लघु रूप प्रवेश किये कपि लंका नगर मझार । राम भक्त निज जान विभीषन भेटे हरि प्रेकवार । तब बांने सब भेद बतायो देखी कपि सब लंक । राम चर

रमभक्त रघुपतिकी बहुत दिनन की दासी । ताके फ
ल आहारो रघुपति पूरन भक्त प्रकासी । दीन भक्ति नि
ज प्रभुकी ताको तब रघुपति चले आगे । सीता सीता वि
लपत डोलत परम विरहसों पागे । रविनंदन जब मि
ले रामको अरु भेटे हनुमान । अपनी बातकही उन ह
रिसों बलि बडो बलवान । सप्तताल बेधन हरिकीन्हो
बाली तिनकमें तारो । दीनों राज रामर बिनंदन सब
विध काम सवारो । सप्त दीपके कपि दल आये जुरी से

आये वालि अस्त्र उन डारे। तासों वैथ दशानन देखन च
ले पवन सुत वीर। रावन बहुत ज्ञान समुझायो कथ्यं
कथ्य कथा गंभीर। चले सुजाय छिनक में तबही जार
दई सब लंक। कूदि चले राजवन को जन कर ज्यों म्र
गराज निसंक। आये तीर समुद्र मिले कपि मिले आय
जहराम। सुनि सुनि कथा श्रवण सीताकी पुलकित अ
ति अभिराम। करि कपि कटक चले लंका कों छिनमें
बांध्यो सेत। उतर गये पहुंचे लंका पै विजय ध्वजा से

न यदि हृदय मदित मन विचरत फिरत निशाके। जाय
अशोक वाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह। कर दंडवत
बहुत विनती कर राम मुद्रिका दीन्ह। सब संदेस क
ह्यौ कपि सिय प्रति सनि हियमें धरि राख्यो। राम संदे
स कह्यौ तब सीता जो कछु सो भाख्यो। लागी भूख चले
उप वनमें नानाविध फल खाये। विटप उखार उजार
विपिनको सब हिनको दसराये। सुनि पुकार निशिचर
बहु आये कूदि सबनि संघारे। इंद्र जीत बलनिध जब

रा॰ म॰
११६
116

राज विभीषन दीनौं। पुनि मंदोदरि अबल आयुदे अभय
दान सब कीनौं॥ममा यान सुर गनको करकै अमृत मेघ
बरषायो। कृपादृष्टि अवलोकन करकै हत कपि कटक
जि आयो। निशिचर किये भस्म सब माधव तातें जिये न
कोय। निरभय कियो लंकेश विभीषन राम लखमन नृ
प दोय। सीता मिली बहुन सुखपायो धरोरूप निजमा॥
यो। पुष्पक यान बैठ के नीके चले भवन सुख छायो।
चले पवन सुत विप्र विप्र रूपधरि भरतहि देन बधाई

केत । पठये बालि कुमार विनय कर समझाये बहुवार ।
चित्त नहि धरो काल सब जान्यों फिरश्राये सुकुमार । अ
सरन सरन उदार कल्पतरु रामचंद्र रनधीर । रिपु भ्राता
जान्यों जु विभीषन निशचर कुटिल सरीर । राखे सरन
लंकेश कियो पुनि जब निशचर सब मारे । माया करी ब
हुत नाना विध सबको राम निवारे । कुंभकरन पुन इंद्र
जीत यह महा बली बल सार । छिनमें लिये सोष सुनि
बरज्यों लछी बली अपार । कियो प्रसाद शोतना करके

रा॰म॰
११७

ल मन मे सुखपायो। बैठे राम राज सिंहासन जगमें फि
री दुहाई। निर्भय रामको कहियत सुर नर मुनि सुख
पाई। चारमूर्ति धरि दरशन आये चारबेद निजरूप। अ
स्तुत करी बहुत नानाविध रीझे कौशिल भूप। शिव विरं
च नारद सनकादिक सब दरशन को आयो। राम राज बै
ठे जब जाने सब हित मन सुखपाये। लोकपाल अतही
मनहरषे सब सुमनन बरषायो। पुष्प विमान बैठ हरि
आये लैकुबेर पहुचाये। अति आनंद भयो अवनी पर रा

जानि हूत रघुपति को प्रभु दिन भरत मिले तब धाई। सुनत नगर सब हिन सुखमान्यो जहाँ तहाँ तें चले धाई राम चंद्र पुनि मिले भरत सों आनंद उरन समाई। कि यो प्रवेश अयोध्या में तब घर घर बजत बधाई। मंगा ल कलश धराये द्वारे वंदन वार बधाई। राज भवन में राम पधारे गुरु विशिष्ट दरसायो। सीस नवाय बहुत सु जाकर सुरज वेश बढायो। समाधान सबहिन को की न्हीं जो दरसन को आयो। कौशल्या केकई सुमित्रा मि

रा॰स॰
११८

118

कबहुंक जनकसुता संग हाव भाव चित चोरे। कबहुंक कमल सरोवर उपवन जनकसुता संग लीनें। नाना जल विहार विहरतहैं संत जनन सुखदीनें। कबहुंक रतन महल चित्रसारी सरदनिशा उजियारी। बैठे जनकसुता संग बिलसत मधुर केलि मनुहारी। कबहुंक शृंगार भूप नाना विध लिय सुगंध सुखकारी। कबहुंक निरतत देव नटी लखि रीझतहैं सुखभारी। राम विहार कह्यो नानाविध बालमीक मुनिगायो। बरनत च

मराज सुखदास। कृत युग धर्ममये त्रेता में पुराण रमा
प्रकास। अश्वमेध बहु जज्ञकिये पुनि पूजे द्विजन अ
पार। हय गज हेम धेनु पाटंबर दीन्हे दान उदार। चरि
त अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुखदीनो। जन
क सुता बहु लाड लडावत निकट निकट सुख कीनो
जोन बसंत बहुत द्रुमफूले जनकसुता अनुरागे। प्रेम
प्रवाह प्रकट प्रकटायो होरी खेलन लागे। कबहुंक
निकट देवबरमा करत झूलत सरंग हिंडोरे। रामकृत

ग॰स॰

२२५

119

को॰१

रित विस्तार कोटिमत नक पारनहि पायो । स्वर समुद्र
की बुंदभई यह कवि बरनन कहा करिहै । कहत वी
न रघुनाथ सरस्वती बैरीमत अनु मारिहै । अपने याम
पठाय दिये तब पुरवासी सब लोग जैजैजै श्री राम क
ल्यातरु प्रगट अयोध्या भोग ।। इतिरामपरिछेदसमाप्तः
ऊँ अथपरशुरामचरित्र । उग्रनृपति जब बैठे भुवप
र यति भृगुपति को रूप । छिनमें भुवको भार उतारयो
परशुराम द्विजभूप । इतिपरशुराम परिछेदः ।।

रा॰ स॰
१२॰

बैगाली बराडी सैंय वी इह भैरव की संग नारी

गोन सैन के प्रभु तानन मानन मोहली ब्रजना

री ॥ राग भैरव चारताल । ध्रुवपद । नायका खंडिता ।

परिहासरस । प्रातःकाल ॥ कैसे गोहे जो बौरी आली

आगे भ्रव प्रात बेदा टोछी रहत निस दिन च

राग भैरव ताल·तीन। क्रमजीकाखुतन। ध्रुवपद ।।

ग म पि नि ध पि पि म ऋ ग म ग ग ऋ ऋ सं सं ग ऋ सं नि

भो र भ ए भै रो गा व त भ र म्र र ली भ र खी बे दा

सं सं ग म ग ऋ म म ग सं म म नि

व न म य व न वा ऽऽऽऽऽ री। इति स्थायी। स म स्व

नि सं नि ऋ ऋ ग सं नि ध पि पि ग म पि पि

र ती न ग्रा म इ क ईस मू र छ ना ला ग डा ट उ र

ध नि सं रे नि पि पि ध पि ध पि ध म म ग ऋ

प ति र प या ऽऽऽऽ री। इति अंतरा। म धु मा य वी भैरवी

सै रे रे सै सै नि ये सै सै ग म म म ग ग ग्र सै पै ग ग्र

रा॰स॰ म स का न म ये का का रा म के श्र मु ल ज्जा सें को

१२१

(125)

सै रे सै प प पै म म ग पै नि प नि सै नि प

पैं गा त ष्या री श्रे म मै न म ये श्र ति वि क ल दे ष।

सै रे सै प पै प पै म

ला न ग रे दो री। कैसे॰॥ भैरव राग चार ताल॰ ध्रु

ग म पै प पै म ग रे ग म ग रे सै ग

वपद॥ मौ ह न जा गो म नो ह र म द न्ह द न म

रे सै सै नि नि सै रे ग पै म ग रे ग पै म ग रे सै

द न मो ह न म ग रा ति मा यो म ङ्के द म न भा म न॥

री। अस्थाई। अथ अंतरा। हों हे दा ब न तें ये न बरा

ब त नि ज था म आ ब त म थ मैं बि र जा ली ये

बे र जो री। अथ आभोग:। इ त नी बे न तो मो ह

री मा न नी सों के हो जा पं अ ब हू की ह क म या

क रो ह री॥ ला डि ली जू इ त नी स न त मे दा।

रा.स. जगैयातुमप्रभुवेजूकेस्वामिवलरामकृस्नकेमैं

१२२

ग्रापानसामन॥ रागभैरवचारतारध्रुवपद॥ या

दिनतेमोहनमुरलीवजाईतादिनतेहौंन

नमनगेहौंवकाये। इतिश्रीस्थायी। समस्वरन

कीआरोहीअवरोहीरमभवितानमनाये॥

इत्यस्थाई। जागो जागो जयनारायन जगन पती

जगजीमन जादेनाथ जशोथानेद जगत

स्वविश्वेमबद्धावन। इत्यंतरा। जागिए काह्न

कुमर केवल कल्याणराये जागिए श्रीकृस्न

वेद परमानेद पावन। इत्याभोगः। जगनके।

ग्रा०स०
१२३
123

नमममस्वरतानमयुरेयुनि। इतिग्रस्मायी। स्ववन

स्वनतकच्छुसयनारहीआलीभिनकपतिमेरे

कानसनि। इतिप्रेतरः। ननमनरोमरोमव्याऊ

लमेरीजीतलियेगेयरबनारदमनिगुनि॥

बैजूकेप्रभनरनारीपश्चपंक्षीमोहेश्रोरमोहे

ग म ग म प पं प नि सं नि प पं

स्येतरः। मूलीसुथयावानयानमेजहूंसोएवोवौं

मं ग म ग रे सं ग नि प नि सं म प नि

कवौंकउटरहिमरकायें। इत्याभोगा। मेरोतो

सं सं नि सं प नि सं रे सं नि प पं म ग रे ग म म ग रे

जिमनयनहैबलिहारीगावौंगीगरवालगाऽऽऽऽ

सं

ये॥ रागभैरवकृष्णजीकाध्रुवपद॥ चारताल॥

ग म पं प पं म ग ग रे ग म ग रे

ऐवेसिनादसुरसायकेबजाइब्रबीनकोहू।

रा.म.
१२४

124

म ग रे सै नि ध नि सै म ध नि नि सै नि

नामलेतजाघउखभाज। नानसैनप्रभकोसि

सै रे सै नि ध पै म ग रे ग म ग रे सै

मरोप्रानहिजगमैरहेतेरिलाज॥ रागभैरवष

नायकाखेउन

ग रे सै नि ध ध नि सै सै रे ग म ग रे

वपदचौताल। मोरभयेप्रायेलालयरतपगडेग

सै म नि ध नि सै सै नि ध नि सै नि

मगान। इत्याम्यायी। पागलटपटीसीसविराजतन

ध नि ध पै पै ग ग रे सा ग रे सै सै नि

यनउनीदेगतिकुँविजान। इत्यंतरा। प्रथरनक्रेज

ग मा ग रे ग रे सं

स्व र न र म ति ॥ राग भैरव चौताल। क्रमलजीका ध्रुवपद

ग रे सं नि प नि सं सं नि सं सं रे ग मा मा ग रे

प्र थ म उ ठ भौ र हि रा ये क्र स क हो म न जा सों हो

ग मा ग रे ग रे सं मा प नि

वे स ब सि द्ध का ज ॥ इति स्थायी ॥ य ह लो क प र

सं सं सं रे सं नि प प मा ग रे सं

लो क के स्वा मी ध्या न य रो तू ज दा स । इति अंतरा ।

मा ग प प प नि नि सं सं नि प प मा ग

प त म उ धा र न जं न प्र ति पा ल न दी न दि या ल

नि ध पे म ग रे रे ग म ग सै सै ग

रा.स. मनमोहे मगन भई दिवत हरि आनन। इत्येतरा। जी

१२५

125

रे सा नि नि ध नि सै सा रे ग म म ग रे ग म पे म ग रे

वजेत पशु पंछी सुर नर मुनि मोहे हरे सबके प्रान

सै गम ध नि सा सा सा निध निसा नि ध पे ध पे म ध पे म

न। बैजू बनबारी बंसी अधर धरी बृंदाबन चंद ब

ग रे रे ग म म ग रे सा सै

स किए सुनत ही कानन। इत्याभोगः॥ अथ ख्यालव

नि सै नि ध नि स र ग म प म र

चित्र ताल तीन। भयो भोर यशुमति रटह आनंद मंगल

२ध २नि २ध २नि २सै २ग २रे २सै २रे २सै २रे २ग २म २ग २रे ३सै २म

नपीककपोलननखकेबिन्नदेखीग्रनतत्रात। चंन

२ध २नि ३सै ३सै ३सै २नि २ध २नि ३सै २नि २ध २पै २म २ग २म २ग २रे

रभजदासञभगीरीधरनभलेतमआयेहीमोहे

२रे २ग २पै २म २ग२रे २सै

दिखावनग्रात॥ रागभैरव ध्रुवपद चारताल॥ सब

२रे २सै २नि२ध २नि२ध २सै २सै २रे २ग २म २ग २रे २सै २नि २सै२ग २रे २सै २ग २रे २सै २नि २ध

लीवजाइरिकायेलईसखमोहननैंगोपीरीकरही

२ग २म २ग२रे २सै २सै २ग २म २ध २नि ३सै २नि २सै २नि २ध २नि ३सै

रसनानन। इत्यस्थायी। सथबुयविसराईयुनसन:

रा॰स॰
१२६

126

त ओर बंदी जन ठौर ठौर यश गायो। बाजे बजत विचित्र भांतिसों रह्यो घोष सब गाज। सुर सुमनन बरषावत गावत व्योम विमानन साज। बोथत बेदन बार साथिये द्वारे ध्वजा सुहाई। कनक कलस प्रतिपौर विराजत मंगल चार बधाई। सुरभी वृषभ सिंगारे बहु विधि हरदी तेल लगाई। सुवरन माल विचित्र पाटरंग अंग अंग चित्र बनाई। आये गोप भेट लै लै के भूषन बसन सुहाये। नाना विध उपहार दूध दधि आके धरि शिर नाये। यशुमति के घर

चार बधाई । जागी महर पुत्र मुख देख्यो आनंद उर न
समाई । जैसे शशि प्रगटत प्राची दिशि सकल कला
भरिपूर । यथा मति कृष आय हरि प्रगटे असुर तिमिर
दूर । नंदराय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो ।
विप्र बुलाय वेदधुनि कीनी स्वस्ती वचन पढायो । जा
त करम कर पूजि पितर सुर पूजन विप्र करायो । द्वै ल
ष धेनु दई तेहि औसर बहुत दान दिवायो । परबत सा
त तिलन को कीन्हो रतनन ओघ मिलायो । मागध सू

रा॰स॰
१२०

जनार। ऐसो सुत तेरे गृह प्रगटेगो या ब्रजको शृंगार। यसु
मति रानी देत बधाई भूषन रतन अपार। फूली फिरत रो
हनी मईया नारव शिवकर शृंगार। देत असीस चली ब्रज
सुंदरि जिय उपज्यो सुख भारी। गृह पूजन सब कियो वे
द विधि नंदराय सुखकारी। देशदेश ते ढाढी आये मन
वांछित फलपायो। को कहि सकै दसो धीऊनको भयो सब
न मनभायो। नादिनते सगरे या ब्रजमें रमा रूप दरसायो।
निज कुल वृद्ध जान एक ढाढी गोवर्द्धनते आयो। पर

1127

ह पुत्र प्रगट भयो सुनी सकल ब्रज नारी। मंगल साज स
वार हाथले घर घर मंगल कारी। सुनी आनन्दे चली
झुंड जरि सिरसुमनन वरषावें। मानों रीझ मयुप धरनी
को रस पराग दरसावें। पहुंची जाय महल मंदिर में क
रत कुलाहल भारी। दरशन करि यशुमति सुतको सब
लैन लगी बलि हारी। नाचत गोप परसपर सब मिल छि
रकनहैं नवनीत। दूध और दधि और हरद जल सींचत
हैं कर प्रीत। यशुमति सुत सराहि बलैया लेन लगी ब

रानी छाछिन पहिराई मन बांछित फलपायो। चले भवन को दै असीस दोऊ निरभय कीरत गावै। जिन याचे ब्रज पति उदार अति याचक फिरन कहावै। नाना विधके विवि ध खिलोना रतन न अधिक अमोले। ताको लेन गये मधु राको अब नक डेडभि बोले। वेगजाव गोकुल नभ अबही सुनियत हैं उतपात। सुनि ब्रजराज तुरत उरआये जिये में अति अकुलात। प्रथम पूतना कंस पठाई अतिसुंदर व पुधारहो। उमके गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ नि

म उदार महल ब्रज पति जू छाती निकट बुलायो । बाजत झट्टक मंजीरा नूपुर नाना भांति नचायो । फगा पगा अरु पाग पीछोरा छातिन को पहिरायो । हरि दरियाई कंठ लगाई परदर मान उढाये । बहुत दान दीन्हें उपनंद जू रतन कनक मनीहीर । यरा नंद यनबहुत हि दीन्हो ज्यो वरषत यननीर । कुंडल कोन कंठ माला देख्रव नंद अति सुख पायो । सीयो बहुत मर सरा नंदै गाडा भरि पहुंचोया । वरमा यरमा नंद कहत है बहुत हि दान दिवायो । ब्रज०

रा॰ सा॰
१२५

कल्के ग्रंत ग्रादि क्रत युग के है कल्की ग्रवतार। मारि म
लेछ धर्मफिर थाप्यो भयो जगत जयकार ॥ इतिकल
केपरिछेद: ॥ राग भैरव चौतार। भैरेंही भैरव राग ग्रला
प्यो हो प्यारे वेसी में ग्रा ऽऽऽऽऽऽन। षरज रिषभ गोधार म
ध्यम पंचम धैवत निषाद्ता ऽऽऽऽऽऽन। ग्रारोहि ग्रवरो॰
हि ग्रस्थाई संचाई ताल काल डौर मा ऽऽऽऽऽऽन।उर प
नि रप लाग डोट देसी मारग तानसैन कहे सुनो शाह ग्र
कबर यह विध सरली में कीनैंगा ऽऽऽऽऽऽन ॥ रागभैरव

हारेयो। लिये उठाय प्रणाम सेंदर को ध्यान गहिके सावली
नो। लीन्हें खैंच प्राण विषपय ज्ञत देह विकल नवकी।
नो। छोड छोड कहि परी धरनी पर कर चरनन ज्ञ पसार
जो जन डेढ विटप वेली सब हर हर कर डार। ताको।
जननीकी गति दीन्ही परम कृपाल गोपाल॥ इति कृष्ण
परिच्छेदः॥ अथ बुधचरित्र। बुद्ध रूप कलि धर्म प्रकाशेउ
दया सबनको मूल। हरकियो पाखंड बाद हरि भगत
नको अनु कूल॥ इतिबुद्धपरिच्छेदः॥ अथकल्कीचरित्र

रा॰ स॰ बजावत बोलत मोर कोकिला कुहकि कुहकि ॥ इत्याभोगः

९३'

130

ध्रुवपद चारताल। पञ्चाजवोमरीवजाईवनमयकौनरं:
गकौनठंगाञ्जाकिफुकी। इतिश्रमायी। सुनतश्रवन
सुधिरहिनहींननकिभईहौंबामरीह्वेदावनदिसीहैविद्धु
किञाकि। इतिश्रेनता। ब्रह्माबेदपढतम्हलेशिवसमा
थमोहहुलेसुरनरमुनिमोहेदेवांगनादेविंलाकिलाकि
समस्वरतीनग्रामइकईसमूर्छनालेतानसैनप्रभुमुरली:

रा॰म॰
२३१

13

ननमैंभ्रटको। नजसभावबनसटको। साधुसंगनतैरकथा
भजनकोंनामसुनतहिंसटको। निसबासरमनबारोहिंडोले
नृपदेषकरमटको। रंगनृपयहथिरनारहसीग्रेतजाणको
भटको। नातेंनोरेपाएपरतहौंभ्रवचुरयरजिनभटको। जो
नृचाहैंसकमाआपनिमिटमदनकोखटको। दाराख़तसंपता
कोसाथीविपतपरेंनहिछुटको। ग्रेतसमेकोईकामनग्रा

ॐ अथ संगीतदर्पणो अष्टपदी राग भैरव ताल । दामो

दररतिवर्धनवेशे । हरिनिकुटवृंदावि(पि)नेशे । रायेज

जयजयमाधवदयिते । गोकुलतरुणीमंडलमहिते । वृ

षभानुदधीनवशशिलेखे । ललितासखिगुनरमितविशा

षाखे । करुणाकरमयिकरुणाभविते । सनकसनातन

वर्नितचरिते । । राग भैरव ताल यती । अरेमनाकिनवा

सवोकालिंदीकेतटको। विस्नुदासनिहचैकरपावैदर्शनना
गरनटको॥ राग भैरव तीनतार। समझदेषमनमीत॰
प्यारेत्राशकहोकरसोनाक्यारे। तृषासूकागमकाढुकउ
फीकाऊैरसलोनाक्यारे। पायाहोतोदेलप्यारेपायपाय
फिराविनाक्यारे। गुलबोहोजोगुलकोंजानेतकियातकि
याऊैरबिछोनाक्यारे। कहेकमीरसुनोभाईसाधुसीमदि

वैजवजमदेगोफटको । कामक्रोधमदलाभमोहमेंम्राटश्र
हरलेलटको । बारंबारतोहेसमझाबैंग्रणनीएरीहटको ।
कालबलीतेरेसिपरविलेंतिनसगरोजगगटको । मानुष-
जन्मवडूरनहिंपावेंलाघतैरेहशिरपटको । चलिपवेगवि-
लेबनकरिएसवलावबेंसीवटको । श्यामसुंदरकोसुम
रनकरलैयरलेध्यानमझुटको । परमभनीतहेंदाबनव

कागभसुंडउरगुगंते । अवधपुरीदसरथमंदिरमेलीलानित्य ।
करंते ॥ राग भैरव थीमा मंगल । बैठेरामराजमनभावत
मंगलथनचहुंओरअयथमेसुरनरमुनिगुनगावत । सुनत
करतब्रह्मारिषिनारदशंकरप्रेमबढावत । छत्रतक्रवच
बरयुगलबरमोक्षवकहतनाआवत । सकलसिद्धदाताअ
भ्रमहिमावरननिगमसुनावत । सुनसुनप्रवणाउदार

याफिरैानाक्यारे ।। राग भैरव ताल तीन । श्रीरघुनाथ

दयाकेसागरचरणपद्मोंकमलाकांत । अगमनिगमजे

हिमनतहैंनेतकहिवरनैंकहाअनंत । सुरनरमुनिहि

तजन्मलीनहरिअजअविनासिअचिंत । कबहुंमेंगायहे

मरथसुंदरतापरआपचहंत । हैंबनतहोसबालसुना

रानहरिबहुविधिविहसंत । बालबिनोदकरतअंगनामें

रा॰स॰ बरजुगलपरस्पररसिकलेतभरभरम्हावचैनन । ख्यालखु॰

१३४

ष्णलद्मोदिशालावियतम्हरनरम्हनिभ्रमसन्नचितचैनन ॥

134

राग भैरव ताल तीन रामपदतलसीकृत । जोपैरामनाम

रतिहोति । तौकिनविवियस्मूलनिसिवासरसहतेविपति॰

निसोति । जोसंतेतोषमृथानिशिवासरसपनैंडेकबडेकपा

वे । तौनकविषयविलोकिफूठिजलमनकुरंगज्यौंथावें ।

सजसजमउरश्रानंदप्रयटावत। भरतशत्रुघ्नलछमनमाई

भेटश्रनेकदिखावत। रघुकुलकमलदिनेशविलोकिनज

नवृशालफलपावत॥ राग भैरव ताल जति। निरख।

तनारिसकलमिथिलापुरव्याहसमैंदंपतछविनैनन।का

मकोटसोभानहिंपावतविधुलाजनगतलखिनैनन।मोह

तहोसविलासभरेग्रनमनहरचकर्णश्रहवैनन।करतनेवछा

रा॰म॰
१३५

खरकूकरसूकरसेजायतिपतजगमांही। कामक्रोधमद
लोभनींदभयपरूषप्यासमभहीके। मनुजदेहसुरसाधुसरा
हितसोतोनेहसियपीके। सूरसुजानसुपूतसुलछनगणि
पतिगुरुगुरुआई। विनहरिभजनइंदारुकेफलसमतजैन
कडुकराबाई। कीरतिकुलकरतूतिभूतिभलिसीलसरू
पसलौने। तुलसिप्रभुअनुरागरहितजैसेसालनसागअलौंने

134
135

रा॰५

जोश्रीपतिमहिमाविचारिउरभजनैंभावबढावै। तौनकहा
रह्यारक्षुकरज्योंफिरतैंपेटफिलावै। जेलोलुपभएदासआ
सकेतेसभहिंकेचेरे। प्रभुविस्वासआसजीनीजिनतेसेवक
हरिकेरे। नहिंएकआवरनभजनकोंविनयकरतहौंनातें
कीजेकृपादासतुलसिपरनाथनामकेनातें॥ रागभैरव
ताल तीन तुलसीपद। जोपैंरहनिरामसोनाही। तौनर

रा॰ म॰
१३६

136

लीकोईभागवचाहेंजेयबङ्गनउठायाहे। भोरभागकारामना

मरमजासेंप्रेमलगायाहे। मातपिताकिशुंकनमानेसमुबा

बराटहरायाहे। उनिसुंदौलतमालाविजानानाहकभरम

डुलाहे। कहेकबीरसुनोभाईसाधोमनगुरुभेदबनायाहे॥

राग भैरव जलद। तीन तार। पतितपावनशालग्राम।

ठाकुरनामकहावततिभुवनसुंदरमूर्तप्रणाम। योयीपि

ने ॥ राग भैरव कमीरकापद नालजन । उवेलागेग्रहहो
मीसायेग्रजवजमानाग्रायाहे । उलटाचलनचलाउनिग्रा
मेयामोजीचवरायाहे । मद्दीहूनमाथकेजावेंकहेंनाजन
हिंग्रायाहे । कारजकाढकेबडूतमालदेवैंघ्याहाथविका
याहे । कथाहोपजहोऊँवेश्रोतावक्तामूंडपचायाहे । च
रणामृतकिंचुटनपीवेमयुमावनञ्छपग्रायाहे । भागव

नारायणपद्मनाभरिषिकेशपरमेस्वरगरुडध्वजहरिमुकुंद
मुरारी। गोपिवल्लभमुरारीटीकमभगवानभक्तवछलक
ल्यानकुमारघणामब्रजविहारी। गोकुलेशवैनरायपुरुषो·
तमजनपुरुषनित्यानंदजगद्गुरुजनार्दनदनुजारी। राघ
वरघुवीररंगनाथप्राननाथस्वामिश्रीपतिरघुनाथजोगाध्या
नगावनारी। जानकीप्राकोशलेंद्रमनरंजनजादवेंद्रब्रज

वनचरणाम्रतधेनरवनरकनगतिअभिराम । लछुनदामक

ल्यतरुकलिमेदेतअभयपदयाम ॥ राग भैरव भजन ।

रामकृस्नवासुदेवदामोदरदीनबंधुदयासिंधुकरुणानिधि

मोहनबनवारी । मधुसूदनमुरलीधरमाधवजगजीवनअ

भुकमलनैनराधापतिगोविंदगिरधारी । अच्युतगोपालकां

न्हचिंतामनिचपाणिविठलभगवंतविस्नुकेशवकंसारी ।

कारी । मछकछसूकरनरसिंहवामपरसरामयनुर्थरब॰
लिरामविबुयजत्तनिदउरी । कलकीमनव्यासहंसजज्ञ॰
रिषभहयग्रीवबद्रीपतिकपिलदत्तसनकादिकचारी । त्रि
युम्रनेतयन्वंतरउषृदलनजानरायगुमम्रयटचतुर्विंशति
लीलाश्रवनारी । नामावलीस्रवविलासलछनदासानु॰
दासम्रसम्रलवुद्धिवरनश्रारनपरिपुकारी ॥ राग भैरव।

पतिरघुनंदनरनछोडदैत्यारी। विश्वंबरधरनीधरपरमा

नंदउपेंद्रब्रजपतिनटनागरनंदलालजडपतिश्रघहारी।

रघुवरजगदीशपुंडरीकाक्षकमलापतिबनमालीजगनप

तीकिशोरदानवारी। निर्गुणचैतन्यब्रह्मअव्यक्तअजनिरं

जनविश्वव्यापकब्रह्मज्योतिअविगतिअविकारी। पारब्र

ह्मानंदनिर्विकारविश्वरूपईश्वरअविनासीबैकुंठविश्व

रा.म.
१३५

137

लनमोहावन। रामसविछ्वविदेषविवसमणकोटिकाम

सरमानव॥ रागभैरवतीनताल रामायणपद। चौपई

बंदौश्रीगुरुपदमपरागा। सुरुचिसवाससरसअनुरागा

अमियमूरमयचूरनचारू। समनसकलभवरुजपरिवा

रू। सुकृतशंभुतनविमलविभूती। मंजलमंगलमोद

प्रसूती। जनमनमंजुलमुकुरमलहरणी। कियेतिल

तालतीन। वासनहींजहांवैसवकेरीनहांनवसिएवामडि।
यो। जीभडलिजपमालानाकरेतेंजीभडलीवेिमडियो।
मासउमारेसमरननाकरोयमननएानेममामडियो।
रागभैरव तालतीन। राघवभोरहिंजागेनीदभरीग्राखि
यनमनभावन। उठबेठेफुलसेजऊपरकोटिककाम-
लजावन। स्टडमप्राकातफेवानसियातनफ्रकफ्रकप

रा॰ स॰
१४॰
140

ख्यात ॥ राग भैरव चौताल गंगास्तुति । गंगाकितरंगदेखस
भजगात । रोजातस्रवनरसुनिनकोंलागतहितचिते । केते
कच्छलंलेपटकायरकपूतपापीतिनउकेपापभाजतकिते ।
ब्रह्मलोकविस्नलोकरुद्रलोककथाजोकिजैमीभावनाना
केकाजसफलनिते । गंगमनकाग्रागेपापरोवेपापग्रागेजमहू
गरोवेचित्रगुप्तरगुमरोवेकाकदचितेचिते ॥ राग भैरव चौता॰

कगुणागणवसकराणी। श्रीगुरुपदनरवर्णनगणाज्योति।
समिरतदिव्यदृष्टिहियेहोति॥ राग भैरव मूर्छनाम चौता
उत्तरामंद्रारजनीउत्तरायनामतमरीश्रतिक्रांनाउदयात।
सौवीरीहरनाकपोलननासंडामथ्यमोगीपौरवीरिषिक्रांना
न। नंदाविशालासमाविविचित्रारोहिनीअलापिनीज्ञा
न। येयीरसालीनिगामसानीनीयाइकीसमूर्छनाचेतवि

रा॰स॰
१४१

कुलहेकीपनगईपरीप्रेमभीरसी। कुललोकलाजगईनीदभूषचटगईलूटगईकपटदेनिपटत्रयीरसी। जमनाकेकूलकान्हनेबजाईबांसीहांसिकीजगीरसावनेंहोगईनगीरसी। आहनकेयावनमेंआयलभयोतनत्रषिप्रनतेंआसेजातदोडेकीवहीरसी॥ राग भैरव बराग। जयतिगोकुलानंदगोपालिकानालिकानालिगतिनिर्तकारी। हेममममनिमंड

उरजउतंगग्रभिलाविसेतमैनकेत्रुकीहोयराविनाकछु
कवितचोपरंगरेजमेमोतिमोतिनकीमालमलवारिमारीफ
लमलजोतिहोतचांदनीग्रमेजमे। बिहसिवदनविमला।
सोसिग्रटापैंगाईदोवनप्रवीनापिकबेनीसाविमेजमें। गाईभ
ईहैयहदरदवनावैकौनमरदमयेकमारीकरदकरेजमे।
राग भैरव ताल तीन। गतगाईमतगाईबोलबाकिजतगाई

रा॰म॰
१४२

142

नाम्राणाहतशकडद्वाटकरिग्रस्रवन्टणावर्न्नेयरियरनग्रानै।
नीलगिरिश्रीजगन्नाथ्याशिप्युरूपकृतकोंनमनिदासमाथवव
घाने ॥ राभैरव मनिकथन चैनार। आदिमनिब्रह्मग्रवना
रमनिकृसज्जगमनिसतयुगदिशामनिपूर्वसमयटमरण
मनिरमैया। दिवसमनिभासकरनिशामनिचंद्रमाउउरा
नमनिध्रुवद्वीपनमनिजंबुद्वीपखिउनमनिभरतखिउचव

लीमध्यचननीलमणिमोहनीनेदमंदिरविहारी। जयतिबा
लगोपालसुविशाललोचनयुगलगोरेकविरव्यास्त्रनवमनि
मरारी। सुघटकटिकिंकणीनादउनमादपदनूपुरारुणि
नगनिनिर्तथारी। जयतिललाटपटघटिततिलककस्तू:
रिकाकुटिलमुलकावलीसुविकासी। दछदछनह
ल्लपयपयसमकरनवनीतबलरासी। जयतिएत

रा॰स॰
१४३

द्रमलितामनिविस्वपदितीर्थमनिव्रजस्थानहरिव्रजटैया।
भक्तनमनिप्रहलादजतिनमनिछमननारिनमडरवसी
तवंगमनिउषेचध्रवईंद्रयामरहैया। रागनमनिभैरवक
नवनमनिवसंतशास्त्रनमनिवेदांतरजनमनिसंगीतपार
नालैया। तानननमनितानसैनगायनमनिनारदगंधर्वन
मनिहाहाहूहूवीननमनिसरस्वतिप्रातहीनामलहैया।

143

रतिहैया। स्वर्गमनिवैकुंठराजनमनिइंद्रगुरुप्रनमनिबृह
स्पतिवेदमनिब्रलासमभजगवैया। हस्तिमनिऐरावतविहं
गममनिवैनतेयपुराणमनिश्रीभागवतपरमहंसमनिस
कदेवकहैया। ज्ञानमनिमनिमहादेवध्यानमनिलोमनि।
लोमशाश्रायुर्मनिमार्कंडगिरिनमनिसुमेरथिरैया। रत
नमनिकल्पवृक्षबीरनमनिमहावीरसागरमनिपयस्स

रा०म

147

स्वरनमनिविरजस्वरस्वरज्ञनिमनिनीब्रामूर्छनामनिश्रा
नेदिनिथिनमनिएकादशीउनममनिगोविंदनामलेहूस्रा
नेदभवसागरपारपरैया ॥

रा॰म॰
१४५

145

घनउरश्रानंदनसमाई ॥ मुरलीग्रधरधरेंस्यामढाढेजुव
तिमाहिमनमखरननोनगानगोवर्धनराई ॥ निरघनूपग्र
नूपछ्याकेसुनरविमानवल्लभपदकिंकरदामोदरबल।
जाई ॥ राग भैरव । बलावलीकोमोदाजगमेंभलाभ
लीकरलीजीए ॥ स्वामिरस्वामिरश्रीराधावरकोंनाहक
बातनछीजिए ॥ परमारथस्वारथकेलागेकाहूद।

राग भैरव नित्यकीर्तन ॥ श्रीनाथजीकोध्यानमेरेनिस

दिनारीमाई ॥ माथुरिमरतनमामरित्सरतनाचिनलिउाव

लगाई ॥ लालपागलटकीभालचिबुकवेसरकंठमाल

कर्णफूलमेंदहासलोचनसुषदाई ॥ मोरपंखसीसय

रेंमोतिग्रनकेहारगरेबाजुबंदपौंचीकरमुद्रिकासुहा

ई ॥ क्षुद्रघंटिकाजेहरीनूपरबिछुयासुदेसअंगअंगदे

रा.स.
१५६

अनेदगोपनारफलीसथकविनिहारवोलनेचलनिश्रे
गकीञकनीपदरमगईमनमें ॥ राग भैरव ॥ काहेकुं
नजिपसंसारनजिपअपनेकुमतिविकार ॥ वासुदेव।
बदीवामनवपुत्रुयवराहिविहारिवामदेववैकुंठबिहा·
रीसुमरनकरलेवारंवार ॥ जिनपायोनिनयाहिमेपायो
करलेगुरुज्ञानविचारबेदपुराणसाथसंगतमेजगारा

146

गानहिदीजिए ॥ ममकहूकवलिहारिण्यारेमीतमनोह

रकीजिए ॥ राग भैरव बसंत ॥ फूलनकेपुष्पज्ञघए

हैरेहेतनमेदेखिवीप्रनूपनूपविहरतेहैंवनमें ॥ शोभि

तगिरयानज्ञेकलजिरिनवसंतसरससंतनिरषनिरष-

ग्वालनकेगनमे ॥ सुंदरकपोललोलनापरकुंडलप्र

मोलडोलनमातिमहाईमाईदामिनिज्योघनमें ॥ महो

रा॰म॰
१४७

147

कीनीकरणपतितउधारारे ॥ उतकलदेसनीलपरबत
हेमहोदधीवारकिनारारे ॥ तहांविराजेंबालपुरषोत्त
मश्रीमहाप्रभुजीप्यारारे ॥ श्रीजगन्नाथबलबद्रसुभद्रा
चरनकमलचितधारारे ॥ पासमुदरशनअरुमतपभा
मापासससमदकुमारारे ॥ मंदिरमध्यरत्नसिंहासनत
होप्रभुयरोसिंगारारे ॥ होयआरतीभोगपरोसेरुचिर

जटामस्रमनमस्कार ॥ राग भैरव ॥ जयजगदेशवि
श्वकेस्वामिअखिललोकआधारारे ॥ ध्यानधरैंनिसि
वासरजिनकोंचत्रराननत्रिपुरारारे ॥ निगमनित्यनि
र्गुणहिगावेवदनब्रह्मनिरकारारे ॥ सोईहरिभवभा
रउतारनकारनअलावभणमाकारारे ॥ दीनबंधुधर्म
केस्थापकसमभक्तीकरेमेभारारे ॥ इंद्रद्युम्नमनपैंकिरपा

रा॰स॰
१४८

148

पावनचरणाम्रनलीपैंकटिहैंपापत्र्यपारारे ॥ कामीक्रो॰
धीलोभमोहहेमनमतिगडेगेबारारे ॥ श्रीवल्लभप्रभुप
त्रक्रुपामेंमैहजकरेमैमारारे ॥ आनेदयनसभमुषके
सागरलेहरिक्रुमनिहारारे ॥ त्रिभुवननायकसभसुष
दायकगिरधरप्रभुनिहारारे ॥ राग भैरव नित्यकी॰
रंगरंगीलोप्यारोश्रीजगन्नाथबलिभद्रभैयापामविरा

८

नित्यकीर्तन ४

विचारेंवारारे ॥ श्रीलछिमिजीकरेरमोईषट्रसविविध

प्रकारारे ॥ करमावाईकीखिचरीषाईकरकरकेमनुहा

रारे ॥ जेहप्रसादभक्तनजिनकीछ्रोतेनजायेंजमद्वारा

रे ॥ महाप्रसाददेवनकोंदुरलभसोजनकरेंप्रहारारे

तिनकेभागयकहांलोंकहिंपतेउतरेभवसोंपारारे ॥को

द्विजनमविप्रहेंहोवेम्लछविनिरखिनरनारारे ॥ पतित०

रा॰म॰
१४५
149

रागु भैरउ नित्यकीर्त्तन ॥ आछोनी कोलोनो मावि भोरही देषाए ॥ निशा के उनींदे नयन तोतरा ने मीठे बैन भावत होजी कोंमेरे बछाईए ॥ सकल सावि करण त्रिविधताप हरण उरकौं निरषाछैोंबरनन साईए ॥ द्वारे ठाढे ग्वाल बाल करहो कलेऊ लाल मिश्री रोटि मोटी माखन सो खाईए ॥ नानक मोमेरा कहेआवारी फेरजारी मैया वैनी तोगाहे

त्रिपाकी ७०५

जैंबीचसभद्रासाथ ॥ सुदरशानऔररत्नसिंहासनकर्म्मीवा
ईकीविचडीहाथ ॥ श्रीलक्ष्मीजीकरतरमोईमाजेकंच
नथार ॥ पतितपावनचरनामृतलेकेपरीक्रमादेउनरे।
पार ॥ महाप्रसादकीअद्भुतमहिमाहृदयअमृतकीथा
र ॥ उत्तरदरवाजेश्रीमहाप्रभुजीविराजेसेवाकोसुवि
सार ॥ वल्लभरसियामोमनवसियागिरधरप्रानअधार

रा०म० १५०

150

२४॥ नित्यकीर्तन ॥ उठैनंदलालातनननजननीमावे

वानी॥ आलसभरैनैनउठैसोभाकिाबानी॥ गोपिजन

थकितहियैंचितवनिसभराणी॥ नैयनकरिचकोरचे

दवदनसीतवाणी॥ मातजलझारीलिएकमलमुखवे

पखास्यो॥ नीरह्रीकोपरमकरनआलसविसास्यो॥ स

खाद्वारठाढेसमटेरनहैनमझें॥ जमुनानटचलोश्याम

६

नित्यकीर्तन० ६

बनायगहरनलाईए ॥ परमानंदजनजननीमुदितमन

फूलीफलीफूलीउरयंग्रेगनसमाईए ॥ राग भैरव नित्य

कीर्तन ॥ उदोनंदकुमारभयोभवमारगावननंदरानी

कारीकेवदनपावागाम्तनकहिमारंगपानी ॥ माखन

रोटीयहमधुमेवाभावेसोलीजेहोंघ्रानी ॥ हरप्रणाम

नावनिरखजशोयामनहीमनजोहसानी ॥ राग भै

नमविनानहूदेथेनउदोलालनजोसेजसुदेरवराई ॥
अवनैंपटहूरकियोजसुथाकोंदरसदियोउँरदयिमोवा
लियोविविधसमिदाई ॥ जेवनदैरामश्यामसकलमंगल
गुणनिधानयारमैंकछुजहँदरहीसोमानदासपाई ॥ रागभै
रव निमकीर्तन ॥ ललितवदनगलितजशामवलित
केशाग्रनिसृदेसनयननलिनरगामगोपासरदसर्वरी ॥

चारनगोधनक्रं ॥ मवामहिनजेवङ्क्वलिभोजनकवु
कीनें ॥ सरश्यामहलधरसंगसखावोलिनो ॥ रागभेरव
निमकीनेन ॥ जागियगुपाललालजननीवलिजाई ॥उ
हीनातभयोप्रातरजनीकोनिमरगयोश्चटेसवग्वालमोर
नाकन्हाई ॥ उठोमेरेआनंदकंदगगनचंदमंदमंदप्रघटो
इसमालभीनकमलनिसवदाई ॥ सिंगीसभश्रवनवेग

रा॰स॰
१५२

152

लकमलकीकली ॥ श्रियाउरसीलग्रागारसककुरिनख
विपरागपवनपरसिमंदलेसगंधकौवकी ॥ हरिश्रवेश
ग्रागाहारहरनिजवनिविनसारमरमवेधीसमरवानश्र
टनेवली ॥ पलटिवसनसघनिधानमनमधुपकरनगा
नसुरसमेनसजमसनिश्रवणादेश्रली ॥ गुपालदासम
दनमोहनकेजभवनवलिनरंगामदिनश्रावनिभावनीस

L

मोतिनकिउरमालसिथलकंठेकंठेचंदनकीरेखवखसभरेल
टपटानगानमधुपश्रवेरी ॥ सोभितउरउरजाविमपरसन
नहींपरतपछिमनखिक्कविपरवारीउगेंचंदखवेरी ॥ वा
सुदेवलालकल्याणगिरिधरकोसुजगावतश्रीविटलपद
कमलरजमनापगवेरी ॥ रागभैरव नित्यकीर्तन ॥ भोर
भ्रेगभ्रेगसोभाश्यामकेभली ॥ मानहुविगसनिविविबनी

रा·स·
१५३

153

नोजूदरशना ॥ श्रावदैकैउदियापउगनवरणाश्रापला
लसमेननैयवैनश्रटपटेरसना ॥ सेथ्याजकहिस्थिया
देवचनजियमेसंभोरेमऊवकेमैदमेदश्रवदिनदसना ॥
वनभ्रंजप्रमगिरियरणास्थियारोनहोजहोरनिरंगारसल
पटायवसना ॥ रागभैरव निसकोनेन ॥ हूमनज्योम
नगाजज्योवलनउगमगे ॥ वतिश्राकरहनसैनमवेनश्राव

मानकेरली ॥ रागभैरव ॥ निमकीर्तन ॥ सोभितसुभग
लटपटीपागभीनेरसिकप्रियाप्रनराग ॥ ङेमङुमानिल
कमलकसिंधूरकविग्ररुणानयनचूमनविसिजाग ॥ क
छुकुंमातउरमालमगारजीपीककपोलग्रथरमसियाग ॥
वनभेजप्रभगिरधरनसिधारीतहांग्रालमवसमभंरेग
विभाग ॥ रागभैरव निमकीर्तन ॥ भोरनमचरवोलेरी

रा-म्र
१५४
154

कहिनजानिकोंतिग्रछनसकलग्रंगग्रंगजगमगे ॥ रागभै
रव ॥ उगमगानग्रापनटनागर ॥ कछुंभानग्रलसान
भौरमपग्रहणनैनचुमननिमिजागर ॥ रसिकगुपालम्हर
ननकौंजमसकलचिन्हलाएउरकागर ॥ वनभंजप्रभु
गिरियरनकेंजगाफरनिपनिजीमेरमरहावेसागर रागभै
रव ॥ भौरमपग्रापहोलालननीकीवनिग्रे ॥ जावककेउ

८

नैवैनग्रालमउनीदैनैयनसोभिनरगमहे ॥ नागरनंदकिशो
रनीकीछविश्राएभोरशृंगारनिरंगविभजगमहे ॥ व
नभंजनप्रभगिरियरगाहिलागेपलकचारजामजीनकामर
हेजहटगमहे ॥ राग भैरव निमकीनेन ॥ आजछविदेनने
नाग्रालमभेरगमहे ॥ रैनपलकनपरिमरनरनजैकरी
भोरभपलालःयरनपगाइगमहे ॥ ननऔरगलिभोनकहन

रा॰ स॰
१५५

गतिगोलकचपलरहतकछ्योरे ॥ मनऊंकमलकेको
रोनिश्रीनमहूंइनरहनछ्पिरिउदलदौरे ॥ मजलकोपत्रा
तिमेंजसोभियनसंगमक्वविनारेपरछौरे ॥ मनभावनके
भेवरमीनसीसजाननरविनवनविनचोरे ॥ वरनीनजा
यकहोलोवरनोप्रेमजलदवेलावलग्रोरे ॥ सूरदाससोको
नप्रियाजिनहरिकेसकलअंगवलनोरे ॥ राग भैरव ॥

११

रविन्हनीलपटप्यारीदीनेनयनञालसभीनेंजागेरतिश्रों·
छुटिदेग्रीवावनदामनरविचिनअभिरामकैसेंकेडरतसपनमट
गमगिरगतिश्रो ॥ केशवदासप्रभनदन्हवनकाहेलजात
भलेजुसंबरेगातजानिसमभवतिश्रो ॥ रागभैरव ॥ अ
रुणानैनराजतप्रभभोरे ॥ अनिन्हाबसुरनकिपेललनासे
गजातसमदमनन्मथरसजोरे ॥ रानिउनीदेग्रलसानमराल

रा॰म॰
१५६

लालगोवर्धनधारी ॥ आलसनैननसरमसरसरंगितप्रियाप्रेम
नैननमनहारी ॥ विलुलितमालमरगजीउरपरसुरन
समरकीलगीघराग ॥ वृंदावनश्याम॰ धरसमगावनस्वरनि
स्वभावभैरवराग ॥ पलटिपरिपटनीलसखीकेरसमेझी
लनमदननराग ॥ वृंदावनकोयनअवलोकिनकुसदास
लोचनबडभाग ॥ राग भैरव ॥ प्रथातिनसकलसहिदा

नाहिंदरतनैनैनावननारे ॥ जानूंवंधूककुशामनविशालपर
संदरश्यामसिलीमुखवनारे ॥ रहिजनुअलककुटिलकुंडल
परमोननविनवनविनेविसारे ॥ मिथलभौंहधनुगहेमदन
गुनरहेकोकनदवानविसारे ॥ न्हेदेरिश्रवनतेहेपलोचनप
लकश्रानरउवरननउचारे ॥ सूरदासप्रभुसोईयोंकहैं
पसीकोवनिताजामैंरतिरमाहैरे ॥ राग भैरव ॥ श्रावत

रा.स.
१५७

भरनकाजसबैंसजनसदागावतगुणगाथैं ॥ काहेकोंदेह
दमनसाधनकरिम्हरावजडविषमानआवेदिनजिगहन
कोश्रमाथैं ॥ रसिकचरणभरनसदारहतहैंबडभागीजन
अपनैंकरिगोकुलपतिभरनमाहिवाथैं ॥ रागभैरव ॥
श्रीविठलनाथजूकेचरणशरणं ॥ श्रीवल्लभनंदनेक
लिकलखंडनेपरमेगुरुषंबैनापहरणं ॥ सकलदुख

यार ॥ श्रीमद्वल्लभराजकुमार ॥ ध्येयमहापरब्रह्मसार ॥
श्रुतिनिगमगुणमहिमाअपार ॥ धर्मादिकदीयेंशनिहार ॥
पुष्टिभक्तिकोअंगीकार ॥ श्रीविट्ठलगिरधरअवतार ॥
नंददासकीनीवलिहार ॥ राग भैरव ॥ जैजैश्रीवल्लभप्र
भुश्रीविट्ठलेशसाथे ॥ निजजनपरकरनकृपाधरनहा
थमाथे ॥ राग भैरव ॥ दोषसबैंहरिकरनभक्तभावहियैं

रा॰सं॰
१५८

तनिरषमषविनवननैयनविशालकी ॥ मंगलरूपश्याम
सदरकोमंगलत्नविमकुटीभालकी ॥ वननंजदामप्रभ
आनंदनिधीरूपमंगलकरनश्रीगिरधरलालकी ॥ रागभैर
व ॥ मदनगुपालहमारेराम ॥ यनषवोनपरिविमलवाग
करपीतवसनअरुननवनश्याम ॥ अपनिभजनिनीज
लनिधिवांधोंरासनवापकोटिककाम ॥ मदसिरेहनसभ

दारणंभवसिंधुतारणंजननितिलीलाधरणं ॥ कान्हरदासप्र
भुमभमनावधमागरेभूतलेदढभकिभावकरणं ॥ रागभैर
व ॥ जैजैजैश्रीवलभनंद ॥ कोटिकलाहेदावनचंद ॥ नि
गमविचारेनलहेपारं ॥ सोदाऊरप्राकाजकेहारे ॥ लीला
कविगिरिधारसोहाय ॥ छिनस्वामीश्रीविठलनाथ ॥ रा
गभैरव ॥ मंगलआरतिगोपालकी ॥ नितउठमंगलहो

सूरदासप्रभुदेउँएकवारी ॥ रीझेलालगोवर्द्धनधारी ॥ राग
भैरव ॥ निर्तनगोपालसंगराधिकाबनी ॥ बाहुदंडभुजन
मेंलिमंडलमधकरनकेलिसरसगानश्यामकैसंगभामिनी ।
मोरमुकुटकुंडलछबिकाछनीबनीबिचित्रजलकनउर
हारबिमलप्याकिनबोदनी ॥ परमसुदिनसरसरासुनिव
रसतनसमकुशमनिवारनिनननमनप्राणसूरदासस्वामि

ग्रब रसिं चारि गोवर्द्धन या सौं करवोम ॥ नवरत्नु वर अव

जउ वर नागर लीला नित्य विमल वद्र नाम ॥ परमानंद प्रभ

भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुण ग्राम ॥ राग भैरव ।

रागे रागनि मिलि वन नई ॥ नाचित नद्ध जल ललनान नृथैई मव

बिन कटि नट मणि मेषला ॥ अभिनव जनि छवल करनला ।

नूपुरसं बिन मोहि न जना ॥ लेति उरप गति प्रभ्र दिन मना ।

रा·म·
२६

160

नमनिवलयगावसाविरिनन्तपरस्तभावजावनङ्गनवरण
नाविनिवंदिकायनी ॥ भेदहासभौपरसराससलासमभव
विलासम्र लगलागलेनस्वरनायिकाग्रनी ॥ कामग्र
यकिनववेयरीजरहेवरणगहेसाभसाभकहनाफिर
नायिकायनी ॥ भेटनगहिवाङमलउरजपरसभई
झलव्यासववनसानङ्कलरसिकजीवनी ॥ रागभैरव

नी ॥ भैरव राग ॥ नायनवृषभानसुताहंससुताउलिनम
धहंसहंसनीमयूरमंडलीवनी ॥ गावनगोपाललालमि
लवनरूपनालवाललज्जितश्रुतिमदनमनकामिनीश्रुनी·
पट्लालकंठमालनवलतिलकझलकभराश्रवणाफूलव
रडफूलनासिकामनी ॥ नीलकंठकीसुदेशचंपकलीग
लितकेशमनखचितमनिदामवामकटिसुकाछनी ॥ मरक

रा.स.
१६१

जकुलसमोदमनंगेजनतपलिलभगाउलिनवाजमेदनी ॥
हरिसमानयर्मसीलक्रांतिसजलजलदनीलकटिनिनेव
भेदननितरानिउनेगिनी ॥ सिकनाजनमुक्ताफलकेकन
धनभजनरंगकमलिनउपहारलेपियावरणवेदिनी ॥ श्री
गोविंदगोपिसंगसमजलकनसिकरंगसनिनरंगानीहरसि
उरसहफेदनी ॥ श्रीनस्वामिगिरिवरधरनंदनंदनगिरवर

मोरनकेमंडलमैनाचनपियाप्यारी ॥ सिखवनमभनागामा
नमोखनलगविडरनमरनहोंहोहोहोकेआपदेनहैकरनारी।
मधुरेसरगानलेनरागनीसोंमिलेनानरीजकेलपटानदोऊ
भरिभरिइकभारी ॥ श्रीविठलसंगखेलनवोलिनिननाथेई
थेईविरनगोगियारीलालसंहरिनवनारी ॥ राग भैरव ॥
जैजैजैश्रीसरजाकलिंदनंदनी ॥ गलाललनानरूसवासके

रा.स.
१६२

162

रंगेजमेबितग्रलिंमेंरंगजबिबथधंदनी ॥ नारदसुकसनक

व्यासथाबनमुनिकरतप्राषधाहनहेपुलिनबाससकलदु

घनिकेदनी ॥ नामलेतकटतपापसुरकिन्नरमुनिकला

पकरततजापपरमानंदआनंदकेदनी ॥ रागभैरव ॥ जम्

नाजमुनानामभजो ॥ हरिब्रनकरोग्रराथनरनकोंडोरज

पंथनजो ॥ देहेंसकलपदारथनमकोंडोरकोंनाहिंराजो ॥

परजग्रनेजनउरितहरागउख्वनिकेहिनी ॥ रागभैरव ॥
श्रलिमेंजलजलप्रवाहमनोरमाख्वावगाहनवनवश्रुनिरा
जनश्रुतिनरनिनेंहनी ॥ श्यामवरणजलकरूपलाललेह
विश्रविश्रनृपसेवनसेननमनोजवाजमेंहनी ॥ कमहकम
वनविकाशमेंदिनदिसदिसख्वासक्तजिनकलहंसको
कमधुरवंदनी ॥ प्रफुलितअरविंदवृंजकोकिलखकसा

रा·स·
१६२

उदयग्राएमेरेनेदलाल ॥ मिथिलिनग्रेगाउनीदेनेनानिथर

नीथरनउगामगिचाल ॥ ग्रेथरनग्रेजनपीककपोलनल

टपटिपावजावकलिएभाल ॥ नापरसोहकरनहोग्रजप

निउरसिविराजनविनगुनमाल ॥ रागभैरव ॥ चूमतरन

नोरेनेनमकलनिसाजागें ॥ लटपटिहदेसपागग्रलकन

किजलकवीवषीकच्छायजुगकपोलग्रथरनमसिलागें ॥

१७

163

ब्रजपनकोअ्रनहीप्यारेहैनातेसकलसिंगारसजे॥ रागभैरव

सम. उरकियोनीलांवरपीतांवरमहियो॥ कुंडलमोलरल

टवेसरसोंपीतपटहारङ्मेवनमालवहियोमेवहियो॥ हेम

गालिभ्रनिष्कविभ्रंगाभ्रेरारहिफविउपमाविलोकवेकौपट

नरनहियों॥ कामकेकलोककूटमेजहकेसबलटेसरभ्र

भविलसेकटमहकीबैठयो॥ रागभैरव॥ रंविटि भ्रकृ॥

२०

भैरव ॥ कुलनामभावैमोहिकुलनामभावै ॥ वलि
हारिनाकोज्योंकुलनामगावै ॥ वकुधाकोसारकुल
मेरेमनकेअधार ॥ कुलअवगामेंगलरूपकुलममभवि
वार ॥ मंत्रनकोमूलकुलहरगामकलविलकुलअज
समदकोंवार ॥ कुलशिवकोअधारमेरेरसनाकोभा
गकुलध्यानधार ॥ मनकोमहागाकुलरसनानेवन

विनगणाउरमालवनीबीचनाबनरेखढनीपलटिपरेव
मनपीठकैकनकेदागैं ॥ चाकवमैंबेदनवनमालगपा
बेदनसैंउगमगानचरणाधरनछिपाछेमपागैं ॥ वचन
रवकियोसांऊवेगम्रायोभैरमांऊवलिबलियाबदन
कमलसोभिनभ्रनरागैं ॥ जापवसोउहीयामविलसेज
हांसकलजामगोविंदप्रभवलेहारिकजोरेमोगे ॥ ११

रहरी मुरारी ग्रमरारी ।। मधुसूदन मधुसूदन सोवरी वन
वारी ।। जमुनाके नीरे नीरे हे रावनधाम ।। सूरश्यामरट
नेरे हेनराधावरनाम ।। भोर उठ सिमरन करो होएसवहिका
म ।। वेसिवट जमुनानट सुंदरवन श्याम ।। राग भैरव ।।
बांसरी वजाई आजरंगसों मुरारी ।। शिवसमाधभूलग
ई मुनिजनतारी ।। वेदभगान ब्रह्मभूलेभूले ब्रह्मचारी ।

देखोरीयहैकैसाबालकगानियशोमतिजायाहै ॥ सुंदर
वदनकमलदललोचनदेखतवेदलजायाहै ॥ सुरीगोकुल
कलषप्रविनासिप्रचटनेदवरश्रायाहै ॥ मोरमुकुटपीतां
बरसोहैकेशरतिलकलगायाहै ॥ काननकुंडलगलवि
वमालाकोटिभानछबिछायाहै ॥ शंखचक्रगदापद्म
विराजैवनभंजरूपवनायाहै ॥ परमेश्वरप्रकटयोनमस्वा

सुनतहिं आनंदभयो लागिहै करारी ॥ रेमासमनाल
चूकीभूलीनिमकारी ॥ जमुनाजल उलटवह्यो सुघ
नासंभारी ॥ श्रीहेदावनवेसिबी वाजी तीन लोक प्यारी
ग्वालवाल मगनभए ब्रजकी सभनारी ॥ हेदर श्याम
मोहनी मूरतननट पर वपुधारी ॥ हरकिशोर मदन
मोहन चरणो वलिहारी ॥ राग भैरव निमकीतेन ॥

रा॰स॰
१६०

167

याहै ॥ शिवसनकादिकशुकब्रह्मादिकशेषसहस्रमुख

गायाहै ॥ सुरनरमुनिकेध्याननआवनसुजनजाकीमा

याहै ॥ सोपरब्रह्मप्रगटहोपकजमैलटलटदयीदिखायाहै

परमानेदकुलमनमोहनचरणकमलचितलायाहै ॥रा

ग भैरव तुलसीकृत ॥ तिताला ॥ रामचरणअभिराम

कामश्रमितिनीरयराजविराजे ॥ शंकरहृदयभक्तिभूतल

मीनरूपमतिहरुनकहैलायाहै ॥ मछकछवाराहनरसिंघ
वामनरूपदरसायाहै ॥ खंभफारनिकसैहैनरहरीजनप्र
ह्लादछुडायाहै ॥ परसरामरुपनिहकलंककरोधभवका
भाउमिटायाहै ॥ कालीमरदनकंसनिकंदनगोपीनाथक
कहायाहै ॥ मधुसूदनमाधोमुकंदप्रभभक्तवछलपदपा
याहै ॥ दामोदरगिरिधरगुपालहरित्रिभवनपतिमनभा

यागगुनरागे ॥ राग भैरव ॥ यहूवरमेंरेदीनदयालशरना
गतकौंकरैंनिहाल ॥ केवटगीधरीछकपिरावनसकीटि
पतेवाकियेप्रतिपाल ॥ मुनिमनसाधूरगाकरवेकोंगोपि
नाथभयनेदलाल ॥ ननमनधनतनमरीतमकूटेप्रेमरग
कूटेजमजाल ॥ चलनारेप्रभकेदरवार ॥ कालवली
हाथोचोवदार । इहहजहरमेंयादनिहार ॥ चलनेकीक

बरषेप्रेमसुखतयवटब्रजें ॥ श्यामवर्णपटपीतसुअरुणानल
लसतनविमदनगणेणी ॥ मनोरवीसुतनाशारदासुरसुतीमि
लिचलीललिततत्रिवेणी ॥ अंकुशकुलिशकमलध्वजरेखाम
ववनरंगविलासा ॥ मज्जनसुरसतजनमुनिवरजनमु
दितमनोहरवासा ॥ विनवैरागगानपजापाजोगअनविन
ननीरथमनपावे ॥ सोसमभल्लभदासनवलसीप्रभुपदध्व

रा॰म॰
२६५

दर्शननलक्ष्वेगवललीजे ॥ ज्यौंवामदनोहेदेवपसीजे
केदलगायरंगमेंभीजे ॥ करनीकाकरकरमकटारा ॥ सी
लसिफननपमेंजनमारा ॥ धरनोपकरध्यानपिया ॥ ज्ञा
नबोजेकुजेप्रसवारा ॥ जोनपैमाहोणवलेगामालकमनमे
वङनाविलेगा ॥ कामक्रोधमदलोभमोहमयधहसंसार
मपनादहेगा ॥ निमिवासरहरिनामउवारकैंरसनाजप

२५

ब्रुकरौनेयार ॥ जिनमैंड्ररमनरहेनमार ॥ ऐसीकरनी

करलेयार ॥ जिसकौंस्वामिपदकरबुलावे । जननकरेक

ब्रुवननहिंग्रावें ॥ विनमरजीकोईरहननपावें ॥ कागरी

वकाग्रासाज्ञकहावें ॥ जवजमग्रावैकब्रुनावसावें ॥ क्रि

नैमेवांधपकरलेजावे ॥ नवनोक्तकेकोनब्रुडावे ॥ क्रिा

वैदाकलपकलपावे ॥ मौजद्रानकीनिधारकीजे ॥

रा॰म॰
२७०

सदौऊहोनहैऊघोकवडुंकग्रवसरपाय ॥ सोनाकहैमाटि
भईहायकक्कूनहिंश्राय ॥ विषमैंनाहिंवसाई । कहैकोसो
नीनहैसनवकनकीवात ॥ श्रचलमेकथवहरेंटरेंनकहघ
कीसाव ॥ सोईजगरेहनवडाईरे ॥ एकवेरदयाकरङ्गी
कलपववेसीदेहोवजाय ॥ श्रामसश्रासलगीगोपालकीर
नकौंदेहौंजश्राय ॥ नवव्रजवजनव्रथाई ॥ सोवनजावान

२६

लेपरमपदलहेगा ॥ सूरदासप्रभुजोनेचाहैंगोविंदकेगु
णजोव्रजगावें ॥ पतितउधानविरदहावेचरणशरननितध्या
वें ॥ रागभैरव ॥ उनकेदिनाविरहनीकाहेकेंप्रीनडराईमेमो
हन ॥ प्रीतउनपपवेसवागमनकीनें ॥ प्रवलराजकवि
जाकोटीनोहमकेंव्रजकोवास ॥ हमकेंजोगकरणाकेंज
ऊविजाकोकैलास ॥ कमनसेंमेंचपराईरे ॥ जसप्रपज

खपरे ॥ चेइकरणभुवक्केटलमेंटिनष्ठवणाग्रखेइउरपन्नग

वे ॥ नोटवशिवगजननम्नखमेंटनमेंटमेंटमेंटम्नरनाननरे

गन्ने ॥

171

ग्यानध्यानमैध्रुवकरहूंहरिपोग॥ वेगदैरमेरीदीननाथआ

कूलव्रजकेलोग॥ दर्शनदेहदिखाईरऊपोशीनलगाय॥

रागभैरव॥ मेगीत॥ शंभहरेगंगाधरशैवामिनजनन्म

चिन्तामनकल्पवृक्षकाधेनकामसेरसीकररे॥ करत्रिस्र

लत्रिलोचनरेमाथमनिश्रेगव्यालवाघंवरस्रेवरेरे॥ नील

केठभस्मभूषणाङ्गनिरगनिकनिमंडमालमंडितखट्वांग

रा॰म॰
१७२

जागिपङ्कपानिथानजानरायरामचंद्रजननीकहैवारबा
रमोरभईप्यारे ॥ राजीवलोचनविशालपीतवापीकाम
राललितवदनउपरमदनकोटिकोटिवारे ॥ अरुनउदि
तविदितसर्वविरतसंककिरनहीनदीपजोतिअतिमली
नदुनसम्हहमारे ॥ मनङ्केज्ञानघनप्रकाशवीतेसमभ
ववीलासआसत्रासतिमरतोपतरुणतेजजारे ॥ बोल

भजन॰ १

ता॰ यका

राग भैरव भजन ॥ जागो रघुनाथकुमर पंछीबनबोलें ॥ शशीकिरनसीतलभईचकवीपियामिलनगईत्रि विधमंदपवनवहेपल्लवद्रुमडोलें ॥ प्रातभानुप्रकटभयोरजनीकोतमनसायोमधुपकरतगुंजारकमलनदलखोलें ॥ तुलसिदासअतिआनंद निरखिकेमुखारविंदहीनकोंदेतदानभूषनबहुमोलें ॥ राग भैरव भजन ॥

रा०म०
१०३

साविहीनप्रानरामनामजपतें ॥ मंगलमदितउदिनहोनक
मलकछलकपतें ॥ किमिवाफतनफलरसालवबुरवीजवतें
पमोंईजामनजातगालगुलगपतें ॥ कालकर्मगुणसुभा
वसमकेसीसतपतें ॥ रामनाममहिमाकीचरचाछलक
वनें ॥ साधनाविनासिद्धविकलसकललोकवकतें ॥
पावनहोननामलेनवलसीसोग्रपते ॥ रागभैरवभजन

१७२३

भजन० २

तविगानिकरमथुरमकरकरिप्रतीनम्हनोथनप्रानजीव
नथनमेरेतेवारे ॥ मनङ्कवेदवेदिमनवदनम्हनमागाथा
दिविरदवंधुनाकेजैजैतिकोटभारे ॥ म्हनतवचनप्रियर
मालजागेप्रतिशिवघालभागेजेजालविप्रलडविकदेव
नारे ॥ तलसिदामप्रतिप्रनेनिरविकेम्हवारबिदकूटे
भ्रमफेदपरमडविह्नदटारे ॥ राग भैरव भजन। केते

रा॰स॰
१७४

नाचाहोनेरीठानिग्रोदोलननाचाङ्गेनेरीमायाहे ॥ जायोले

ग्रावोबालककुंमैदरशनकंग्रायाहे ॥ लेवालकनिकसी

नेदरशनीशुभदरशनपाहे ॥ पांचवेरणरिकर्माकरकेसिं

गीनादवजायाहे ॥ देवकिनंदनकेसानिकंदननेदकेला

लकहायाहे ॥ सूरदासप्रभुतमेरेदर्सकुंजस्समतपलने

फलायाहे ॥ राग भैरव नित्यकीर्तन ॥ चलग्रागग्रके

देविरीएकवालाजोगीमेरेद्वारेआयाहे ॥ दिगंबरउठेउ

रवाजेवरसीसनागलपटायाहे ॥ माथेउनकेतिलकचं

द्रमाजोगीजटाबढायाहे ॥ माथेउनकेतिकचंद्रमाजो

गिजटाबढायाहे ॥ भीतरतेनिकसीनंदनारीमोतिअन

थालभरायाहे ॥ भितालेद्रजावोआसनकेबालकमेरा

उरायाहे ॥ भितालेद्रजावोआसनकेबालकमेराउरायाहे

रा॰म॰
१२५

वनी ॥ गंगाजमुनाजाटवेथेहैंपानककीदलमलकरनी।

तुलसिदासप्रभुतमेरेमिलनकैकोटिजन्मकिभवहरनी

राग भैरव भजन ॥ शोभामदनवदनदोउदेखे ॥ नैन

मोहनीसैनटगोरीगुनप्रवीनरागनटभेखे ॥ आलस

अंगअंगनिशिजागेवरेविनोदअपारविषेखे ॥ भूषण

वसनमनिनहारावलिललितनैनकाजरछविरेषे ॥

1755

वरदरसनत्रिवेनीपातकहरनी ॥ सुरनरमुनिसमभग्रा
गहींआपमानुषतनतदरसनपापमातपिताकीब्रह्मकी
देषसमकवलेआपनकरनी ॥ प्रागराजपैकरमाकर
केभारद्वाजजीकुंदेसाविकहूंअस्नानदानकछुदेके।
माथेंजीसैंकरमरनी ॥ गंगायमुनासरस्वतीपतीनेंस
गमभईसूरयपुराणभागवतगीताइतनीमहिमाशिव

रा॰स॰
१२६

ज्ञानभानउगेयोजीवजैंतमभीजगेकमलनमुखखोल्योमध्रु

पगेजमनमघाई ॥ तिमरगयोरजनीकोछायोजगमैंप्र

काशचारोदिशासुनियतधुनमैंगलमचटाई ॥ उठवैठैप्रे

मजानरामलालगुननियानजनखुशाललागोध्याननवर

ननचितला ॥ राग भैरव भजन ॥ जगनमैंआयकेएसे

भुलापैसेभुलाए ॥ अपनारूपआपनहिंचीह्ना अपनी

1278

भजन॰ ५

रागभैरव भजन आवतकुंजननेपिय्यारी ॥ अतरसभरेऊ

नींदैनैनाह्रपरासमह्ककमारी ॥ भूषनवसनअंगअंगराज

नछ्ववनमालअपारी ॥ रसिकाव्रुशालकनरसवर्षत

राधेकुंजविहारी ॥ रागभैरव भजन । जागिएदसरथ

कुमारसेननसषदाई ॥ ह्रथिलीजीएह्रूपाकीजेअपना

जानरसरीफेराजामहोराजागुनगाहकगुनदाई ॥ भयो

रा॰स॰

१२२

बिलैंलबिहमारीठौर ॥ रागभैरव भजन ॥ नीलकंठ

गिरिजापतिशंकरशशिशेषरहरनवशरणा ॥ हंडमा॰

लश्मसाननिवासीभक्तजननकेप्रभुसरणा ॥ व्याघ्रांव

रवृषवाहनससिधरभूषणशिरगंगाधरणा ॥ कैलासाव

लअचलनिवासीभस्मअंगकरुणाकरणा ॥ चंद्रहास

शशिचंद्रमापिनाकीत्रिशूलपानिडौहवरणा ॥ राजन

भजन॰ ६

मायामेतमअ्रापिनचाए ॥ खानपानमैंमनचितराषेंहर

नत्रियारसमेम्रटकाए ॥ संगतछाडअ्रसंगतबैठेहरिमें

भजनकरारकरअ्रए ॥ भटकफिरोलोकतोनोमेहरी

सोंकबहूंनेहनलाए ॥ रसिकाव्रशालमिलेंगेजब

हींनिसदिनरहोध्यानहिएलाए ॥ रागभैरव भजन

भोरभएजागिएनंदकिशोर ॥ गोपिग्वालकहतमुष

रा॰ म॰
१२८

1278

लकीपरणाम ॥ अजनारदमनिसनकशेषशिवभुव।

प्रहलादजपतहरिनाम ॥ हनुमानशुकमौनकवहू।

भपुंडरीकसकपुरसुरनाम ॥ तुलसीकबीरनन्दासिंहन

रैप्रबप्रेमरंगनावनपरनाम ॥ राग भैरव भजन ॥

जैएवमहादेवसजमहानंदनभेटिए ॥ निरषएमविकम

लकीतविरहनापभेटिए ॥ सुंदरमविद्गुपसथालोचन

भजन ०

त्वत्वनमत्वत्कृतमत्वनेदंमिंसगीसगस्त्राचरणा ॥ भोगस्त्र

फीमस्त्राकथन्तूराग्रमलात्वायस्त्रानेदंमरना ॥ काशिना

थग्रभुपसुपतिमेरेग्रेमरंगग्रभुतवशारणा ॥ रागभेर

व भजन ॥ परब्रलऊँकारनरायणपद्मनाभमयुस्हद

नराम ॥ मीनकूर्मश्रीजज्ञपुरुषग्रभुनरहरिवामनभा

र्गवराम ॥ श्रीरामचंद्रश्रीकृस्नचंद्रग्रभजगन्नायक

रा॰म॰
१८५

छिनछिनपलकोटिकलपबितनप्रतिभारी ॥ परमानं
दकलपदीननउबिहारी ॥ राग भैरव भजन ॥ विल
लितकरपल्लवमृदुबैनहरषितबङ्गतप्रावनयेनु ॥ को
टिमदनघुतिषणामशरीर ॥ बिपनीकलपतरुजमुनाती
र ॥ दलगणवर्णावर्णापरयरे ॥ वामश्रेंकुंडलमुखले
वरुहबेदवनयानश्रवाल ॥ मनिमुक्तागुंजाफलमाल

भजन० ८

पुट्टपीजिए ॥ लेपटलावनिमिषरेहतअचयअचजीजि

ए ॥ नषशिषस्टअंगअंगकोमलकरपरसीजिए ॥

अरुअनन्यभावसोंभजमनक्रमवसरसीजिए ॥ रासहा

सभावविलासलीलासुषपाईए ॥ भक्तनेकेप्रयसहि

तरसनिधिअवगाहिए ॥ इहअभिलाषअंगनरगतआ

ननायप्रहिए ॥ सागरकरुणाउद्योतविवियनापहरीए

रा॰ स॰
२८।

180

तउठोकह्लाई ॥ प्रयटोनतरनीकरनिगनछाईग्रावङ्क
वेद्धवदनदिषराई ॥ वारवारजनविलजाईसवोह्ना
रमभतमहिवुलावनतमकारनहमथापग्रावन ॥ सू
रप्रणामउठिदरशनदीनोमानादेषसदितमनकीनो
रागभैरवभजन॰ ॥ जागोह्रजराक्कमरकमलक्कसम
फूलें ॥ क्कमदनिमवमक्कचरहीमंगलनाफूलें ॥ त

भजन० ५

देखिनवलइस्यामनेदलाल ॥ ललिनत्रिभंगिमदनगो
पाल ॥ तोहिध्यानलागेप्रमजनीरीवारकहहपरेमन
मोहनदेखियतबिजलिखिमीठाढी ॥ मदनसिंधुजल
बुंदनसोहपनियानकमललोचनसैनाहिमिलेंग्राजा
किरजनी ॥ कुमदामपप्रभगोवर्धनधररसिकयुव
तिउरविहरनी ॥ राग भैरव भजन ॥ जननीजगाव

(8)

भ्रममानभानकमलिनसुषदाई ॥ सिंगिसमभूरेवैनत्नमवि
नानाछूटेयेनउठेलालनजोमेजसेदरवराई ॥ सुवेते
पटहूरकीयोजसुयाकोदरसदियोउँरदथीसभमोगालि
जोविवियरसमिटाई ॥ जेवतदौऊरामघपामसलमेगल
गुणनिधानप्यारमेकछ्ज्ञूटरहीसोमानदासपाई ॥
राग भैरव भजन ॥ श्रीकृष्णजीकोध्यानमेरेनिसदिना

मचरखगमोरमोरबोलतबनराई ॥ रंभतगौमधुरनादब॰

छरामेंगयाई ॥ विधुमलिनरविप्रकाशगावतनरनारी

श्रीगुपालऊठेअंबुजकरधारी ॥ राग भैरव भजन ॥

जागिएगोपाललालजननीबलजाई ॥ उठोतातभयो

प्रातरजनीकोतिमरगयोप्रघटेसभग्वालबालमोहना

कन्हाई ॥ उठोमेरेआनंदकेंदगगनचंदमंदप्रघटो

गा॰म॰
१८२

भमनिपीतांबरचटकनामैंदामिनिद्युतिपाई ॥ बाजुवेंद

श्रृंगारिमैंदरिगनकोअतिविनकारअरुणाअधरमधुरस्वर

मुरलीवजाई ॥ कमलनैनविमलक्रांतकुंडलअतिबिंब

होंतआनेदसोंमुखमानोंरस्योमुसिकाई ॥ श्रृंगारवारी

अलककफलककिणवेंदवोरग्रौरमुकटमीमथरेंवनीमे

दरताई ॥ कहेभगवानहितरामरायप्रभुकोनिहारआ

भजन नं॰ ११

रिमाई ॥ मनकेमहेलप्रीतकोजनामेजडवाई ॥ सोवरे

वदनकोमलचरणनाविदेविंचाविवोंपिहोतपायनूपरवें

जनिमोविथनेबनाई ॥ दाहनेपदपद्मतातेंटेढेथवन

आलीरीएमेचरणाडषहरणाहेंमदाश्रविदाई ॥ लाल

इजारनाकेविचनकेनावलगेकाछनिपचरेंतापरकिं

कनीछविछाई ॥ वनमालमकमालकंठमध्यकोस्तु

रा॰म॰
१८३

श्रीवल्लभप्रभुचरणकृपातेगिरधरजैहजसगावोरे ॥

राग भैरव भजन । नारदमुनिआपतिनरोकेशिवसमी

पहुतपाप ॥ कुशलपूछ्समनमनिहंमबोलेकिनवाल

कउपजाप ॥ उमयाद्वाररोकनकोंबैठेघ्यरमेजानन॰

पाप ॥ तबपूछनकोंआयोद्वंमेप्रभुचरजनमेसुनाप ॥

तजसमाधशिवमेंदिरआयेअंनरजाननपाप ॥ पकड

भजन॰ १२

स्वश्रीगोपालश्रीगोपालरमनारटलाई ॥ राग भैरव भज·

जगन्नाथबलिभद्रसुभद्राचरणकमलचितलावोरे ॥ श्री

सुदर्शनलक्ष्मिसत्यभामारत्नसिंहासनशिरनावोरे ॥

गरुडस्तंभकिप्रदक्षिनलीलाछपनभोगक्रुथ्यावोरे ॥ प

तितपावनचरणामृतलेकेपरिक्रमादेखावोरे ॥ पुरुषो

त्तमक्षत्रः पुरीकोयेहीवसबोबडभागनजिनपावोरे ॥

ग.म.
१८४

कोकैमेंश्रावनपाप ॥ कहैंशंकरहमसीमउडायोरोक

तलडतजोवाला ॥ कन्याभागगाईमनभावमैंश्रवला

जाननवाला ॥ उमयाकहनकहानमकीनोमेरजतें

उपजाया ॥ वालजिपविनश्रानजोगीरोवतश्रोसुव.

हाया ॥ गुनकेशिरलावनकेपठपभवमेंडलनहि

पाया ॥ पुनिकहीवीरमीमकेल्यावोदिगाजखतशि

184

जटाबाहरकोविचेवाङ्ज्जन्दमचाए ॥ पितापुत्रदैदोऊवा

रेहुछेवलनहिंकोऊअथिकाए ॥ सगुननिर्गुनदैदोऊ

ब्रह्ममभरमैंनिर्गुणअधिकउषनाए ॥ त्रिगुनात्मकत्रि

मूलवलायोसगुणव्रह्माशिरछेदाए ॥ जायपटाशा॰

शिमेंडल मैंकन्याभागीरथेंदाय ॥ उमयानाथनिहा

रलाजकेकेषानअंगाछिपाए ॥ मैराषेदोऊवालरोकन

गा॰ म॰
१८५

रामनवेघमृग्याजगतकाकल्पनारे ॥ चंद्रमाकीहितबाल

कृसलगुविम्राविरजगाकोमपनारे ॥ रागभैरव भजन

वीराफेंटाजरामज केनाकवुलाकग्रथरनमरलीछ

टकी ॥ मंदमंदमुश्राकातकेहैयाकुंडलफलकचपला

सीचटकी ॥ समतनमाछेमजेश्राभूषनकटऊपरज

लफेलटकी ॥ चरनदाससषदेवकहेतहैंवितवोहट

मटकीपटकी ॥ इतिभजनप्रत्ययः ॥

मजन०१५

रलाया ॥ परमतहाथगजाननवोलेत्नमाम्रभमोहेकी

जे ॥ म्रनजानेम्रपराधतजरीमककूवरदीजे ॥ हमव

रदानदिएगणपतकरिम्रापएरवपूजवाए ॥ प्रेमरंग

म्रम्रगननायककेस्वरनरम्रनिजसगाए ॥ रागभैरव

भजन । हरिहरिहरिहरिजपनारे ॥ जबलगम्रानेरे

हतघटभीतरतवलगसमभजगम्रपनारे ॥ मातपितादा

भा·म·
१८६

186

वनमालीसौंभागवतरूपीकलपतरवरहै १ प्रथम
हीमंगलाचरणव्यासकियोवंदसनजीसौंसौनका
दिसंवादरससौंभर्योहै ॥ उत्तरमैंप्रवतारवेदव्यास
कौंसेनापनारदमिलापनिजप्रलापउचर्योहै ॥ भा
गवतकरशुकदेवकोंपढायउजेनीविनयभीसममसन
नपरीक्षतजन्मथर्योहै ॥ कलियुगदंडयामैंमनिश्चा

श्रीभागवतसार। रागभैरव॥ चौताल॥ कवित।
भक्तकेध्यानमेरैमेउलहेहैंचंदकहैंजाकेद्वादसगो
दडौंकारजरहेहैं॥ तिनमेंवतीसजाकोसाखादशो
दिशांनमैंज्ञानवैरागदृहुंखगनकोंखरहेहैं॥ पातनत्र
तारहेहैंफराजाकीछनछायारहिनाकिछाहवैठज
मनेजकौंनडरहेहैं॥ ब्रह्मजलसींचकेबढायोमाली

ग·स·
१८७

187

भागवतनें ननदरसायोहै ३ त्रतीयमें विदुरजग्रह छोड
वनगए उद्धव मिलेहैं तिन प्रभुलीला गाईहै ॥ तिनिमैत्रमि
ले प्रश्नोत्तरस किले ब्रह्माजुसोंनानासृष्टरचना बढाईहै।
वाराह अवतार धार हरनाकुसमार पृथ्वी लाएहैं वेदमानौ
करी कर्दम सगाईहै ॥ कपिल देव प्रगटकै ज्ञान वैराग्य भ
क्तियोग कहिमाताको उरमन दृढाईहै ४ चतुर्थमें स्वा

पग्रहण्याराणंगानदाजायस्त्रविजीनेप्रस्नकरयोहै ॥२॥
प्रथमेंअनराजाएकीजनकैकहाइनीयलोकसृष्टज्ञैने
सेयहरणायोहै ॥ अस्थलरूपमैसवलोकवंददेवादिकस
होमकनकमन्नकमेघसरसायोहै ॥ उनसेसबस्वविनार
रवस्यासंवादकसोअनेनपरमभेदकरनीकेसमझायोहै
स्वायंभूकेनपहीसोंसवलोकजेदिखायोनाथवनरस्मोकी

रा॰स॰
१८८

188

जीकेनीकेचरित्रबखानेहैं ॥ आगेसमअभिमानऔरनछुवन

कीगतिकहिविभूषनकोंनरकबहोविधिदरसानेहैं ॥

भक्तजननजानैंजाप्रजानेचंदकाहूंभौनमरमश्रवनापजसरह

नलभानेहैं ॥ षष्ठमभैअजामेलहूसेनामनारेदरसनस

सहायग्रहनजबनगयोहै ॥ रैदअभिमानसवरग्रहकोकि

योहैसुकअम्बरनमिलनाकोंलोकछीनलयोहै ॥ नव

ऐभ्रमनकीसनाकौंवेशश्रनदक्षकोयज्ञकोध्वंसविलासोहै ॥ अवकीतिमानश्रानसुयोंनावजानवांनकालसीमवधिविमानपलेउथासोहै ॥ हनुकोवरित्रसोनोपरमपवित्रचंदवसुथाकोउहिसवजगतश्रनियासोहै ॥ श्रावीनविरहसोअंजनकीकथाकहिनावदजीकरगहभक्तमगाउसोहै ५ पंचमेप्रियव्रतजीकीसववानेश्रीरिषभदेव

रा॰म॰
१८५

राजानेप्रल्हादउनरकवधकौंविचारोहै ॥ कृमलचेंदमदा
गहरहेसबकाजकरेआपकोभागमेनगारकोनिहारोहै
७॥ प्रहमभेवरदेमननामैगजग्राहमोक्तसिंचमपथसा
रकाफकलमोहनीभए॥ करनकोंसुधापाईवानभई
मनभाईविषपियोशिवनीलकंटवसौंब्ह्मए॥ सुक्र
जीकीसेवाकरिस्वर्गराजकियोवलिवामनकैछलेन

विश्वरूपनारायणकवचदेदधिचिऋषवज्रअस्त्रदेवडिफिनादि

करिदियोहै ॥ वृत्रासुरमारापिवत्रकेनकौंउवारोसोकहर

कोंप्रनामचंद्रलोकतनमेंहयोहै ६ सममममेंप्रियिव्रतनारद

संवादकह्योहिरण्यकशिपश्रीनृसिंहजीनेमारोहै ॥

प्रह्लादकोंचरित्रप्रल्हादकरिगायोमयरच्योजोत्रिपुरशि

वजीनेभेदउगोरोहै ॥ नृपवरआश्रमकेधर्मप्रकेमनिकहै

टहोयनीकेनेकक्षसभभकंकरैनाइआधुनयोदयोहै ८ ॥दश
ममैनृपनपरिछ्नतनैप्रछोवंइसूर्यवंशकेनीकोभेदसबकेस
मझायकै ॥ नदायइजलमांहश्रेशष्नकेमेप्रगटेक्ष्मकी
कथामैममनरस्योललचाईकै ॥ नवसुघाचारीयस्यामसुंद
रकौध्यानधर्योपरमक्षवीलोगायोरोमरोमक्षायकै ॥ फि
रसूपसागरनै निकमश्रारंभकियोसकलसमाजदियोछि

वंईद्रस्वर्गमैंगए ॥ भगवानजीकोमनरूपकैदिखाई
मायावेदहिनहरीकेचरित्रहैनएनए ८ नवममैंपेलेह्र।
येवंशकोवरननहैनामैंअंवरीषमहाभागवतभयोहै ॥
औरहहुवतमानअनेकराजापैतिनकेकुनारथ्यकोंश्रीराम
जन्मलयोहै ॥ जिनकेचरित्रवड़कहाकहेंअल्पबुधय
वंवंदवंशओरविनमेरोगयोहै ॥ नहोयउजलमोहभग

रा॰स॰
१५२

191

गोपशुनिआनंदवढायोहै ॥ सानतिलपर्वतनखवरनन

ननशुनगाउदीपगजअश्वरथपारनहींपायोहै ॥ वेदके

विधाननतेनगोनपकवानदानवस्त्रवधाईब्रजमहामो

दछायोहै ॥ विधशिवइंद्रसनकादिकऔरनारदपआए

ब्रजचंदगदसीसपैपधरायोहै १२ पूतनाकोंमारसकटास

रउथारकरजनावरनगारोचोटछिनमेंमारोहै ॥ गगीवा

नमैंकृकायकै १० अमरनभारभूमगाजरूपयावराईब्रह्मा

नमोंकस्योवलेदेवगनसंगलै ॥ क्षीरकेसमुद्रजायथ्यानरु

रिकोंलगायनभवानीभईमैमवनरौमंगलै ॥ सोईवानीरुक

रुदेवचलेवेदआपवसुदेवशेकामरुकमगवनरंगलै ॥ नरु

नैंपयारेनंदभवनआनंदरूपसवगोपगोपीनविलापहैउ

कंगलै ॥ नंदजीश्रीकृस्नजन्मउत्सवकियोहैमहागोपी

ग.स.
१२५२
192

नमध्यभोजनकौंभलै ॥ वछराजैवरह्रौनिन्हैंवल्लाले
गयोनातैंवनफूंफद्मापपापनहींवायलै ॥ नववछवा
लसवलालह्रीप्रगटभएगोपीगापकेनोमिल्योस्वंदरयह
फलै १४ यहलीलादेखिब्रह्मावदननमैंआनंदपरोअस्तुन
तमाकरायगयोसमलोककौं ॥ पयोगंउवहींमोकगाय
वनचरायलावैवाललीलाकेअनेकख्यालखेलआवैओक

येछिपद्दीकेनामकरणानीकोकियोदामोदररूपनैंजस
लाजेंनडारीहै ॥ हेंदावनआयवक्षरोंनकोचरावनसाख
रपायगहेउरवकासुरनारीहै ॥ बालकनसंगग्वालकर
नविचित्रलालग्रवासुरमोतकैविरदशनपारीहै १३ रान
हीमैवासरवासवनिकरीशनवनमांहक्षाकक्षीकनमैले
वले ॥ भोरसववाहीभांनवक्षनकेग्रागेचरावनकोउलि

रा.स.
१५३

193

रक्षाकरीनेजदावसौंगोपग्वलाखिजानब्रह्मकेउग्रत्ता
नदेनलोकहुदेखायेपैनभायेब्रजभावसौं १६ सरदकीरैन
भलीफूलीसरखदेनदेखिवैनकोवजायहूकभानकेबुलाई
हैं ॥ सुनननहीधुनधामकामसबछांडिदौपड़िनिजिनक
मैंआयमिलीधीनसरसाईहै ॥ तिनसौंज्यौंकहिवातेंनेनोना
हौंलिगविजायरासमिलगानगर्भलगिविछुटकाइहै ॥ विर

कौं ॥ कालीकौंनिकारदावानलकरपांनप्रलैवासुरमारव्र
जजनहर्‍योसोककौं ॥ वैनकोवजायगायवछनकोमोहवं
दब्रजमाहआयसववेदेननिजधोककौं ५ गोपीकुलसहेतदेवी
हजीनहेंआयआपवारहरिवरदेपधारेवनचावसौ ॥ तथा
लगीसवबनकौंमखुआपछायदपनावेविप्रतिनपतनीभातला
ईभावसौं ॥ इंद्रजगपैमेटोनानैंकोपकरवरसाकरीगोवर्द्धनथा

ह्योराजाकंसनेबुलाएहैं ॥ ठेशीकेपिनटगोपीओठेइरव
रसवडीभोरगाजजोरसवगोपमिलथाइहैं ॥ रजकके
डारवस्त्रथारजवजासंभारजवलियापीरयमलोकको
पठाएहैं १९ उग्रसेनराजदीनौंनंदजीकोविदाकिनौय
ज्ञोपवीतलीनौंअवंतीगुरुकेगए ॥ चौंषटहीदिननमेंवि
द्याकलासबसिखगुरुदक्षनामेंमतनकप्रलायकेदए ॥

हृविललाईहृपदेरखसचपाइनिनकोरिमनभाईप्रानच्चर
कौंपटाइहै ९७ ग्रवकाकेवनमोहनंदपायलग्योभ्रावोसर्ब
कौंछोडायघुनमेंरवहेउमारोहै ॥ वेसीकोवजायथिरचर
मोदउपजायवृधामहरसिंगडारवारिकरडारीहै ॥ जोगोपभे
षधारयोमामहरसवसरवनकौंकेदरामैंरोकेनहांमारजस
पारीहै ९८ हृसवलदेवलैनग्रापग्रहरभक्तनंदजीसोक

रमाररा‌जकन्यामनभाएहै ॥ न्यारेन्यारेमहलमैंवहलपह
लमचीरहेअबअबअबभएतेनोजाननहींगाएहै ॥ २१ ॥ मि
थ्यावासदेववनउनअभनपासभेजोवाहेमारगानदईभ
कवडभाएहै ॥ नारदकेमेंदिवोआदिअसुरसेभारेमक
नअनअतिपालकारजनीकेकराएहै ॥ सथामाकेवरए
भवायचामरववायभोजनकरायडरवदादिदवहायहै ॥

उथवकोकलवोजानगोपीनकेसमाधानव्रजमैंपठाए ।। न
हांप्रेमरंगमैंरूपप्रकारथरजायहस्तनाउरकोंभेजपोउव
कहांहैयहैनिश्चैसोचकेलए ५ केसपतनीगाईजगासिंथ
कोंवपठायभेजोनाहिसवैवारजीनवहोयनलाएहै ।। श्र
टारहीवेरकालयमनसेंभाजमवचकेंदभक्तसाजहारिका
केरचाएहै ।। रुकमनिश्राद्विशाटव्याहिपटरानीभीमाह

190

ग्रतवाहिकौंजसोयाकीगोदवैठरामकृलसूतवदियोगोपिन

कौंसमाधानकियोउवलापके ॥ भक्तसुतनदीलासङ्केचवजा

एकतिनसहनभक्तदईवहोभाईके ॥ सुतनकीयुक्तनकहिम

राजीकीलानसहिपसोग्रोरकौंनजाकीसरनलीजैजायके २२

इतिकविताध्यायसमाप्तम् ॥

रा॰स॰ रागभैरव ॥ अथपानशाहीकिअवपद चौतारा ॥ भोरही
१५७
भैरवरागअलापसुनायोनीकीनीकीनीकीतोन ॥ खरज

रिषभ गंधार मध्यम पंचम धैवत निषाद सप्तसुरगोन ॥ उ

रपनिरपलागडाटदेशीमारगा दिखाय ग्रेमग्यामञातिमू

र्छीन ॥ तोनसेन कहे सुनों शाहअकबर प्रथमही मुरली

धरप्रमोन ॥ रागभैरव पानशाही ॥ तिताग ॥ इनमोन

उनसाहअकबरदोदसमज्योंदेविसोईहोतपवित्रशेद श्रेरज

रा॰म॰
१५८

नैरोज होत फन अष्टदिशा पाललास करत फन देशन के नरे
श आप वरन परसन कौं ॥ दशों दिशा के गनीमन मिल मा
नलपते रानलप छरपत भूअपत आनंद भयो मन हरषन कौं॰
वडेजीय सहस्र सरसना को सेनान सहन अथीपत नरको नर
शाहजहां जहांलो रवि ससिन भरहे औरव सुथा वरसदा वरस
दिन दिन वरसन कौं ॥ राग भैरव ॥ पातशाही निसारा ॥

नर्मद स्त्रवनके वरषावे गुपन आनंद ॥ वेतिमिर हरन पडु

रव भंजनता कि सेंहे करीयन सभे हृदिनैं मकरंद ॥ वह्म स

हंस किरन प्रकास कीनो अतिद्रुय श्रेष्ट मया पर जगवंद ॥

नोन सैन करे कहे लो अस्तुत करे कादन हार विकार दु

खडंद ॥ राग भैरव ॥ पातसाही ॥ तिताला ॥ विराज सिं

घासन वैठे गाजे जगजीवन सकल दरसनकौ ॥ रोजरोज

साह मरदान जाको अपबल दियो पहो अपबल दियो ॥ सवा
पन सग्राम साई सिरमोर पोल सिर सिंगी साई पान साहकि
पवडाई चारों चक सनि सदाई नेरी है वडाई जगपर कियो
कर सिमर सूर धरनेरे ऊलहोने आपनि सिर लिये अमरवा
बरहमी उद्दीन दार जाके शाह अकवर ताके शाहजहांगीर
नरपति नरनावराने लागे डरन मोन हीन अधार करन राज

सकलजगतनकीइछ्याकरनकौं विधानापकनोहेकियो ॥
अनसमाधानसववियकोज्ञानसरज्ञानाध्यानतानें शाहज
होसिरछत्रदियो ॥ अपवलभुजवलदल वलकरकेभूम
लोकलियो ॥ चिरजीरहोसाहसाहीवकिरानसो दिलीपत
विरंचरच्योनवियो ॥ राग भैरव ॥ पानशाही ॥ कटछा ॥
तिताग ॥ पजहांगीरको शाहजहांजिनजगपरकियोकर

रा॰स॰
२००

यह नाथ पजाय ग्रहसिह नव निध पाइये । परम दाता ज्ञा
ना सबही को मन रंजन यह डुख भंजन कल्प वृक्ष प्रतक्ष
पाइये ॥ अंतरजामी स्वामी जग काज करवे को परम नाल
वलाइये ॥ जलालदीन महम्मद पसे दाता किपतिहू लो
क मे जश गाइये ॥ राग भैरव ॥ पानशाही ॥ चौताल ॥
मोहन का मन उनम रूप पहरन सवार चीर श्रोप वप्फाय

तेजकाय कदायम ऊनव अरव ॥ रागभैरव ॥ षानशाही

चौतारा ॥ शुभ नछत्र नाषेन बैठो राजन क्काजनहै सब म

लक षलक नजे विधन ॥ किप सब छत्र धरैने सबलागे

सब सेवाकरन ॥ धन धन चक्र व्रत नरेश अकबर उरवेह

रन ॥ तानसेन पसो सरी झरो नर नरेंद्र नरन ॥ राग भैरव

षानशाही ॥ चौतारा ॥ अकबर साम नाथ अनाथनकों

रा-म-
२-१

लकर करकमल वाज्र वेथ फ़ंद नलद कलटक अलि जग

सेग ॥ राम किरन उपज्यो नबल विचित्र केउ की मधु अ

नेग अथर संदर जवली नेरे वादरनन झनन रनन अमरत

नाभ औरि मलाप पीलारस लेत अनजात नोन सैनन के अ

पार अकवर सौं वनरहे जैसे पारवती महादेव अरथंग ॥

राग भैरव पातशाही । जप ॥ अश्वपति गजपति नरप

ऊँदनग्रेग ॥ टिके को कियो प्रदोत नाते तिमिर फटो

शरन परे पाछे सीस फूल ध्रुव समान श्रवण ऊँडल क

वरी चक्र कदाह आपजोत नवनरही दोउ अनंग ॥ हग

अंजन दिए खंजन वसकर लिए कर लिए कर दर्पन हा

र सवे देन सबे पैये अन निरखे उउ जात य वरमन गुनी

गावे मान करीरा कपोल मकलर मकमाल मज विना

रा.स.
२०२

रीझीननमसमनलागी ॥ नींदकेमानेशाहआलमखबरजन

बागावनवासगरीरैनरंगरसपागी ॥ राग भैरव पातशाही

करीमरहीमबंदेनिवाज पाक परवरदिगार ॥ जिनदेहुं

तिनतेंहीतेंहीभरहेतेरीकुदरनकौं कोउनपावैराजनि

याज ॥ राग भैरव पातशाही ॥ एकपल छिनकवहेंन

बिसरैमाईलालननिनैनननआगेठाढेरहे ॥ श्रवणनसुनन

नि भुवपति चकतावली चकतारन ॥ दारिद्र हरन दिनम

णि महराज शशि उडगन भुजवल भीम दुवनेरी आसदानसमा

न कलीकरन ॥ राजसाजके नवसमान इंद्र भंडारी कुवेर

आयो नवशरन ॥ अपवल वली अचल रहो जलालदीन अ

कवरशाह जोलौं नौलो नाम भु अधरन ॥ राग भैरव । पात

शाही निनारा ॥ अवतम जागो कौंन मीन पियर ब्राहम

रा॰ सं॰
२-३
203

कहेकेवकेदतेहमाऊकोनंदनकल्यहल अकबर पारख

पाए ॥ रागभैरव पातशाही चौताल ॥ प्यारनको बिछु

वा सहज नहीहोभई हमारे दरस बिनमानो बिनमीन नीर-

हिए धरतनधीर औसकरत भीर रोके नाहीजाय एतो ग

हरगंभीर ॥ च्यारदिननमैजायवहै देशमैनेग विजयवे

गमिलोगे आयवीरजबदास आलमगीर ॥ होनोच्यारद

© Dharmarth Trust. Digitized By eGangotri

वनरसउपज्योमोमनग्रागेमदारंगीले महम्मदशाहकेहेसो
वेदीकेर ॥ राग भैरव पातशाही चौताल ॥ केते रत्नज
गतमैं उते प्रगट किए प्रथम कामधेन सर विषने वनाए ॥
क्रन कीनें विष वारुनी अमी औ लक्षा करवारो रवांन खिरावो
नी परवाजीर विरचनें पाए ॥ यन्त्र थ थनेनर छरन मरन गा
ज श्रीमगिरि रंभाकूद थाहप्रपद गायन लेवसाए । तानसेन

रा॰मं॰
२०४

२०

प्रेंगा प्रेंगा लाए ॥ मेनसारी प्रइप माल वोली सन हडीवोर

गोरे मुक्त माल मुहाए ॥ सीस फूल श्रवणानी टंक भज वाज

बंद फंद मुहाए ॥ नथ वेसर मुधार कनक किंकनी छुद्र

घंटिका नूपुर विछुवा नको धुनीजे हरी मुनाए ॥ छ्रास

जीवन लक्ष्मी रामके प्रभको रसवस करनेननसीं लुभाए ।

राग भैरव ॥ पानधाही चौताग ॥ नखन वैठी जमन

याको राज जिनो तिहारे काजपर आवै वधसीस नेरी नाजरा

हे नो नमारे मानो वजीर ॥ राग भैरव पानशाही चौताल

पानउदचली प्यारे पै आपही मनावन कौंन वसन सिंगार

कीए वारे आभूषण पहिरे वनाए ॥ प्रथम मंजन असनान

कर अंजन दशनवीरी अधरपान सिंदूर भरे भागके सरक

रकराए ॥ जावक पावन हाथमैहदी शाह अकबर सुगंध

रा·स·
२·४

208

प्रथम अल्लाहो अकबर कहोरे नमभेरे मन हूजे रसूल चित
धरेरे ॥ बैहून वेखु गनवे खवेवैव मन परद पोशदाना वि
नापाक जातवाही ऊंयार करेरे ॥ पमोश्रालिम करीम क
रमको करन हारजो रुपनिन लेतनेरी निशवासररे ॥
हिदायत अजजकौ दीजे मेनन सेपन दीन उनी ऊशालहे
मनिहारे नामको आधाररे ॥ राग भैरव पानशाही मिता·

कीनौ साहसक वेथ पंडित त्रवी विचार अवल राज पायो॰
कनक दंड चवर छत्र रतन जटित जगमगात सुरनर मुनि
गुनि गंधर्व गायो म्रदंग बजाय इंद्रलोक देखन आयो ॥
पसमै जो वकमराज मका नरंग देन अरब खरब जैसे मेघ
झरलायो ॥ चिर चिरजीरहो जलालदीन अकबर च
डंवक सीस निवायो ॥ राग भैरव पातशाही ॥ ॥

रा.स.

२९

70

माई काहे कें कहौ अवही ज्यों मोहे जिनवर जो लाल ननको
री चितवौ ॥ मनमोहन प्रानेस्वर की छवि री जन प्रत मत
गत लथ त्रुप बिसारी सब अजहूं भलजै हेरी मोहे सिख देवो।
लगन सो फलना की कहा काहि परी अब लोगन सेंदर सखि
भयो प्रेम बीज को बोहवो ॥ परमकवि कह्यो शाहजहां ति
नको पंचसर ऊंनें सरस अपबस करके मनगत मन हर लेवो॥

रा॰सं॰
२४९

250

ह्रभावै ॥ वानकहैजुसदानिबहैहरिकोऊकहूंकछूसाथ

नपावै ॥ आसनवाससुवासनभूषनकेशवकौउद्यसेवन

आवै ॥ मोविनपाननषानजुकान्हसुवैरकियौंयहप्रीतिक

हावै ॥ अथप्रकासअनहूलवरननम् सवैया ॥ केशव

सूधेविलोचनसूधीविलोकनिकैअविलोकैसदाई ॥ सूधी

यबानसनैसनमैंऊकह्विआवसूधीयबानसहाई ॥ सूधीसि

३८

अथ नायक वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अभिमानी त्यागी तरुण केलि कलानि प्रवीन ॥ भव्यक्षमी ॥

सुंदरधनीसुचिरुचिसदाकुलीन ॥ पहुगनकेशवजाहमैं

सोईनायकजान ॥ अनकूलदछनसठधृष्टनिचौविध

ताहिबषान ॥ अथअनकूलवरननम् दोहा ॥ प्रीति

करैनिजनारिसौंपरनारीप्रतिकूल ॥ केशव मनवचकर

मकरिसोकहियेअनकूल ॥ अथप्रछन्नअनकूल ॥

सवैया ॥ ओरकेहासविलासनभावनमाधिनकोयरहसि

दोहा ॥ पैहलौ सो हिय हेत थ्रम सहज वडाई कान ॥ चितचले
हनाचलै दच्छन लच्छन जान यथा कवित ॥ हरि से हित सौं
धरम मूलि हनकी जै मन हौनो कौ हिय हूं ने हेत नहित हानी यै·
लोक मैं भलो कथा निनीके हूं को लागन हैं सीता जू को हत गीन
कै सेउ रथ्यानियै ॥ आचिन जो देषिय न सोई सांची के सोदास
का जनकी हनी सांची कवहूं न मानियै ॥ गोगल की ऊलदा

हासीहयाथरसौंमघहयीलईवहयाकीहयाई ॥ हयेहभाउ

सवैसजनीवसकैसेकियेभतिटेफोचनाई ॥ यथामेरेनोना।

हिनचंचललोचननाहिनकेशववानिसहाई ॥ जानोनमूष

न मेरकेभावनमूलिंडमैनभौरचफाई ॥ भौरेहंनाविनयी

हरिश्रौरमौथैरोकैरइहिभांतिलगाई ॥ रंचकनोवनगईयौं

चिंतनकान्हमयेवसकाहेनैमाई ॥ अथदक्षननाइकलक्षनं

प्रेमतरंगफरैनररफ[?] निरंतर कामकलाकुलकौनगनै ॥ करि
केशव हास विलास सबै अंनियौं[?] सब पै रमनीनि सनै ॥ जिन
को जियमेंरहिजीयजियेसखिकायमनोवचप्रेमघनै[?] ॥ तिनि
नैंककहैंप्रानवधूकेअधीनहैंमानरतीषकियोसपनै ॥ प्रच्छम[?]
ठलक्षने ॥ दोहा ॥ मुहमीठीवातैकहै निपट कपटजि
यजान ॥ जाहिनडरअपराधको सठकर ताहिवषान प्रथ[?]

पयैंहींउलटावतिहैअजलौंनौवैमेईहैकाल्हिकीनजानियै॥

अथप्रकासदर्शनवर्ननम् सवैया॥ चितचोप चितैवेकी

भै सियरै गुरु तैसे ही भांति उरान सुवै॥ गुरु तैसे सदैं कोमल

बोल गुपाल के मोहन है न हि भांति मनै॥ गुन तैसे मई हास सवि

लास सवै उनते जैसे ई केशव कौन गनै॥ सषिनु कहैं आनव

धूके अधीन है सापरनीष कियो मपनै॥ यथा सवैया॥ वहि

ग.मं.

२४५

समानेहै ॥ औरगढकहाकहौमूढहौजजानेजानऔढग

ढकेशवदासनीकेकरिजानेहै ॥ ननग्रानमनग्रानकपदनि

धानकानसाचीकहैमेरोग्रानकाहैकोउरानेहै ॥ वेनीहैवि

कानीहाथमेरेहैंतिहारेहाथतमहूजनाथहाथकौनकेविका

नेहै ॥ अथप्रश्नलक्षन दोहा ॥ लाजनगारीमारकीबांड

दईसवत्रास ॥ देषौदोषनमानईप्रश्नकेशवदास ॥ अथप्रश्न

प्रछन्नसठ सवैया ॥ पंकज चंदन चंदन कंचन रंचन रोचन
हूंकी बची ॥ कहिये कहि कारन कोऊ नै लाइककापरभा
मनि भौंह नची ॥ उनमाननहूं अषियो लषिलालप नाहि
न रातिके रोषरची ॥ ननतैरे विपोगनच्यौ नरुनी निहिमान
ऊंमो हियमालनची ॥ अथप्रकाससठवरननम् कवित ॥
काननकेरंगीरंगनैननके ठेलो संगनासाग्रग्रसनाकेरमहै

रा॰सं॰
२५॰

सवैया ॥ मोहको सोच सकोच पांचको डेलनसाह भयेक रिचोरी ॥ वैनन वेचक नाई रवी रतिनेनन के सेग डेलनडोरी लाजकवै नडेरे हित हानिनें प्रानि घ्रैरजियजानिकैभोरी ॥ नाहिन केशवसाघजिन्हैवकिंग्रसनसौंउघवैवनघकोरी ॥

इति नाइका नाइक समाप्तम् ॥

25

न्यष्ट सवैया ॥ नेहभरैलैलैभाजनभाजनकौनगनैदधि

दूधमहाप् ॥ गारिदयैनेहमैवरजैचराआवनहैंजनबोलिपठा

प ॥ लाजकीओरकहाकहौकेसवजेहनियेनेमवैगनहाप ॥

मामीपियैइनकीमेरीमाईकोहैहरिआटहगोंदअटाप ॥ ॥

अथपरकामहष्टलक्ष दोहा ॥ मनसावाचाकरमना विहस

निविनवनिलेषि ॥ वलनिवानरीआनरीआटोगाठवसेष ॥

रा॰स॰
२५१

निरंकारजाकोसभजगमेंविस्तार। यहश्रुतछंदेखिभयोअतीतताकोंसमरोवारंवार॥ राग भैरव ताल सूलफाक। श्रमउद्दीपनकेमेंहोतकौनरागकौनस्वरतेंआदखिजेगाईऐं। सरेगमपधनीसाससुरनकेभेदभिन्नभिन्नकरकेसमुझाइऐं॥ राग भैरव ताल सूलफाक। रेगज्ञातसोंगायसुनावेतालमूलसुरमेंगतआवै। उगुनतिगुनचौग

25

अथ सूलफाकताल: राग भैरव ताल सूलफाक॰ । मो मैं
जो अवदवदगाए मों कफ के भोर हि आए । एसि काह्म चतुरना
रज हों तुम मर सब मत किए एैसे ने ह्मनाए ॥ राग भैरव ताल ।
सूलफाक । आज कैं आज ग आए पाये मैं तब हीं बात करत हो
नेत नाए । एसी कौन त्रिया में गत मम विर माए अब मलो म॰
नाव ना आए ॥ राग भैरव ताल सूलफाक । एक ॐकार

गा॰ स
२५२

रकरनहरेपापमिटेसकलदुखसंतापलेहेमनउल्लास । तान

सैनसेवाध्यानकवमनइछाफलपावैहोयकैलासनिवास ॥

अथमूलफाकतालदीपणी ॥ नक्किधिकिट नक धिर किट

किट नक दिर धिन धातिं धाधा किट नक गिदि गिन्ना धा।

घेनता। धाट् धाट नकधिरकिट्धिरकट् किट्तकतक

ट्धाट्धातिंनकधिरकिट् नकधिरकट् नकधुमाकिट् न

गुनसौंभेदवजावैजबलागडोंटपरमाननदेषावै । अपनेमष

नैंगुनिकहावैतालम्हलकोंझ्योरोनपावै । तानसैनकहेवैगु

निजनछत्रपतिअकबरकौंरिजावै ॥ राग भैरव ताल सः

होॐकारमहादेवशंकरतुमसकलकलापूरणकरनआस॰

निहचेहियरध्यानसुमरनकरमनदेषतदशानगईत्रास । हेरे

उषछंदसोहतजटागंगाफंडमालसोहेवाघंबरवास । हरह

ग· स·
२५३

253

कथुमकिट्थिकिट् तिकिट् तगथलो यातिं याया। इत्यादि

ग्रथ्यगतभेदः। यीना यिंयिना यीना यिंयीना॥ इत्यादि॥

नरफनतडितममकथानदसनश्रोपवगपंथ्यग्रीरहेयोपोहयगुंद
न ॥ राग भैरव ताल रूपक। हलकिनहलकिनरोवतहे
हरिकहाविंकाई। हौंजोश्रकेलीसीकरपाईवहोतकीश्रय
काई जाकेश्रम्हश्रनतेहातयोवतहैमाई ॥ राग भैरव ताल रू॰
उमडजोवनयनश्रायोहोतासंगदामिनीकोतसोईदसनफल
ककोकलाग्रीवकीलकमानेवैसभयारलेश्राई। छवफको

रागभैरव रूपक ताल । कान्हानैंअबचरकगरोपमारोके

मैंहोयनिरवारो । यहममचेरोकरतहैनेरोरमकोनमेंत्रपढ

ढारो । मुरलीवजांयकीनीममबौरीलादईतजअपनेअने

मेविसारो । नानमैनकेप्रभकहतहीमोंतुमजीनोहमहारो ॥

भैरव राग ताल रूपक । कान्हओलरआयोहोचनजिमवरः

मनलागोरीमिफिमिरमबुंदन । मुरलिकिधुनमोईगरजन

रा॰म॰
२५५

पकतालकीपरण। थिंतग थिंतग् तक तक तक। थीं
कड थिंतक थिंकडथिंतक त्नकिट् तकिट् तकिट्।

धाधाथिन्ना धाथिन्ना किट् तक गिदिगिन्नाधा। इत्यादि

255

रवरमतवड्डेगैरकुचयुरवामेलागततनईहवियवरषाविन
म्राई ॥ राग भैरव ताल रूपक । निसागामपधाधपमगरेसा
नीधपपधनीसारेसानीधपामधनीसाधानिसा । मगरेसा
निधसानिनिधधपमपपामगमगरेसा ॥ राग भैरव ताल
रूपक । एकओंकारनिरंकारजाकोसभजगमेंविस्तार
येहम्रतछ्वदेषमयोप्रनीतनाकोंसमरोवारंवार ॥ प्रयह्र

रा॰स॰
२५६

जोग्रावेसोममपरे। समस्वरतीनग्रामइकीसमूर्छनाबाईसस
रतउनंचासकोटतानभरे। उरपतिरपलागडाटप्रेमन्यास॰
ग्रहस्थानकाबानकस्वरांतकउडवषाडवउचरेरे। कहैवेज्
बावरेमनोहोगोपालयहविद्याअपरंपारगुणचरवासोंलरे॥
रागभैरवतालरूप। एकबलनिरंकारहूजेबलचंद्रसूर्य
तियेबललोकचौथेबलवेदप्रकाश। पंचमबलभूतआत्म॰

अथ झपताल राग भैरव। होउँकार महादेव शंकर तुमसक

लकलाएराकरतम्रास। निसचेहीथरतध्यानसमरनक

रमनमानदेवनदरशनगपत्रास। हरेडावदेहसोहतजटा

गंगारुंडमालगलसोहेवागंबरवास। तानसैनसेवाध्यान

कवमनइच्छाफलपावेहोएकैलासनिवास॥ राग भैरव

ताल झप। अथमनादमूलतेउचरेतालबेथानसोंगावेः

रा॰स॰
२५७

2557

ताल। रूप। शिवमहादेवत्रिशूलपिनाकधरजाकीजटाम
ध्यसुरसरीयाजाकेविविधभूषन॥ गिरिजाकेमनभाई।
याहीईयाईयाअईअईआ॥ पजगादिसैयावरबलिपद्वृषभ
वाहनअतदीयतनदीयअतदीयनेरआईयामदनउहाईया
आईआचनरंगअंगासिवशोभनाचईयाईशानिषादहैयानी
ऐऐऐऐऐऐयानियीदेदेदेया॥ राग भैरव ताल रूप।

फॉ॰ २

ष्ठदेवलीनारायणसप्तमवलमागरअष्टमवलअष्टमजीनवम
वलनवकुलीनागदसमवलअवनारप्रकाश। ग्यारेहवल
रुद्रएकादशवारेवलवामनतेरेवलत्रईलोकचौदेवलक
हेविद्याप्रकाश। पंचदशमवलतिथीसोरहवलसिंगारसत्र
हवलसप्तावतिअठारहवलवनस्पतीउनवीसवलपिनाक
धरवीसवलललितिइकीसवलनातसैनप्रकाश॥ रागभैरव

रा॰ स॰
२५८

2558

हूंलोकउधारनीत्रैतापनिवारनीतनछिनगंगे। त्रईवेद

मानित्रिस्रोतात्रानीपापहरनीत्राहित्राहित्रैलोचनत्रईत्रिवे

णीसंगे। सुरनदीसुरेश्वरीजान्हविमंदाकिनीत्रिपथगाक्षे

गे। भागीरथीपवित्राहरिप्रेश्वराविष्णुपदासुरसुदीर्घका

भीष्मविहंगे॥ राग भैरव ताल झप। प्रथमनादमूल

तेंउचरेतालबेयानसोंगावे। सप्तस्वरतीनग्रामइकीसमू

क॰ २

अस्वपतिगजपतीनरपतीभवपतिव्रकन्नावलिचकनारन

दाविद्रहारनदिनमनिहरजमसिउडगनभुजबलभीम

उरतेरोजादानसमानकलिकरण ॥ राजसमाजकेनव॰

समानईद्रमेंडारीक्रवीरआयेतवशरण ॥ अवबलीअ

वलरहोजलालदीनअकबरसाहजौलोंतौलोंनामभुवा

यरन ॥ राग भैरव ताल केप ॥ त्रिवियगागामिनीत्रि

रा॰स॰

२५८

25

फ॰५

कैनावाईसबरतऊनेचासकूटतानलावे । प्रेमग्रहन्यास
विकृतद्वादशभेदसौंभरतसेगीनहराउमनजनावे । क
हैंवैजूबावरेमनोहरगोपालनायकऐसीविद्यासौंकोलरे
पाहनपिंगलावे ॥ अथणगंभेदकेपनालका । थिंथीना
थीना थिंथीना थीना । तिंतीना तीना ॥ इत्यादि ॥

रा॰स॰
१८०

2b0

गेपैसेनेरहीघरन्याय ॥ निशदिनहेमनबोलतडोलततैर

नेहैनतोहिगुणगाय ॥ ऐसेतेकहादीनोसजनीभरएजि

परीतेरेपाय ॥ राग भैरव ताल धमार ॥ लालधलमा

नेमैरेहिंस्राए ॥ कौनबामहितबितसोंचाहेमगारीरैन ।

जगाए ॥ ढिगढिगकाजरफैलरेहोहेजावकअधिक

सहाए ॥ तोनसैनकेअभ्रवेगासिधारोनवलतिस्रामन ।

धमार २

राग भैरव ताल धमार ॥ दीनानाथमत्रजटधरेमाथेमा॰

थोफकरहेकदमकीडार ॥ तक तक गेंदमारननारिन॰

कोंकरगहेफ कफोरडारनगरेमार् ॥ दामोदरगिरध॰

रजिनकरोटठोरीजिनमोडोम्रघहरकरोरार ॥ रागभै

रव ताल धमार ॥ नापरनकरनलागीरीयहबानप

कनोबाकोकेंतलियोपरचार ॥ गिननतनकाहूम्रपनेम्रा

रा.स.
२८१

वितहैवाकीहूरतमनलाय ॥ अथयमारतालप्रबंध
गति ॥ थीना थीना नाचेता थीनाथीना नाचेता ॥ दी
तियतेभेदेन ॥ थिन्ना थिन्ना थिन्नता तिंन्न तिन्न तिन्नता।
इत्यादि ॥ ॥ इतियमारताल: ॥

261

पमार-२

भाए ॥ राग भैरव ताल धमार ॥ ऐसे देखियत लाल
न जागे भाग हमारे आज रस भीने ॥ एक बसंत जाने स
भ को ऊत ते देषत न कृपा तैं कर स्नेगंय नवीने ॥ ऊदै भए रा
भै दोऊ रीतें आप ब्रजजन नायक याते मन बस कीने ॥
राग भैरव ताल धमार ॥ एरी मो पैं वा हरि बिन रह्यो न ।
जाय बिन देषे कछु ना सुनाय ॥ यरि पल छिन युग मे

रा॰म॰
२६२

हालदावे ॥ रागभैरव तालएक ॥ बकशालीजिमो

ऊंमोनदीनखाजासभजगकेतमराजा ॥ ऊमदनते

गीलागिवेहतहैंउषदाविद्धसभभाजा ॥ रागभैरवता

लएक ॥ आजरंगहैजोगिरंगहैमोतमरंगभीनेसा

य ॥ ऊंगऊंगबहुभेषतिरारेऊलषजगपनाद ॥ ऊ ॥

रागभैरव एकताल ॥ मियारंगफाऊभैनेऊमदकेकी

26

एकता॰१

राग भैरव ताल एक ॥ आजबोमरीवजावेकाह्लाकौन

धुनकौनमंत्रपढ़फूंकफूंक ॥ प्रेमभरीनेरेमुखवयरी

डौरनरनारीमिलधुनसुनलेसियरेमोमरी ॥ रागभै

रव एकताल ॥ रवगारीवनिवाजगरीबोनुपालदा

वेपार ॥ नैंडिमैहरदीकीगलआषांवेमैंहेरमसभदिल

(बगाकीहुरयोंनदीहगीविच्चलसापराणा ॥ मदारे)

रा.स.
२६३

263

रव एकताल ॥ जागोकोंनप्यारेतुमसनमनवालाग
रहीलवा ॥ भोरभएचिरियाबोलहबानीबोलेकगवाकोरे
तुमजागोमोरेपियारेअबतोभोरभईलवा ॥ राग भैरव
एकताल ॥ अबतुमजागोकोंनमोरेमीतपियरवाह॰
मारीप्रीततुमसनलागी ॥ नींदकेमातेसाहब्रालमन
जनवाभवनवासगरीरैनरंगरसपागी ॥ राग भैरव

नीबोलवनी ॥ सदारंगकुककम्रवउआदिषलाजानिनें।
वाकुंमैनूंडौरनासुफदामिलनाकरणाग्रसोफलली
नामनदाजीमनदालोका ॥ राग भैरव एकताल ॥
वेवनकारणयारजुदिलबगाकीहूइयोनदीहुगीवि
छुबलहापुराणा ॥ सदारंगइसकासद्वासाउनोपेर
नामनभीगसीपावलेंघेरांफणागरलगो ॥ रागभै

ग्ग.म.
२६४

264

कीजिपग्रक्षेग्रगालेप्यारेन्नमोहेकेंयानभरे ॥ ग्रघगत मेद ॥ नक्केदी। थिंत्रिकट्ट थिंन्ना थिंथिंना तिरिकिट् धीनाकन्ना ॥ पर्ण ॥ धार धार धाधिन्नाकिटना कि ट्तक गिदि गिन्ना धा किट्तक गिदि गिन्नाधा ॥ इतिपक्कनालः ॥

एकगा०३

एकताल ॥ भएरविप्रकाशकोन्हकौनकेभवनमैंग्रा

येमोरैंग्रान ॥ उगामगा ॥ राग भैरव एकताल ॥ तो

रैंगीलेरसभदेवतकहोजागिमारीरैना ॥ सभरा

नियनकीचनरचनराईकरतहोमोसोंग्रबकाहेबेह।

कानोरीबैना ॥ राग भैरव ता॰ ए॰ ॥ साजनलागोग

रेउावहरकरोपरें ॥ जोचरिसुषमनबीनेमोईकेगान।

रा.स.
२६५

265

राग भैरव ताल सवारी ।। दिम्तननातननदिरनाननादि
रदिरनानादानियारेमनयलालले दी. ।। नदीनकों
वैननखावग्रावोंमेजबसेंबोखानग्रवादग्रोवोंमें दी।
राग भैरव ताल सवारी ।। तोरीबारीफूलरहिहोरेमा
लिग्रामहकरहीलीमगेथ ।। फूलभईहेनईनवेलरि
ग्रोरीसमभवरनवरनकेग्रंग ।। राग भैरव ताल सवारी

स.वारी.१

रागभैरव ताल सवारी पोव ॥ अनिउठोनी ह्वनिअोनी
वोरांफनदेमनावनन्हवलेजिंदडीगुमायगलपायपा
यपलडेखोकपैंरीले। सिरोनुमह्लिमकायमिली ॥
रागभैरव ताल सवारी ॥ अननजायविलमरहीला।
पिठनाजान्हेकोननियाकेसंग ॥ हमसोंअभदवदि
ठौरनसोंरंगरसकरनाफिरतसाविंयनसैंनयेनयेढंग

रा॰स॰
२९९

26 b

टेष्ट्रहटैवैन ॥ ऊरेनहिंतेरेजियाकिवाननितउठगिरह
जातउरायउराथकरतहोनैनसैन ॥ राग भैरव ताल
सवारी ॥ राथेतेरेरीञ्रांगनश्रम्हनफलीयोंकिउारिञ्रो
श्रेसश्रनसींचसींचबोइंगीश्रञुवावोनासोहवैटीक्षाव
रिञ्रो ॥ राग भैरव ताल सवारी ॥ पिउभोरहिंश्राए
श्रतमोमनभाएलागेरंगसवाए ॥ जावकनिकलगा

रागा॰२

डुमडुमवाज्जेवाज्जवाज्जेमेंदिलरामाजनकेघरकाज्
समसावियनमिलदेहोमसारावनवलवनायायाराज्
राग भैरव ताल सवारी ॥ एविमाईहौंपैहरोंरिचोल
राहरीआलाचोलराचोलासो ॥ एचरंगपागमेंपियाकों
वेधाऊंसवमोतननवरसालरा ॥ राग भैरव ताल सवा
री ॥ कवनरहनहोयारेमोसोंनमनिनहितचितकेमृ

रा॰स॰
२६७

267

वीतेसोईकोंनकरेअनरस्हगेथथरे ॥ रागभैरव सवारी

बनेकेलागाविलामाटोना ॥ जवमेरानसावनायाअ

वेअकेलोपटिआगयावेस्हगेयसना ॥ रागभैरव सवा॰

हजरतनिजामदीनचिस्तीजरजरीजरबकसपीर ॥

जोईजोईथावेतेईतेईफलपावेमेरेमनकीमुरादभरदी

जेअमीर ॥ नोविवाहीफलरहीमालिआमहकरहीली

सवारी॰६

पग्रयरनग्रेजननलापवोलननमधुरसहाप ॥ राग भैरव

ताल सवारी ॥ प्यारेमोरेजिननेतोरोमोसेंनेऊरा ॥ नम

विनमोहेकलनापरतेहैभावतनाहिंगेहरा ॥ राग भैर

व ताल सवारी ॥ करतरहोप्यारेनितरार ॥ अबदवद

निसाकेसिथारेग्रापहोभनसार ॥ राग भैरव ता॰स॰

साजननलागोगारेडावहूरकरोपरे ॥ जों यरी सावसन

रा॰स॰
२६८

ना कन्ना यिंयिंन्ना यिंयिंन्ना यीयीनान्ना ॥ ❀ ॥

इत्यादि ॥ इति सवारी ताल: ॥ ❀ ॥

268

सवारी॰४

हुगेय ॥ फूलभईरीनईनवेलरीअंग्रवरनवरनके

रंग ॥ राग भैरव ताल सवारी ॥ भएभोरप्यारेगिरि

येबोलनलागिगावतगुनिभैरवराग ॥ बेदिजन॰

विरदतऊँरवनगुरुजनपुरजनजागेंबाजननरदेंगधुम

किटनगधिलागा ॥ ५ ॥ अथ गत सवारी तालकी

कन्नाधिंधिंना धिंधिंना धिंतकट धिंना धिंन्ना धिं

रा.स.
२६५

२६१

चौताला ॥ प्यारीरी म्हवबोलदे बबोलरैननो यौंहिबि
हानी ॥ प्रतिबालाकह्योकडूनेंरे म्हवकीबानी ॥ ले
जोबातकहननेनरानीमोरमणआयलालजबघिरीओ
घुरहघुहोनी ॥ राग भैरव आडाचौताला ॥ प्रबतोजा
नेदेमोहेप्यारीरैनरहीपीऊ ॥ फीकोभयोतेबोलबाल
नलागेमोरहोमनलागीभोर ॥ मासननेदकेडरतेंको

आडाचौता-१

रागभैरवआडाचौनारा ॥ सबलिवजाईवोमेराप्यारा ।
तुजबिननैनीनींदनआवैसबथबिसराईवोमेराप्यारा ॥
इकनोवैरननंदनलागेनितउठतेरोनामलगाईपी
रनापाईवोमेराप्यारा ॥ सनयुनवेसीकलनपरतमो
हेसबयसमभबिसराई ॥ तेरेहितबलिहारविहारिगुरुहज
नलाजगंवाईचरणेगानानसुहाई ॥ रागभैरवआडा

रा॰ म॰
२७०

२७०

नख्यानहरिकाचर्णनिनमेश्रनुरागी ॥ राग भैरव आडा
चौताल ॥ एसाश्राजनमहिकहाश्रनमनेभएहो ॥ ऐ
सिमोसेंकहाचूकपरीलालननमनएठएहो ॥ राग
भैरव आडाचौताल ॥ मेरीविथाश्रनसाविरीमोसोंश्र
बदबदमेजीश्रायवेकीश्रजउनश्राएलालदरदयह।
कासेंकहों ॥ दिननैंरैननतेदिनजोंदेषनपैंडोश्रतहूनो

आडाचौ २

पनहैमेरोजीऊ ॥ राग भैरव आउचौतारा ॥ महादेव
शिवशंकरपिनाकपानी ॥ आडंबरबाघंबरजटाजूट
गंगासंगअर्धंगभवानी ॥ राग भैरव आउचौतारा ॥
जोगियारावलाभोरहीआणमेरे ॥ भिक्षादेमूलेदाना
हिचितवनकरतचितेरे ॥ राग भैरव आउचौतारा ॥
मनवैरागीमेराकरनारमनवैरागी ॥ निसदिनसमर

रा॰ स॰ यिंन्ना यिंतक यिनायिन्ना कन्नायिंयीना ॥ इति ॥ ॐ ॥

२७१

इतिग्राउावैारा ॥ ॐ ॥

27

ग्राउावे॰ २

गहउनविनदईग्रबग्रदारंगाविनकैसैंरहों ॥ राग भै

रव ग्राउचौनारा ॥ तेजनिसाविनग्राजनोजेसैंकिया

करीनमहोंहीग्रवजोंहिकारिपनाहिरीन ॥ राग भैर-

व ग्राउचौनारा ॥ बोलिग्रामेमेरागातभिरेपीनमक

रनफेरा ॥ हौंनितनवलासीरहोजरकसीरहेविरासी

मेरा ॥ ग्रयगात ग्राडे चौनारेकी ॥ कन्नायिंयीना पिं

रा.म.
२७२

धुमकिट्तक थथिगनथथागनथाथाथाक्केथिथन।
मेंपरतमान ॥ राग भैरव ताल झूमरा ॥ तादिरता।
तनूंदिरताधितिलानादद्दानीतादिरता ॥ ङ्मेत्रसङ्ग्रे
वभेसङ्ग्रेमारकरदामीरदामीरदाहनरंगजामिबुनग
विफलारमोदीम ॥ राग भैरव ताल झूमरा ॥ तिला
नामार्थ ॥ आरेमेंदरदोस्तनेमोरेनेदानी ॥ नेदरादर

राग भैरव झूमरा ताल ॥ लालमेरेआपरीहौंअपनेकर
सौंवारे ॥ ननमननयनममभऊनकोंदीनोंऔरजोबनय
नप्यारे ॥ राग भैरव ताल झूमरा ॥ तदारेदानीता
नेदीमननाउदतनानननरेनादानी ॥ नाद्दद्दनेद्द
द्दनिलीलानानातदानी ॥ राग भैरव ताल झूमरा
यायययायदिरमदिरमबाजेमेंदिलरा ॥ याकिटतक

रा॰म॰
२०३

273

गधिलांगयेयेदानियाथाकिटकिटधिनाकिटयेनलोग
यानिंया ॥ राग भैरव ताल झमरा ॥ लागिवेनयनोदी
वरखीवे ॥ बालनमाडीपैंडीवेंडीभमेनमाडीनिरखेवे
राग भैरव ताल झमरा ॥ हमजुखावगणमाननजरण
रीखनोननदिया ॥ सदारंगविनकलनपरतहैपीसोंमा
कोंमिलावोननदिया ॥ राग भैरव ताल झमरा ॥ जि

फिरेमततनऩदरदरमानतेमेरेग्रादरदजानमनमानी

राग भैरव ताल झूमरा ॥ द्दद्दीमद्दद्दीमहैयाहैयान

मकनवेवफाईनितरंगसैं ॥ याईलाहीदिनमौलाहमि

मनपावीरेजानिवाजेनाद्दद्दनेद्दद्दनानेरेदद्दद्दद्दानी

राग भैरव ताल । झूमरा ॥ येयेयेदीनीकिट्तकत

कथिन्नाथिरकिट्तकथिन्ना ॥ धुमकिटकिट्थिलांग

नहूवेमोराग्रेवराग्रतिंहीटीटलेगरवा ॥ यहैडरनिकम
नपाऊँपैडवावरजोरीगहेमोराहरवा ॥ ग्रपगानभेद झूम
रेही ॥ धाधा किट् तक धाधाहूना ताता किट् तक
ताहूना ॥ धाधा॥ इति झूमर तालः ॥ ⁂ ॥

रा०स०
२०५

राग भैरव ताल थंमा ॥ नमगुनगावोमुरलीधरकेमो ॥ शिवविरंचसनकादिभेदनापायो ॥ ज्ञानध्यानजपतपग्र ठेरेपुरानननेनेतगायो ॥ राग भैरव ताल धीमा ॥ मो रभईलवानरसतरसदरशनपाईलालतिहारे ॥ नेहल गीलाग्रीनरसकियोवानिग्रोकरनमोसेंमीठीमीठीप्यारे राग भैरव ताल धीमा ॥ साजनलागोगरेउखहरकरो

275

धीमा० २

राग भैरव ताल धीमा तिताल ॥ अभदानासमनकेरह

रेघरिपलछिन ॥ जोनेंवारेहृदयपुत्रअनयनलछमीइमा

नवोकोनामलेवाकीरवकोनामलेरंगराता ॥ राग भैर

व तायमार ॥ अमकरमथवाभरभरप्याला मोकुंपिवावे

नेगावलनत्रा अबनोमईकुंभईलीखुमार ॥ आपछकी

लाडोरवमकीलीकोरीहेरैयासिरवाभरभरल्यावे ॥८॥

रा०स० नभेद थीमेदी ॥ नाथेथेना थेथेनाथेथेना ॥ द्वितीयभेदे
२०६
न ॥ थीकड़ थीया थिंकड़ थिंया थिंकड़ थिंया तिं
ता ॥ प्रथपर्ण ॥ याया किट् नक युमकिट् युमकि
ट् नगयलो नगलो युमकिट् यायाकिट् किट् युम
किट् युमकिट् काडो या कडोया इति ॥ ॥
इति थीमा तालः ॥ ॥
थीमा० २

पदे ॥ जोहरीमनमनवीतेमोईकोनकरेअंतरमगेथय

दे ॥ राग भैरव ताल थीमा ॥ भैरवसंतकीमनमाराविली

जोप्यारेमहहूबनिजामदीनठौलिखा ॥ वेलाफलेदर

वाजेमदारेगरमिलग्रांबुवामोरिला ॥ राग भैरव ता॰थी॰

भईलीझंवावरीविनदेषेनेकनासहाय ॥ जबनेगामन

कीनोविदेषावाभवननाभावतकछुनहीवाप ॥ अगग

रा·स·
२७७

२७७

वेदनपापहरणप्रवेड ॥ सुरजसुरसहसुरग्रहवेजानपति
तेसुगतितेसमदीपनववेड ॥ रसनियानसेवककोंदी·
जेसहहिहिकीजेदीजिएतालसुरतोंनसुवेड ॥ राग भेर
व ताल चेवडा ॥ करतरहतप्पारेतमसोसोमनहित।
चितकेफूठेफूठेवेन ॥ ऊरनहींतेजियाकिवातनित·
उठगिरहजातउपायकरतहोनयननैन ॥ राग भैरव।

भैव३० २

राग भैरव ताल त्रेवडा ।। तियाअबीनपरमचरमोह

नखुरतनागररोमरोमसुंदर ।। नेत्रकमलसुथाना।

शिकाश्रीफलउरोजकटकेहरगर्वगेजनपुरंदर ।।

राग भैरव ताल त्रेवडा ।। देवामनिदिनमनीभानदि

नकरहेमतिमरहरतरैनतपनत्रिगुनद्वादशआतम

नेत्रमार्तंड ।। सहस्त्ररपमएषाविगनारनजवल्लजग

रा॰म॰
२२८

228

लिननताकिटिकिटिनियाथुमकिट्टयिलोगतकथाप्रकार
निरननगोपिमंडलमेस्त्रपुरनारभईबलिहारिहेदाविप
नकरनविहार ॥ राग भैरव ताल जेवडा ॥ नेदकेटिटो
नानेटोनाकियारे। टोनाकियाकछुजादोकियारे। दुक
स्रावदेखायचितचुरायलीनोंननमनमेरोवसजोकिया॰
रे। मेदमेदमसकायमापुरीवैननम्टउवचनवोललिया

जेवडा॰ २

ताल चेवडा ॥ गिरधरनागरहीगतिचलतपायनवाजत

नूपरझाांनझणकुनकिंकनिकनकार ॥ थ्रेगथ्रेगसुदे।

ग्रानटवरवाजतवेणउरमालत्र्रजचेटम्मकटधर ॥ दिगि

दिगिदिगिद्धोद्धिमिकिटिनाकुकुकुकुनकुकुंकुथैथैता

गतलेनसुलपसवारनंदकुमार ॥ ततमाकिटतालचेव

उउघटततताथिंथिंथुंथुंनानावजतम्रदंगराव भावमि

रा॰ स॰
२२५

आग्रवमोहिवनमैउनकेपइनाहोलेगहे ॥ राग भैरव ताल

त्रेवडा ॥ ग्रनंदभईलीमोरेमनवितआयमोरेपामपायपर

मननौछावरकरहूंमदारंगीलेबलमामोरेएजीमोरेमन॥

कीइछ्यरीओ ॥ राग भैरव ताल त्रेवडा ॥ गरूडयरगि

रधरगजाधरमदरशनवक्रधरने । जयजयमाधमधु॥

सूदनपरमपुरूषपातकहरने । दैत्यदरणदामोदरंयुति

त्रेपडा॰ २

रागरंगमोवंसिवजायकेचेटकमाकछुपढजोदियारे ॥

राग भैरव ताल चेवटा ॥ प्रीतमनकीतुमसनमोरीहर

नारायणअनेकनामनरहरतुमरीनोरसवतिग्रोकौनसों

कहौमन ॥ राग भैरव ताल चेवटा ॥ माईमोरीह्रुनीस

जउरलागतपियाबिनमयीकोंअविपनतीदनआवैं ॥

कौनसोतनविरमायमजनीअजडंतआणमैहरवानपि।

रा.स.
२८.

28

रने। भक्तवछलयर्मरलकतारनारकुलममकरुणाकरने
गिरिपतकेप्रभुप्रगामप्रगोवरनिरंजननिराकारसोईसा
कारस्टकरने ॥ राग भैरव ताल जलद ॥ मोपेंसदि
ष्टकीजेमनमोहनमायो। त्वमहोसकलदेवनकेईशमे
रीइछाकामनामायो ॥ राग भैरव ताल जलद ॥ कौ
लौंदिननवैराऊंमाईउनविनकोंसमझतनाही। पहि

अपरंपारदारिद्रदरने । कमलनयनकृपालकेशवकेसा

रीकरुणाकरणे । विश्वनाथमहीधरनखलदमनकृपाक

रने । अहिनाथऊखलबंधनकालिमर्दनगिरधरने । जा

दीनाथजगतपतीजगऊधरनजगजीवनजमलार्जुन।

नरने । अपरंपारअलषनिरंजनआनंदघननिस्तरने ।

दीनानाथघालसिंधुसन्नासिद्धसेवितसरभवकेभारउता

रा॰स॰
२८१

कवहूंवेंग्रोमसकहिंलेतहोगरवोलगाएचाकरेंसभवरा॰
केलोगवा॥ राग भैरव ताल जलद॥ अवमेंतोसोंकह
तहूंप्यारेनेकनमोरीमान॥ वाहूठौरकितजातहोवल
मासदारंगीलेअतरसपागिजान॥ राग भैरव ताल ज
लद॥ लेगरवाछीठहीकरतआनोषिवान॥ छाडठौ
रमगामेरेहिआवतठौरसवालेसाथ॥ राग भैरव ताल

28

नेव३०८

रातदिनध्यानकरनहैंमोहिकोकठिनमनपरतसमक

तनाही ॥ राग भैरव ताल जलद ॥ प्यारेमहीसानुभो

रीमीवतिश्रोकरनलागेरसिकरमीलेसवजनवासोयति

श्रो ॥ श्राजजन्मविनकलनपरतहैकैसेंभरोंदिनरतिश्रो

राग भैरव ताल जलद ॥ जानदेछाडदेमोरारे श्रंचर

वाढीठलेगारवा ॥ श्रवनिरवैंहिमोरीमासननेदिश्रारे

रा॰म॰
२८२
282

तदिनात्नमख्वपख्वपवैठेप्रवनोहमनेपाएहो ॥ प्रलफ
काकनरामीमकीवादरमाजनभेसबटाएहो ॥ प्रहदश
मटमलकुनमहोकेसभकुख्वनमाहिकहाएहो ॥ कहाक
हैभेकमालनमारा३होंमहमदनामयराएहो ॥ राग
भैरव ताल जलद ॥ ख्वैलवागगारमोरीउनारोकोनया
रेरे ॥ गगारिउनारनपानिनाहिख्वलकेमेवलजाऊंनि ॥

त्रेवडा॰ ९६

जलद ॥ प्यारेमनलेमोरिबातअवनोमेंरंगरसकहेंगी

साथ ॥ चरिएककुंजमहलपगधारोहाहाछिनअपरा

थ ॥ राग भैरव ताल जलद ॥ पियरबाघरमोरेअंग

संगरंगलागेआजनोजगेआपे ॥ अघटटुरावतजात।

बिह्वलबिपलफपकतआए ॥ ज्ञानदासअबकैसेंकी

नेंजोनहेटगेपाए ॥ राग भैरव ताल जलद ॥ बडु

रा.स.

२८३

283

हारेरे ॥ अथ तान भेद जलद तिनाले की ॥ थाछेथीना

थाते थीना थाछे ॥ थाकिट थुमकिट दिंगिट दिं

ग्रिन नगथलो नग थाथि थाथा गिगि दिन नाकिट

नगदिंग्रिन नक थुम किट नकड़ो नकड़ोथा ॥ नक

ड़ो नकड़ो था नकड़ो नकड़ो था इति ॥ ❀ ॥

इति चेवड़ा जलद तालः ॥ ❀ ॥

लागतपरमरसाल। इतिश्रेनरा। पचरंगपागपिछौरीको
रंगबोरीभमेश्रलकमेगुलाल। भोरेभमरमेभोवरीदेतभवन
मेंकठिनकलिनत्यागेपायपनिकाल। सोकितसेचकईकेच
रश्राणचकवासेप्रेमरंगकीनितिहाल। इतिश्राभोगा।। राग
भैरव होरी चौताल। विडित। रैन बिनायश्राणहोमोहनक
होजागेरंगरागे। इतिश्रस्थायी। कबनत्रियासेंगबिलमर
हे हो होरी विलकहोणगे। इतिश्रंतरा। नोनरातबतरात
बैनऊंश्रावतश्रालससमभग्रनुरागे। नादसैनमनकेमनबारे

ॐ अथ होरी भैरव राग की । राग भैरव होरी चारताल ।
लालन भोर हीं आए होरी खिलन कों ग्वाल बाल लिए संग
इति अस्थायी । अबीर गुलाल केसर पिचकारी बाजत ता-
ल मृदंग । इति अंतरा । इत सखा उत सखी परसपर छिर
कत नाना रंग । राग विलास गावत हैं फगुवा आनंद बढ़
त उमंग । इति आभोग ॥ राग भैरव होरी चौताल ।
लालन मदन सों मदन सों मतवारे नयन सों लागत परम
रसाल । इति अस्थायी । पचरंग पाग पिछौरी नयन सों

इतिश्रंतरा। कहूंकहूंलागेपीगलालकपोलनछीलेबोलन
अतहिंकेभात। बलिहारीवामोहनीपरकैसेंआवनपापक
होकैसेंतमश्रात। इतिश्राभोगा॥ रागभैरव होरी धमार।
बिडित। लालग्रलसानेभोरेहीश्राए। कोनवामहितसों
परचाएसगरीरैनजगाए। छिगाछिगाकाजरफैलरहो
हेजावकतिलकलगाए। कपकहिंबरनीग्रतसोहेमोह
नश्रथिकसुहाए॥ रागभैरव होरी धमार। होरीखे
लैंग्रबकैप्यारिजाभांतसोंलालनयासेंग। आपमीजेऔर

सेय्राणभागहमारेजागे। इतिश्राभोगा॥ रागभैरव होरी चौता
रैनविहायगईभोरभयोहोरीकहोखेलैंप्यारे। इतिग्रस्थायी।
कबननबलतियापियाविलमायगीननैबीतीमोहेसभनिस
तारे। इतिग्रंतरा। कहूंकाजरकहूंपीकलीकग्रधरनग्रंज
नभालमहोबर्यारे। तानसैनकेप्रभुतुमबहूनायकमोकके
गणग्रबहूंसियारे। इतिग्राभोगा॥ रागभैरव होरी चौता
रविडित। रैनगमायग्रायेहोलालनजाहोरीकीरात। इति
ग्रस्थायी। सेक्रुवसोबरेहितग्रपनेकीकहननपायेबात।

हमारे । करवसंतजिनवसकीडौरदेखितहिकृपानैंकरलि
एसुगंयनवीने । जेगरवभरीतेऊआनठाढीभईसमभ्रपने
गडुवावनायआगेंयरदीने । सदारंगमहमदशाहदत्तणके
लछनसमकेछिनएकमेटोनासेमनवसकरलीने ॥ राग
भैरव होरी ताल यमार । लेगरवटपावखिलैंहोरी । बाट
घाटकोऊनिकसनपावेंपिचकारनरंगबोरी । मैजुगई ।
जमुनाजलभरनेगहेसाविमोजोरोरी । तानवरसकेप्रभुनें
दकोछाठावरजोनामाननगोरी ॥ राग भैरव होरी यमा॰

नकोंभिजावैलपटतपटदीजेलीजेछ्रेग । मनमोहनकोप
करवसकीजेफगुवालीजेउमेंग । कृस्नानंदसोफागरचोंगी
एकहिरंगहुरंग ॥ राग भैरव होरी ताल धमार । जितेय
तेसमभटाढीभईग्रापग्रापगडुवावनायग्रागेंधरदीने । म
हमदप्राहदखनकेलछनछिनकमेटेनासोंमनवसक
रलीने । उफवीनमृदंगरबावगावततानननवीने । सदा
रंगारंगनमेंभीजेंवालालयसमभीने ॥ राग भैरव होरी ।
ताल धमार । आजरसभीनेंदेषियतलालनजागेभाग

रा॰स॰
२८७

रंग। चंचल चपल सर्द रंग चन नचना पिचकारी फर मेरंग। कृस रसिक फाग खिले में वाढो है यमन रंग॥ राग भैरव होरी यमार ताल। रामकली देषी फूली बन बन में चले हैं खिलन बसंत होरी। लछमन भरत शत्रुघन संग ली ने केसर की पिचकारी छोरी। सीता जु संग लई सब मसा खिझो सुनि कीर्ति ऊर्मिला मां उबी उ‍‍ऊ गैर भारी रंग रचो री। तुलसी यह रने दन फाग मचो है श्री दशरथ राज जू के बोर्ड उत जीती है जनक की किशोरी॥ राग भैरव होरी ताल यमार। मची कैलास में होरी।

287

र ताल। आज रसमाती होरी खिलैं लाल। नारि दे दे नाचत गा

वत संग ग्वाल ब्रज बाल। केशर रंग की छींट परी मुख मानो

छबि को जाल। नटनागर प्रभु की छबि अद्भुत निरखत भ

ई निहाल॥ राग भैरव होरी ताल धमार। अब टनननहिं

कीजें आली अपने बालम सों यह फागुन के बीच। भाग कि

रीत कहा जाने ग्वालन के तीक हो है आ घर जान की नीच।

राग भैरव होरी ताल धमार। आज मानि फाग आयो रित

वर्षा लिए संग। अबीर गुलाल के बादर छाये व रसमन लागे

रा॰स॰
२८८

कोभयोतेबोलबोलनलागेमोरहोबनलागिमोर। मामननेद
केडरतेंकोपतहैमेरोजीबो॥ रागभैरव होरी। महादेवशि॰
वशंकरपिनाकपानी। आडंबरबाघंबरजटाजूटगंगासेरा
अर्द्धंगभवानी॥ रागभैरव होरी। आएहोमोरहीलालामेरे
रैनकेजागेनीदकेमातेकहुंहोरीमनायमनाय। उरउपटी॰
मालनैननलागिपीकलालअधरनपैकाजरकोटीकोकहैदे॰
नयहलतणप्रवकहाहोतबानबनाय। तुमहोरसियाठौरठौ
रकेबसलेबेकोचमकोकैसेजीयतेजाय। याहिसोचमेंजीय

इतगौरीउतशंकरभोलाभारीरंगमचोरी । सुरनरमुनिसभ
देंषतठाढेबोलनहोहोहोरी । बजतडमरुदृयचनघोरी । नेदि
भृंगीकार्तिकस्वामीसंगलेबोदरुक्रवहोरी । उडतगुलाल
लालभएअंबरवाजिचबङ्कतवजोरी ॥ रागभैरवत्रताडाचै
ताल । होरी । प्यारीरीमुखबोलदेवबोलरैननोयोहीविहा॰
नीअरेवालाकहांजोकङ्कतोरेमुखकीवानी । तेजोवातकह
तनोतरांनीमोरभएप्राएलालजबविरियोचुहचुहानी ॥
रागभैरवहोरी । अबनोजानेदेमोहेधोरीरैनरहीपीउ । फी

घटहीउरावेरसनामेंप्रेमजानावे ॥ राग भैरव होरी । दिर
दिरदिरनाततनदिरतदीयनेरेदानीतनदिरनादानी । बहा
रआमदमराजेंजेजीवदगुलसननेदवागेंवाईनसालततनवी
बनोरेमनऊनद ॥

289

यजानतहैमेरोहाहातेरेहोकामकीनाहींरमावेलउनहींसेगावे
लिएजामेंनयोहितलाय ॥ रागभैरवहोरी । आएहोमेरे
जामनीजागेओरतीयाकेवैनकरतअनोवे । रसकरोजा
यअपनीप्यारीसोंकामजेयवनआएअवचोविकामनेहरंग
उनसेगउपज्योज्योंहैहितनिहारेलावे । मकरतकेयावं
लजाउवेकहेदेतहैअनुरागजागेनैनदेवे ॥ रागभैरव
होरी । मरलीवजावेप्रनगावेनैननयारेहीनचावेयहविय
तियनकेमनहीरिझावे । दौरदारकाहूकपयनयटआवे

रा॰स॰
२९०

यनीगामगममप जाणाजकिट्थकट्टनकिथेकीतकीत्र

किटफैंत्रकोडिगीडगिविवरथरवविभ्रजेठीकीयेई॥

ननननथेईथेईनाथिलोगया ॥ राग भैरव बसंलाल

थुणामाथ्यारेनैनेनाअनहिंमिलौने ॥ मनमोहनकोरस

बसकीनोडारटौने ॥ केहरकटीकदलिजेघानामिका

कीरछौने ॥ श्रीफलउरोजननकमललैनेनीतेरीछवि॥

२९०

बसंतता॰ १

अथ ब्रह्म ताल प्रबंध राग भैरव ॥ नीलनीरजवरन

तनघणामसुंदरवरत्रिभंगकटिनटपीतांवरवाजनमनि

नूपरनाचतसुगंध ॥ ब्रह्मतालप्रबंधधुनुनेनुनुने

ने। दिगिदिगिदिगिदागिथेईथेईतथेईथेईक्रुननन

फेनाफैंनाफांफांस्रानेटनैनानदसहसानियपास्रानी

नीनीधपमपमपमपमगरे सारेगगमरेगरेगमपमप

रा. स.
२५२
291

द्भमालकटाक्षजटागंगापानी ।। राग भैरव बल ताल

प्रवेय ।। खुंनेंनेंनेंमेंनेंनेंनेंदिगादिगादिगादिगिथेईथे

ईननथैईनथैईऊनेंनेंफेनाफोफोआनेदनैनानेदा । स

हमानीधपमानी नीनीधपमपमपमपमगारे सारेरेगा

रेगा मपमपधानीगमगमपा ।। राग भैरव बलताल

वेद्भालमीसगेंगगौरीग्रहेंगालिलाटभस्मस्वेडमाला

क्रमना: २

कौन ॥ राग भैरव बलताल ॥ जैजै ब्रह्मा आननचारोवे

दप्रकटकीह्नैं॥ श्रीभगवाननामकमलनेहूपरेगभी

नैं ॥ चारप्रकारजीवअंडउजउद्भिजस्वेदजाचायुजली

ह्नै ॥ करकमंडलहंसवाहनसोविद्यीमंगलीह्नैं ॥ राग

भैरव बलताल ॥ त्रिपुरारीत्रिशूलपाणीशिवशंकर

ज्ञानी ॥ डमहूडिमडिमकरनीलकंठफेकतफनेशावे

ग०म०
२५२

292

रेमेंडमालगरेकरत्रिशूलधरेंत्रिलोचडबघंबरपिनाकधरह
र ॥ भूतप्रेतपिशाचसंगमसखोधरेफनियरगंगधरनीलकं
ठधरेग्रहसिद्धनवनिधसघमेंपनत्रानेदधरेहर ॥ राग
भैरव बलताल ॥ कौनदेवविपरीतिहारीनेपिग्रामोरि
नमानी ॥ चतरसघरमानेंतियारीमननमानी ॥ पसो
हसननाकरोप्यारापनतोहदनागानी ॥ रंगमसमद्धमेंरंग

करपिनाकरैया ॥ महादेवमहाजनीमरगमनपेयाति
लोचननीलकंठपथकरिपुरैया ॥ शंकरशंभविपुरारी
डिमडिमडमरूबजैया ॥ नाचतनांडवकैलासापनरी॰
फनविस्तारिकैया ॥ वैजनायकसंगीतनिरतनदेवप
नीरैयानिपेपेया आमोआमोआमोपेआ ॥ रागभैरव
बलताल ॥ शंकरविषधरवृषभवाहनयरंवाजेबाय

रा॰ स॰
२५३

293

तिगंगाधरउमापतिरुद्रनारायणदेव ॥ नीलकंठत्र
इईस्वरकैलाशिकाशिनिवासीः रूपबहुरूपत्रिसूल
धारीभेव ॥ रागभैरव रुद्रनाल ॥ शिवमहादेवत्रि
सूलपिनाकधरजाकेजटामधसुरसरिताविराजाः
केविविधभूषणगिरिजाकेमनभाईआहईआग्रईश्र
ईश्रईया ॥ एजगदीसीयाबवरलिएवृषवाहनश्र

करोनमसंदरषणामलभानी ।। रागभैरव तालरुद्र
शिवस्वरूपपंचाननत्रिपुरारीत्रिलोचनवृषभाहनजटा
जूटमालचंद्रग्रहमोचन ।। एककरत्रिशूलएककर
डमरूभंगविभूतनसंगवैरोचन ।। कामदहनकैलासेश
रागरंगगजनगावोकरोध्यानमोचन ।। रागभैरव
रुद्रताल ।। शिवशिवशिवशिवशंकरशंभोपशुप

रा॰स॰
२४५

245

दीमदारादीमदीमननननननननन्नमनननननन्नमननननन

नसारेगमपधनीसानिधपमगरेसा ॥ थिन्नोननननधुकि

टथा ॥ राग भैरव रुद्रताल ॥ सरगम ॥ सागगमधपमग

रेसागरेसानीधापामधनीसारेगरेसा ॥ रेगारेसाधपधा

नीधधपमगमपधनीसा रेगारेसारेनिगमगरेगरेगा॰

सानीधपमगमपधानिधपामगरेरेगमगरेसा ॥ राग

गिरिसुतनाकल्याणीवैजप्रभुस्वरकेठतालपद्यसुगम

दानी ॥ राग भैरव रुद्रताल ॥ गंधर्वकिन्नरगुनिग्र

कारयजन्मजातपरीस्वरनरमुनिजन ॥ सुनिसुनि

ग्रटतवादिजातएसेभूलरहेमरमाथनकोठाहीरैनदि

न ॥ राग भैरव रुद्रताल ॥ चन्द्रांगरसलिपगावो ।

वजावोम्हदेगातकथिलोगयुमकिहनकथा ॥ दारा

रा॰म॰
२५४

धनिसा ॥ रेगरेसारेनीगमगरेगरेगसानिधापमगम

पधनीधापमगरेरेगमगरेसा ॥ राग भैरव रुद्रताल ॥

तियेत्रेतियेत्रेतियाएयातीईएएयातिएएयाग्राग्रा

ग्राग्राग्राग्राग्रानी ॥ राग भैरव रुद्रताल ॥ त्रिपुरारित्रि

शूलपाणिशिवशंकरज्ञानी ॥ जामेंसर्वकलासमानी

पूर्णपरमेश्वानीजाकेब्रह्मेगसमानीसर्वानीपरमजोन

२५४

रुद्रता॰ ५

नदियाननदीयाअनदियानरेआईयामदनदोहाईयाआई

यावनरेगअगसोंचशेभनाचईयाईशनिशादहैया नीई

येयेयेयेयेया नीईदेया ॥ राग भैरव रुद्रताल ॥ रुद्र

देवत्रिवत्रिनैयनअरुणजटापिनाकधरनेगे ॥ रागभै

रव रुद्रताल ॥ सागमधा पमगरे सागरे सानि धप

मधनी सारेगारेसा ॥ रेगरेसाधपधनिधधपमगामप

रा॰ स॰
२२८

नमेमोरेपियाकीछबनितनेए ।। साहआजमरेबलजद

ऐजाकहेसोसबसैहेए ।। राग भैरव विसताल ।।बी

तबटोइयामोरेपीयामनबाप्तनासंदेसबाकहियो

मोराजाय ।। बटियाहेरतनैनामोरेआथीनभईला॰

बातहोआरीबिसराय ।। राग भैरव विसताल ।।

तदारेदानितानूमदीमतनाउदततननारेनादानी

296

भैरव विस्नताल ॥ चतुरभुजसंखचक्रगदापमक्रीट
मकुटसीसकौस्तभमणिसाजें ॥ लछिमिसंगसोंहैंपीत
वसनगरुडवाहनजैजैविश्वरूपसरूपसोभाराजें ।उ
रस्थलसुलक्षणकमलनैयनकरुणासागर । जैजैकार
समसुरकरतजेहीनमतब्रजाशिवईंद्रसमाजें ॥
रागभैरव विस्नताल ॥ एमाभोरभईमोरीअंषिअंषिय

रा०स०
२८०

मईपमजाउदयितनया ॥ जैमहांरानिविस्नुपादमेव

नीजगजननीजगनिस्तारनीजगमोहनीरूपजालिपे

या ॥ रागभैरव तालि ताल ॥ चवरंग। चवरंगाहा

गुणगावेगावेनीकीतानमानऔरमहांजानगुणकी

जिपेसुरसंगतसोंलीजिपतानमान ॥ दृदृदृदृनेदृदृते

ननननानारेनारेनारेनदारेनददानी ॥ थाकडतकता

रागभैरवी लक्ष्मीताल ॥ डमरूडिमडिकराणीलकंठ
फ़ुकतफणीशवेद्रभालकठगंगापानी ॥ रागभैरव
ताललक्ष्मि ॥ जानिमेजानीजाहेरितमानीश्रीपत
श्रीवरश्रनतपालगोपाल ॥ श्रवद्वदकेमोसेंश्रनन
विरमहेतियजियभायकवनवचनश्रतिपाल ॥ रा
गभैरव लक्ष्मि ताल ॥ जैलक्ष्मिरमाकमलाकरणा

ग॰स॰
२५८

298

ममममपपपधनिसासासानिनिसानिधानिधपमगरे

सास्वरसौंतानसनावो ॥ ढ्रिनिलीनिलाढ्ढ्रंतेननना

रेनारेनारेदानीत्रमनदनारेननदेरेमनदेरेनिननिनदे

रेतेननननानानरिफावो ॥ धुमकिट्ढ्रिमिकिट्ज॰

नककनकत्रकट्किंकिंकननन२यानियानियाई॰

याथैयापैयाऐयापैपया ॥ घुंकटनकनकथिंकट्क

सादीता १।

किट्तकधुमकिट्तकऽतताधाधाकिट्धुमकिट्गिदि
गिन्नाधाद्रें ॥ पपधधपपधधनीसासानीधपमगरेसा
सारेगमपधनीसासानीधपमगरेसा ॥ राग भैरव ल
दिम ताल ॥ चतुरंगकुसगुणबोरिझावोनंदलाल।
कौं। स्वरनंनतालऊँरागरंगमैंचरिचरिपलपल
छिनछिननिसदिनहरिसुमिरनाबिनलावैं। पपम

२११

कथ्यकनकथिलोगनिलोगनिथा ॥ यगाउथिन्नानगाउथिं

न्नाथिंथिंयागेनिंटीयंगेदिगिनान्नागे॰किटीकिडिनकन्न

कट्नाननियाननयानिकट् ॥ यानायाथिनानयाया

यानाउथियाथीथीथीनाउयाथिथियाम्दम्दंगवजा

वो ॥ ❀ ॥

रा॰म॰
३०००
३००

देशाषखचरतियाहहावसपहेरावडीखचराईजानिपरा
त ॥ हमआसवडीमीरीरैननमदेवगंथारेगावतगृज
रीखनमीतीपरभात ॥ नोडीहखमसोंश्रीतजोनग्रव
सनहैंनवलतियादेसीषडनेजायलावारहोवहाडरी
उरात ॥ जेगलजेगलहूंडतहारीफिफवटाजिन।
करोमेरेप्यारेआमाजोवनविरात ॥ मारेंगनैनीपास

रागमागर भैरव ताल ॥ प्रथमभैरवनीकेवमप्पारे।
भएरवीकेउदैप्राणेरामकिरीयाव्यान ॥ विवसभएदे
वियनगातउदैषाकारकौननियललितवचनबोलत
होतचन्नरात ॥ वेलावेरवीतगईप्रलिप्रामप्रजगईदेव
गीरीजनिवाजकक्रुभसेगामघटपट्भईरात ॥ देसा
घमुघरानियाहहावस्नपहेरावडीम्रयगईजानिपरात

रा.स.
३-१

लवडेहमीरसरोवान ॥ कामोदीयतकरछायापगउरा

मगात ॥ पैंडातजेभातवहोनायकहोज्ञकाहरवागेय

रीकेंठमालकौसतभमनिमहनावेलमहात ॥ वाकेद्दर

रमेगणवाहारकरनहिंडोरेपांचमेवसतहोभेवरनामक

हात ॥ विहागनभईमेरीविभापरकचाछीरहेतपर

जेथोउरविवीतीमाहकामेंकडेवात ॥ सोरठनालागी।

30

रागमा १०.२

जावोमधुमाथवीबडहैमनीमावेनप्यारेहूंदाबनमथ

इहोलेकदहात ॥ यनयनश्रीमूलननमेंत्रपद्धडा

योग्रभिमेपलसिद्धननिरखिनतमकोंएरिश्राबडभा

गगान ॥ जैतश्रीवाकीएरबएरैपुण्यफलजोकोए

बालषान ॥ मारवानेदईहैकामकोश्रीमहाराजयो

गीगोराटेकरान ॥ एमनहोतकल्यानकोचाहतभूपा

मणहाडपैंकेकनगडानबेंडिनानायकाकीबात ॥ वैस्त्रवाम

देवरारीरावरीहिननिहारीरागमागरगावननिननिलकाशि

रमोंफदेषान ॥ इति रागसागरः ॥ ❀ ॥

सामभेरीजैजैवनिग्रोकरारकरगणेमोहनीमोहनीकर

ग्वात ॥ मोहेग्रहीरीजानगोकुलग्वालिग्रापराकिवाल

वलनवलकछादकहिजान ॥ कपोलकहोपीकलागी

जानीहेजजानीदीपकवेदप्रकाशभपलीलोबर ॥ ऊठ

ग्रापकलगणग्रवददेगात ॥ मेयनश्यामभोलारनटवर

नवहेवाहिकेगोडेपगयवात ॥ बोकेश्रीविहारीलहरलो

सोंकेसेवनप्रावैवानखनावेअरूगानल्छिपावै ॥ रागभैरव
ठुमरी ॥ हरिसोंध्यानलगायारेबाबा ॥ हरिमेंहरीकोख।
मिरिनकारलेजिनजहभेदबनाया ॥ पांचचोरतेरेसंगल
गेहेचोरचोरधनखाया ॥ जोयागासोमाणकपायाम्हरख
सोयगवाया ॥ कहनकभीरसंतोभाईसायोहरिखमिरन
विनलाया ॥ रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ काहेदियोडरवमोरेहिया

रागभैरव॥ठुमरीप्रारंभः॥ लागोझ्गारीनेहसांवरेसों॥

सांवरिसूरतनवारीमोहनिमूरतविनदेखेंनहिंचैन॥राग

भैरव॥ठुमरी॥इस्कफंदेविछफंददिवेमियां॥हालदि

लोंदावागिवेकोमोलाहीजानेनकोजानेहालवेददावे

मियां॥रागभैरव॥ठुमरी॥यांकेदरसकोजियलल

चावें॥ मनमेंरहेंऔरनजरनआवे॥हाफिजग्रथीनवा

रा.म.
३-४
30 4

विरहेविवियोगामोमेंसह्योनजावेपियाकिस्वनायोमईह्वेव

निधो ॥ रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ मोनेमेंनीदउचटगईरनि

यांमैनाजानंपीकियवगयो ॥ रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ देन

नयाविमेमेरीनोयानगई ॥ करकेनिदाननेरोदोस्तीमें।

झोकननिरषनसभनिमनिसवी नीकमननवलनिया

विरमायलईरे ॥ रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ मोरेमईयांनेवक

रा ॥ चरिपलछिनमोहेकलनापरनहैजानवारहेनोपेनन

मनजियरा ॥ रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ विंदियामोरीचनैयाली

नीबीन ॥ जमनाकेनीरेनीरेनंदकोरिलालाबाफोवजा

वेवीन ॥ रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ इंडरियामोरीचनैयालीनी

बीन ॥ ग्वालवालसभसखामहेलीवनमैंवजावनवीन

रागभैरव ॥ ठुमरी ॥ उनबिसजनीकैसैंकटैंदिनरतिग्रो॰

रा.स.
३.५
305

काजियराजगईयोनसो ॥ भैरव राग ठुमरी ॥ मैंमोरिनी
दगाबाईचरणबेलातेमोरीरे ॥ मैनेरूपेदानकलावनामानि
वेउस्कादिनारलगाईरे ॥ राग भैरव ठुमरी ॥ सगारिउमर
मेरिबरखेनेकानिशामाहूवमानवउाई ॥ शाहेहुसैनफकी
रखानाबिनमसलनउठजाई ॥ राग भैरव ठुमरी ॥
बीरारेबेटोईयासंदेसालेनायाईयोरे ॥ हरबजईयोपव

वीसीघीनकरीअपनेसोमजकोंविगानीकरी ॥ जोमैजा
ननीमादिनकरनीपसीदोसोमेमैंनियसोंजरी ॥ रागभै
रव ॥ डुमरी ॥ उनबिनमजानिकेमैंकटेदिनरतिओरेसो॰
बिरहाबियोगमोसेसहोनहींजावेपियाकिखनावोमई
ऊंबनिओरेसो ॥ रागभैरव ॥ डुमरी ॥ बिरहाकिमानीस
नाईनहोजराईनहो ॥ सासमोगोदेननेदेंदोनानेवासल

रा॰स॰
३-५
306

कलनपरन ॥ वेगलजावोकोऊमोरिपनिश्रोवंचलनोरे ॥
विनकलनहींश्रानि ॥ इतिडुमरीसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥

मयईयोनेकजरसोंग्रईयोरे ॥ रागभैरव॥ ठुमरी ॥ जनवा

ऊंमकरसंगाईयोरेदाफलगिकेरजवा ॥ मरूवोकिउगरिका

विलगानहैंग्रेउग्राकिफांकवखावोरे ॥ रागभैरव॥ ठुमरी ।

सैयांकैसेंरनिकालागारिमैजान्हे ॥ रसियासैयांमेरेमननह्री

वसदासारिसारीवतिग्रेकतिग्रेगरवांमेरेलागारीमे ॥ रा

गभैरव॥ ठुमरी ॥ मेरीकैसेंकटेदिनरातीसइयाविनमईऊं

रा॰स॰
३०७
307

निदिखावै ॥ जिनकोसंगनिकियेंहोनउरमतिहियेंहरि

केगुणरूपजसबरनविसरावै ॥ जिनकेपरसतसदासर

समनविषैरसमगनह्वैजातअतिपापउपजावै ॥ करतक

कुनाउरेगेरसैंचितधरेमनसंगपगिहरेजवतिचितलावै·

साधुनिंदाकरेंझूंठभाषैंसदाप्रीतिराषैंविषईवचनमन

भावै ॥ अनेकसाधनकरिजागिराख्योभावछिनकमैंज

राग भैरव ॥ चर्चरी ॥ भोर भावतो श्रीगिरधर देख्यो ॥ सु
भग कपोल लोल लोचन छबि निरखके नैयन सुफल क
रि लेख्यो ॥ नख सिख रूप अनूप विराजत अंग अंग मन्म
थ कोटि विशेख्यो ॥ वनभंज अभरस रास रसिक को वडे
भाग वल ईकट कपेख्यो ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी ॥ हरि के
विमुखे को मुख जिन दिखावे ॥ जिनि दिखावें नाथ जि

रा-स-
३-८
308

कासोंकहिपहियेराषिपकौनविधिरहननहिंकेंाउक
रिदेहहबीजें ॥ लेनउसासउरकेसेंहोममाउनहिंसोवट
गभरनपीजें ॥ वदनलावनिग्रमरनरसिकपीतमसाव
पानविनसकलननकेसेंभीजें ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी ॥
नेकवोलोनाथघ्रमरनरसवैन ॥ औरनसहाईपरीकरति
हौंहाउेनिनचितनलागतकहूंनेकुनहिंचैन ॥ दीनजन

2

लग्यग्निज्यौंतृनजावे ॥ तेईजनविमलजेकेंउँरेवानकुस

नसहानसंसारथावे ॥ साधुसंगतनिरहेववचनहरिगुणक

हैसुनतननिवहेरसिकसोईसुखपावे ॥ राग भैरव ॥ बर्वरी·

नाथहाहामोहिदरसदीजें ॥ दोषजिनमनधरोंसहजक

रुणाकरोविगरसाधनमोहिदासकरिलीजें ॥ दुखितब्रि

नहोयजियावदनदेखिविनारेननपनचिनकैसेंकीजें ॥

रा॰स
३॰५
309

ठाईलीजिषमारवनचोर ॥ विकसेकमलविमलवानीवो

लनलापंछीवकूंजोर ॥ रसिकशीतमसोंकेहग्निनंदरानीके

नग्रावोवैठोमोदहाहानंदकिशोर ॥ रागभैरव ॥ चचैरी ॥

स्रमिरमनगोपाललालसंदरग्रनिरूपजालमिटिहैजेजा

लसकलनिरषतसंगगोपवाल ॥ मोरमुकटसीसधरेंव

नमालस्रभगागरेंसभकोंमनहरेंदेरवकुंडलकीझलक

मनमनोरथकेहरणाकरणऔरनिहूंलोकमैदेषियनहैन

जेमिलनआईनेलेनसरवसहावकरिकहौकेहैंहरिमन

रहेपैन ॥ अरथसवरावरोहैतिहारेहूायनायकहोऔरस

मरथहेकोदेन ॥ रसिकपियाजिनकरोकढिनमनदीन

परपरसिकेंनजनपैहलालवनतोघटैंन ॥ रागभैरव ॥ व

वैरी ॥ पललनाजागोभयोभोर ॥ हृथदहीपकवानमि

रा.स. ३१०

310

मारुतनंगधरीनभ्रमरंग्रेत्रकेलनी ॥ वरविहाररानीसनूश्रग

दिवाजनीविटलविश्रलवारनेभजकंठमेलनी ॥ इतिचर्च

री ॥

गाल ॥ आभूषनअंगअंगसोहेमोतिनकेहारपोहेकंठसरीमो
हेदृगगोपिनिरषतनिहाल ॥ छिनस्वामीगोवर्द्धनधारीला
लभोजनकरिग्वालनकेसंगगोचारनजाल ॥ रागभैरव
बरवैरी ॥ आनहीकिशोरजोरिकुंजखेलनी ॥ अंगअंगराग
गानरंगगौरश्यामरूपरासिमदनकेलिसरनसिंधुझलके
लनी ॥ नवनिनेदनिसनीरगावनप्रियअंगकोरचिरगा

रा-म
३११

311

वेमियोरवकरेनसिंमडेगावोनैयनादे ॥ रागभैरव ॥ टपा
केह्राजाडुडाकीनावेदिलनकदरनाजानेदरकदरमियो ॥
वेषननम्सलाकजिमेराइस्कलगामनलीनादिलन ॥ राग
भैरव ॥ टपा ॥ चलउटकरदीदनयारामियोदीदनयारेदा
श्रामदराजोदामियो ॥ वागवहारोनिवेवेषनचलियहोमि
योमैडादिलवरदावजारमियो ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ देखुणा

रागभैरव ॥ टपाख्यालादिगानम् ॥ नोंउवेबखनदिनोंगमेत-

वफवेषोंवारिवेराजनन्हूयोंवेंसोणारवसनलेसाईवोंगा।

रागभैरव ॥ टपा ॥ आयानिसभालवोरांजनयार [illegible] किङ

योंनेनन्यार ॥ हीरनिमानिनकिशह्मदापीम्हदिलदिड्डई

आसार ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ सयानेवेलियावेहूरनया

वसवेलोकविगाने ॥ भिन्ननकरदिवारिवेपैयोंनापउरी

रा॰स्व॰
३२८

हालजिगरपरवीनावे ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ कौनगानम
ईमोरीग्रानना मिलैपियामोकों ॥ उनविनकलनपरत
पलछिनकेसैरेणविहायग्रानमिलैपियामोकों ॥ राग
भैरव ॥ टपा ॥ मारचलाकोंछोडिचलावेमजनूंअक
गरीबांकोंमियां ॥ ईयारुदायदस्तनमेरीदाहेफिरया
दसोमेरीमियां ॥ रागभैरव टपा ॥ खेडनदापरवेला

318

दिदारजारोदापरखलेपराखायलेयमियां ।। खोटाखराप

हवोनशोरिमियांसोईगनिमनईमानप्यारोदा ।। रागभैरव

टपा ।। किजालमाडिवेमियांयोकिसदीयारीदालेविमडडे

[illegible]लनजानेनामनजानेकीकरवे ।। मखवेवखोतेडसांवरो

योंमैडियानेजिंदडीदिवानीमैंडाजिडरे ।। रागभैरव ।। टपा ।

जाडडाकमालकीनावे ।। इस्कलगामैंडाजीनरसांदाकेहा

रा॰स॰
३१५
315

प्यारेनू रानकिथेंवेगारिहो ॥ आपछडजोदेवारीनालम
होदेमेफूडयकेंदीमैंहारिहो ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ कीना
वेकेरेजामारदापारदागमखाखा ॥ कीझकेदेवारीआजय
दिलवेकरारदाहोंनोयारियांदेनालगुजारदा ॥ रागभैरव।
टपा ॥ नोरीनगरिआमैंनारहोंगिनेनोअनकारसभोग॰
मदारेगरसरेगकराईह्मकोंदीनीवडनविरोग ॥ रागभै

वेभलामियांयेसान्नवाकचाकजवावंभोदाकोईवे ॥ ओंदा
नियांदसमाउेच्चरवेशोरीलगिम्हवनपाक ॥ रागभैरव ॥ टपा॰
होवेफोलामनपरचोदियां ॥ ओंषलउंदिभमाकमोदिवि
नवफयांदियांहोवेदोलामें ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ जिंदमो
डियारोंदेनाललगिवे ॥ सदारंगनेजदमेंपावांगरेलगावो
वनडिठेग्रोमेंहगी ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ सविग्रांवीमेडे

रा॰स॰
३२६
318

टपा ॥ मगामपमेरेमगेरेधानिसामरेसानी ॥ सारेगाममेस
गरेमगामैंधामधामपेपधानी ॥ साधसाधपगाधरेसदारेगा
मोरीपक्कनमानी ॥ रागभैरव ॥ टपा ॥ पगामधरिसानि
पेरेमपगाधरेरे ॥ रीममाधह्रोवेगानिसाधसाधसानीधा
पमगारे ॥ इतिटपासमाप्तः ॥

रव॥ टपा॥ आजनोवनगाजैंआयेपियारवाचरमेरे॥ श्रे

गमेंगरेंगलागैंभवटडरावनगानखिनलवेपलऊपकन

आपडैंरें॥ रागभैरव टपा॥ पलकदेआऊमेरासाई॥ जोवा

हेजगराजकरवोईकरसभकुदरनउसिनाई॥ रागभैरवा॥ ट

पा॰॥ भईलीझंवांमरीविनदेवेनेकनाखहाय॥ जवनेराम

नकीनोविदेशवाभवनभावेकछुनहिंवाय॥ रागभैरव॥

रा०सं०
३२०
317

मदनमोहनपियाकीजिएकलेऊ ॥ हृयमैंरोटीछानीमाष
नमिश्रीआनिजोईजोईभावेसोईसोईलेऊ ॥ खोडरवीरउ
दहनमेवाआपखाऊऔरग्वालनकोदेऊ ॥ व्रजपतिपिया
फेरखेलनकोंजाऊंवनसवलश्रीदामाकोंसंगकरिलेऊ ॥
रागभैरव दादरा ॥ नजानीयेकौनभांतमिलोगेनिहारी
भवरासीरीत ॥ आनंदव्रजमोहनप्यारेठौरठौरकेरकैर

रागभैरव॥ दादराताल ॥ खेलिफागनखूडनमडनकी

जिपकलेवा ॥ छेकेनेंसारदधिऊपरनेंकाढय वीपहिरले

झुझुगलीफेंटावाधिलेहूमेवा ॥ ग्वालनिकेसंगखेलनजा

ऊंखेलनकेमिसभूषनल्याऊंकौंनपरीप्यारेलालनिसदि

नकिटेवा ॥ सूरदासमदनमोहनखरहीखेलोप्यारेललना

भेवगावकोरडोरदेऊंहंसवकोरपवेवा ॥ रागभैरव ॥ दादरा ॥

रा॰स॰
३२८
328

दादरा चौताला ॥ शिवशक्तीआनंदीआदिभवानीदयानीद
याकरोदीजेदरसउननैयननदारिद्रदरण ॥ तीनोलोकमें
जानीमहारानीपसोप्रसाददीजेउरवंदहरहोनहारवशरीरआ
नंदकरण ॥ महामायाभद्रकालीकल्याणीशिवानीमें
नात्मजाउरवहरण ॥ चेउमंडमहिषासुरमर्दनिनोनसैन
सेवकसुषकरनीनहिंजगतपोषनभरन ॥ राग भैरव ॥

हेहोयदईफ्लीन ॥ रागभैरव दादरा ॥ मेरीविपाखनस
खीरीकासैंकडूमैहाल ॥ मोसैंग्रभदवदकरहभेजिग्रापवे
कीप्रजहहैंनग्रापलाल ॥ रागभैरव दादरा ॥ वानेरीवैगीग्र
नेकविधनरंगीवोग्रंगीवोग्रंगीसभनकोनहीमिरनाज ॥
वारकवरवारवेसबरग्रापदनग्रापदमरनेराजकाखेलन
लागोग्रावनावमरहनानेरनन्होवेसभकाज ॥ रागभैरव ॥

रा॰म॰
३१५

319

३

गनदादया ॥ धीनाना धीना धीनाना धीना ॥ धिंकना
नाकिट्ट धिना धीकना नाकिट्ट धीना ॥ इति दादरा संपूर्णं

१-म

३२० 320

गरदेहै जंगलकाबीवनजारा औरबेपभीनेडीभारीहै ॥ अयगाफि

लतनजगमेभीवफलायकऔरवडाओपारीहै ॥ क्याशक्करके

[illegible] गिरीक्यासाहलरमीदाखारीहै ॥ क्यादाखमुनक्का

सोंट मिरच क्या केसर लौंग सुपारी है ॥ राग भैरव गजल ॥

नदियालादेबेलभरेजोपूरब पछम जावेगा ॥ यासूद बढा

करलावेगा याघाटा वाटा पावेगा ॥ बटमारअजलकारसतेमें

अथगजलशेरकहितेहै रागभैरव ॥ तिताल ॥ टेकहि

रसवाकोछोडमियांमतदेसविदेसफिरेमारा ॥ कज्जाक

अजलकालूटेहैदिनरातबजाकरनक्कारा ॥ क्याभैसावधि

याबैलशुतरक्यागौनेपलासिरभारा ॥ क्यागेहूंचावल

मोठमटर क्या आगधुआं क्या अंगारा ॥ सबठाठपडार

हजावेगाजबलादचलेगाबनजारा ॥ रागभैरव ॥ गजल ॥

ग॰स॰ २२१ ३२

नेरीफलनजावेगी ॥ एकवर्षीयानेरीमहीपरफिरचरनेवार

नआवेगी ॥ यहखेतजोतनेलादीहैसबहिमसोमेंबहजावेगा

[illegible]बजवारेवेटाकावनजारानपासनआवेगी रागजैर

वंगल ॥ कौंनाहकबोझउठानाहै इनगौनोंभारीभारी

के ॥ जबकालखेदराआनपडा फिरहूनहैंऔपारीके ।का

[illegible]जजजंजेजबजेवबक्यागोटेघ्यानकीनारीके ॥ क्याचोडे

जबभालामारगिराबेगा ॥ यनदौलननानीतोनाकयाएकमन

गाएासनजाबेगा ॥ राग भैरव गजल ॥ हरमंजिलमैंप्रवसा

यनैरेयहनिननाडेराउाउाहै ॥ जरदामदिरम्काभोंडाहै वेह्

[illegible]गमश्रौरसंबोडाहै ॥ जबनाइकननकानिकलगयाजोमल

कोंकलकोंहोडाहै ॥ फिरतेडाहैमेभेडाहैनेहलवाहैनेमाउा

है ॥ राग भैरव गजल ॥ जबचलनेवलनेरसनेमैंयहगोन

छालोंके ॥ ख्वपनानोउ के भागोंगोम्बह देखजलकेमालोंके ॥

क्याडिवेहीरमोनोकेक्याफेरखजानेमालोंके ॥ क्याव्रकवेना

शम्बराज्यरक्यानखेनेशालडशालोंके ॥ राग भैरव ॥ गजल ॥

ऊझ्रुकामनग्रावेगानेरेयहलालजम्बरुदसीमोजर ॥ सवस्र

जीवादमेंविखिरेगीजवग्रानवनेभीजोऊर ॥ क्याममसनेदन

किपम्बलकमकोक्याचैकीऊरसीनाखनख्वनर ॥ क्यामाल

जीनखनहसैंकेक्याहाथीलालाअमारीके ॥ राग भैरव गज

ल ॥ जोरवेपभरेनेंजानाहैयहखेपमिंपांमनजानअपनी ॥

अनकोईखडीपलसायननेंयहखेपवदनकीहैखपनी ॥ क्या

... [illegible] गोदीका क्यापीनलका फकना फकनी ॥ क्या

वसनन सोने रूपेके क्यामटीकीहरियाचपनी ॥ राग भै

रव गजल ॥ मगरूरनहोतलवारोंपरमनभूलभरोसे

रा॰स॰
३२३
323

ननकापोला ॥ नकेंची गाफी उसानाहैयहांसोरागगावेनेमहावो

ला ॥ कयाहेमीवदकमस्तवडंगकाकोटकेउराग्रमसोला ॥ कया

वुजेवहैलानोयकिलाकाशीशाहाहवीरगोला ॥ रागभैरवा॥

गजल ॥ श्रवकालफिराकरचावककोयहहैवेलवदनका

हांकेगा ॥ कोईनाजसमेमेटेगानेवाकोईगौनक्षियेयोरवहाके

गा ॥ होठेश्रकेलजेगलमैंनवाककलहदकीफावेगा ॥

४

खजानामुलकमकोंदौलतहशमतफौजलशकर ॥ रागभैर

व गजल ॥ यहहमपटकासाथलियेकौंफिरताहैजंगल

जंगल ॥ एकभूमगापामनग्रावेगामौक्तपउग्रा जवग्रन्तग्रौर

जल ॥ हरबारग्रटारीकोपायेक्याखोसानतनखकामलमल·

क्याखिलवतनकीयेरेशमकेक्यालालपलेंगकारंगमहल·

रागभैरव [illegible]जल ॥ क्याशखनमकाननवनवानाहैंहैखेभनेर

रा॰ स॰
३२४
३५४

हमदेखत्रकेईसइनियोकोसवयोखेकीपसीहीहै ॥ को

ईसाकदीदेहैसहेसकरकोईनखेनगाडावनषानाहै ॥

कोईकपडेरंगेपहरणोहैकोईशदजीत्रोपेजानाहै ॥ को

ई भाई बाप चाचा मामा कोई मानी एन कहानाहै ॥ जव

देखा खूबनो आखिरकोमेरिसाहैनेनानाहै ॥ गुलशो

२ ॥ कोईसेठ महाजन लाखपती जवजहाजकोई यम

उसजेगलमेंजबआइनजीरपकअनगाआननफोंकेगा-

गाभैरव॥ गजल॥ यहपैदरआवरैइनियांकीओरकया

क्याजिनसरवदीहै॥ यहोमालकीसीकामीराहैओरवीज

किसिकीरहाहै॥ उल्लपकनाहैकब्बभननाहैपकवान

मिलाईपडीहै॥ जबरेरवाहवतोआविरकोनेलहाभाउनम

हीहै॥ गुलशीरववूलाआगाहवाओरकोवरपानीमहीहै॥

ग़॰स॰
३२५
325

तेआशिरकोकफुलेनापकनदेनाहे ॥ रागभैरव ॥ गजल ॥

रमालनजमीआमिलहैओरफाजिलमलाशानाहे ॥ कोई

आकिलकोमिलदानाकोईमस्तसिरादीवानाहै ॥ नाबीजफ

तीलाफालफहैओरजाडमेतरलानाहै ॥ जवदेखाग़वनोआ

किलकोमवरीलामकरवहानाहै ॥ रागभैरव गजल ॥ को

रलोटहकेगालियोंमैनेयारकिसीकाघेराहै ॥ नितकजीयेज

मारीहै ॥ यहबाजाकिसीकाहलकाहैग्रौरखेपकिसीकीमा

रीहै ॥ क्याज्ञानेकोनखेरीदेहैग्रौरकिसनेजिनसउनारीहै ॥ ज

वदेखोहवनोग्राविरकोदल्लालनकोईव्यापारीहै ॥ राग भैरव

गजल ॥ कोईफलकेवैदेमसनेदपरकोईरोवेग्रपनीदोलतदो ॥

कोईबोलेग्रपनाम्वजसलोग्रौरमेराहैसोम्वजकोदो ॥ कोईल

डताहैकोईमरताहैफगाडेहककग्रौरनाहकदो ॥ जवदेखवाहव

ग॰म॰ ई[illegible]कोकोटमजगनाहै ॥ जबदेखोखूबनोआखिरकोसबको
उम्रकेलाजानाहै ॥ रागभैरव गजल ॥ कोईरोताहै कोई
[illegible]ताहै कोई नाचैहै कोईगाताहै ॥ कोई खीने ऊपटेले
[illegible]कोईदोसकाऊपरदिखेलाहै ॥ कोइमालशबदाकरता
है कोईऊजीऊलफलगानाहै ॥ जबदेखोखूबनोआखिर
सबऊआटारलाजानाहै ॥ राग भैरव ॥ गजल कोई वेचे

३२६

326

गडेवलेहैयहमेराहै ॥ जबदेखाहुबनोश्रागविरकोनमेराहै

नमे‌[illegible]है ॥ राग भैरव ॥ गजल ॥ कोईटोपीटोपबनाताहै

कोईबाथाफिराश्रम्मामाहै ॥ कोईसाफवरहनाफिरताहैने

प[illegible]वाजामाहै ॥ कमाबोषगजीश्रौरगाफेकानितकजी

याहैहंगामाहै ॥ जबदेखाहुबनोश्रागविरकोनेपगाडीहैनेजा

माहै ॥ राग भैरव ॥ गजल ॥ कोईवालवघ्नापफिरताहैको

रा·स·

३२०

१२१

सायाहरागउगाटागाजरमूलीहै ॥ जवदेखाहूवनोश्राविकोम

वविकरीरेखनमूलीहै ॥ रागभैरव गजल ॥ कहींवानग्रदेव

कैगटवाजीकहींदमवखवमम्रखनकलाहै ॥ कहींरोककरण

श्येकाखवदाकहींकोडीपैमायेलाहै ॥ कहींखटनाखाज पि

रारीहैकहींविकनाखोटखचेलाहै ॥ जवदेखाहूवनोश्रा

विरकोनेषीटीखोटनचराखाहै ॥ रागभैरव गजल ॥ ॥

मेंगामगावग्रफएमकहीहयदरीकोफेरीहै ॥ कोईपलामि

[illegible]मलानाहैकोईलादेवैलमकेरीहै ॥ कोईजगाउँग्रपनीजा

गह[illegible]पर यहमेरीहैयरननेरीहै ॥ जवदेखाव्हवनोग्राविरकोन

प[illegible]मेरीहैननेरीहै ॥ राग भैरव ॥ गजल ॥ कहीवह्नी

देवीमूर्तीहैकहींवामीकउवकीउलीहै ॥ कहीवलनी।

ब्ला[illegible]गारीहैकहीउलहावकीउलीहै ॥ नरकारी वैरान

रा॰स॰
३२८

रतनमाशोदेनरवेजीरप्रवजाकहियेरेजाकहिये ॥ कछुवा
ननहीवकसानेकीउपचापभलाहैक्याकहिये ॥ गलशो
रवहूलाग्रागहवाग्रोरकीवडपानीमहीहै ॥ हमदैरवेउके
इसडनिशांकोसवयोवेकीमदीहै ॥ रागभैरव गजल ॥
वदमावपुजलकाग्रारङ्गवाड़करस्कोदेरवेडरोवावा ॥ग्रव
शाकवहांडोग्रावोमैंग्रोरग्राहैमर्दभरोवावा ॥ दिलहाय३

कोईशिकराबाजउडनाहैकोईहाथमेंरबवकेतननलीहै ॥ शा

रबाजकोईलेबैठाहैऔरदौडकिसीनेडलनीहै ॥ हैनारकि

सीकेहाथोंमेंऔरनाचनीफिरनउनलीहै ॥ जबदेखाएहव

नेआगिरकोनेरेशमसननमननलीहै ॥ राग भैरव गजल ॥

अब किस्का रंग उगा कहिये और किस्का रूप भला कहिये ॥

एकदमकी पैठलगीहै यहअब्बोहमजानवरबाकहिये ॥ येसे

-.म हैं अब जीने में अब चलने का सामान करो ॥ नन हूया ॥

राग भैरव गजल ॥ दिल का टो अपना जीने में अब और

३२ गले को मन काटो ॥ अब बाद फना की टुक कब बोओ

रहन किसी का मन काटो ॥ अन क्वो डो हि से ब बैर की

और भाजी अपनी नत बोटो ॥ नाकंद व के रै कदब के अ

व और रडलनी मन क्वोटो ॥ नन- राग भैरव गजल ॥



ठाकरजीनेमेवेवममनमारममरोवावा ॥ जववापकीखा

तिरयेनेथैश्रवश्रपनीखोनिवरोवावा ॥ ननमहखोऊवडी

पीवड्डईचोडेपरजीनधरेवावा ॥ रागभैरव ॥ राजल ॥

नवजीनेकोनमकाखमननहोश्रीरमवनेकोंमहमानकरो ॥

हैवानकरीइहमानकरोयामन्नकरोयादानकरो ॥ याश्री

लइवटवाश्रीयाखोमाहल्लवानानकरो ॥ ऊखल्लनफन

रा॰म॰
लो

झलचंद। कंचनको दोषम गडाये नगन जडन
वहूरंग। आनंद भये नंदजीके डयोरे मेरा नंद
लियाई मालन॥ कुल कवरने जनम लीयोहे
नंद महर घर पालना॥ रागिन धुलोरी ज
गलखंद नाल॥ ॥ तेरो अटल रहीलो राज
पियारे महमद शाह पीयाजमजम निन निन

अथ राग मधु लोरी पतिह्लेदमाहलाल। २। लोरी

लाल को देऊमाई कव की ठाडी ठाडी परवाऊ। छन

किन छन कारगाऊ वजाऊ अगर चंदन का झूला

झुलाऊ। लाल को देखो सखी सब लोरीआं। अग

र चंदन का झूला झुलाऊ रेशम दी ओं वटां डोरी

ओ झूलना नवल हंदोर ना माई झूला सी गो

१२

रा॰ दे॰
स॰

12

ही कि नाही। सवैया। सोत कहा अबके समझे स
मुझेन तौ जबहे समझाए। एकहि बेक बिलोक
नि माहि अनेक अमोल विवेक बिकाए। जानपनो
न जनावहु जू जनमावधि लौ उहि जानि हौ पाए॥
धान बनाय कहा कहौ लेहु मनाय मनाय ज्यौं आए
इति रागदेवशाखिसा सवैया परिछेदः समाप्तः॥

एहैं ब्रजनायकै। भूले हैं गोकुल गाउमैं गोविंद

कोहै शुकरन गाइ चरायकै सवैया गोपी बड़े बड़ेई बैठे

छयायनि के पवकार सभा अवगासी। खिलन बाल

के जाल गलीनमै बाल बिलोकि बिकासी। आवत

गालि लगाई चढ़े बिसरें घट मैं पहिचानन कारी।

देखें आनन काढ़ि कहाँ चली सजन है कछु नो

क॰
रा॰स॰

लीक नान रान वैनन नैनन सैनन लागे। सोऊ श्रवध वदयाए
रहे भ्रनतनही सव निकस कहो लमपागे। वलिहारी वारी गिरधा
री सुंदर मार्वेपै आनदी आप मेरे भागे॥ राग भैरव॥ चौताल॥ प्रभ
न भोरही केशव कस कहीए लइए श्रीहरिनाम। गोविंद गिरि
धारी मधुसूदन वनवारी जगन्नाथ जगतके धाम। मकुंद माधो

संगप्यारी कुंज भवन भये रात । श्रीफूल राधिका सकल गुण सा

धिका मुदित मन मन मुसिकात ।। बीडी परस्पर देत मुखन में

डारत पीक लीक रंग भूषीन रंगात । धोंधीके प्रभु स्यामा स्याम

आवत ललिता दिक कहे बात ।। राग भैरव ।। चौताला ।। भोरही

आपुही मनभावन कवनन बल नीच संग जागे । अधर पीक

29

सू॰
रा॰सं॰

लागे । नैक दृष्टि नहे परि गई सिव सिवटो ना जागे । बहुत
कहां लगि वरनी ये पर भूकषन उवरन पावै । भरि सो वन स
ब नीद मै जहां जाइ जगावै । एकन को दरसन दवी एकन
संग सोवै । एकन लै मंदिर चढे इक विरच विगोवै । इहि
ला जनम रीयै सदा सिवको ऊ कहत नम्हारी । सूरस्या
म इहि वर जिके मोटो कल गारी । २७ ।
इति भैरव रागस्य सूरसागर परिछेद:
॥ ७ ॥

२५

जलथल जियजेते । वनर सिरो मन नंदके ग्रह कहो करो
केते । पहिरै रानी कंजकी सिर् सीन उपरै ना सोहै । कपट
लेहिगा नीलो वन्यौ सोको जो देषन मोहै । बोली वनरा नन
दवेयो भ्रमर उपरै ना रानै । प्रनिरोदा ग्रब लोकके सब ग्र
हर महा मद माते । जोग ज्ञगान बीसरी सबै उठि धाइ सेग

भूमिनि मित लरे जुह पांडव भूप छपे
जिनके रन माही भारत षेड़को नूतन
नारि भई विधवा जिन संगर माही ।हो
वतही यह वात भई कछु नाहि भई
सनई भवमाही ।२५। इति प्रबोध ।
वेद नाटक परिछेदः ॥

रा॰म॰
१२
12

किधौं सूरज अमलहै॥ सब विधिसमरथ राजै राजादसरथ भागी
रथ पथ गामी गंगाकैसो जलहै॥ ६॥ दोहा॥ जद्यपिरघंपन जतिग
ए अरिगन केसवदास॥ तदपिप्रतापानलनके पल पल बढतप्र
काम॥ ६॥ तोमरछंद॥ मगुनौ रचौ रकुआनि जगना हुये फिरि
दानि इहिधारिथैयेरि चुवंद हृदये सतोमर छंद॥ ७॥ बहुभार पूजि
रगाइ करजोरिकेपरिवार हसिकै कहेौआरषिमित्र अबवैदि राज
पवित्र ८॥ तोमरमुनिवाक्यं॥ मुनिदान मान सहंस रघुवंसके अ
वतंस॥ मनमांहि जो अतिनेहु रकुबात मांगहु देहु ९॥ अमति

१२

देव देव अनुरूप॥१॥दोहा॥ देषि तिन्है तब द्वारते गुदरनेगो प्रतिहा
र आए विश्वामित्रजू जनु जगके करतार॥२॥ उठिधाए नृप सुन
तही आयगये तवपार॥ लैआए भीतर भवन ज्यौंसुर गुरु सुरराइ ॥३॥
॥सोरठा॥ सभामध्यवेताल तेही समै जु परि उठ्यो॥ केसव बुद्धि
विसाल सुंदर सूरो भूपसो॥४॥दंडक॥ विधिके समानहै विमानी
कृतराजहंस विविधि विबुध जुतमेरु सो अचलहै दीपति दिपति अ
तिदिपति अति सातौ दीपि दीपियत दूसरो दिलीपसो सुदक्षिना
कोबलहै॥ सागर उजागर किबहु बाहिनीको पति छनदानि प्रिय

राम॰
च॰
१३

13

रि चरन मैं आनि॥ तोटक छंद सु अति सरस हृदे माहि यह जानि
२४ यह बात सुनी नृप नांथ जबै सरसे लगि आषर चित्र सबै
मुषते कछु बातन जाइ कही॥ अपराध बिना रिषि देह दही॥ २५
राजोवाच॥ अति कोमल केसव बालकना॥ बहु दुष्कर रक्षस घा
लकना॥ हमंही चलिहै रिषि संग अबै॥ सजि सैन चलै चतुरंग स
बै २६॥ मुनिवाक्य॥ छप्पै॥ जिनि हाथनि हठि हरषि हनत हरनी
रिपु नंदन॥ तिनन करत संघात कहा मद मत्त गयंदन॥ जिनबा
१३
धत सुष लक्ष लक्षि नृप कुंवर कुंवर मनि॥ तिन बाननि बाराह

गतिछंद॥ नगन करौ फिरि जगनौ॥ एक लघु लेषहु सगनौ॥ हर
ष रजादस बरनौ अम्रत गति कहुचरनौ २० राजोवाच॥ सुमति म
हारिषि सुनिजै तन धनकै सम गुनिजै मनमह होइ सु कहिए
धनिसहज्ज आपन लहिए २१ दोधकछंद ऋषिवाको॥ तीनधरौ भ
गना पहिलेंही चारु है गुरुकौं गहि लेंही॥ चारि तथा हयनेज
ति दानै दोधक छंद गछा नृप जानै॥ राज गये जबते बनमां
हीं राक्षसबैर करैं बहुधाहीं॥ रामकुमार हमें नृपदीजे तौपरि
पूरन जग्य करीजे २२॥ तोटकछंद॥ चारि सगन जु विचारीकै चा
मा

रा॰स॰
३३॰

भीउथलाथगाई ॥ सखवेंनीरगईश्रीरम्भखेचहीदिलसलहस्रा

आवाजनहीं ॥ जोहेंनीधीसोहोरजरीअववलनेमेंकछुदेखन

हीं रागभैरव ॥ गजल ॥ इसपाविसिटकरवलनेसेममरले

कौंहैरानकरो ॥ श्रौरपोपलेमहसेरोटीकोमनमलमलकरह

लकानकरो ॥ अवश्रापङ्गपनमपानीसेमनपानीकात्रकसा

नकरो ॥ उञ्जलाभनहींइससजीनेमोंअवमरनेसेपसचानकरो ॥

१८

यहअसवड़नकूदाउक्लाअवकोउमारोजेरकरो ॥ अव

मालइकदीकरनेथेअवननकाअपनेफेरकरो ॥ गफद्

दलशकरभागत्रकाअवग्यानमैंतमशमशेरकरो ॥ त

मसाऊलउाईहारत्रुकेअवभागनेमैंमनदेरकरो नन-ए

गभैरव गजल ॥ सिरकोपावोंदीवालऊपमहपीला

पलकेआनकजकीई ॥ कटदेफाकानऊपवहहवेओरओवें

श्री

ॐ

१

ॐश्रीगणेशायनमः ॐश्रीरामचंद्रायनमः॥ अथश्री राम [illegible]का।
लिख्यते कवित्त बालक मृनालनिज्यों तोरिडारै सब काल कठिन
कराल [illegible] ज्यों अकाल दीह दुषको॥ विपति हरत परि पद्मिनि के [illegible]
सम [illegible] ज्यों पताल पेलि पठवै कलुष को॥ हरि के कलंक अंव
भव सीस ससि सम राषत है केसोदास दासके वपुषकों॥ सांकरेकी
सांकर निसनमुष होतनहीं तो दस मुष मषजो वै गज मुष मुषको॥ वा
नी ज[illegible]नीकी उदारता वषानी जाय असी मति केसव उदार कौन।
कीभ[illegible]रवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध कहि कहि हारे सब।

१४

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ इस ग्रंथके प्रारंभमे प्रथम नाभा दास जीकी भक्ती कथन करते हैं दोहा
श्रवण सुखद मंगल करन हरन त्रिवध तप सूल ॥ भक्ति महातम कथन अब कर हुं सकल सुखमूल ॥ १ ॥ श्रीपति चरन सरो

जमुनाजी

विसपद चार ७३
घट्पद ४६
श्रष्टपद २०
वडेपद १२

मुनि राज। सुनि प्रहलाद प्रसन्न कोषिमे प्रति आने
द समाज। ता पाछें तपकियों असुर बहु फिरदेखो
निजधाम। तब नारद मुनि दई कथाबहु ले आयो
निज धाम। पाछें लोकपाल सब जीते सुरपति दि
यो उठाय। वरुन कुवेर अगनि यम मारुत स्ववस॰
किए लिए माय। हाहा कार भयो सुरलोकन गए
सबै अज पास। तब अज ध्यान किया माधवको वा
नी भई अकास। सकल लोक यह देत असुर उःख

ॐ अथ षष्ट सिंहपरिच्छेदः । राग भैरव तिताल ॥ हरि-

नकशिप अति प्रबल दनुज ह्वै कीन्हो तप परचंड ।

तब उन बर दीनो चतुरानन कीन्हो अमर अखंड ।

जब तप गयो तबहि मघवाने सब संपत गहि लीन्हि ।

गह जब कच कामिनी राजाकी तब नारद सिख दी-

न्हि । याके गर्भ बसत हैं हरिजन सुन सुर पति य-

ह बात । तब तज दई आप लेआये निज आश्रम बि-

ख्यान । नित प्रति ज्ञान कथा हेमन सों कहत रहत-

गी॰
गो॰
५७

एह्ह मनोहर हार विमल जल धार मने ऊच ऊंभे ५। अधिवान मावित सावी मिरि देतव वपु रपि भुति रण सजे। वेडि रणित रशना रव डिंडिम म मि मर मरम म लजे। ६। स्मर शार स्रभग स्रवेन साबी मदलेख्य करेण स लीले। वल वलय काणि नै रव बोधय सहि मणि निज गा

मराल विकारे ।२। मृगज रमणीय नरेंतरुणी जन मो

हन मधु रिपुरावे । कुसुम शरासन शासन वंदिनि

पिक निकरे भज भावे ।३। अनिल तरल किस·

लय निकरेण करेण लतानि कुरंबे प्रेरण मिव ।

कर मोह करोति गति प्रति मंच विलंबे ।४। स्फुरि

त मनंग तरंग वशा दिव सूचित हरि परि रंभे ।

लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल । एक भूमगा पा
मन आवेगा मौकूफ हुआ जब अन्न और जल । घर
बार छटारी चौपाये क्या खोता है खंभ तेरे तन का
पोला । हंसों की गर्दन उठाता है यहां गोरा गधे ने म
ह खोला

सू०
रा०स०

तन्यौ दिषाइवौ गावै । महा मोहनी मोहि आतमा मन करि
अपनहि लगावै । ज्यौं हती पर बधू चोर कैलै पर पुरुष मिला
वै । मेरे तो तुमहीं गति तुम पति तुम समान को पावै । सूर
दास प्रभु तुमरी कृपा बिनु को मो दुष बिसरावै २४ ॥
राग सोरठ ॥

22

विनती सुनो दीनकी चित दै कैसैं तव गुण गावै । माया

नट नील छट लिये कर कोटिक नाचन चावै । दर दर लो

भला गि लिये डोलत नाना स्वांग बनावै । तुमसों कपट

करावत प्रभुजू मेरी बुध भरमावै । मन अभिलाषत्तरंग

न कर कर मिथ्या निसा जगावै । सोवत सपनें मेंज्यों संप

सू
रा.सं

हरि तेरी माया को कोन

बिगोयो । सो जो जन मर जाद सिंधकी पलमें राम बिलो

यो । नारद मगन भए मायामें ज्ञान बुद्धि बल षोयो । साठ

पुत्र श्रुक ज्ञादस कन्या कंठ लगाये रोयो । संकर को चित

हरयौं मोहनी सेज छाडि भव सोयो । जाहि मोह आपु

23

अबकै राषि लेहु भगवान । हम अनाथ बैठे द्रुम डरिया

पारधी साधे बान । जाके डर भाज्यौ चाहत हैं ऊपर ढुक्यौ

सिचान । दुहूं भांत दुष भयौ आन यह कौन उबारै प्रान ।

सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी कर छूटे संधान । सूरदास

सर लग्यौ सिचा नहि जय जय कृपा निधान २५ ।। रागसोरठ।

न जानई जाके रूप सकल जग राच्यौ । विन देषे विनहीं
सुने ढग तन कोऊ राच्यौ । सुनयाके उतनै सुक सनका
दिक भाये । लोक लाज सभ छुट गई काम क्रोध मद जा
ये । अकथ कथायो की हरी कहै कहतन आई । षेलनके
सेग यो फिरै जो नन सेग छाई । इहि विधि हरि डहके सब

श्राद्ध कियौ नवनष सिष नैंनै रोयौ । सो भैया दुरजोधन राजा

पलमैं गरद समोयौ । सूरदास कांच अरु कांचन एक हिथ

गाथ परोयौ २६ ।। रागसारंग ।।

तुमरी माया महा बल जिन सब जग बस कीनो । नैक

चितै मुसकाइ सबनि कौ मन हरि लीनो । कबहु जल कर्म

ग.दे. परिच्छेदः॥८॥

२नि २सा २रे २प २पा २म २ग २रे २सा

तेउ देव पुंज चरण शरण धारी भव बिभीति

हारी ॥ इति अंतरा ॥ कारी जरा परम मोद ।

स अमन मन अनन्य सेवत जो सेवक तिह य

न सुधान्य धारी ॥ भारी जब कृपा तेरि बाल

निधे दयानिधे मन अनंद युक्त होई विप-

त भय निवारी ॥ इति आभोगः । इति रागेण

मिलित यमुनाभे केशव धृत हल धर रूप जय
जगदीश हरे ।८। निंदसि यज्ञ विधेरहह श्रुति
जातं सदय ह्रिदय दर्शित पशु घातं केशव धृत॰
बुद्ध शरीर जय जगदीश हरे ।९। म्लेछनि व
हनिधने कलयसि करवालं धूमकेतु मिव कि
मपि करालं केशव धृत कल्किशरीर जय ज
गदीश हरे ।१०। श्री जय देव कवेरिद मुदित
मुदारं शृणु सुखदं शुभदं भव सारं केशव धृत

विक्रमणे वलि मद्भुत

सि ^ वामन पदनख नीरजनितज पावन केशव
धृत वामन रूप जय जगदीश हरे ।५। क्षत्रि
य रुधिर मये जग दप गत पापं स्नपयसिशमि
त भव तापं केशव धृत भृगुपति रूप जयजग
दीश हरे ।६। वितरसि दिक्षुरणे दिग्पति कम
नीयं दश मुख मौलि बलिं रमणीयं केशव धृ
त रघु पति रूप जय जगदीश हरे ।७। वहसि
वपुषि विशदे वसनं जलदाभे हल हति भीति

रेसानिधनिसा ॥ अब बसंती रागिनी में एक गत

न मसीतखानी ताल धीमा तिताला उठेगी

सां नि सां नि

पैहली में ॥ अथ स्थाई ॥ डिड डा डिड डाडा

ध नि नि सां गं रे सां पं

डा डा । डिड डा डिडडाडा डाडा डा । डिडडा

म प ध म गं सां गं म पं ध

डिड डा डा डा डाडा । डिड डा डिड डा डा ।

म ग रे

डा डा डा ॥ अथ अंतरा स्थाई बजाकर चला ।

ग॰ गोरंभनहू होइ। ब्रज जन सब नाषी मुखदेषन श्रुति श्रारत
५ सब कोइ। उठि बैठे लए गोद जसोदा सुंदर स्तननिहुं लोइ॥
रसिक प्रीतम लगि गारे जननिके मोंगन रोटी रोई॥ रागराम
कली॥ताल॥ मैया नेरे लालको मुष देषनहीं श्राई। का
ल्हिमुष देषि गई दधि वेचन जातहि गयो हे विकाई। दिन
ने हूनो दाम लाभ भयो गाइन बछिया जाई। श्राई सबै षंभाउ ५

तान ननम् नन नरीन नावरी रना नना आन नान आन नान

तान ननम् इस्थंतरा ॥ राग रामकली ताल तीन ॥

भोर भये जागो हो ललना कहा तुम अजहूं रहे हो सोई । पियो

धार अपनी धोरी की जैसे देह बल होई । वेनी गुहूं देउ हूंगा ब्र

जन मिसि विंड का मुख धोई । हसत वदन मुख सदन नि

हारो नान्ही नान्ही दतियां दोई । देखत ग्वाल बाल खेलन को

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॥

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष

स ह क्ष क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

[illegible]

कहिं कछु मरम अस प्रभुमाया मनह्राहू।
तीन दिवस करुणायतन वसेभक्त निजधा
म। करि सबकर संतोष प्रभु जथा उचित अ
भि राम। अस नरसी जन जगत जिनभये
भक्त सिर मोर। सुर दुरलभ सुख भोगि ज
ग तजत अंत निजकाय। कृष्ण कृपाते कृ
ष्णभे भक्त कृष्ण गुण कारक मलन

औरन राति अंध्यारी ॥ नैनन हूं अरु बैननहूं

तनहूं मनहूं को नहीं प्रतिप्यारी ॥ अथ कर

णारस लक्षण । सवैया । हरतें डंडभी दीह

सुनी न गुनी जन पुंज की गुंजन गाढ़ी ॥

तोरन तोरन तूर बजै बरमावन भांट न गा

वनठाडी ॥ विप्रन मंगल मंत्र पढ़े अरु ।

हैं उनहीके मध्यमे जीवके निवासका स्थानहै
यही जीव स्वरूपी ब्रह्महै। अब श्रीमद्भागवमें
लिखाहै सोई येह जीवहै विवर प्रकृती अर्थात
ह्रिदाकाश दश अंगुली मात्र प्रलाइ सोईहै अह

रा॰मा॰ मैं ध्यामन धरे पचि पचि यों ही मेरे काल

सिर छूटिहै। और उ अनेक विधि कौ

टि कउ पाय करे सैंदर कहत विनसो

न नही छूटिहै॥ राग मालकौश ता

ल चार॥ बुडिकर हीन ननम गुनब्बा

इ गयो बन बन फिरत उ दास होइच

१प २नि २सै
राग मालकौश ताल चार। जोगकरे

२म २ग २म २प २नि २प २म २ग २सै
जगकरे वेदविधि त्यागकरे जपकरे

१नि २प २नि २सै २म २ग २सै
तपकरे योंही आयु छुटिहै। इतिस्या

२म २प २नि २सै २नि २प २नि २सै २ग
ई। जमकरे नेमकरे तीरथउ बनक

२सै २नि २प २म २ग २ग २ग
रे ग्रहमों ग्रटनकरे तृष्णा स्वास टूटि

२सै १प १नि २सै २म २ग २म
है। इतंतरा। जीवेकोजतनकरे मन

रा॰ मा॰

आरसी न फेरे मूढ कारते ॥ राग माल
कौश मालकार ॥ मेघ सहे शीत सहे सी
स पर घाम सहे कठिन तपस्या करिके
ट मूल खात हे । इति स्थाई ॥ जोग करे
जग करे तीरथ उ व्रत करे पुनि नाना ।
विधि करे मन मैं सिहात है । इत्यंतरा ।

रतें। इति स्याई। कठिन तपस्या धरि मे
व सीत घाम सहे केट मूल खाइ कोउ
कामना के डरतें। इस्येतरा। प्रतिही ग
हान और विविधि उपाय करे निज हू
पभूलि करि वेधे जाइ परतें। सेटरक
हत मटऊंघी और देवि मारिव हाथ मोहि

ग॰मा॰ है। इतिस्याई। कोउ फिरे नांगे पायको

उ गुदरी बनाइ देह दसा दिखाइ आइ

लोक पुटाकोहै। इत्यंतरा। कोउ दू

धाधारी होइ कोउ फलहारी नायको

उ अधोमुख झुलि झुलि धुम घुटोहै॰

कोउ नही खायनोन कोउ मौन गहै।

२प २नि २प २म २ग २सं १नि १प २म

और देवी देवता उपासना अनेक करे

२ग २म १नि १प २सं २म २ग

औबनिकी होसक सें आकटोडे जात

२सं २म २ग २म २प २नि २सं २म २ग २सं

है। छेदन करत एक रविके प्रकाश

२नि २प २म २ग २सं १नि २सं २म २ग

विना उगनाकी जोति कहा रजनीवि

२सं

लात है॥ राग मालकौश ताल चार॥

२म २ग २सं १नि २प १नि १प १नि २सं २ग २सं

देखो माई आयेरे जो बजार लूटो।

रा॰मा॰

इतनि पाई। यह हमकौं कछु देइ दया।
करि हेरि रहे सब लोक लगाई। इत्येत
ना। कोउक उत्तम भोजन लावत कौ
कोउ कलावत पान मिठाई। हेदरले
करि जात भयो सब म्हराव लोकनि ये
ह लिथि पाई॥ राग मालकौश ताल

मौन मंदर कहत यौंही तृष्णा भ्रम कुलो
है। प्रभु मौन प्रीति मोहि लागत उसो प
रचय नाहि देखो भाई औरेरनै ज्यो ब
जार लूट्यो है॥ राग मालकौश ताल
पुडगल चौताला। आसन मारि मैं बारि
जटा नाख उजल श्रेग विभूति चढाई॰

रा॰मा॰

२नि २प २म २ग २म २ग २सां
बेरहूबतहै ग्रक फोकन गावै ॥ राग मा

२सां २नि २प २नि
लकौस्र ताल बाब। गेहतज्यो ग्रक नेह

२सां २म २ग २म २प २म २ग २सां
तज्यो प्रतिविह लगाइकै देह सेवारी।

२ग २म २प २नि ३सां २ग ३सां २नि
इतिस्याई। मेबमल्यो ग्रक सीतमल्याउ

२प २म २ग २म २ग २सां
निपुयमसे पेंवागति पारी। इत्येतग।

२सां २नि २प २नि २सां २म २ग २म २प २नि
भुवमहे रहे हावतरे परि हेंदरदास

5

२प २नि २प २म २ग २सं १नि १प

बार। उदय पाय ग्रयो मख विद्दे करि छुट

१म १प १नि २सं २ग २सं २म

नपुमहि देह फलावै। इतिस्याइ। मेव

२प २नि ३सं ३म ३ग ३सं २नि २प २म

ह सीतक घामसहे सिर तीनक कालम

२ग २सं २प २नि २प

हा उठलिपावै। इत्येनवा। हाथ कछुन

२म २ग २सं १नि १प १म १प १नि २सं

परे कैलडे कन म्हाव कुकम कुटि।

२ग २सं २म २प २नि ३सं ३म ३ग ३सं

उडावै। मंदर वेद्धि विषय मेव कों

ग·मा· श्रोर उपाई करे बहुतेरो। छेदर सगर सृष्टका

षु भयो तब लो कत हुन हि देखियेनेरो·

राग माल कोश ताल चार। धार बह्यो

स्वर्ग धार हृद्यो जल धार भयो गिरिया

रगिरो है। इति स्थाई। भार भेचो धन

भार घडु करि भार लयो सिर भार परो

२प २म २ग २सं २ग २म २प २नि २सं २ग
महेउःखभारी।आसनछांडिकैकोसन
२सं २नि २प २म २प २म २ग २सं
ऊपरआसनमारिपैआसनमारी।इति
२नि २प २म २ग २सं २नि २प २नि
स्याई॥नेकोउकष्टकरेबहूभांतिनज्ञा
२सं २म २प २म २ग २सं २म २प २नि
नध्याननहींमनकेरो।ज्योंतमघुरि
२सं २ग २सं २नि २प २म २प २म २ग
रह्योघरभीतरकेसैंइदीनहोइग्रंथे
२सं २नि २प २म २सं १नि १प
रो।लाटिनमारियेठेलिनिकारिये।

२ग २सं २नि २प २म २म २सं
रा॰मा॰ सकै तीसकौं बीसइमें दसइ नहि होये ।।
२म २ग २म २प २नि २प २म
इत्यतम ।। जौं चौबे छबेकौं चल्यो पुनि
२ग १नि १प २म २ग २सं २म २प २नि २सं
होइ उबेरहे गांठके खोये । तैसेंही सुंदर ।
२म २ग २सं २नि २प २म २ग २म २ग
ग्रौर क्रिया सब रामबिना निश्चय नरहो॰
२सं २म २प
ये ।। राग मालकौश ताल चार ।। जो कौ
२नि २प २म २ग २सं २म २प २म २ग
उ राम बिना नर सूराव ग्रौरनके गुणजीम

२सा २ग २सा १नि १प १नि २सा २म

है। इन्येतरा। मारतणो बहिमारगयोजम

२प २नि १प २म २ग २सा २ग २म २प

मारटई मनतोनमैरोहे। मारतन्यो घट

२नि ३सा २ग २सा २नि २प २म २ग २सा

मारपठो कहि संदर कारज कोनमैरोहे:

२सा २म

गग मालकौश नाल वार। जौं कोउ।

२ग २म २प २नि २प २म २ग २सा १नि

कोमकलो नहिमारग नेलकलेहव मैं

२प २म २ग २सा २म २प २नि ३सा ३म

पमजोये। इतिस्याई। जौबनियागयीवी

गा॰मा॰

नार ॥ होइ उदास विचार विना नर गेह

मे जोबन जाइ रह्योहै । इतिस्थाई । अब

रु छाडि वजे वर लेकरिके तपकानन

कहू मह्योहै । इत्यंतरा । आसनमारि

सबासन छै स्वाव स्वाव मौनगहि मन

मौन गह्योहै । संदर कौन कुंडिलग

२सं २म २प २नि २सं
भनैगी। इतिस्याई। ग्यान क्रिया गाढते·
२नि २प २म २ग २म २प २म २ग २सं
गाढवा पुनि होतहै मेरि कछून बनैगी·
२म २प २नि २प २म २ग
इत्यंतरा। ज्यों हथ फेर दिखावन नाव
२सं २म २प २नि २प २म २ग २सं २म २प
र खेत नो पुरिकी पुरि बनीगी। सेंदर
२नि २सं २नि २प २म २ग २म २प
भूलमई प्रतिग्राय करि मनकीयेभेम
२नि २प २म २ग २सं
पठाई नैनैगी॥ रागमालकौश ताल

रा.मा.

२म २ग २सा २म २प २म २ग २सा २म २प २नि
मोहितैं हाथ कछू नहि ऐहै। यानर दे

२सा २ग २सा २नि २प २म २प २म
ह तृष्णा मटकोवत सेंदर राम विनाए

२ग २सा
क्रिनैहै।। राग मालकोश ताल चार।।

१

२सा २म २ग २म २प २नि २प २म २ग
आपने आपने धान सकाम सराहत

२सा २नि १प २ग २सा २म
को सब बात भली है। तुलिस्याई। जह

२ग २म २नि २सा २ग २सा २नि २प २म
व्रतादिक तीरथ दान पुरान कथाउ

२सा २नि २प २म २ग २सा २म २ग २सा

गीकहिया भवसागर माहि बहे है ॥

२प २म २ग

राग मालकौश ताल चार । मेघयहै

२म २प २नि २प २म २ग २सा १नि २प

गरि भेदन जानत भेदलहि बिनबेद

२म २ग २सा २म २प २नि २सा

हिवेहै । इतिस्थाई । भूतेहि मारतनी

२म २ग २सा २नि २प २म २ग २सा

द निवारन ग्रन्न तैने फलपत्र निवेहै ॥

२प २म २ग २म २प २नि २प

इन्येतरा । और उपाय अनेक करे प्रति

रा॰ मा॰ कौउक चाहत यातरसा यन कौउक चा
हत पारखायो। इनिस्याई ग्रेतरा। कौउ
क चाहत नैचनि मैमनि कौउकचाहत
रोग ग्रमायो। सुंदर रामविना सब हि
श्रम देखिइ याजग कौं डह कोयो॥ रा
ग मालकौश ताल चार। कौउ मयाप

अनेक चलीहैं। इत्येतरा। कौटिक शोर उ
पाय जहां लगिते सुनिकैं नर बुड़ि छ
लीहैं। रहैदर तानबिना नकहुं सावभू
लनकी बहु भांति गलीहैं॥ राग माल
कौषा ताल चार॥ कोउक चाहत पुत्रय
नाटक कोटक चाहत बांफ जनायो।

२ग २सा

रा॰ मा॰ मनकौना॥ राग मालकौश ताल चार।

२नि २प २म २ग २म २प २नि २प २नि

कोउक ग्रेग विभूति लगावत कोउक।

२प २म २ग २सा २म

होत निराट दिगंबर। इतिस्याई। को॰

२प २नि ३सा ३ग ३म ३ग ३सा २नि

उक वित कषाइक बोढत कोउक का

२प २म २ग २सा २नि

काय रेग बढ ग्रेबर। इतनेतरा। कोउ॰

२प २म २ग २म २प २नि २प २म २ग

कबल कल सीमजटा नाव कोउक बो

२नि २प २म २ग २सं १नि १प १म । २प २ग

य पान करै नित कौउक खात है पश्रम

२सं २ग २म २प २नि

लैना। इतिस्याइ। कौउक करै निसि

२सं २म २ग २सं २नि । २प २म २ग २सं

बासर कौउक बैठि कै साधन पैना। इ

२ग २म २प २नि । २प २म २ग

न्येनरा। कौउक बाद बिबाद कै निति

२सं १नि १प २ग २सं २ग २म २प

कौउक धारि रहै मब मैना। हेदरप

२नि । २सं २म २ग २सं २नि २प । २म २ग

क ग्रतान गए बिजुसिइ भयौ न हिदी

रा॰मा॰ दौर मथुराकौं हरिद्वार न्हातहै। इतेनरा
कोई दौरे बदरीकौं विषम पहाड चढै
कोई तो केदार जाइ मनमें सिहातहै। मे
दर कहत गुरुदेव देहि दिव्यनैन हरि
हीके हरिमेंऊ निकट दिखातहै॥ रा
ग मालकोश ताल चार॥ कौउक जात

२म २ग २सं २ग २म २प २नि ३सं २म

छतहै जु बहेंबर । हेदर एक प्रतानग

३ग ३सं २नि २प २म २ग २सं

ग विगुग मब दीमत ग्राहि घटेंबर ॥

२सं २ग

राग मालकौश ताल चार ॥ आपहीके

२म २प २नि २प २म २ग २सं १नि १प १नि

घटमैं प्रगट परमेश्वरहै नाहि क्यांहिग्रु

२सं २म २प २म २ग २सं २म

लेनर हूर हूर जातहै । इतिस्याइ । कोई

२प २नि ३सं ३म ३ग ३सं २नि २प २म

दैरै द्वार कौं कोई काशी जगन्नाथ कोई

ग॰मा॰

मालकौश ताल चार। छोडि भए नर भोंड

के दोना। इति स्थाई। आगे कछु न हिहा

घ पैसो पुनि पीछे बिगारि गए निज।

भौना। इत्यंतरा। जौ कोउ कामिनि।

के तहि मारि चली सँग ग्रीगहिं दोविस

लौना। कोउ गयो न निकोनन काल

२प २नि २प २म २ग २सा २म २म
प्रियाग बनारस कोउ गया जगन्नाथ हि

२ग २सा २म २प २नि २सा २म २ग २सा
जावै। कोउ मथुरा बदरी हरिद्वार को

२नि २प २म २ग २ग २सा
उ भयाकुल हैत हि न्हावै। इतनि स्याई श्र

२म २ग २म २प २नि २प २म २ग
मना।। कोउक पुष्कर है पंचतीरथ दौ

२सा २म २ग २सा २म २प २नि २सा २म २ग
रंदै दौरि का धावै। सुंदर बिन गङौ घ

२सा २नि २प २म २ग २सा
र मोहि फुंफुन किंकर पावै।। राग।

रा॰मा॰

खिनै कहिफले। इन्हैनरा। काहेकौं ग्रौ

रउपाय करे ग्रब ग्रौनक्रिया करिकैम

तिमूले। हेदर एकमजै भगवंतहि तौ

हाविमागैमैं नितफले॥ राग मालकौ

शतालचार॥ विपरीतज्ञानछेरा। मन

हरछेद। एकबल हाविसौं बनाइक

कहे न बने जु रही मन बिमोना। नैसें ही से

दुर ज्ञान बिना सब छांडि भए नर भोंड

के दोना॥ राग मालकोश ताल चार॥

काहेकों तूं नर भेष बनावत काहे कों

तूं दम झेरदि सि डुले। इति स्थाई। काहे।

कों तूं नर कष्ट करे प्रति काहे कों तूं म

रा॰मा॰

दर कहत ऐसी ज्ञानी है जगत मांहि नि
नकों तो देखि करि मेरो मन डोरो है ॥

राग मालकोश ताल चार। देहसों म
मत्व पुनि गेहसों ममत्व मन मायामें
रहत है। इति स्थाई। थिरता न लहै जे
में केउक चौगान मोहि कर्मनिके ब॰

15

२ग २सं १नि १प १नि २सं २म २प २म २ग
रि कहत है प्रेत करन नौ विकारनसौं भ

२सं २म २प २नि ३सं २म
रौ है। इति स्याई। जैसें मेंढग गोबर सौं

२ग ३सं २नि २प २म २ग २म २प
कृणा भरि गावत है मेर पांव छूत लेको।

२नि २प २म २ग २सं २म २ग २म
उपर ज्यों करौ है। इत्यंतरा। जैसें कोउ

२प २नि २प २म २ग २सं १नि १प
भोंडे माहि प्यानकों छिपाइ गावे तो।

१नि २सं २म २प २म २ग २सं २म
घराक मूरकों ले मांव बांधि ये गौ है। से

ग·मा·

भरम मन इंद्री प्राण मारग के जलमैं न·
प्रतिबिंब लहियै। फूलि स्याई। गोंठिमैं न
पैसा कोउ भयो रहै सांकर बान निहीं·
म्हर रूप याग नि गहियै। छूत्यो नता। स
पनेमैं पैवान्त जीमि कै नयन भयो जा
गेते परम भूख लाइबेकौं चहियै। मैंदर

16

स पह्यो यक्षाकौ वहत है। इत्येतरा त्रेतः
करन सु तो जगत सौं रचितरै भाव सो
वनागवत वलकौ कहत है। स्वंदरग्रपि
क मोहियाही तें ग्रवेभा ग्राहि भूमिपर
परै कोउ वेद कौं गहत है॥ राग माल
कौग्रा नाल वार। भाव सो कहत तान

रा॰मा॰ सभ करमनिकौं रचौ है। अलकौन प्राप॰

ति पृति कर्म सब कुटिगण उड्नतें भृष

होइ ग्रयवीच बचौ है। सेदर कहत नाहि

न्यारिये रूपण जैसे याही भाँति ग्रघन

वमिहू करौ है॥ राग मालकौ श्रु ताल

चार॥ जान किसी वात कहे मनतो मली

सुभट जैसें कायर मारत गाल राजा भोज

समकहो गांगू तेलो कहिये।। गग माल

कौशा ताल चार।। सेमारके सबनि मोंग्रा

सक्क अनेक विधि इंद्रियउ लौलप मन

का बहुत गयो है।। दूत्यौ तन।। कहत हेरे भैं

मैं भौ एक बल जानत हौं नाहीतें कोडि

२नि २प २म २ग २म २प |२नि २प २म

ग्रा·मा· आहि जाई वाकौं मिलौ आइ ताहीकौं वि

२ग २सं २म

सारहे ॥ राग मालकौश ताल चार। हे

२ग २सं २नि २प २नि |२सं २म २ग २म

सखेनवक खेत देवियै समानदाउहेम

२प २नि २प |२म २प २म २ग २सं

मोती चुगे वक मछरीको खातहै। इति

२म २प २नि २सं २ग |२म

स्याई। पिक ग्रहकाक दोउकेसे कहि

२ग २सं २नि २प २म |२ग २म २ग

जाने जाइ पिक ग्रेब डार काक करेकाहि

18

१ध १नि २सं २म २प १नि २प २म २ग २सं

न रहे वासना अनेक भरी मैं कननि वार है·

२म २प १नि २सं २ग २म

द्युतिस्याई। जैसें कोउ आभूषन अधिका।

२ग २सं २नि २प २म २ग २म २ध २नि २प २म २ग

बनाइ राख्यो कलई ऊपर करि भीतर भे

२सं २म २प २नि २प २म २ग २सं १नि

गार है। ज्यौंही मन आवै त्यौंही बिलननि

१ध १नि २सं २म २प २नि २प २म २ग म

मेक कोइ ज्ञान हाति सीषलयो ऐषनवि

२ग २सं २म २प २नि २सं २ग २म २ग २सं

बार है। सुंदर कहत वाकें अटकन कोउ

ग. मा.

जोकी छबि ताजी तुरकी निकौंन बेलो बेधो

ताके आगे फेरि टटू बान लाइये। इति।

स्याई। जोके सास मलमल मल सिरी

साफ ठेरपेरे ताके आगें आनि करि चो

सई राखिये। इत्येतरा। जोंको पेचाम्

त खात खात सब दिन बीते हेदरकर

जातहे। इत्येतना। सियो ग्रह फटक पषा
न ममहे विचे वहतो कठोर वहतो जल
मै समातहे। सेदरक हत लागी वाहिर
भीतर षुहताकी पटतर ग्रौर वातना
श्री वातहे॥ राग मालकौश ताल चार
वचनविवेककौ ग्रेव मनहरछंद॥८

गा॰मा॰ टूटे पैवंद उडाए छानि ताहू मांहि बिथरी

न सोनि यन तैसी है। इत्यै नरा। एक बानी

सूत करि बहुत सिंगार कियो लोकन।

कौं नीकी लगे संतन कौं भैसी है। सुंदर॰

कहत बानी तें विधि जगत मांहि जाने।

कोऊ चतुर प्रवीन जाको जैसी है॥ राग

न नाहि गवरी बजाइये। चतुर प्रवीन।

गावै सुरभाव अंग करे सबन के आगे जे

से जैं गनादि बोइये॥ राग मालकोश।

ताल चार॥ एकवानी रूपरंग भूषन

बसन अंग अधिक विराजमान कहिये

न ऐसी है। इतिस्थाई। एकवानी फाटे

रा॰ मा॰ अंगहीन वाकी ओर देखि देखि नाचाइह
लाइये। ऐंदर कहत वाको वापही कौं
प्यार होइ यौंही जानि वानी कौ विवेक।
ऐसे पाइये॥ राग मालकौश तालचौ॰
बोलिए तौ तब जब बोलिवेकी सुधि
होइ न तौ मुख मौन करि चुप होइ रहि

21

मालकौश ताल चार। राजाको कुंवर।

तो सरूप कै कुरूप होइ ताकों तसलीम

करि गोदलेवि लाइये। इतिस्याई। और

काहू रैयतकै सरूप होइ सोभनीक ता

हकौं तो देखि करि निकट बुलाइये॥

इयेतरा। काहूकौं कुरूप कारो कुबडौ है

२सां २म २ग

रा॰मा॰ राग मालकौंश ताल चार। एकनके वच

२म २प २नि २प २म २ग २सां २नि १प १नि

न सुनत प्रतिभाव होइ फल मैं करत है

२सां २म २ग २सां २म २प

अधिक मन भावने। इति स्थाई। एकनके

२नि ३सां ३म ३ग ३सां २नि २प २म २ग २सां

वचन अमृत मानो बरषत श्रवनके सुन

१नि १प १नि २सां २ग २सां २सां

त लगत अल भावने। इत्यन्तरा। एकन

२म २ग २म २प २नि २प २म २ग २सां १नि १प

के वचनकें कटुक विषरूप करत म

२म २प २नि २सां २म २ग २सां

ये। इतिस्याई। जोरियेउ तब जब जोरिवे

२नि २प २म २ग २म २प २म २ग

ऊ जाति परे तक छेद घर नृपनामे लहि

२सां २म २ग २सां १नि १प

ये। इत्येतरा। गाइयेऊ तब जब गाइवे।

१नि २सां २म २ग २म २प १नि २प २म

को केटहोइ श्रवन के सनतही मन जाइ

२ग २सां २म २प २नि २सां २म २ग २सां २नि

गहिये। तक भेग छेद भेग ग्रय मिलेन

२प २म २ग २म २प २नि २प २म २ग २सां

कोउ सेटर करत ऐसी वानी नहि कहिये।

रा·मा·

२सं २ग २प २म २ग २सं १नि १प १नि
निरबाजन बोलतहै सब कोऊ कानदेख

२सं २म २ग २सं १प १नि १प
नत रव नैमकौं। इल्मेतरा। नाहीतें सब

१म १प १नि २सं २म २ग २म २प २नि
वन विवक करि बोलियत यौंही वाक

२प १२म २प २म २ग २सं २म २प २नि
वाक कहि तोरियैन पैनकौं। सुंदर स

२सं २म २ग २सं २नि २प २नि २प २म
मुझकैं ववन कोउ वारकैरै नाहि नर।

२ग २सं १नि २सं २म २ग २सं
बुधहै पकरि बैठ मौनकौं॥ रागमाल

रमछेद भाव उपजावने। भेद र कहत

नट घटमैं वचन भेद उतम मध्यम ग्रह

ग्रथम सुनावने॥ राग मालकौशताल

चार॥ काक ग्रह गामभडलूक जब बो

लतहै तिनके तो वचन सुहात कहि।

कोनकौं। इत्येतरा। कोकिलाऊ मारेपु

रा·मा·

बोलिकैं वृथाही तातें ज्ञानी नहीं बोलिये·

भेदर समकि करिलिये सरसबान नबरी

नो बदन कपाट गहि खोलिये ॥ राग माल

कोश नाल चार ॥ वचन तो उहे जामें पार

थे विवेक हे और तो वचन ऐसे बोलत है।

इतिस्याई। पसनैमें तिनके तो बोलिवेमें

कौशताल चार ॥ प्रथम मोहिये विचार।
छौम मो नदी जैडारताहीतैं सबन मेंभा॰
रि करि बोलिये । इतिस्थाई । जानेनकहे
न हेत भावै तैसी कहि देत कहियेतो न
ब जब मन मानि तोलिये । इत्यंतरा । स
बहीकों लागे डरबकोऊ नहिपावे सब

रा. मा.

है ॥ राग मालकौंश ताल चार ॥ वृंदावन में
सुवन विवेक करि लीजिये जैसें हंस नीर
कौं तजत है । इति स्थाई । भमार ज्ञानि सा
मुज्ञानि छीरकौं निरालौ करि पीजिये ॥ जै
सें दधि मथत मथत घृत काढि लेत औ
र रही पही सब छाडि छोड दीजिये । जैसें

२५

१

ढिगाऊन एकहै कोउ रात दिवस बकतही
रहत ऐसे जैसी विधि कूपमैं बकतमानो
भेकहै। इत्येतरा। विविधि प्रकार करि।
बोलत जगत सब चट पट भाव वचन
अनेकहै। केदर करत ताते वचन विचा
रि लेहु वचन तो उहाजामें पाइये विवेक

ग॰ म॰ मन सयो रतद्व्या वृत्या य चकित मभिधत्ते श्रु
ति रपि स कस्य स्तोतव्यः कतिविध गुणः क
स्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य
न वचः ॥ २ ॥ मधुस्फीता वाचः परम ममृत नि
र्मित वतस्तव ब्रह्मन किं वागपि सुरगुरो र्वि
स्मय पदे मम त्वे तां वाणीं गुण कथन पुण्येन

अथ महिम्न परिच्छेदः ॥ राग भैरव ताल गी॰

सं नि सं गरे सं सं नि नि नि सं निप नि सं रे सं

महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सदृशी॰

सं नि ग म ग म प प प प निप मगरे गम मगरे

स्तुति र्ब्रह्मा दीना मपि तद वसन्ना स्त्वयि गिः

सं म प नि सं नि सं रे सं

रः अथा वाच्यः सर्वः स्वमति परिणामावधि

नि प प नि प प म म गरे ग

गृणन ममा प्येष स्तोत्रे हर निर पवादः प

म मगरे सं म ग म प पप म प ग म रे

रिकर ॥ १ ॥ अतीतः पंथानं तव च महिमा वा

रा·म· किमपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति

किमपादान इति च अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनव

सरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखर

2 यति मोहाय जगतो ॥५॥ अजन्मानो लोकाः

किमवयववन्तोपि जगतामधिष्ठातारं किं

भवविधिरनादृत्य भवति अनीशो वा कुर्या॥

भवतः पुनामीत्यर्थेस्मिन पुरमथन बुद्धि

र्विभिन्ना ॥३॥ तवैश्वर्ये यत्र जगउदय रक्ता

प्रलय कृत त्रयी वस्तु व्यस्ते तिस्रषु गुणभि

न्नासु ततनुषु अभव्याना मस्मिन वरद रमणी

यामर मणी विहन्ते व्याक्रोशी विदधत इहै

के जडधियः॥४ किमीहः किंकायः सखल

ग० म० ट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेती
यत्तव वरद तंत्रोपकरणं सुरास्तां तामृद्धिं द
धति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां नहि स्वात्मारामं वि
षयमृगतृष्णा भ्रमयति ।८। ध्रुवं कश्चित्सर्वं
सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये
जगति गदति व्यस्तविषये समस्तेप्येतस्मिन्

३

द्भुवन जनने कः परि करो यतो मंदा स्त्वां प्र

त्यमर वर संशेरत इमे ।६। त्रयी सांख्यं योगः

पशुपति मतं वैष्णव मिति प्रभिन्ने प्रस्थाने ।

परमिद मदः पथ्य मिति च रुचीनां वैचित्र्या

दृजु कुटिल नाना पथ जुषां नृणा मेको ग

म्य स्त्व मसि पयसा मर्णव इव ।७। महोक्षः ख

ग॰भ॰ यत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशा
स्यो यद्बाहून्नभृत रणकंडूपरवशान् शिरः
पद्मश्रेणी रचित चरणांभोरुहबलेः स्थिरा
यास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥
अमुष्य त्वत्सेवा समधिगत सारं भुजवनं।
बलात्कैलासेपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः

पुर मथन तै र्विस्मित इव स्तुवं जिह्रेमि त्वां न
खलु ननु धृष्टा मुखरता ।९। तवै श्वर्यं यत्ना
यदुपरि विरिंचो हरि रधः परिछेत्तुं यातां व
नल मनल स्कंध वपुषः ततो भक्ति श्रद्धा
भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत स्वयं तस्थे
ताभ्यां तव किमनु वृत्ति र्न फलति ।१०। अ

ग.म. वनतिः १३ अकांड ब्रह्मांड क्षय चकित देवा।

सुर कृपा विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषंसंहृ

तवतः सकल्माषः कंठे तव न कुरुते न श्रि

यमहो विकारोपि श्लाघ्यो भुवन भय भंग.

व्यसनिनः १४ असिद्धार्था नैव क्वचिदपि

सदेवासुरनरे निवर्तंते नित्यं जगति जयि

5

नः अलभ्या पाताले ऽप्यलस चलितांगुष्ठ शिर

सि प्रतिष्ठा त्वय्यासी द्ध्रुव मुप चितो मुह्यति

खलः १२ यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चै र

पि सती मधश्चक्रे बाणः परिजन विधेयत्रि

भुवनः न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्च

रणयो र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरस स्त्वय्य

ग.म. ननु वामैव विभुता २६ वियद्व्यापी तारागणगु
णितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषत
लघुदृष्टः शिरसि ते जगद्द्वीपाकारं जलधिव
लयं तेन कृतमि त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम
दिव्यं तव पुः[2]वं[1] ॥ २७ ॥ रथः क्षोणी यन्ता शतधृ
तिरगेन्द्रो धनुरथो रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरण

नो यस्य विशिखाः स पश्यन्नीश त्वामितर सुर

साधारणमभूत स्मरः स्मर्त्तव्यात्मा नहि वशि

षु पथ्यः परिभवः १५ मही पादाघाताद्व्रज

सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज परि

घरुग्णग्रहगणं मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृ

तजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि

रा०म० जागर्ति जगतो ॥१५॥ कस्मै स्वप्ने जाग्रन्न मसि फ

ल योगे कतम मतो कः कर्म प्रथमले फलति प्रक

या याथन स्मृते प्रति स्मृतो मेघेत्य कतम फलदा

न प्रति भवे कस्मै प्रड्डो बधा हृत परिकरः

कर्म सज्जनः ॥२॥ क्रिया दत्तो दत्तः कतम पाति

रथी शा स्तन भृता मृषीणा मार्त्विज्ये प्रारणाद

पाणिः पुर इति दयितो लोकोये त्रिपुरत्राण

माडंबर विधि विधेयैः कीडंतो न खलु परते

गाः प्रभु पिपः १५ हरिले माहत्वं कमलब

माराय पदयो र्यदे कोने नमि त्रिज मदहर

नेत्र कमलं गतो भक्त्या देकः परि णति म

मो चक्र वपुषा नयाणां रक्षायै त्रिपुर हरा

ग·म· मृगव्याधरभसः २२ स्वलावण्याशंसा धृतध

नुषमह्नाय तृणवत्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरम

थन पुष्पायुधमपि यदि स्त्रैणं देवी यमनि

रत देहार्धघटना दवैति त्वामद्धा बत वरद

मुग्धा युवतयः २३ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मर

हर पिशाचाः सहचरा श्चिताभस्मालेपः स्र

मदस्याः सुरगणाः कतमेऽपा स्वनः कतमफ
ल दान यम नियो क्रवे कतेः श्रद्धा विधुर म
ऽभि चायायहि मावाः २ प्रजा नाथे नाथ प्र
मभ मभिके खे ऽद्य हि नरे गते गो हि द्रुतो विरम
यिषु मृगमास वपुषा यत्र प्राणे थाने दिवम
पिम पत्रा कृत मभे त्रसंते ते यापि व्याज तिन

ग॰म॰ त्वे किमपि यमनस्त्वं किल भवान् २५ त्वमर्क

स्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमाप॰

स्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च परिच्छि

न्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं न विद्म॰

स्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि २६ त्रयीं

तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानका

गणेन्द्र कोटी परिकरः प्रमंगल्य शीले न

व भवत्न नामैव माविले तथापि स्मह्याणां व

रद परमं मंगलमसि २४ मनःप्रत्यक्षिते स

विध मवथा यात्न महतः प्रत्युष्ण दोमाणः

प्रमद सलिला सिंचित हृषाः यदा लोका

ह्लादे ऊद रव निमज्ज्या मृत मये दयत्येनत्त

रा॰म॰ ति देव स्कृति रपि क्रिया यास्मै धाम्ने प्राणाहित

नमस्तोऽस्मि भवते वपुष्माङ भीवा दत्तमित॰

मिदं जन्मानि पुरा पुरा पुराणे नैवाहं क्वचिद

पि भवंते प्राण नवान नम न्मकः संप्रत्यानत

रह मत्रे प्यनतिमा न्महेशा देतन्वो नदिद म

पराय ह्वय मपि ३९ नमो नेदिष्ठाय प्रियद॰

10

राद्यै र्वर्णै स्त्रिभि रभि दध त्तीर्ण विकृति तु

रीयं ते धाम ध्वनिभि रव रुन्धान मणुभिः

समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्यो मिति प

दम २७ भवः शर्वो रुद्रः पशुपति रथोग्रः

सह महां स्तथा भीमेशाना विति यद भि

धाना ष्टक मिदं अमुष्मि न्प्रत्येकं प्रवि चर

शि·म· मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये ।

शिवाय नमो नमः ३० कृशपरिणति चेतः

क्लेशवश्यं क्वचेदं क्व च तव गुणसीमोल्लंघि

नी शश्वदृद्धिः इति चकितममंदीकृत्य मां

भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पो ।

पहारम् ३१ असितगिरिसमं स्यात्कज्जले

वद विष्ठायच नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मर हर
महिष्ठायच नमो नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन
यविष्ठायच नमो नमः सर्वस्मै ते तदिद मति
सर्वायच नमः ३० बहल रजसे विश्वोत्पत्तौ
भवाय नमो नमः प्रबल तमसे तत्संहारे ह
राय नमो नमः जनसुख कृते सत्वो द्रिक्तौ।

ग॰म॰ मलहृ हृतैः स्तोत्र मेत च्चकार त्रय प्रहर हरन
वघे धूर्जटे स्तोत्र मेतत् पठति परम भक्त्या॥
शुद्धचित्तः पुमान्यः स भवति शिव लोके रुद्र
तुल्यः सदात्मा प्रचुर तर धनायुः पुत्रवान्
कीर्तिमांश्च ३५ दीक्षा दानं तप स्तीर्थं होम
यागादिकाः क्रियाः महिम्नः स्तव पाठस्य क

12

सिंधुपात्रे सुर तरुवर शाखा लेखिनी पत्र

मुर्वी लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व

कालं तदपि तव गुणाना मीश पारं नया

ति ३३ असुर सुर मुनींद्रै रर्चितस्येंदु मौले

र्ग्रथित गुण महिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य स

कल गण वरिष्ठः पुष्पदंता भिधानो रुचिर

ग्र·म· हिम्नः ३८ सुरवर मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्षैकहे

तुं पठति यदि मनुष्यः प्रांजलि र्नान्य चेताः

व्रजति शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्त

वन मिद ममोघं पुष्प दंत प्रणीतं ३९ श्रीपु

ष्प दंत मुख पंकज निर्गतेन स्तोत्रेण कि·

ल्बिष हरेण हर प्रियेण कंठस्थितेन पठि·

13

लो ना हंति षोडशी ३६ महेशान्ना परो देवो

महिम्नो ना परा स्तुतिः अघोरान्ना परो मंत्रो

नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ३७ कुसुम दशन ना

मा सर्व गंधर्व राजः शशिधर वर मौले र्देव

देवस्य दासः स गुरु निज महिम्नो भ्रष्ट एवा

स्य रोषात् स्तवन मिद मकार्षी द्दिव्य दिव्यम

तेन मम हितेन सदृशी गिरो भवति भूत-
पति महेशः ॥ ५ ॥ इति महिमाख्य परिच्छे
दः ॥ ५ ॥

ग·म·

14

तेन समाहितेन सुप्रीतो भवति भूत-
पति र्महेशः । ५ । इति महिमाख्य परिच्छे-
दः ॥ ५ ॥

ता
ध्या
२
2

नरयेत्रकि सोईभयोमतिवारोईहै हाथी ताको यहतालश्रंकशोहै जिसतेनून
अधिकप्रमाणको प्रमाण करतिहै यहकान्यान्नजीनेकहयोहै अन्यविमूल
दोहरा जानैबीनातंतकोश्रुतिजातिनकेभेदि बहुरिहोइतालगयसोगुकतिल
हैबिनषेदि बचनका जो७रूपबीनाबजाइवेकेतंतकोजाने ऐसेतिनकीजा
हैंजातैंतिनकेभेदकोजाने औतालगयहोइ सो७रुपविनाखेदिहीगुल्किकोपा
वतिहैं ऐसेविग्यानैसरनैकहयोहै दोहरा कालक्रियाअरुमानयेएकबारज
बहोरि ताकोतालकहैंसभेजोजानतियागोहि बचनका कालसमेअक्रियर
चना अरमानकिविश्रामा इजहांश्कहीयारेहैइ ताकोतालकहतहै सोई आ
गेदोहामेकहतहै कालछनादिकजानीऐक्रिआतालकोजोग आनकहेविश्रा

फेर कैसे है कनक जिनके तनक थोरेभी नही और निति प्रति कनकही खाते

है यह अदभुत है कनकस्वरन और धतूर और कनकही याके धन है ताको

धारतिहै और अधारी है धारनवारे नहीहै भगतिनको धन देतिहै अथ हि

विषे जिनके धन नहीहै यहि अदभुति फेर कैसे है जिनके अंबर आकाश

ही अबरि विश्वंत्रहै और मुंडमालाके अडंबरिकों किये बनाइबेके आरंभको

करतिहै औ भिखारीहै याके आडंबरिहोइ सो दिगंबरि औ भिखारी कैसे हो

ई यहि अदभुत असे शिवजीहै ॥ अथ ताल प्रशंशा लछन लिख्यते ॥

मूल दोहरा तछरजंत्रकि मंतेभिको अंकुशतालबखाना निजोनाधिकपर

मालप निजातेकरतिप्रमाना बचनका गीति बाद्या निरत्या इनको नाम

ता
ध्या
२

३

दोईहायकैसंजोगमैं अरुवियोगमैंजोहैकाल कैसोदसप्राणसोमिल्योहोईऊ
ताकोंतालकहतिहै अथसारोऊंधारिकेमतिसोंतालकोंलछन कालकोताल
कहतिहैं कालकैसोहोई जो इत्यादिकोंकरिकेमिल्योहोई औगीति वाद्य नि
त्य इनकोमानकरिताकिविश्रामकरताहोई सोतालकहीये अथतालशब्
दिकों निष्पत्तीलिख्यते तलनामप्रतिशब्दाको जामैगीति वाद्य नित्य
ईप्रतिसटतिहोई सो ताल कहीये अथराधागोविंदसंगीतिसारकेमतिसोंता
लकोंनिरनेलिख्यते सलोक नानामारगईरल्पायत्रायतीनांसातिकलतियऊं
तंदंछलेशिवंनोमिचिंत्रबितमेयंध्रुवं अथतालाध्यायिकीबचनलिख्यते ॥
प्रियमगांनप्रगटभयोसोतोब्रहम मायाविनाब्रहमपहिचान्योजाततनहीं

मकोसबसंगीतविदलोग वचनका छप्पनेआदिलेकेकालजानीई याकोनिरने

आगेकहेंगे औतालकोजोहैजोगमिलाप कारचनासोक्रिआ ओक्रिआतेरुप

रंतजोविश्रामकोमानकहतहै यहमतसंगीतार्णवमेंकहीहै अथशिवकिंकर

नकेमतिसोंतालकोलछन तालजोहैलछादिकसोक्रियाकरिकेमिल्योहोई

ओगीतिआदिककेधारनवारोहोई जामेगीति वाद्यनित्य विश्रामकोंपावें

सोतालकहीये अथहरिबं दिकें मतिसोंतालकोलछन क्रियाकरिकेसंजग

तिजोहैकाल फेरकेसो दस प्राणों करके मिल्योहोइऊ ताकोंतालकहतिहै

अथविनोदकेमतिसोंतालकोंलछन मूल दोहरा करज्ञगकेसंजोगमेंअर

वियोगहमाह कालप्राणदससोंमिल्योंतालकहैंकविनाहि वचनका ।

ता
ध्या
४

४

ताल बिना गान नहीं गान बिना ताल नहीं जाते ताल मुख्यहै सो यह ताल मायाहै जैसे मायाके अनेक भेदहै ऐसे तालहूंके अनेक भेदहै जैसे ब्रह्म एक रूपहै ऐसे रागको स्वरतो एक रूपहै अरु राग अनेक प्रकार केहै ऐसे ब्रह्म चैतन्यतो एक रूपहै अरु स्थावर जंगममैं अलख्य व्याप रह्योहै ऐसेही राग श्रवण मात्रहै अरु देषनेमें नहीं आवैहै यातें ब्रह्म रूपहै तैसे गानको स्वरतो एक रूपहीहै अरु ताल माया रूपहै राग ब्रह्म रूपहै जहां तांई देऊ हाथनको जो अंतर रहे तहां तांई आकाश कहीये अरु दोऊ हाथ मिलके शब्द उत्पन्न होई सो काल कहीये अकाल कहा जो तांभी ना मिल्यो लभी ना मिल्यो तहां तांई अकालहै अरु जब इनको संजोग होइके सद्द भयो त

४

यातेतालरूपमायाप्रगटकरी ता कहीये तारबेवाले शिवजी ला कहीये लालस
रूपपारवतीजी तरिबेकीलालसा जो कियो चाहै तो तालमै प्रभुको गांन करों
यालालसातेतरिजाय अरु दोऊ हाथकी ताल लागी तब शब्द भयो शैश बद
ब्रह्म रूपहै प्रगट होय करिकै सबनके कानमै जानें रूप धस्तो अरु अल
ख्यहै याते निर्गुण सो स्वरूप धरिकै सगुन भयो ताते ताल लिये राग गां
न करीये तो निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप धास्तोहै यासों याकों काल कहतहै
तो माया अरु ब्रह्मसों चार वस्तु पाईये धर्म अर्थ काम मोक्ष गीत नृत्य
नाट्य वाद्यई सभ तालकी जातिके अनुस्वारमें लेके करीये बाहिर निकसे
ऐसो न करीये स्वर अक्षर थावर जंगम एसभ तालकी गतिमैंहैं जातें

रागभैरव चारतार संपूर्ण कलावंती सारेरे गमप

धनि सप्त स्वर मोहू मनमें ऐसें आप आरो

ही अवरोही सरगम कियेसें होत निधा

पामागरेसा द्विनहिगुनकीजें तोऐसें ली

जे सुरनकों नवआवे सभनकी मनमें

केवकों सुधार धानिसा निसारे सारेग

रेगम गमप मपधा पधनी धानिसा ॥

सानिधा निधपा धपमा पमगा मगरे ॥

गारेसा द्विगुण सरगम कियो विचार गुरु लपेंसी
एकके स्वर नकों उचार सासा रे सा सासा रे गारे सा
सासारे गम गारेसा सासारे गम पम गारेसा सा
सारे गम पध पम गारेसा सासारे गम पध निध
पम गारेसा सारे गम पध निध पम गारेसा ॥
निध पम गरेसा धप म गरेसा धपा मगा रेसा पम
गारे गारेसा मगरेसा गारेसारेसा ससा निधा नि
निधापा धधापम पपामगा मम गारे गगारे सारे

रा.म. रजम्हरमम्हस्वरहवेजानपतिह्रेग्रगतिह्रेग्रगति

८८

88

ममदीपनवविंड । रमनियानमैवकेदीजेंम्हह

एकीजेदीजिपनालम्हरतानग्रविंड ॥ राग भैरव

चौताल ध्रुवपद ॥ जैम्हरजजगचव्हजगवैदनज

गज्ञानाजगनकरनाजगनाध इतिश्रम्पायी । ग्रा

राग भैरव ताल तीन। सूर्यजीकाक्तत। ध्रुवपद ॥ दि वा

म णि दि न म नि भा न दि न क र हे स ति मि र ह र न

दै नि त प नी वि गु न ह्ला द प्र ण्रा मा ने त्र मा र ते ड

इतिअस्थायी। स ह स्त्र र श्मि पू षा खे ग ता र न ज

ग व ल्ल ज ग वं द न पा प ह र प्र चं ड। इतिअंतरा। सू

२ २ २
ग रे स

रा॰स॰ रे गा धा ॥ रागभैरव ध्रुवपद चौताल। प्रभाकरभासक
रदिनकरदिवाकरभानुप्रघटेविहान। इतिप्रस्थायी। ते
रेउदैतैंनापपापकूटैंयरमकरमप्रेमनेमहोयगुरुज्ञानउौ
रध्यान। इतिअंतरा। जगामगातजगतपरजगावन्नजो॰
तिरूपकश्यपसुतजगकेप्रान। तानसैनकेप्रभुउदैजग
नकपाटखुलतदीजिएविद्याकृपानिधान। इत्याभोगः।

८५

81

दिन सविता अरक खग पूषा गभस्ती मान भानु
दिवाकर जग कारज होय तै देहाय । इति श्रेत
ग । सान ध्यान जप तप तीरथ व्रत सें जम नेम
धर्म कर्म सब उदै होय सनाय । तानसेन पै प्रभु
कृपा किजी परांग रंग सबरन सो निशिदिन गाउते

रा॰म॰
५०

९०

तामे बैठ सात दिन अरु तुम करो भजन मम भाव।
इतनी कहि हरि न्टप देखतही भयेजो अंतर ध्यान।
सातें दिवस भयो जब परलय तब कीन्हों न्टपज्ञान।
सबहि अन्नको बीज लियो न्टप और लिए द्विजसाथ।
बैठो ध्यान हरिको करिके दरशन दीनो नाथ। बा
सुकि नाग आय तहां तन ताण बांधी दृढ़ कर नाव
पूछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्व विधान बनाव
बहुत काललों विचरे जलमे तब हरि भए अंतर्ध्यान।

ॐ अथ मत्स्य परिछेदः॥ राग भैरव तिताला। सत्यब्रत

राजा रघुबंशी प्रथम भए मनुबंश। कीनो तप बहु

भांत परम रुच प्रकट भए हरि अंश। यदि लघु।

रुपमीन को मोहन आए उनके पानि। तब उन ज

लमें डारदिए फिर तब बोले हरि बानि। जलके।

बीच डारि जिन मोहको बडे मछ डर लाग। यह

कहि बूहत हुए हरि याहो सत्य ब्रतके भाग।

सतवें दिवस होइगी परलय आवेगी एकनाव॥

रा॰म॰ मिल नृप हरि यारयों कीनों सौंख विचार ॥ इति व
राह परिच्छेदः ॥

९१

बीत्यो प्रलय विविध नाना कर स्रष्टी रची बहु भांति ।
यह हरि मछ रूप जब लीनो कियो चरित विस्तार ।
जै जै जै श्री मीन महा वपु जै जै जगत अधार ॥ ॥
इति मत्स्य परिछेदः ॥ अथ कूर्म चरित्र । सुर असुर
मथन कीनो निधि चौदह रतन निकार । पर
बत पीठ धर्यो हरिनीके लियो कूर्म अवतार ॥ ॥
इति कूर्म परिछेदः ॥ अथ वराह चरित्र । भुवकी
रक्षा करन जु कारन धरि वराह अवतार । पाछे क

कं
ए-सं

एक वल निरंकार दूजे वल वेद सहज तीजे वल लोक चौथे व
ल वेद प्रकाश । पंच वल मन आनम छट एवली नारायण
सप्त ए वल सागर अष्ट एवल अष्टकुज नव एवलि नव कुली
नाग दश एवल अवतार प्रगास ॥ अग्यारह वल रुद्र एकाद
शी बारह वल वामन तेरेहे वल नई लोक चौदह वलकदे वि

९

६३

प्रथम नाद मूलतैं उचरे ताल वेधान सौं गावै जो आवै सो समपरे ॥ सप्तस्वर तीन ग्राम इकीस मूर्छना वाइस स्रुत उनंचास कोटतान भेदे । उरपति रपला गाडाट ऐसा न्यास ग्रह आतक खातक स्रोतक ओडव खाडव उचरे । कहै बैजु बावरे सुनौं हो गोपाल यह विद्या अपरं पार गुण चर चासौं लरे ॥ राग भैरव ॥ ॐ ॥

का
रा-सं

इया। पञ्जरा दिसैया त्रेवर लिप व्रषभ वाहन अन दीयन नदीय

॥ अन दीय नरे आईया मदन दोह्ना ईया आउया चतुरंग अंगासा व

शं भुनाव इया ईश निषाद हैया। नीपंपंपंपंपंपंया नीअईदेया ३

राग भैरव ॥ शिव-॥ झप-॥ अश्वपति गजपति नरपति भव

पति चकनावली चकनारन ॥ दारिद्र हरन दिन मणि महराज श

१५

या ग्रवीश । पद्मे वल निधी सोरह वलि सिंगार सत्रह वल सत्या

वनी ग्रठारह वल वनास्पति उनवीश वल पिनाकधर वीसइ वल

लक्ष्मी ग्रकीस वल तीन सैन प्रगाश । राग भैरव ॥ ॐ० ॥ शि

व महादेव त्रिसूल पिनाक धर जाके जटा मधि सुर सुरी ग्राजा

के विविध भूषण गिरिजाके मन भाइयाहू ईया ग्रई ग्रई ग्र

क॰
ग॰स॰

मानिनि स्रोताजानी पापहरनी त्राहि त्राहि त्रईलोचन त्रई त्रवेणी
सेवे । स्वरनदी सुरेश्वरी जान्हवी गंगा मंदाकनी त्रिपथगा ध्येवे
॥ भागीरथी पवित्रा हरि शेखरा विस्नुपदा स्वर दीर्घका भीष्मसुव
विहेवे ॥ राग भैरव ॥ ताल झपताल ॥ प्रथम नाद मूलते उपवे
ताल के ध्यान सौं गावे ॥ सप्तस्वर तीनग्राम इकीस मूर्छना बाई

१५

शि उड गान भुज वल भीम डर तेरी ग्रास दान समान कली करन।
राज साजके नव समान इंद्र भंडारी जवेर ग्रायो तव शरन। प्र
प वल वली ग्रचल रहो जलाल दीन ग्रकबरशाह जौलौं तौ
लौं नाम सु ग्रघरन ॥ राग भैरव ॥ जप- ॥ त्रिविध तामनी त्रि
ऊ लोक उधार नीग्रई ताप निवारनी तन छिन गये ॥ यई देव

क॰
रा॰स॰

प थुंतेतेतेतेतेतेतेते दिग दिग दिग दिग थेई थेई तथेई थेई जत्र

त्रत्र झेंना जौंना झेंझें आनंददैनानद सह सानीध प सा नी नी

नी ध प म प म प म प म गरी सारे गग मरे गरे गम प म प ध नी ग

म गम म प ॥ जाग जकट थकटन कोंथं कीन कीट झेंत्र झेंडि

गीडगी त्वरत्थ ररव भजेफोंकी थेई थेई तन तन थेई थेई नाधी

१०

६६५

स्वरन उनचास कोट नान लावै ॥ ग्रेसग्रह स्याम विकृत द्वादश भेद

सो भरत संगीत हनु मत जनावै । कहै वैजु वावरे स्वनहो गोपाल

नाथ कै एसी विद्यासों कोलरे पाहन पिगलावै राग भैरव ॥ ब्रह्म

ताल ध्रवेय ॥ नील नीरज वरन तन स्याम सुंदर वरज भेग क

टि तट पीतं वर वाजत मणि नूपुर नाचत सुघंग ब्रह्मतालध्रवं

के॰
रा॰स॰

सीस कौस्तुभ मणि साजे । लक्ष्मी संग सोहे पीतवसन गरुड वा

हन जैजै विश्वरूप सरूप सोभा राजे । उर भृगु लछण कमल

नयन करुना सागर जैजै कार सम स्वर करत जेहीन मत सुज

शिव इंद्र समाजे ॥ ख्याल ॥ स्यामा प्यारी तेरे नैना अतही

सलोनें । मन मोहन कौं रस वस कीनें डारी टौनें । केहर कटि

९५

८

लोगाया ॥ राग भैरव ॥ ताल रुद्रताल ॥ शिव सरूप पंचानन त्रि
पुरारि त्रईलोचन ॥ वृषभ वाहन जटा जूट चंद्र भाल सिर गंगा प्र
घ मोचन ॥ एक कर त्रिशूल एक कर डमरु अंग भसम संग वैरो
चन । काम दहन कैलासेश्वर राग रंग गुन गावो करो ध्यान सो
चन । तालविस्र १२ ॥ चतुर्भुज शंख चक्र गदा पद्म कीट मुकुट

क॰
रा॰सं॰

हो दिनमानी श्रीपत श्रीवर शरणत पाल गोपाल। प्रवय वदके मो
से प्रनत विर मरहे तिय जीय भाप कवन वचन प्रतिपाल। रु
द्रनाल॥ शिव शिव शिव शिवशंकर शंभो पशुपति गंगाधर उमा
पति रुद्र नारायणदेव॥ नीलकंठ जय ईश्वर कैलासी काशी
निवासी रूप वऊरूप त्रिशूल धारी भेव॥ विस्तनाल॥ चतर्भुज

18

कदली जंघा नासिका कीर छबीलैंं। श्रीफल उरोज नन कमल न
यनी नेरी छवि कोनैं। ब्रह्मनाल॥ जैसे ब्रह्मा आनन चारी वेद
प्रगट कीन्हे। श्रीभगवान नाभकमलतैं रूप देरा भीन्हे। च्यार
प्रकार जीव अंडज उद्भज स्वेदज अंगज लीन्हे। कर कमंडल हे
सवाहन सावित्री संग लीन्हे॥ लक्ष्मीनाल॥ जानी मैं जानी ज

क॰
रा॰ सं॰

जग भाजे । ग्रंथी सहित मृदंग वाद्य बोल ॥ राग भैरव ॥ धमार ॥ ता-

दीना नाथ मुकुट धरे माथे माथो झुक रहे कदम कोडार ॥ नक

नक गेंद मारत नारिन को कर गहे झक जोर डारत गरे मार ॥

दामोधर गिरधर जिनकरी ठठोरी जिन मोंडे मार्व हर करी गर ।

नारहोरी ॥ धमार ॥ तापरते करन लागिरी यह बात एक नो बा

१९

शंख चक्र गदा पद्म कीट मुकुट सीस कंठ कौस्तुभ मणि साजै।
लक्ष्मी संग सोहे पीत वसन गरुड वाहन जैजै विश्वरूप सरूप सो
भा राजै। उर भृगु लछन कमल नयन करुणा सागर जैजैकार
सुर नर मुनि करतन मन अज शिव इंद्र समाजै। श्रीधर श्रीकर
श्रीवर लक्ष्मीपति नारायण नरोत्तम विश्व त्रईलोक पति तेरी

क॰
रा॰सं॰

क सोहाए। तीन सैंनके ग्रभ वहोही सिधारे नवलनीया मनभाए

॥राग भैरव॥धमार॥ एसे देखिवयन लालन जागे भाग हमारे

आज रसभीनें॥ एकव सेनजान सबकोउ देखत रूपानें कर स

नेथ नवीनें। उठैभए गर्भदोउ औरीतें आप अंजन अधर लगाय

लीनें। सदारंग महम्मद साह दक्कन नायक यानें मन बसकीनें।

100

१००

को कंथ लियो परचाय। जिन तन काहू अपनें आगे पसै तेरे ही चर

नाय। निस दिन हसत बोलत डोलत रहतेहै तेरी ही गुण गाय ॥

पसीं ते कहा दिनों सजनी भर हूजी परी तेरे पाय ॥ राग भैरव ॥ यम

र ॥ लालअब मोनैं भी वही आए। कौन वाम हित चित सोवाहै स

गरी रैयन जगाए। फिर फिर काजर फैल रह्यो है जावक अधि

क·
रा·स·

भैरव ॥ खुलफा ॥ गंधर्व किन्नर गुनि प्रकारथ जनम जात ए

री सुर नर मुनि जिन। सुनि सुनि चदन वादि जात एसे भूल र

हे भव साथन को श्री हिरैन दिन ॥ ख्याल ॥ तिताला ॥ अब न

म जागो कौंन मीत पिय रखा हमरी प्रीत नम मन लागी ॥

नींद के माते मारु आलम सरजन वागा वनवासगारी रैन बंगा

१०१

राग भैरव ॥ धमार ॥ परी मोपै वाहरि विन रह्यो न जाय विन दे
षे कछुन सुहाय ॥ वरीप लषिन जगसेवी ननहै वाकी स्वरन
मन लाय ॥ राग भैरव ॥ ख्याल फा ॥ प्रथम कौंन राग कौंन स्वरन
कौंन मूर्छना कौंन ग्राम कौंन स्वरनतैं आद स्वर जगाईए । सारे
गमपधनी सा सम स्वरनके भेद वयान कर समझाईए ॥ राग

कं
रा०स०

ग सो सो ननको भयो जोर ॥ राग भैरव ॥ जलद ॥ तिताला ॥ आपन्न

म भोर हमारे साची कहो प्यारे कौन के रैन जागे ॥ डग मग पग य

रन धरनी पै आलस अंग अंग ऊपका नइन कोरे ॥ राग भैरव ॥

तिताला ॥ नित सुमरन करत हैं प्रभु साहिब निसदिन शरण मो म

न नैननको सुखदीजे । महम्मद सा पीया इतनी विनतीमारी

१०२

दम पागी ॥ राग भैरव ॥ चतुरंग ताल ॥ चतुरंग दम लिए गावो

वजावो मृदंग तक धिलांग मधु मकटनकथा । दादाहीम दादा

हीम दीम तन ननननन नसन ननन नमन ननन सारे गम पधनी

सा नीध पम गरेसा ॥ राग भैरव ॥ धीं तिताल ॥ जागो वगर के लो

गकैसे आऊं तोरे छिपावा अब भई भोर ॥ मीतपियरवा अपनी उम

क·
रा·स·

निशजागे रसपागे वनीयां नैना झुम झुमारे ॥ कौन बालकों ग्रथर स यमिय भए पिय मनवारे ॥ आवन लटक मटक भावन सों लट पटान अंगनसारे । साजि सिंगार लो भई बावरी तुमजीने हमहारे ॥ राग भैरव ॥ धी-तिताल ॥ उठे हैं विशान कर मान पाशा फेर हरि भजन सौं प्रीत कर ॥ कहा वन खिलारी =

103

सदा रंगाकी सुनलीजे ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ तुमारे मिलवे कुं

मै आई दौर प्यारे मोरे औसर लागी दरशनकी । सुंदर सुरत जपनें

देखितवते नपत गई वरसनकी ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥ मैं तुम

सैंन वोलौंगी प्रीतम प्यारे तुम औरसैं लगाई प्रीत । हमसे अवथ

कर अनत रहत हो तेरी भंवर कीसी रीत ॥ राग भैरव ॥ तिताला ॥

क॰
रा॰सं॰

तिनारा ॥ मौला करम करकरीम तेही सत्तार जब्बार आधार

बंदेको देऊ न्यामत तेही पाक परवर दिगार ॥ जोई जोई मांगा

न सोई सोई हुकम होत और दीन ईमान सहन और जीवन म

क़ सब ख़ैयपन पाऊं गाऊं त्व अगुण रही महीं गुन्है गार ॥ रागभै

रव॥ चौतारा ॥ आज सखि लखिमन मोहनी मूर्ति माधुरी सुंदर

104

ए अनारी चलेऊन जाने हावनहै वाजीन अयान वफेरीन कर ॥

रागभैरव॥ निताया॥ महमद रसूल अर वीस वन वीयनकों

सिरताज। दीनें अलह वली अली सो साव कर कीनें जगान कों रा

ज॥ जिनको नाम दोउ जहांन मेंहैं यान रंगरंगा आदलो आज ॥

रफीय सफीऊल आलमको सवारन दीनके काज॥ रागभैरव

कं
रा॰स॰

आज सपेमें सांवरी सलोनी सूरत देषि मैंनन करि मोसों बात।
तब तेंमें बड़न सुष पायो जागत भई परभात। मधुर वचनवो
ल मदन मंत्र पढ़ डारी उन बिन छिन पल कछु न सोहात। वै
जके ब्रजकी नारी जेंत तेंत लिषि सारी कलन परत गात सबदि
न रात॥ राग भैरव॥ चौताल॥ आलीरी भोरही आप गिरिधारी

105

१०५

चतुर सुजान कान्ह । सीस मुकट श्रवण कुंडल कुंचित वारी अलक

झलक चलत चाल ठुनक ठुनक अधरन मुरली बजाई कान्ह ॥

भूली सुधबुध सब ग्रह काज डार दियो विसरिगयो खान पान ल

खि मन मोहन चतुर सुजान्ह । बैज बावरी रावरी करडारी मोहे

न सोहात आन मारग दई डाल कान्ह ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥

रा.स. ॐश्रीकृष्णायनमः रागविलावल

हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ। हरि चरना

रविंद उर धरौ। हरि चरन नि सुक देव सिर

नाइ। राजा सौं बोल्यौ या भाइ। कहो हरि कथा

सुनो चित लाइ। सूरदास हरि के गुन गाइ।१।

गा॰ सं॰ २२

6

घ के उ ब ला शि व य ट वा प क को ट को

ट ब ला उ र वि न दे व ले हो बु य वा न ॥

इतिश्रेतव: ॥ श्रा दि ग्रे न म ध्या वो ही त्रै लो क

व रा व र वा ही की इ व्या ने क र वि मा न ॥

श्राओम ॥ ना न सै न के श्र भ स व ज ग वा

क ले श ॥ राग भैरव चौताल ध्रुवपद ॥ तू प नि

रं ज न भ्र ज न र ह त ता ह व र न वे को SSSS

उ द त म ण छे हो शा ला र भ्र ला गो हो ष

गा न ॥ इति स्थायी ॥ तो को मे द न हिं पा व

न शि व स न का दि क ब ला ना र द शो

रा॰ बहिं महि पाला। भई अकाश वाणी तेहि काला॥ विप्र
रा॰स॰ वृन्द उठि उठि गृह जाहू। है बडि हानि अन्न जनि खाहू
भयउ रसोई भूसुर मांसू। सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप विकल मति मोह भुलानी। भावी वसन आव मु
खवानी॥ दोहा॥ वोले विप्र सकोप तव नहि कछु की

210

२६८

२२७

चौपई ॥ उपरो हित जेव नार बनाई । छरस चारि विधिज
स कति गाई ॥ माया मयनेइ कीन्ह रसोई । व्यंजन बहु
गनि सकेन कोई ॥ विविध मृगन कर आमिष रांधा
तेहि महंवि प्रमां खवल सांधा ॥ भोजन कहं सब वि
प्र बुलाये । पदप खोरि सादर बैठाये ॥ परसन लागेज

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॐश्रीहनुमतेनमः अथतालाव्याख्यालिख्यते ॥
मूलमंगलाचरण कवित देखोयहमहांजोगीगिरिजानयाहिजोगीयाकेच
रितनजोगीबरनतिहारीहैं अंगलपटायेभोगीकहैयहकैसोभोगीचरनबिभू
तननमैबिभूतभारीहै कनकनजाकेकहूंननककनकनितखातहैधनकथ
नथरनौंमथारीहै जाकेहरिबल्लभहअंबरहै अंबरअडंबरकरनमुंडमालनिभि
धारीहै ॥ बचनकइहोंश्रीशंकरजीकोमंगलाचरणहै शिवजीकैसेहै म
हांजोगीहै औरपार्वतीजीकोअंगीकारकीयेहै सोगिरजाइनकेलायकनही
जोगीहोइस्त्रीकोंराखोतिहैं यहआदिभूतिहै याहीतेइनकेचरित्रनकोंबरन नकर
चरित्रकह ने नेहोंइ गीजोहैबालौंसोहारगइहै बालौंतेजिनकेचरित्रकहेनहीजाते। और
जोइनकोंभोगीकहीये तोकहोयहिभोगीकैसेहै याकेअंगकोतौंभोगीजोहैस
र्पा सोलपटाइरहेहैं यातैंभोगीकैसेकहीये फेरकैसेहैं चरमैंजिनकेबिभू
तिनहीहै औतनमैजिनकेबिभूतिहै यहअदिभूतिहै बिभूतसंपतामोंछार



नं २ तालाध्याय ० प० १८३

2

राग भैरव ताल । दशैभागवत दोहा ॥ दोम
नि चटि महि पवस परि बोलति एक समानि ॥
ईकि गावै गणि स्यामके ईक वरौ हरिज्ञान ॥ स
नो माखी मन जस करहि चुप कर जाहिन बोल ।
निपटि दीन नड्डवरी बडू प्रभ घरे अनोल । कव
न कीट मति हीनरौ छिन छिनभलन हारि ।

जपनि हुदैन हरि नामको ईहि विषे हिर्दै धारि-

हुनी मति बोली नवै हुनो सुली ईकवानि । २

होन हरि जन्म कहोगी विदैन प्रेम समानि । जथा

सकि हरि जन्म कहो ध्यावो श्रीभगवानि । हरि

जन्म गावौ दरि खरि देवहिगो हरिदानि ।

2

सूचीपत्रमिदम्   श्रीगणेशायनमः

नामराग	अं॰ [illegible]	अं॰ [illegible]	अं॰ [illegible]	अं॰ [illegible]	[illegible]	श्रीराग ॥ मेघदावंश	संकीर्णराग
मुलतानीधनासरी	१	७६५	६	१	ध्यान		७९६ पत्रसें लेकर ८१० पत्रतक
		७९६	८	२			संकीर्णराग धनासरी है
धनश्री:	२	८११	२	२			
धानीखेमटा	३	८१८	५	२			वरवा मेघका वंश है
वरवा	४	८२१	४	१	भैरो	वंश	भैरोकी स्त्री
झिंझोटीखेमटा	५						भैरोकी स्त्री
पीलू	६	८२१	६	१	भैरो	वंश	संकीर्णराग
जंगला	७	८२१	४	२	मेघ	वंश	
पीलू	८	८२२	२	१	भैरो	वंश	भैरोकी स्त्री टोडीका भेद

संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्

ष· मोहनजाति १
ष· मयैतेरेलालको ३
ष· लालकोटदर्शन ४
ष· होवलिवलिजावो ८
ष· जयतिश्रीआभीरनाग· १०
ष· लालछिनगाइवालि १२
ष· राधिकाश्यामतन १४
०सामसुंदररैनिक १५
ष· जैयेतहांनहारेति १६
ष ०भलेआपभोरगीरिवार १७
ष लालरसमसेनेन २०
ष· आजहरिरंनडनीदे २१
ष· ०लालनजागतेरैन २३
ष· नैनउनीदेभपरंग २४
ष ०किहिमितजहमती २५
ष· मनहंगवे[illegible]ों २८
ष अंगुरियाछाडिरे २९
ष उपमाथीरजननो ३०
ष ठाढोरीवरिक ३१
ष करतहोसवेसया ३३
ष० निपट[illegible]खोटेकान्ह ३४
ष चतुरचाररचेलावली ३९
ष देखोमेरेभागकीस ४०
ष गोपालेमाई ४२
ष· ०मोहनवसनहमारे ७५
ष पतयहराधिकाके ४४
ष वढिवढिवातलागी ४५
ष ०वोलतकोकलानिधान ४६
ष वहेजोतवहिमोनुपरि ४७
ष आहोदधिमथ ५०
ष लटकनआवतकुंज ६४
ष चरणकमलकीवेरी ६५
ष हमारोश्रेवरदेहो ७६
ष हरिरनकवल्लभादीशसरणं ७९
ष जयतिश्रीराधिकारमणवरचरण ८०
ष श्रीगोकुलनाथनिजवश ८६
~~ष श्रिमतं[illegible]रेवाग ९०~~

०श्रु· मोरभयोजागो २
०श्रु· डगमगचल ५
०श्रु· ग्वालिनपिछवा ९
०श्रु· माखनतनि ११
श्रु· ०नीकेआयगिरि १८
श्रु·० ग्वालिनआपन २५
श्रु·० जयतिश्रीराधिके २८
०श्रु· आजहरिपकर ४१
०श्रु· माखनको ४३
०श्रु· मोहिदधिम ५१
०२० नमोतनित· ५२
०२४ वलिवलिच ६३
०१ हाहालेउव ६६
०१ मानउवात ६७
०१ खिलतमद ६८
०१८ वजानेद ६९
०श्रु· [illegible]रिजत ७०
०श्रु ग्वालिन ७७
०१ जयतिश्रीव ७८
०१२ जयतिमहलन ८२
०श्रु सुमिरोश्रीविठले ८७

०चारपटी हरिअनुभवति ६
०चा· वेसरयोमेरी ७
०चा· आजुलाडि १३
चा· ०आतमपआप १९
०चा· आवतललन २२
चा·० सखीहरिदरसर २६
चा· ०नेदसदनगा २७
च· माईगोरियर ३२
०च· मेरीमतिराधिका ३६
०च· मानिनीमानिजिनिमा ३७
०च· वेलालतेडीपैज ४८
०च हमारोदानदेरी ४९
०च होमोहनहोंहारी ७१
०च मोहनदेहोवसन ७२
०च वननन्हो ७३
०च ग्वालिनमा ७४
०च मनोवलभाधीश ८१
०च श्रीमहलमनूपलगे ८३
०च हेलीनवतिकुंजलीला ८४
०च सखिरीसोभारसमय ८५
०च रुकमिनिचलनसिखा· ८८
०च व्रजपरिहठवल्लभे ९०
०च नैनभरिदेखिव· ९१
०च श्यामसखदामजह ९२

पंख·
धुप·
ख्याल
टपा
ठुमरी

शिवजीका
महादेव देवदेवन
छोड़ हरे रंग गायरे

गंगा शक्तिके
गंगा तरंग देरि सभ
जयति श्री राधिके ३८
मानिनी मान जिन मान
तेही ग्रेबे आदि भवानी
षट्० श्रीजमुनाजी यह प्रसाद होय ३८
० श्रीजमनाजी तिहारो दरस तिहारो ३८

गणपत
शिवसुत गणपत
एकदंत गजवदन

सूर्यके
सूरजनारायण
प्रभाकर भास्कर

विष्णुनारायण
आदि विष्णुनारायण
शंखचक्र गदापद्म
प्रातभए आपलाल
सखी हरि दरसको
नंदसदन गुरुजनकी भी- ३

दशावतार
परेब्रह्म ओंकारनादाय

अष्टपदक्रमसजीका
माई गिरिधरनके गुणगाउं

अष्टपदी क्रम
ग्वालिन आप तन
नीके आप गिरिवर

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम
३६	२	५	कर्णाटराग०
३६	२	८	मलारी०
३७	१	६	गुणकली०
३७	२	२	सैंधवी०
३७	२	५	माधवी०
३७	२	७	बंगाली०
३८	१	[illegible]	वटमंजरी०

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम
३८	१	७	टंकरागणी०
३८	२	२	त्रवणी०
३८	२	५	मलोहा०
३८	२	७	गौडगिरि०
३९	१	१	बंगाल०
३९	१	३	माधव०
३९	१	५	मधुरराग०
३९	१	७	मालवलवली०

श्रीगणेशाय नमः सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य०

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति०
३४	१	४ देवगीरि०
३४	२	१ धनाश्री०
३४	२	६ मेघराग०
३५	१	२ सोरठ०
३५	१	५ आभीरी०
३५	२	१ आसावरी०
३५	२	६ जोगिआसावरी०
३५	२	६ पंचम०

पत्र०	पृष्ठ	पंक्तिः॥
३५	२	७ मोहनराग०
३६	१	१ सुखावती०
३६	१	३ श्यामराग०
३६	२	६ मालवराग०
३६	१	८ सोमराग०
३६	२	१ नटनारायण०
३६	२	३ शंकराभरण०
३६	२	४ श्रीरामराग०

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४२	२	५	जोगणी०
४२	२	७	नागध्वनि०
४३	१	१	भूपाली
४३	१	३	अड़ाना०
४३	१	५	कल्याण०
४३	१	७	खंभावती०
४३	२	२	सोहनी०
४३	२	४	सोभनी०

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूची
४३	२	५	बागेश्री०
४३	२	८	बेहार
४४	१	४	मोहनी॥ सोहनी॥
४४	१	८	पोमन०
४४	२	१	अथ भरतमत प्रथमो भैरवराग०
४४	२	५	अथ रागभार्या०
४५	१	२	अथ रागपुत्र०

प०	पृ०	पं	संगीतकल्पद्रुमस्यसूचीपत्रम
३९	२	३	दीपकराग०
३९	२	७	देषी०
४०	१	१	हिंडोलराग०
४०	१	४	पूर्वी०
४०	२	१	मालवी०
४०	२	५	सिंदुरा०
४०	२	७	गुजरी०
४१	१	१	देषाख०

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्यसूचीप
४१	१	४	गौरसारंग०
४१	१	७	मधुमाधध्यान०
४१	२	२	मालकोशध्यान०
४१	२	६	टोडी०
४२	१	१	गौडीध्यान०
४२	१	४	गंधारराग०
४२	१	०	गांधारी०
४२	२	८	आसा०
४२	२	३	वरवार०

संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्

रागनाम	नंबर शुमार	पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	नाममत	रागोंकी वंश							नामग्रंथ	खुलासा जरूरी
						सी	वं	वं	वं	वं	वं	वंश		
मोहनराग	९	३५	२	७	ध्यान	१	-	-	-	-	-	-	कल्पतरु	संकर
सुखावती	१०	३७	२	२	=	१	-	-	-	-	-	-	=	संकर
श्यामराग	११	३७	१	३	उत्पत्ति	१	-	-	-	-	-	-	=	संकर
मालवराग	१२	३७	१	६	ध्या०	भैरो		-	-	-	-	-	=	भैरोंरागकापुत्र
सोमराग	१३	३७	१	०	ध्या०	-	-	-	-	-	-	-	=	संकर
नटनारायण	१४	३७	२	२	=	मेघ		-	-	-	-	-	=	मेघरागकापुत्र

सर्वीपत्रमिदम् हिंडोल

नामराग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	नाम भाव	रागभेदोंवंश [illegible]	स्त्री	वंश	वंश	वं.	वं.	वं.	नामग्रंथ०	खुलासा जरूरी
देवगीरी०	१	३४	१	४	ध्यान०	भैरौं	१	·	·	·	·	·	कल्पद्रुम	हिंडोलरागकी स्त्री०
धनाश्री०	२	३४	२	१	ध्यान०	श्रीराग	१	·	·	·	·	·	कल्पत०	श्रीरागकी स्त्री०
मेघराग०	३	३४	२	६	ध्यान०	मेघ	१	-	-	-	-	-	कल्पत०	राग
सोरठ०	४	३५	१	१	ध्यान	मेघ	१	-	-	-	-	-	कल्पत०	मेघरागकी० स्त्री०
आभीरी०	५	३५	२	५	ध्यान	मेघ	१							
आसावरी०	६	३५	२	२	ध्यान	मालकौंस०			-	-	-	-	कल्पत०	मालकौंसकी स्त्री०
जोगिआसावरी०	७	३५	२	६	उत्पत्ति	-	-	-	-	-	-	-	कल्पत०	संकीर्ण०
पंचम०	८	३५	२	६	-	-	-	-	-	-	-	-	कल्पत०	संकर०

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४९	१	५	वसुधपुत्र अथ देशाखरागः
४९	१	७	पंचमपुत्र अथ ललितरागः
४९	१	८	अथ बिलावली॰
४९	२	२	सप्तम अथ माधवः॰
४९	२	४	अथ इति भैरवस्य परिवारः॰
४९	२	५	अथ मालकोशरागः॰
४९	२	६	अथ मालकोशस्य भार्या॰
५०	१	१	अथ गांधारी॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
५०	१	४	अथ श्रीहर्षणी॰
५०	१	६	दंघाटणी॰
५०	१	८	अथ धनाश्री॰
५०	२	२	अथ गौरीवासेयम:
५०	२	४	अथ वर्वलरागः॰
५०	२	६	अथ मेवाडरागः॰
५०	२	८	अथ मिषंगरागः॰
५१	१	१	अथ चंद्रकास॰
५१	१	२	अथ भ्रमररागः॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४५	१	८	संकीर्णराग०
४५	२	१	अथगमावकूलराग०
४७	१	८	श्रीहर्षराग०
४७	२	२	सौवरी०
४७	२	५	रागवली०
४८	१	२	सूरहटी०
४८	१	३	बंगाली०
४८	१	५	भैरवी०

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४८	१	८	अथवेलावली०
४८	२	२	अथभैरवीपुष्पकी०
४८	२	४	अथभैरवीद्विहा०
४८	२	६	भैरवीसरागनीहेहा० भैरवस्य प्रथमपुत्रः॥
४८	२	८	पंचमरागभैरवस्य द्वितीय पुत्रः॥
४९	१	३	मधुरराग०
४९	१	४	ललीताहर्षराग०

सूचीपत्रमिदम् हिंडोल

नामराग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	नाम भाष्य	रागभेदोवंश							नामग्रंथ०	खुलासा जरूरी
						[illegible]	स्त्री	वंश	वंश	वं.	वं.	वं.		
देवगीरी·	१	३४	१	४	ध्यान·	भैरों	१	·	·	·	·	·	कल्पद्रुम	हिंडोलरागकी स्त्री०
धनाश्री०	२	३४	२	१	ध्यान·	श्रीराग	१	·	·	·	·	·	कल्पत·	श्रीरागकी स्त्री·
मेघराग·	३	३४	२	६	ध्यान·	मेघ	१	-	-	-	-	-	कल्पत·	राग
सोरठ·	४	३५	१	१	ध्यान	मेघ	१	-	-	-	-	-	कल्पत·	मेघरागकी· स्त्री·
आभीरी०	५	३५	१	५	ध्यान	मेघ	१							
आसावरी·	६	३५	२	२	ध्यान	मालकोस	·	-	-	-	-	-	कल्पत·	मालकोंसकी स्त्री०
जोगिआसावरी·	७	३५	२	६	उत्पत्ति	-	-	-	-	-	-	-	कल्पत·	संकीर्ण०
पंचम०	८	३५	२	६	-	-	-	-	-	-	-	-	कल्पत·	संकर·

संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्

रागनाम०	नंबर शुमार	पत्र०	पृष्ठ	पंक्ति	नाममभा[illegible]	रागोंकी वंश							नामग्रंथ	खुलासा जरूरी
						ही	वं	वं	वं	वं	वं	वंश०		
मोहनराग	९	३५	२	७	ध्यान	१	-	-	-	-	-	-	कल्पतरु	संकर०
सुखावती०	१०	३७	१	२	=	१	-	-	-	-	-	-	=	संकर०
श्यामराग०	११	३७	१	३	उत्पत्ति	१	-	-	-	-	-	-	=	संकर०
मालवराग०	१२	३७	१	६	ध्या०	भैरो	-	-	-	-	-	-	=	भैरोरागकापुत्र०
सोमराग०	१३	३७	१	०	ध्या०	-	-	-	-	-	-	-	=	संकर०
नरनारायण०	१४	३७	२	२	=	मेघ०	-	-	-	-	-	-	=	मेघरागकापुत्र०

[illegible]

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्	प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
३६	२	५	कर्णाटराग०	३८	२	७	टंकरागाली०
३६	२	८	मलारी०	३८	२	२	त्रवणी०
३७	१	६	गुणकली०	३८	२	५	मलोहा०
३७	२	२	सैंधवी०	३८	२	७	गौडगीरि०
३७	२	५	माधवी०	३९	१	१	बंगाल०
३७	२	७	बंगाली०	३९	१	३	माधव०
३८	१	४	वटमंजरी०	३९	१	४	मधुराग०
				३९	१	७	मालवल्लवली०

श्रीगणेशायनमः सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य॰

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	
३४	१	४	देवगिरी॰
३४	२	१	धनाश्री॰
३४	२	६	मेघराग॰
३५	१	२	सोरठ॰
३५	१	५	आभीरी॰
३५	२	१	आसावरी॰
३५	२	६	जोगिआसावरी॰
३५	२	६	पंचम॰

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	
३५	२	७	मोहनराग॰
३६	१	१	सुखावती॰
३६	२	३	श्यामराग॰
३७	२	६	मालवराग॰
३७	२	८	सोमराग॰
३७	२	१	नटनारायण॰
३८	२	३	शंकराभरण॰
३८	२	४	श्रीरामराग॰

१

P2

पत्रम

व०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्यसूचीपत्रम्
४२	२	५	जोगणी०
४२	२	७	नागध्वनि०
४३	२	१	भूपाली
४३	१	३	अड़ाना०
४३	१	५	कल्याण०
४३	१	७	गंभावतीती०
४३	२	२	सोहनी०
४३	२	४	सोभनी०

व०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्यसूची
४३	२	५	बागेश्री०
४३	२	८	बेहार
४४	२	४	मोहनी॥सोहनी॥
४४	१	८	पोमन०
४४	२	१	अथ भैरवमत प्रथमो
			भैरवराग०
४४	२	५	अथ रागभार्या०
४५	२	२	अथ रागपुत्र०

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
३९	२	३	दीपकराग॰
३९	२	७	देषी॰
४०	१	१	हिंडोलराग॰
४०	२	४	पूर्वी॰
४०	२	१	मालवी॰
४०	२	५	सिंदुरा॰
४०	२	७	गुजरी॰
४१	१	१	देषाख॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीप
४१	१	४	गौरसारंग॰
४१	१	७	मधुमाधवध्यान॰
४१	२	२	मालकोशध्यान॰
४१	२	६	टोड़ी॰
४२	१	१	गौरीध्यान॰
४२	१	४	गांधारराग॰
४२	१	०	गांधारी॰
४२	२	२	श्यामा॰
४२	२	३	वखार॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४९	१	५	चतुर्थपुत्र अथ देशाखरागः
४९	१	७	पंचमपुत्र अथ ललितरागः
४९	१	८	अथ विलावली
४९	२	२	सप्तम अथ माधवः
४९	२	४	अष्टम इति भैरवस्य परिवारः
४९	२	५	अथ मालकोशरागः
४९	२	६	अथ मालकोशस्य भार्या
५०	१	१	अथ गांधारी
५०	१	४	अथ श्रीहर्षणी
५०	१	६	दंघादणी
५०	१	८	अथ धनाश्री
५०	२	२	अथ परिवारोयम्
५०	२	४	अथ वर्वलरागः
५०	२	६	अथ मेवाडरागः
५०	२	८	अथ मिषांगरागः
५१	१	१	अथ चंद्रकास
५१	१	२	अथ भ्रमररागः

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४५	२	८	संकीर्णराग॰
४५	२	१	अथगायकलक्षण॰
४७	१	८	श्रीहर्षराग॰
४७	२	२	सौवरी॰
४७	२	५	रागवली॰
४८	२	२	सूरहटी॰
४८	१	३	बंगाली॰
४८	१	५	भैरवी॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
४८	१	८	अथवेलावली॰
४८	२	२	अथभैरवीपुन्यकी॰
४८	२	४	अथभैरवीहेहा॰
४८	२	६	भैरवीसरागनीहेहा॰ भैरवस्य प्रथमपुत्रः॥
४८	२	८	पंचमराग भैरवस्य द्वितीयपुत्रः॥
४९	१	२	मधुरराग॰
४९	१	४	तृतीयहर्षराग॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्	प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
५२	२	७	अथ विनोदराग॰	५३	२	७	अथ कुसुमराग॰
५३	१	१	अथ दीपक॰	५३	२	८	अथ रामराग॰
५३	१	३	अथ वहमंजरीरागणी॰	५४	१	१	अथ कुंतलराग॰
५३	१	४	अथ कामोदनीरागणी॰	५४	१	२	अथ कलिंगराग॰
५३	१	६	अथ टोडीरागणी॰	५४	१	४	अथ बहुलराग॰
५३	१	८	अथ गुर्जरी॰	५४	१	५	अथ चंपकराग॰
५३	२	२	अथ कावेरी॰	५४	१	६	अथ हेमाल॰
५२	२	५	अथ दीपकस्य पुत्र कमलराग॰	५४	१	८	अथ श्रीराग॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्॥
५१	१	४	अथ नटराग॰
५१	१	५	अथ खोखरराग॰
५१	१	६	अथ हिंडोलपरिवारारंभः॰
५१	१	७	अथ हिंडोलराग॰
५१	२	१	अथ तैलंगी॰
५१	२	२	अथ देवगीरी॰
५१	२	५	अथ वसंती॰
५१	२	७	अथ सिंदूरी॰

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
५२	१	२	अथ आभीरी॰
५२	१	४	अथ हिंडोलस्य परिवारः॰
५२	१	६	अथ चंद्रबिंबरागः॥
५२	१	७	अथ सुभंगराग॰
५२	२	१	अथ आनन्दनरागः॰
५२	२	२	अथ विभासः॥
५२	२	३	अथ वसंत॰
५१	२	५	अथ वर्द्धन॰

५

पत्र	ष्ठ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१४९५	२	४	भैरवी धमार
१४९५	२	७	भैरवी ताल धमार·
१४९६	२	८	रागिणी भैरवी ताल जत्त
१५००	२	६	ताल खेमटा बंगला होरी
१५००	२	८	भैरवी खेमटा
१५०१	१	४	सिंधड़ा भैरवी
१५०७	१	१	रागिणी सिंधु भैरवी ताल जत्त
१५०९	१	२	काफी भैरवी· जत्त
१५२२	१	४	पीलू
१५२३	१	३	भैरवी तनारा
१५२४	१	१	भैरवी पीलू·
१५२५	२	२	पीलू

पत्र	ष्ठ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य·
१५२६	२	२	जंगला
१५२७	१	३	भैरवी
१५२७	२	४	सिंधुभैरवी
१५२७	२	८	झिंझोटी चौ·
१५२८	१	६	जंगला
१५२८	१	७	झिंझोटीराग
१५२९	१	४	भैरवी पीलू
१५२९	१	१	झिंझोटी
१५३१	२	६	भैरवी झिंझोटी तवतारा
१५३२	२	५	लूम·

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रेसंगीतकल्पद्रुमस्य
१४७८	१	६	झिंझोटी
१४७८	१	७	झिंझोटी
१४७८	२	१	झिंझोटी
१४७८	२	२	झिंझोटी बंगाला
१४७८	२	४	जंगला ततारा
१४७६	१	२	मनहर छंद नटमल्लार
१४८३	१	८	अंग विदेहकों प्रदीपजत
१४८४	२	३	नट
१४८३	२	७	जत
१४८५	१	३	जीवन्मुक्तकोअंग
१४५५	२	५	अद्वैतज्ञानकोअंगप्रश्नोत्तरका न्हड़ा
१४५८	१	४	ब्रह्मराग
१४८६	२	८	भ्रांतिकाअंग
१४६०	२	८	विस्मयकोअंग
१४६१	२	८	धनीसरीमुलतानी
१४६३	२	२	विलाससवेयासंपूर्ण
१४६४	१	३	अथमंगलाचरण
१४६५	१	८	विरहतिह
१४६५	२	१	रागिणी भैरवी ताल धमाल तथा जत

६

6

पत्र	ए	प	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	ए	पे	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१५६०	२	१	होरावाजानाबाजम	१५६५	१	१	काफीञ्ग्रा
१५६०	२	५	खंभाइचीग्रलेया रागिणी॰	१५६६	१	३	सोरठ
१५६१	१	४	काफीञ्ग्रा	१५६६	१	६	काफीञ्ग्रा
१५६१	२	२	काफीञ्ग्रा खंभाइचीग्रलेया	१५६६	१	८	सोरठ
१५६२	१	४	काफीञ्ग्रा देसी	१५६६	२	४	थांनी काफीञ्ग्रा
१५६३	१	६	जंगला	१५६६	२	५	परजकाफीञ्ग्रा
१५६३	१	७	होरीताल	१५६६	२	७	काफीञ्ग्रा ग्रलेया
१५६४	१	३	जंगला	१५६७	१	२	काफीञ्ग्रा सिंधड़ा
१५६४	१	५	काफीञ्ग्रा	१५६७	१	५	काफीञ्ग्रा टोडी
१५६५	२	७	जिलाराग	१५७१	२	६	सिंधु भैरवी
				१५७२	२	५	काफीञ्ग्रा सिंधड़ा

पत्र	ट	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	ट	पं·	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य।
१५३१	२	१	गारा	१५४८	२	४	जंगला·
१५३३	२	१	झिंझोटी	१५५१	१	४	भैरवीजत।
१५४·	१	१	जंगला	१५५२	१	२	काफीग्रा
१५४१	२	३	पीलू	१५५२	१	८	पीलू
१५४१	२	७	जंगला·	१५५२	२	४	भैरवीजंगला
१५४४	२	१	काफीग्रा	१५५२	२	६	काफीग्रा सिंधड़ा जत
१५४४	२	७	झिंझोटी हुतारा	१५५४	१	२	परज
१५४५	२	३	जंगला	१५५४	१	७	टोड़ी
१५४७	२	२	पीलू·	१५५४	२	१	काफीग्रा सिंधड़ा
१५४८	१	३	जंगला	१५५६	१	७	काफीग्रा· जंगला
१५४८	१	५	पीलू·	१५५७	१	३	काफीग्रा सिंधड़ा

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१६०५	२	५	पहाडी	१६१७	१	३	सिंधड़धमार
१६०६	१	२	सोरठ	१६१७	१	५	खंबावती·
१६०६	२	१	देशपहाडी	१६१८	१	३	सिंधड़ाताधमार
१६०६	२	३	पील्लू·	१६१९	२	३	खंभावति·
१६०६	२	५	पहाडी	१६१९	१	१	सिंधड़ा
१६०७	१	२	देशपहाडी	१६१९	१	७	जयजयवंती·
१६०७	२	२	पील्लू·	१६१९	२	३	काफीग्रा जैयजयवंति·
१६०७	२	४	सोरठ	१६२०	१	२	सिंधड़ा
१६१०	२	७	जयजयवंति·	१६२०	२	३	रागिणी सिंधड़ातालधमार·
१६१६	२	७	सिंधड़ा	१६२०	२	८	खंभावती·
१६१७	२	२	याराधेनाव	१६२२	१	४	सिंधड़ा

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१५७३	१	३	सिंधड़ा भैरवी	१५९१	१	६	धमार[illegible]र·
१५८१	२	८	सोरठा	१५९१	२	२	बिहाग धमार
१५८१	२	१	सिंधड़ा भैरवी	१५९७	२	४	सिंधड़ा धमार
१५८२	१	३	अथ जतवांस वाड़े के निसेकी	१५९७	२	७	बिहाग धमार
१५८१	२	[illegible]	सिंध तालधमार	१५९६	२	३	सोरठ धमार
१५८३	२	८	सिरठा	१६००	१	४	बिहाग धमार
१५८४	१	१	सिंधु काफी त्र्या	१६००	१	७	सिंदूरा धमार
१५८४	१	८	सिंधड़ भैरवी·	१६०१	१	५	सोरठा
१५८६	१	५	सरपरदा	१६०२	२	३	सोरठा तृताला
१५८७	२	७	राग गारा तालजत·	१६०५	२	२	सिंधुरा धमार
१५८९·	१	५	बिहाग	१६०५	२	३	सोरठा

१
८
8

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१६५२	२	६	सरपरदा ताल जत
१६५२	२	८	रागदीपचंद जत
१६५३	१	४	विलावल ताल चौतारा
१६५३	१	६	काफी ताल जत
१६५३	२	१	रागमल्लार ताल जत
१६५३	२	४	काफीजत
१६५४	१	१	अथश्रीगुसाँईश्रीवल्लभजीकृतहोरी रागश्री परज ताल जत
१६५४	१	४	सोरठ जत
१६५४	१	६	रागब[illegible]हार

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१६५४	१	८	काफी
१६५४	२	२	काफी सारंग
१६५५	१	२	झिंझोटी
१६५६	२	७	धनाश्री
१६५७	१	२	रागझिंझोटी जलद तितारा
१६५७	१	६	रागदेवगिरी ताल होरीकी
१६५७	२	१	रागविरावरी ताल होरी
१६५७	२	५	कनडी जलद तितारा
१६५७	२	६	भैरवी
१६५७	२	८	इकताला
१६५८	१	२	रागसोरठ मलार ताल होरी

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१६३२	१	१	परज	१६४३	१	३	रागिणी काफीया तालजत
१६३·	१	४	खंभावती	१६५·	१	६	रागणी परज ताल धमार
१६३·	२	१	क· पहाडी	१६५·	२	१	काफी ग्रा जत
१६३·	२	४	ग्रा· क·	१६५·	२	३	मलतानी ताल धमार
१६३·	२	५	बिहाग।	१६५·	२	५	काफी ग्रा·
१६३८	२	२	परज ज·।	१६५१	१	६	पील्लताल जत
१६३५	२	१	कलिंगाजोगीया जत·	१६५१	२	७	सिंधडा
१६३५	२	५	परज	१६५१	२	८	रागणी काफी· जत·
१६३६	१	२	परज कलिंगराग·	१६५२	१	२	रागणी झिंझोटी· ताल जत·
१६४२	२	७	खंभावती· परज हो·	१६५२	१	५	काफी जत
१६४४	१	७	सोरठ	१६५२	२	३	रागणी कलिंगरा· ताल जत·

१

10

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१९९२	१	२	खट धमार	१०·४	२	४	आसावरी
१९९२	१	४	जीरावखटत्तार होरी	१०·४	२	५	जोगीया
१९९३	१	६	खट अपत्तारा	१०·५	१	३	आसावरी
१९९४	१	८	गाधा·रा·	१०·५	२	३	जोगीया जत
१९९४	२	१०	देवगांधार·	१०·५	२	६	टोडी तालधमार·
१९९५	२	१	रागिणी गुज्जरी	१०१·	२	८	लाचारी टोडी धमार·
१९९६	१	७	आसावरी·	१०११	२	४	देशी टोडी तालधमार·
१९९८	२	४	टोडी आसावरी धमार	१०१३	१	३	देशाख टोडी
१०·२	१	५	जोगीया	१०१४	१	३	काफी टोडी·
१०·३	१	१	आसावरी	१०१४	१	६	देशी टोडी·
१०·३	१	६	जोगीया·।	१०१४	२	७	सारंग धमार·

ॐ नमः

पत्र	पृ	पं	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रं
१६८४	१	७	सरपरदा· तालजत
१६८४	२	१	अलैया धमार
१६८५	२	२	सरपरदा
१६८६	१	५	ककुभ धमार
१६८७	१	१	सर· जत
१६८७	१	४	ककुभ धमार
१६८७	२	३	अलैया
१६८८	२	८	क●कुभ·
१६८९	१	३	सरपरदा......

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१६८९	१	८	ककुभ धमार
१६८८	२	२	रागशाी ककुभताल धमार
१६८९	१	७	देवगिरी ताल धमार·
१६९०	१	८	विलावल धमार
१६९०·	२	७	अलैया·
१६९१	१	१	कुककुभ धमार
१६९१	१	३	अलैया
१६९१	१	६	रागशाी कुकुभ धमार
१६९१	१	८	रागशाी देशाख धमार
१६९२	१	२	हघैर ......

६

पत्र	ह	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१६६५	२	२	सूरवीताल धमार
१६६५	२	७	विहागरो॰
१६६६	१	१	सरपरद्दा
१६६६	१	२	पीलू भैरवी ताल जत
१६६६	१	६	खट
१६६६	२	१	रागकेदारातालधमार
१६६६	२	४	रागणी काफी ताल धमार
१६६७	२	७	धनाश्री॰
१६६८	२	३	काफी॰
१६६८	२	८	धनाश्री
१६६९	१	५	होरी ठुमरी॰

पत्र	ह	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य॥
१६७१	१	१	कलावंतीहोरीगान प्रारंभ रागिणी भैरवी ताल चौताला॰
१६७५	१	३	रामकली धमार
१६७७	१	१	टोडी ताल धमार
१६७७	१	३	मुलतानी ताल धमार
१६७७	१	६	सूरवी
१६७७	१	८	ख्यालेया॰
१६७७	२	६	राग विभास ताल धमार
१६७७	२	८	भैरव धमार
१६७९	१	५	रागिणी ललित ताल धमार
१६८१	१	८	ख्यालेया

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य·
१६५८	१	७	राग सोरठ ताल दीपचंदी	१६६२	१	८	ककुभ जत्त
१६५८	२	२	राग अड़ानो ताल होरी	१६६२	२	४	सरपरदा
१६५८	२	५	जलद तिताला	१६६३	२	६	खट राग
१६५८	२	७	राग सुहाना जलद तिताला	१६६४	१	३	भैरवी जत
१६५९	१	३	राग काफी· जलद तिताला	१६६४	१	६	भैरवी जंगला
१६५९	१	५	राग सिंधुरा ताल होलीकी	१६६४	१	८	एमन कल्याण तालधमार
१६५९	२	१	राग वरारी काफी ताल होरीका	१६६४	२	२	इ· क· ध·
१६५९	२	३	राग काफी जलद तिताला	१६६४	२	५	भैरवी· काफी जत
१६६·	२	२	इकताल	१६६४	२	८	जंगलाजत
१६६·	१	४	रागणी मोहनी ताल धमार	१६६४	१	७	फील्ह
१६६३	१	३	काफी·	१६६५	१	६	भैरवी·

प॰	पृ	पं॰	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	प॰	पृ	पं॰	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१७४१	२	३	धनाश्री धमार	१७४५	१	५	जैतश्री धमार
१७४२	१	३	जैतश्री	१७४६	१	[illegible]	पूरवी धनाश्री ध॰
१७४२	१	७	मालश्री धमार	१७४६	१	८	रागदीपक धमार
१७४२	२	१	पूरवी	१७४६	२	४	पूरवी धमार
१७४३	१	१	मारवा धमार	१७४८	२	६	मूलतानी धमार
१७४३	१	२	गौड सारंग धमार	१७४७	१	१	पूरवी धमार
१७४४	१	३	मालश्री धमार	१७४९	२	६	धनाश्री धमार
१७४४	१	७	माल॰ होरी	१७५०	१	२	मारवा धमार
१७४४	२	१	मालती धमार	१७५०	१	७	गौरी धमार
१७४५	१	३	फुलश्री	१७५०	२	१	राग भैरवी होरी

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१६५९	१	७	राग सोरठ ताल दीपचंदी	१६६१	१	८	ककुभ जत्त
१६५८	२	२	राग अडानो ताल होरी	१६६२	२	४	सरपरदा
१६५८	२	५	जलद तिताला	१६६२	२	६	खट राग
१६५८	२	७	राग सुहाना जलद तिताला	१६६४	१	२	भैरवी जत
१६५९	१	३	राग काफी॰ जलद तिताला	१६६४	१	६	भैरवी जंगला
१६५९	१	५	राग सिंधुरा ताल होलीकी	१६६४	१	८	एमन कल्याण ताल धमार
१६५९	२	१	राग बरारी काफी ताल होरीका	१६६४	२	२	इ॰ क॰ ध॰
१६५९	२	३	राग काफी जलद तिताला	१६६४	२	५	भैरवी॰ काफी जत
१६६०	२	२	इकताला	१६६४	२	८	जंगला जत
१६६०	१	४	रागणी मोहनी ताल धमार	१६६४	१	७	कौल्ह
१६६१	१	३	काफी॰	१६६५	१	६	भैरवी॰

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१९९३	१	२	खट धमार	१०·४	२	४	आसावरी
१९९३	१	४	जीरावखटतार होरी	१०·४	२	५	जोगीया
१९९३	१	६	खट ऊपतारा	१०·५	१	३	आसावरी
१९९४	१	८	गाधा·रा·	१०·५	२	३	जोगीया जत
१९९४	२	१०	देवगांधार·	१०·५	२	६	टोड़ी तालधमार·
१९९५	२	१	रागिणी गुज्जरी	१०१·	२	८	लाचारी टोड़ी धमार·
१९९६	१	७	आसावरी·	१०११	२	४	देशी टोड़ी तालधमार·
१९९८	२	४	टोड़ी आसावरी धमार	१०१३	१	३	देशाख टोड़ी
१०·२	१	५	जोगीया	१०१४	१	३	काफी टोड़ी·
१०·३	१	१	आसावरी	१०१४	१	६	देशी टोड़ी·
१०·३	१	६	जोगीया·।	१०१४	२	७	सारंग धमार·

ॐ नमः

पत्र	पृ	पं	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रं	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१६८४	१	७	सरपरदा· त्तालजत	१६८९	१	८	ककुभ धमार
१६८४	२	१	आलैया धमार	१६८८	२	२	रागराग ककुभताल धमार
१६८५	२	२	सरप[illegible]दा	१६८९	१	७	देवगिरी त्तालधमार·
१६८६	१	५	ककुभ धमार	१६९०	१	८	विलावल धमार
१६८७	१	१	सर· जत	१६९०	२	७	आलैया·
१६८७	१	५	ककुभ धमार	१६९१	१	१	कुककुभ धमार
१६८७	२	३	आलैया	१६९१	१	३	आलैया
१६८७	२	८	क[illegible]कुभ·	१६९१	१	६	रागरागा कुकुभ धमार
१६८९	१	३	सरपरदा· · · · ·	१६९१	१	८	रागरागी देशाख धमार
				१६९२	१	२	सुघरै · · · · · ·

॥

प॰	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१७४१	२	३	धनाश्री धमार
१७४२	१	३	जैतश्री
१७४२	१	७	मालश्री धमार
१७४२	२	१	पूरवी
१७४३	१	१	मारवा धमार
१७४३	१	२	गौड सारंग धमार
१७४४	१	३	मालश्री धमार
१७४४	१	७	माल॰ होरी
१७४४	२	१	मालती धमार
१७४५	१	३	फुलश्री

प॰	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१७४५	२	५	जैतश्री धमार
१७४६	१	[illegible]	पूरवी धनाश्री ध॰
१७४६	१	८	रागदीपक धमार
१७४६	२	४	पूरवी धमार
१७४८	२	६	मूलतानी धमार
१७४७	१	१	पूरवी धमार
१७४९	२	६	धनाश्री धमार
१७५०	१	२	मारवा धमार
१७५०	१	७	गौरी धमार
१७५०	२	१	राग भैरवी होरी

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१२१५	२	२	लोचनीलाई सारंग ध॰	१२३५	१	५	धनाश्री
१२१८	१	३	हालीया सा होरी	१२३५	१	६	मुलतानी॰ धना॰
१२१८	२	२	सारंग ध॰	१२३५	२	२	पीलू मुलतानी
१२२२	२	४	मलार तार ध॰	१२३६	२	७	हूरीया धनाश्री धमार
१२२३	२	५	गौड़मलार ध॰	१२३८	१	६	मूल॰
१२२४	१	२	रामदासी मलार	१२३८	२	३	धनाश्री धमौर
१२२४	१	६	रागमेघतारहोरी	१२३८	२	७	हूरीया धनाश्री धमार
१२२४	१	७	मलार॥	१२४०	२	१	होरी
१२२५	२	४	मलार मुलतानी धना	१२४०	२	३	भैरवी
			श्री ताल धमार	१२४१	१	३	मीयांकी

पत्र·	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१२६१	१	२	कल्याण
१२६२	१	१	हमीर
१२६३	१	२	कमुर धमार
१२६३	१	४	हमीर
१२६४	२	१	पूरीया
१२६४	२	३	जैत धमार
१२६५	१-	६	कमोद
१२६६	१	२	करनाटराग
१२६६	१	३	छायानाटहो·
१२७०	२	३	रागअडाना·

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१२७०	१	३	अथाना धमार
१२७१	२	१	अडाना ध·
१२७२	२	२	रागश्री नायकी
१२७२	२	६	सहाना
१२७३	१	६	कान्हरा धमार
१२७७	२	४	बागेसरी
१२७८	१	२	मालकोल धमार
१२८०	१	४	बागेसरी ध·
१२८०	२	५	मालकोस ध·
१२८१	२	६	मालश्री ध·
१२८२	१	७	मोदकी ध·

पत्र·	ह	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१७५·	२	३	रामकली
१७५·	२	४	परमंजरी
१७५·	२	५	गुजरी
१७५·	२	६	बराड़ी
१७५१	१	३	रागणी त्रवणी
१७५१	१	५	धमार
१७५१	१	७	गौरी
१७५१	१	८	श्रीराग
१७५२	१	५	गौड़ी धमार
१७५४	१	१	गौरी
१७५४	२	७	श्रीराग धमार
१७५५	१	४	चौतीया गौरी

पत्र·	ह	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१७५५	१	६	चौ·गौ·
१७५६	१	३	यमन
१७५७	१	३	यमन कल्यान धमार
१७५७	२	८	सूर धमार
१७५८	१	३	भूपाली धमार
१७५९	२	७	यमन
१७५९	२	१	भूपाली
१७५९	२	२	यमन कल्याण
१७५९	२	४	भूपाली
१७६०	१	७	यमन कल्याण

13

प॰	पृ॰	पं॰	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	प॰	पृ॰	पं॰	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१३५७	१	२	मंगलाचरणं	१३६३	२	७	रागखट त्रितारा॰
१३५७	१	२	अथ संहरदास जो कृत कवितादि छंद॰	१३६४	१	८	जोगीया त्रितारा दुमिला छंद
१३५७	१	३	रागभैरव ताल चौतारा॰	१३६४	२	३	जोगीया जत ताल
१३५७	१	८	चौतारा॰	१३६५	२	६	अंकालचिवनी हरव छंद
१३५८	१	७	विभास चौतारा	१३६६	१	१	जत॰
१३५९	२	४	ललित॰ भितारा	१३६६	१	१	आसाति॰
१३६०	२	४	राग देवगिरी॰	१३६६	२	२	राग त्रितारा
१३६१	१	६	ककुभ राग॰	१३६६	२	८	आसावरी।
१३६२	२	२	ककुभ राग चौतारा	१३७१	२	७	गुजरी चौतारा
१३६२	२	७	रागगौरी रामकली ताल झप	१४०५	२	८	देशीटोडी चौतारा

सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य ॥

	पत्र	पृ	पं	राग विलावल		पत्र	पृ	पं	
रागविलावल	१३५५	१	५	राग विलावल		१३७०	१	८	रा· वि· अथचीरहरणलीला
	१३६२	२	६	रा· वि· अथ्यासुरकोवध					पंचपत्रे त्रुटित नेरांसे एकासीनें
	१३६३	२	८	रा· वि· ध्रुव·					लयकर छ्यासी पर्य्यंत
	१३६५	१	३	रा· वि· वत्सहरण· ब्रह्ममोहनलीला					
	१३६६	१	४	रा· वि· ध्रुव·					
	१३६७	१	६	रा· वि· ध्रुव·					
	१३६८	१	७	रा· वि· अथकालीदमनलीलावर्णन					
	१३६९	१	७	रा· वि· ध्रुव·					

रागमालकोशव्दंचल तीनताल॥

रागमा· ॥ गीतग· ॥ शिवगीत ॥ सूरसागर ॥

१२

2

ॐनमोनमो
गजेंद्राय

गजेंद्रमोक्षणंचैव पंचरत्नानि भारत:

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१४०६	२	२	मूलं	१४१९	२	४	मनचंचलकोअंग
१४०६	२	४	सावंतति·	१४२१	२	७	चानककोअंग छायानट
१४०७	२	२	तितारा	१४२२	२	७	रागनट
१४०८	१	२	पेटकोअङ्कः इन्द्रवछंद सारङ्गः	१४२३	१	२	अडाना
१४०८	२	१	चौतारा	१४२४	१	६	कहारा
१४०९	१	१	राग मधुमाध	१४२५	१	६	वागेश्वरी
१४०९	२	२	वडसंस	१४२५	२	७	विपरीतज्ञानकोअंग
१४१२	१	५	भीमपलास	१४२६	१	३	वचनविवेककोअंग
१४१४	२	३	नारिनिद्राकोअङ्कः	१४२८	२	७	भिहाग रांग

२

3

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१४४६	२	२	नृततारा	१४५०	२	२	आपने भाव को अंग · त्र · धवल · धनाश्री ·
१४४६	२	५	काशीराम नृततारा	१४५१	१	८	मल्लासहनाजत
१४४६	२	८	नृततारा ·	१४५१	२	४	जत
१४४७	१	२	नृततारा	१४५१	२	७	जत
१४४७	१	४	नृततारा	१४५२	१	१	जत
१४४७	१	७	नृततारा	१४५२	१	३	जत
१४४७	२	१	नृततारा	१४५२	१	६	जत
१४४७	२	३	नृततारा	१४५२	१	८	जत
१४४७	२	६	नृततारा	१४५२	२	३	स्वरूपविस्मरणा अंग मल्लार वैतारा
१४४७	२	८	नृततारा				

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१४४२	२	३	तृतारा
१४४२	२	६	तृतारा
१४४३	१	२	झिंझोटी तृतारा
१४४३	१	६	तृतारा
१४४३	२	२	तृतारा
१४४३	२	५	तृतारा
१४४४	१	१	तृतारा
१४४४	१	५	तृतारा
१४४४	२	४	तृतारा

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१४४४	२	८	भक्तिज्ञानमिश्रित अंग रागसिंधु तृतारा· सिं·
१४४५	१	३	तृतारा
१४४५	१	५	तृतारा
१४४५	१	७	तृतारा
१४४५	२	२	तृतारा
१४४५	२	४	तृतारा
१४४५	२	६	विपर्यय अंग सिंधु तृतारा
१४४६	१	१	तृतारा
१४४६	१	६	तृतारा
१४४६	१	८	तृतारा

पत्र	ष्ट	प	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
१४६३	२	३	जत
१४६३	२	५	जत
१४६३	२	८	जत
१४६४	१	७	सवैया जत
१४६५	१	१	मनहर छंद जत
१४६५	२	३	विचारको अंग मनहर छंद राग रागरीत्रवणीटंक
१४६८	२	२	प्रश्न
१४६८	२	५	उत्तर
१४६९	२	२	ब्रह्मनिष्ठा सेवको अंग मनहर छंद जत
१४७०	१	७	आत्मा अनुभव अंग लावनी
१४७१	१	१	प्रश्नोत्तर लावनि
१४७२	२	६	सिंधु लावनि
१४७५	२	४	देशाख कान्हडा
१४७६	२	४	ज्ञानिको अंग मेघ चौतारा
१४७७	१	४	राग देशाख कान्हडा चौतारा
१४७७	२	५	झिंझोटी
१४७७	२	८	झिंझोटी
१४७८	१	१	झिंझोटी
१४७८	१	४	झिंझोटी

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
१४५४	१	१	इन्द्रवच्छंद तृतताल	१४५६	२	१	जत
१४५४	१	४	तृतताल	१४५६	२	४	जत
१४५४	१	६	तृतताल	१४५६	२	७	इंद्रवछंद सधमल्लार
१४५४	२	१	तृतताल	१४५८	१	४	साखीज्ञानको अंग मनहरछंद
१४५४	२	४	मनहरछंद तृतताल	१४५८	२	३	चौताल
१४५४	२	७	तृतताल मनहरछंद	१४५९	१	३	सधाराईप्रश्न
१४५५	१	३	तृतताल	१४५९	१	६	उत्तर
१४५५	१	७	जत	१४५९	२	१	प्रश्न
१४५५	२	३	जत	१४५९	२	५	उत्तर
१४५६	१	१	जत	१४६०	२	५	प्रश्नोत्तर
१४५६	१	६	जत	१४६२	२	१	देताली जत

5

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्
५४	२	२	अथ श्रीरागस्य संकुश्री [?] वैराटी रागिणी लिख्यते॥
५४	२	५	अथ कर्णाटी रागिणी ०
५४	२	६	अथ सावेरी रागिणी ०
५४	२	८	अथ गौडी ०
५५	१	२	अथ रामकली ०
५५	१	५	अथ सैंधवी रागिणी
५५	१	७	अथ सिंधु रागः ०

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
५५	२	१	अथ मालव रागः
५५	२	३	अथ गौड रागः ०
५५	२	५	अथ गंभीर रागः॥
५५	२	६	गुणसागर रागः ०
५६	१	१	अथ कल्याण रागः ०
५६	१	४	अथ कुंभ रागः ०
५६	१	६	कुंड रागः ०
५६	१	८	अथ मेघ रागः॥

संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्
५८	२	२	रागवर्णनारः०
५८	२	४	अथग्राम०
५८	२	८	अथश्रुति०
५९	१	४	इतिद्वाविंशतिश्रुतिक्रमात्तस्य सारणम्॥०
६०	१	८	मूर्च्छना०
६०	१	२	सर्वसंगीतशास्त्रमतसंग्रहः०
६०	१	६	मंगलाचार००

प०	पृ०	पं०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
६१	१	२	अथसप्तस्वर०
६१	१	४	अथद्वितीयभेद०
६१	१	५	अथजातसाधारण०
६१	२	३	अथग्रामलक्षण०
६१	२	५	अथस्वरउच्चारस्थानमाह०
६२	१	१	अथद्वितीयभेदलक्षणम्०
६२	१	४	अथस्वरजाती०
६२	१	६	अथगायनदोषलक्षण०

8

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम् ॥
८१	२	७	अथ षणाम रागलक्षणम् ॥
८२	१	३	शिवमतलक्षणम् ॥
८२	१	९	अथ जैनमतलक्षणम् ॥
८२	१	७	अथ विभासलक्षणम्
८२	२	१	अथ सुधवंगाली ॥
८२	२	५	अथ मांगलक्षणम् ॥
८२	२	७	रागवर्णन संपूर्णम् ॥
८२	२	८	लघ्या रागमाला ॥

प॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
८३	२	२	अथ रागरागिणी उदाहरणम्
			अथ भैरवरागलक्षणम् ॥
८३	१	६	अथ पा स्वरागनी ॥
८४	१	३	अथ भैरवीलक्षणम् ॥
८४	२	८	अथ बंगाली ॥
८४	२	४	अथ वरारीलक्षणम् ॥
८४	२	८	अथ सैंधवीलक्षणम् ॥
८५	१	५	इति पंचमभार्यासहितभैरवराग प्रथमालवोंम ॥

प.	पृ.	पं.	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
७८	२	५	अथ धनाश्री लक्षणम् ॥
७९	१	२	अथ बसंतराग लक्षणम् ॥
७९	१	४	अथ मालश्री लक्षणम् ॥
७९	१	८	अथ आसावरी लक्षणम् ॥
७९	२	३	अथ मेघमलार ॥
७९	२	६	अथ मेघकी भार्या ॥
७९	२	८	अथ मलारी लक्षणम् ॥
८०	१	४	अथ दक्षन गुर्जरी लक्षणम् ॥
८०	१	६	अथ भूपाली ॥
८०	२	१	अथ देशकारी लक्षणम् ॥
८०	२	६	इति पंचभार्यासहितो नट्राग
			अथ संकरराग लक्षणम् ॥
८१	१	२	अथ सांगनट लक्षणम् ॥
८१	१	५	अथ सोरठी लक्षणम् ॥
८१	१	८	अथ तुरगतोडी लक्षणम् ॥
८१	२	४	अथ पंचमराग लक्षणम् ॥

पत्र॰	पृ॰	ख॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्
२२६	२	७	भैरव सुलफाकता॰
२२७	१	८	भै॰ तालफरोदस्त॰
२२८	२	१	भै॰ [illegible] त्रेवडाताल॰
२२८	२	२	भै॰ सुरफाकता॰
२२८	२	५	भै॰ ब्रह्मताल॰ लक्ष्मीताल॰
२२८	२	६	रुद्रताल॰
२२८	२	७	भै॰ तालसुरफाकता॰
२३९	१	२	भै॰ लक्ष्मीताल॰
२३९	२	५	भै॰ रूपतारा॰

पत्र॰	पृ॰	ख॰	संगीतकल्पसूची॥
२३९	२	१	भै॰ टपा तालमध्यमान तिताला॰
२३९	२	२	एकताला॰
२४०॰	२	४	भै॰ तालसवारी॰
२४०॰	२	६	भै॰ झुमरा॰
२४१	१	६	ब्रह्मतालप्रबंध॥
२४१	१	८	भै॰ तालपटतार॰
२४१	२	४	भै॰ ख्यालधी॰
२५१	२	५	भै॰ ति॰ टपा॰।

पत्र.	पृ.	पं.	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रे	पत्र.	पृ.	पं.	सूचीपत्रमिदम्
१३०	२	२	भैरव रूपकताल०	१३२	२	४	रुद्रताल०
१३१	१	१	भैरव. सूलफाकताल०	१३३	२	६	विष्णुताल०
१३२	२	३	रागभैरवतालपत्ताल०	१३४	१	२	भै० धमार ताल०
१३२	२	६	ब्रह्मताल प्रबंधः	१३४	१	४	तारहोरी धमार०
१३३	१	२	भै० ताल रुद्रताल०	१३४	१	६	भै० धमार०
१३३	१	५	तालविष्णु।।	१३५	२	४	भै० सूलफा०
१३३	१	७	ब्रह्मताल।।	१३४	२	७	ख्याल तीताला०
१३३	२	३	लक्ष्मीताल०	१३५	१	१	भै० चतुरंगताल०

पत्र०	पृ०	प०	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्	पत्र.	पृ.	पं.	सूचीपत्रम्०
१५१	२	३	राग भै० तालएकताला०	१७१	२	१	भैरव ति·
१५४	२	५	ख्यालभैरव०	१७५	२	७	टैक
१५४	२	७	तालझुमरा०	१७६	१	२	भैरव तिताला
१५५	२	८	भैरवएकत्ता·	१७६	१	३	भै· टै·
१७०	१	३	सिंध तिताला	१७६	१	८	भै· ति·
१७०	१	६	सुलतान तिताला	१८५	२	४	रागणी होरी धमार
१७०	१	७	सिंध काफी· ति·	२१२	२	८	देशी होरी चौताला
१७१	१	१	खुशाहोरी	२१५	१	१	बहादुरी होरी चौ·
१७१	१	४	होमे· [illegible]	२१५	१	६	लाचारी होरी चौ·
				२१५	२	२	दरबारी होरी· चौ·
				२१६	१	२	लाचारी होरी चौ·

पत्र॰	पृ॰	पं॰	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रम्	पत्र॰	पृ॰	पं॰	सूचीपत्रम्
१४२	२	७	भैरवचौताल॰	१४७	१	१	एकताल॰
१४३	१	३	रागसागर॰	१४७	१	८	भैरवतिताल॰
१४४	१	५	अथ अलापादार सर्वेरागा	~~१४९~~	~~२~~	~~२~~	~~भै॰ धीमातीताल॰~~
			णां मालापस्तालव्याम्॥	१५०	२	६	ख्याल सरगम भै॰
१४४	२	८	भै॰ जलद ति॰ अथ ख्याल॰	१४९	१	३	विलोइ भैरू॰
१४५	१	१	रागभैरव॰	१४९	१	८	भै॰ सुलफाकताल॰
१४६	१	१	भैरव धी॰ ति॰	१४९	२	२	भै॰ धीमातीताल॰
१४७	१	२	भै॰ ति॰ चतुरंग॰	१५१	१	६	भैरवतीर॰

१	२	पं	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्
६२२	२	६	सोरठ
६२३	१	४	खंभाईची
६२३	१	८	सोरठ
६२४	१	१	।झिंजोटी
६२४	२	३	देशजत्तनार
६२४	२	८	लूमदेश
६२५	२	२	देशठमरी
६२५	२	७	देशसोरठठमरी
६२६	१	५	देशठमरी
६२६	१	६	विहासी

संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	
६२६	२	८	देशलूम
६२७	२	६	देशत्तित्तारा
६२७	२	३	वरवादेश
६२८	१	१	सोरठऊपत्तार
६२९	२	२	सोरठराकत्तार
६३३	२	३	सिं[illegible]दडातालत्तित्तारा
६३५	२	६	सोरठराकत्तारा
६३६	२	७	देशधीमा
६३६	२	८	सोरठ
६३७	२	६	सोरठधीमा

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	संगीतकल्पद्रुमस्यसूचीपत्रमिदम्
६११	२	८	जंगलातितारा
६११	२	१	रागणीविहारीतालखेमटा
६११	२	३	विहारीतालतितारा
६१२	२	६	विहागधुन
६१२	२	८	दीपचंद
६१३	१	१	बरवा
६१३	१	२	विहारी
६१४	१	३	विहागदीठुमरी
६१४	१	५	विहारी

प	पृ	पं	संगीतकल्पद्रुमस्यसूचीपात्रमिदम्
६१४	२	८	विहागविहारीतालतितारा
६१५	२	४	विहारीतालतितारा
६१५	२	५	विहारीठुमरी
६१५	२	७	विहाग
६१५	२	८	विहारीतितारा
६१६	२	४	विहाग
६२०	१	२	देशठुमरी
६२१	२	५	सोरठतितारा
६२१	२	७	सोरठदेशतितारा
६२२	२	२	कालिंगरातितारा

प·	पृ	पं	सूचीपत्रेसंगीतकल्पद्रुमस्य	प·	पृ	पं	सूचीपत्रेसंगीतकल्पद्रुमस्य
३·२	१	८	गांधाररागसमाप्तिः	३४५	२	१	मूलतानी वरवा ति·
३·२	२	४	रागणीआसावरीतथाजोगीया	३४५	२	२	मू· भी· ति
३·२	२	५	आसाप्रारंभः	३४५	२	३	वरवा भीमपलासीति·
३२६	२	[illegible]	आसावरीरागणीसमाप्तिः	३४५	२	५	मू· ध· ति·
३३·	१	२	रागणीमूलतानीधनाश्री भीमपलासीधानी इत्यादिप्रारंभः	३४५	२	८	वरगा ति·
				३४६	१	२	मू· धना· ति
३३·	१	४	वरवामूलतानीधानीश्रीप्रारंभः	३४६	२	१	मू· भीमपलासी ति·
३४१	२	६	भीमपलासी	३४६	२	६	मू· ध· ति
३४२	१	६	मूलतानी चौ·	३४७	१	१	भीमपलासी रूपक
३४२	२	७	भीमप· चौ·	३४७	१	२	मू· रू·
३४४	१	३	रा· मूलतानी चौ·	३४७	२	२	धनाश्री ति·
३४५	१	७	रागरिषभताल चौ·	३४७	२	६	धातु भीम· त्रेवडा
				३४७	२	९	मात

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य·
२५६	२	५	जौ·ज·ति	२६:	१	३	लाचारी हो·धीमा ति·
२५७	१	८	जौनपुरी तितारा	२६:	१	७	साहूसे एकतारा
२५७	२	२	होड़ी·ति·	२६:	१	८	आड़ा
२५७	२	३	जौन·ति·	२६:	२	३	जौनपुरी
२५७	२	४	होड़ी धी·	२६२	२	५	होड़ी ति·
२५९	१	२	वरवा होड़ी खाज आड़ाना	२६२	२	८	जौनपुरी ति·
२५८	१	४	सावनी होड़ी	२६६	२	३	लाचारी होड़ी
२५८	१	५	वहादुरी होड़ी·	२७६	१	१	रागणी गुर्जरी प्रारंभः
२५८	२	३	गांधारी होड़ी·	२८६	१	६	रागणी गुर्जरी समाप्तिः
२५८	२	४	होड़ी हजरत ख्वाजकुतव	२८६	२	१	गांधार राग प्रारंभः
२५८	२	५	जौनपुरी धी·	२८६	२	३	गांधार चौताला

प·	पृ·	पं·	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य	प·	पृ·	पं·	सूचीपत्रं संगीतकल्पद्रुमस्य
४१३	२	६	मालश्री चौतारा	४५६	१	६	मारवा झूलफाकता
४२६	२	३	मालश्री रागणी समाप्तिः	४५६	२	४	धवलश्री चौ·
४२६	२	५	रागणी पूरवी पूरवा मार·वा गारा डा त्रेवेणी गौरा प्रारंभः	४५६	२	५	रूषभराग चौ·
				४५६	२	७	गौ·ती·
४२६	२	६	रागणी पूरवी चौतारा	४५७	१	१	ज·मा·ए·
४५४	२	४	पूरवी पूरवा समाप्तिः	४५७	१	२	रागगौड़सारंग चौ·
४५४	२	६	राग मारवा माली गौरा त्रिवणी श्रीटंक श्रीरागगौरी प्रारंभः	४५७	१	६	ग·ध·
				४५७	१	८	गौड़ाति
				४५७	२	१	म·ग·
४५४	२	७	मारवा चौमतारा	४५७	२	५	श्रीराग चौ·
४५५	२	३	रागवांगी चौ·	४५८	१	२	श्रीटंक चौतारा
४५५	२	६	व·चौ·	४५८	१	६	श्रीरवपाललितारा·
४५६	१	५	टेकरुपतारा	४५८	२	५	ग·चौ·

प॰	ए	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमम	पत्र	ए	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य
४५८	२	६	ग्रट॰ति॰				
४५८	२	७	जैतश्री ति॰				
४५९	१	२	मै॰ति॰				
४५९	१	३	रागदीपकचौताला				
४५९	१	६	प्रदीपकीरूपकताल				
४५९	१	८	मालश्री॰ध॰				
४५९	२	१	श्रीगौरी॰चौ॰				
४६०	२	२	श्रीरामख्याल				
४६०	२	७	गौ॰ति॰				

पत्र	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीतकल्पद्रुमस्य	पत्र·	पृ	पं	सूचीपत्रंसंगीकल्पद्रुमस्य
५३२	२	१	मंगलाचरण				
५३२	२	८	भैरवीरागणीध्यानं				
५३३	१	२	भैरवीरागणीध्यानोदाहरणं				
५३३	१	५	रागणी भैरवी ताल चौतारा				
५३३	१	७	तालतितारा				
५३३	१	८	तालत्रेवड़ा				
५३३	२	७	अथगीतगोविंदाअष्टपदी				
५३४	१	१	अथत्रंतरा				
५३४	२	२	रागणीभैरवीतालतितारा				
६२१	२	५	रागणीसिंधभैरवी तालधीमातितारा				
६२७	२	२	रागणीभैरवी समाप्तिः				
६२७	२	३	श्रीहरीरागिणी झोटीप्रारंभः ताल चौतारा।				

धुवपद
स्त्रीव॰

जैजवंती
रागनी ~~सोरठ~~ ॥ कीट मुकुट पीतवसन हसन दसन मंद मंद मधुर मधुरे अधरन
की कांति चित्त मोहै ॥ ॥ धारैं वैजंतीमाल भाल तिलक अलिक कुटिल मोतिन
कील रींवीच चीतरतन जोहै ॥ ॥ श्याम सुंदिर मेदुर वन वर्ण कर्ण कुंडल
लख गोपवधु चकित भईं रहीं सुध भूलो है ॥ ॥ तड़ित चमक नील जलद मध्य
सुखम शोभित नित वालनिधी वाल ~~कृष्ण~~ रूप हीये सोहै ॥

१२४७

भक्त चित चोरे॥ वैस्नव भेष बसेष बनाये॥ तासु वदन अस वचन अलाये॥ सुन हो कुल्ह स्लह सनकाहू॥ करन न द्वेष उचित तोहि दाहू॥ रहपूरव सत भूप सुजाना॥ मोर भजन हित विपुन महाना॥ गवन्यो भक्त सदन निज त्यागी॥ मोर सुमरन लोकरन वडभागी॥ कानन तहां प्राण तजि दीना॥ रहो मोर दृढभक्त प्रवीना॥ इहि सन करहु द्वेष जनि मोरे॥ कुल्हा सुनत जुगल कर जोरे॥ कीन प्रणाम चरन भगवाना॥ तज्यो द्वेष मानस हरषाना॥ श्री मुख दीननाथ पुनि काहा॥ अव तुहि कवन कुल्हे रुचि राहा॥ जाहे न केत नाथ [illegible] अभिलाषा॥ मूंदहु जुगल नयन प्रभु भाषा॥ जव तहि कीनन मीलन लोचन॥ दीन पुजाय सदन दुखमोचन॥ तव कुल्हा दारा वलि जाना॥ मानस मनहु सपन वतकाना॥ पुनि निज स्लह बंधु वर काहीं॥ लग्यो सुमरण करन मन माहीं॥ आवा सोऊ दिवस कछु पाये॥ देखत द्रगन कुल्ह हरषाये॥ अस प्रकार कछु दिवस विहाने॥ कुल्हा हृदय भक्ति सरसाने॥ दोहा॥ तजत ग्रस्थ निज सदन सम बंधुवर्ग परिवार॥ गौवन्यो कानन भजन हित कृस्न चरन उर धार॥ २॥ टीका॥ इस प्रकार तिसकी दशा देखकर भक्त बतसल भगवान सुंदर वैस्नव रूप धारकर तुरत चले आये और कुल्ह भक्त का हाथ सेपकड कर बाहर निकाल करके अनेक प्रकार का प्रबोध कर कर समुजाया फिर प्रीती से पत्तल आगे राखकर भोजन जोहे सो जिमावने लगे तव कोई पुरष कहता भया कि भाई इह पत्तल तुमारे आगे किस लिये राखी है कुल्ह कहने लगा कि स्लह के लिये राखी होगी ऐसे कहताहीं कोप से तुरत उठ खडा भया कि मैं अव इहां भोजन नहीं पाऊंगा तव भक्तजनों के चित्त को चुराय लेनेवाले भगवान वैस्नव भेष धारे हूये तिसको ऐसे

वश उदासीन होयकर तहां द्वारावती मे आय प्राप
त भया तब कुल्ह वडे आनंद प्रेम से रणछोड भगवान
के भवन मे आयकर अपने रचे हूये कुछ ललित पद जो थे
सो मधुर मधुर स्वर से आलापन करने लगा तिसको देखकर
रुल्ह भी आनंद से कुछ गायन करने लग पडा परंतू
वे तिसके अपने रचे हूये पद जो नहीं थे तिसतें हृदय मे
कुछ संकोच और लज्जा मानता भया तब तिस पर भ
क्त सुखदायक भगवान कृपालु प्रसन्न होय गये तुरत
हीं पवन करके प्रेरी हूई दीनवंधू के हृदय की पुष्पमा
ला जो थी सो तिसके गले मे आय पडी तिस माला को
देखकर रुल्ह कहने लगा कि हे दीनदयाल प्रभू इह मेरा
जेष्ट भ्राता नाथ तुमारे चरनो का भक्त और मै महा मंद
अधम अभक्त कृपानिधान मेरे को आपने माला दे दई
इसका क्या कारण है तब कुल्ह देखकर के हृदय मे
वडी लज्जा को प्रापत कि अहो मेरा कैसा अपमान
भया है देखो प्रभू ने इस महापापी की वाणी को माला
दे दई और मेरे को नहीं दई तांते मै अब जायक
र के जल विखे डुव मरता हूं मेरे जीवने को अव
धिक्कार है ऐसे कथन करकर परम कोपके वश
भया हूआ समुद्र के किनारे पर चला आया और डू
वने के लिये जलविखे चला जाता भया तब जल ति
सको जानू पर्यंत होय गया ज्यों ज्यों आगे जाता
है त्यों त्यों जल जानू [struck-through]
को नहीं त्यागता जब जाना कि मरण नही होता
है तब तो परम दुख और कलेश को प्रापत होय गया
॥२॥ चौपाई ॥ दशा देखि अस तासु मुरारी ॥ आय ल
लित वैस्नव वपुधारी ॥ करपकरत तहि लीन निकारो ॥
करि करि वदन प्रवोध निवारो ॥ पुनि लागे तहि पाक
करावन ॥ शाखि पत्र सन मुख मन भावन ॥ देखत का
ऊ कुल्हे कहें भाखो ॥ इह जन पत्र कवन हित राखो ॥
वोल्यो वदन रुल्हे हित होई ॥ अस कहि उठ्यो कुपत
उर सोई ॥ ईहां न करां न पाक अव मोरे ॥ तव भगवान

१२८६

1245

निजत सदन द्वारावति आवा॥ रुल्हं तास प्रीतिवस ताहीं॥ आवा सोपि द्वारिकामाहीं॥ तवरण छोडु मनेअनुरागा॥ कुल्ह प्रसन्न वदन वडभागा॥ निज कृतपद जुत भक्ति सुहायन॥ लाग्यो मधुर मधुर स्वर गायन॥ रुल्हं तासु देखि हरषाये॥ लाग्यो सोपि वदन कछु गाये॥ पै तोकर निजकृत नरहाना॥ रहि तें संकुचित हृदय लजाना॥ तव तोपै भगवाने सुहाये॥ भये प्रसन्न भक्त सुखदाये॥ प्रेरत पवन कंठ कलतासा॥ परी माल प्रभु भवन प्रकासा॥ ते प्रणाम करि वदन उचारा॥ जेष्ठ वंधु प्रभु भक्त तुमारा॥ मै अभक्त कलण निधि राहा॥ मुहि स्वजदीन हेतु प्रभु काहा॥ कुल्ह देखि निज हृदय लजाना॥ भयो मोर अपमान महाना॥ दीनी माल दुरत काहीं॥ मै अव मरहुं वूडि जलमाहीं॥ अस कहि हृदय धीर सि छावा॥ व्याकुल तीर वारनि धआवा॥ मरण हेतु पृवस्यो जल ~~…~~ जाई॥ जानु पर्यंत वार गति पाई॥ दोहा॥ जिमि जिमि आगल जात तिमि तजत जानु जलनाहिं॥ जान्यो मरण न होत तव भयो दुखित मन माहिं॥२॥ टीका॥ पश्चमदेस विखे कायथ जाती मै कुल्ह और रुल्ह नाम करके दो भ्राता होते भये अव तिनकी मनोहर गाथा जो है सो कुछ संक्षेप कर के गायन करता है ~~…~~ तिन मै कुल्ह नामा जेष्ठ अर्थात वडा भ्राता होता भया सो संतों की सेवा मै लीन और कृस्न भगवान की भक्ती मै प्रवीन था और रुल्ह नामा छोटा भ्राता मांस मद पान करने और वेस्यारमने मै रात्रीदिन प्रीती रुची वाला था ~~…~~ एक समय कुल्ह जोथा सो विरक्त भया हुआ घर को त्याग कर द्वारिका मे चला आया तो की छे रुल्ह भी तिस की प्रीती के

भक्त सुष्ट तव वदन उचारे॥ जन उपलेपन देन तुमारे॥ इह मम दास भावना चारू॥ होहिं न सिद्ध धनक सेला रू॥ धनिश्रस सुनत चरन सिरनावा॥ वारंवार मुदित अस्तुति गावा॥ करि सिव काई हरष मन लीना॥ होत विदाय गवन पुनि कीना॥ भक्त गदाधर आनंद छाये॥ दिन दिन भक्ति प्रीति सरसाये॥ दोहा॥ तजत मान अपमान सब विगत कपट जग नेह॥ लागे सिव सन भवननिज कृष्ण चरन रत नेह॥१९॥ टीका॥ कहते हैं कि भगवन तुम आप लेपन क्यों देते हो मेरे को अपने चरनो का सेवक जान कर आज्ञा दीजिये मैं देता हूं तव भक्त प्रधान कहने लगे कि हे प्यारे तुमारे लेपन देने से इह मेरी दास भावना जो है सो सिद्ध नहीं होती इस प्रकार सुनकर के धनी ने दीन गती से वारंवार चरनो पर सीस नाय दिया और अनेक प्रकार कर के सुंदर अस्तुती भी करी फिर प्रेम भक्ती से तिनका पूजन सेवन कर कर हरष से विदाय हो कर अपने घर को चला जाता भया और इहां भक्त सुष्ट गदाधर जी भी दिन दिन भक्ती प्रेम को अधिक किये हूये हृदय से कपट दंभ मान अपमान को त्याग कर कृष्ण भगवान के चरन कमलों का आधार राख कर सुख पूर्वक घर मै निवास करने लगे॥१९॥ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ति महात्मे भाषा टीकायां गदाधर चरित वरनने नाम सरगः ==

अथ कुल्ह रुल्ह चरित

दोहा॥ कुल्ह रुल्ह कायस्थ कुल पश्चिम देस सुहाय॥ जुगल भ्रात तिन कर चरित कहूं प्रकट अव गाय॥ चौपाई॥ कुल्ह जेष्ट रत संतन सेवा॥ कृष्णदेव पर भक्ति अभेवा॥ रुल्ह कनिष्ट मांस मदपाना॥ वेस्या रमन प्रीति रुचि माना॥ अव सुन एक कुल्ह हरषावा॥

उड्डा उहु ह्वाहु डिहु उडिहु उड्डा ॥ इयंनरः ॥

प्रथमस्याग्रलापः ॥ ननरी रेना आनन उनन उआ

नन ग्रद ननरी नने नना उननना आनरा ननन

रेन नानम ॥ इतिस्थाई ॥ ननन ग्रदनने आनन

नम नानने नना नरी नना आन नान ननमन नन

रागबंगाली

ठाट

चार ४२। षटपद ३३ अष्ट १५ दशपद १० परब्रह्म २४ पहले ४२

२६७पद- १२९ पत्रे ९६

मीन हरन चंदवीण वेण थनष नृण हंस चंदकाजे ॥ सीयराम चरा

णो शुभ चिन्ह घष्ट चालीस नित चिंतन शिव नारद सनकादिक श्रहि

राजे ॥ रामचरण ध्यान करन गोपदी श्वजक नरत विरतिज्ञान भक्त

भरत सजन सत समाजे ॥ राग भैरव ॥ ॥ राघव भोरही जा

गे नींद भरी श्रंखियन मन भावन ॥ उठबैठे फूलनसेज उपर कोटि

मदन छवि लावन ।

सो गा वै इ च्छा फ ल दा नी च् अन्य ध्रुव पद भैरव

चार ताल त्रे श्रे बे श्रा द भ वा नी ज ग मा नी स

र्वा नी स र्व क ला दे वि द्या व र दा नी शि व

से गे ज ग दं बे श्र म्ब र सिं हा र न त र न ता र न

ता न ता ल शु द्ध रा ग रं ग प्र चा र दे वा नी स

म स्व र ती न ग्रा म इ क्की स मू र्छ ना उ ने चा स

को ट ना न ति न के थो रे जो य मे श्रा नी वे ज्ञ वा

व रो रा व रो से व क य ह मो गे ना द वि द्या मू

र त वा न रा ग मे रे ग रे मे सा नी ध श्र न्य भु व प

द चा र् ता ल भै र व जै का ला क ल्या णी ख म्ब था र णी

गि रि जा स न प्प मा वे डी वा गु एड छ त्र था र्

णी ज ग ज न नी ज्वा ला मु खी श्रा द ज्यो त श्र ने

गतिछंद। नगन करौ फिरि जगनौ। यक लघु लेषइ सगनौ हृ
दय रजादस बरनौ अमरत गति कछु चरनौ २° राजोवाच। समति म
हारिषि मानिजे तन धनके सम गुनिजे मनमह होइ म कहिए
धनि मज्ज आपन लहिए २१ दोधक छंद अषि वाको। तीनथरौ
भगना पहिलेहीं चातर है गुरुकों गहि लेहीं। चारि तथा हयने ज
ति हानौ दोधक छंड गछा नृप जानौ। राज गये जबते बनमां
हीं राक्षस बैर करैं बहुधाहीं। राम कुमार हमैं नृपदीजे तोपरि पू
रन जग्य करीजे २२ तोटक छंद। चारि सगन जविचारिकै चा

को ट ना न ति न के थो रे जो य मे आ नी वै ज्ञ वा

व रो रा व रो से व क य ह मो गे ना द वि द्या मू

र त वा न रा ग मे रे ग रे मे स्मा नी ध अ न्य भु व प

द चार ताल भैरव जै का ला क ल्या णी ख प्र धा र णी

गि रि जा च न घ ण मा चे डी चा मु ण्डा छ त्र धा र

णी ज ग ज न नी ज्वा ला मु खी आ द ज्यो त स्व ने

॥

५

सू: ॐश्रीकृस्णायनमोनमः ॐरागकल्यान ॥
सा·ग्र·
१

सा नि ध नि सा ग
वंदनकमलवैदौहरि

म ग रे सा सा रे ग म
राइ जाकोकृपाकरतग्राये कोसबकछुद

रसाइ बहरैसइमूकपुनिवोलैरंकचलैसिरछत्र

धराइ ॥ सूरदासस्वामीकरुणामैवारवारवेदौंति १

अथ प्रथमयामदिन

१ भैरव
२ आनंदभैरव
३ कालंगडा
४ वंगाल
५ ललित
६ देवगांधार
७ गांधार
८ गुनकली
९ पंचम
१० करनाट
११ वसंती
१२ पंचमी
१३ मेवार
१४ देशकार
१५ वसंत
१६ हिंडोल
१७ आसा
१८ आसावरी
१९ भैरवी
२० सिंधभैरवी
२१ टोडीभैरवी
२२ जीलफ
२३ पिलासी
२४ गूजरी
२५ षट
२६ शुध
२७ टोडीवराडी
२८ टोडीआसावरी
२९ टोडीलाचारी
३० टोडीजोनपुरी
३१ टोडीगांधारी
३२ देवसाष
३३ रामसाष
३४ लछासाष
३५ भौसाष
३६ ललता
३७ अलैया
३८ विलावल
३९ विलावलदेवगिरी
४० विलावलककभ
४१ विलावलसरपरदा
४२ विलावलसुकल
४३ माधव
४४ विभास
४५ वहार
४६ विलावली
४७ देवगिरी
४८ जोगीया
४९ सूहा
५० सुघराई
५१ रामकली
५२ भटेयार
५३ रामगिरी
५४ देसी
५५ गूजरी
५६ अहीरी

इति प्रथमयाम दिन ॥

अथ द्वितीयाम दिन ॥

१ गौड
२ वडंस
३ मेघमल्हार
४ सूरदासीमलार
५ सारंग

६ सारंगमधुमात
७ सारंगहेदावनी
८ सारंगवड्हंस
९ सारंगसावंत
१० सारंगलूहर
११ सारंगलंकदहन
१२ सारंगमल्हार
१३ सारंगगौड़मल्हार
१४ गौड़सारंग
१५ वरवा
१६ देस
१७ भीमपलासी
१८ प्रदीपकी
१९ सैंधवी
२० सिंधड़ा
२१ सूरमल्हार
२२ रामदासीमल्हार
२३ धानी

इतिद्वियाम दिन ॥

अथतृतीयाम दिन

१ श्रीराग
२ टंकश्री
३ गौड़गिरी
४ सिंदूरा
५ मारवा
६ त्रिवण
७ पूरवी
८ पूरवा
९ गौड़ा
१० मालीगौरा
११ मालवी
१२ गौरी
१३ जैती
१४ धनासरी
१५ मुलतानीधनासरी
१६ पीलो
१७ पूरिया
१८ पटमंजरी
१९ पहाड़ी
२० धवलश्री
२१ मालश्री
२२ जयतश्री
२३ पूरीआधनाश्री
२४ मीयाकीधनाश्री
२५ मध्यधनाश्री
२६ ललितागौरी
२७ कलिंगगौरी
२८ चैतीगौरी
२९ छंजौटी
३० जंगला
३१ काफी
३२ सिंध
३३ डाकड़ा

इतितृतीयाम दिन ॥

अथ प्रथमयाम रात्रि

१ कल्याण
२ श्यामकल्याण
३ भूपाली
४ शुद्धकल्याण
५ यमन
६ हेम
७ खेम

८ हमीर
९ केदारा
१० कामोद
११ छाया
१२ नट
१३ नटकिन्नर
१४ नटकामोद
१५ नटकेदारा
१६ जैनट
१७ नटमल्लार
१८ दीपक
१९ जैत
२० छायानट
२१ नटनारायण
२२ तिलककामोद
इति प्रथमयाम रात्री

अथ द्वितीयाम रात्री
१ कमाच
२ कान्हडा
३ बागेश्वरी
४ नायकी
५ अडाना
६ जैजैवंती
७ कमाची
८ कौस्पा
९ दरबारी
१० भ्रयकान्हडा
११ हुसेनीकान्हडा
१२ मंदरीककान्हडा
१३ सोरठ
१४ सूही
१५ लंकेस्परी
१६ शहाना
१७ गारा
१६ खंभावती
१८ लंकेसरी
१९ देश
इति द्वितीयाम रात्री

अथ तृतीयाम रात्री
१ मालकौस
२ विहाग
३ परज
४ माधवी
५ मारू
६ सोहनी
७ शंकराअरुन
८ शंकराभरन
९ पटविहाग
१० मारुविहाग
११ जोग
१२ शंकरा
१३ शंकरनाट
१४ शंकरविहाग
१५ विहागडा
१६ मारू
इति तृतीयाम रात्री ॥

2

अथ राग सूचीपत्रः ॥

श्रीराग रागणी प्रारंभ ॥

१ भैरव
२ भैरवी
३ रामकली
४ बहुराग
५ गुनकली
६ विभास
७ देसकार
८ साजगिरी
९ भटयारी
१० भंखार
११ ललित
१२ पंचम
१३ हिंडोल
१४ वसंत
१५ वहार
१६ अलैया
१७ सरपरदा
१८ वेलावल
१९ देवगिरी
२० रामगिरी
२१ ककुभ
२२ कान्हडी
२३ लच्छासाष
२४ भौसाष
२५ देवसाष
२६ रामसाष
२७ सूहा
२८ सुघरेई
२९ गंधारी
३० देवगंधार
३१ गंधार
३२ आसावरी
३३ जोगिया
३४ आसा
३५ देशी
३६ जौनपुरी
३७ लाचारी
३८ टोडी
३९ गूजरी
४० वराडी
४१ सारंग
४२ हंदावनी
४३ मधुमाद
४४ वडहंस
४५ सावंत
४६ मेवंत
४७ लूम
४८ लूहर
४९ गौडसारंग
५० पहाडी
५१ लंकदहन
५२ मेघ
५३ मल्हार
५४ हरषणी
५५ सूरमल्हार
५६ रामदासीमल्हार
५७ नटमल्हार
५८ मुलतानी
५९ भीमपलासी
६० प्रदीपकी
६१ अहीरी
६२ दीपक
६३ प्रदीप
६४ यामी
६५ वरवा
६६ पटमंजरी
६७ रिषभराग
६८ द्रावडी
६९ वरवल
७० झिलंग
७१ बोष
७२ सिंदुरी
७३ मंगल
७४ सभांग
७५ धवलश्री
७६ मालश्री
७७ जैतश्री
७८ पूरियाधनाश्री
७९ लंकश्री
८० वंकश्री
८१ टंकश्री
८२ मियाकीधनाश्री
८३ अथधनाश्री
८४ पूरवी

2

सूचीपत्र १

८५ पूरवा
८६ मारवा
८७ मालीगौरा
८८ गौरा
८९ श्रीराग
९० ललतागौरी
९१ गोपनीगौरी
९२ आसागौरी
९३ कलिंगगौरी
९४ चेतीगौरी
९५ यमन
९६ कल्यान
९७ हेम
९८ खेम
९९ स्याम
१०० जैत
१०१ हमीर
१०२ कामोद

१०३ छायानट
१०४ नट
१०५ अड़ाना
१०६ सहाना
१०७ नायकी
१०८ कान्हड़ा
१०९ बागेश्वरी
११० केदारा
१११ संकरा
११२ संकराभरन
११३ संकराअरन
११४ संकरनाट
११५ संकरविहाग
११६ विहाग
११७ विहागड़ा
११८ सोरठ
११९ देस
१२० सिंधड़ा

१२१ खंभाई
१२२ परज
१२३ कलंगड़ा
१२४ जैजैवंती
१२५ झिंझोटी
१२६ जंगला
१२७ पीलू
१२८ काफी
१२९ सिंध
१३० झकड़ा
१३१ जोग
१३२ सामेरी
१३३ सामेरीसिंधड़ा
१३४ सैंधवी
१३५ माधवी
१३६ बंगाली
१३७ बराटी

१३८ अनेती
१३९ आनंदी
१४० खंभावती
१४१ गौरगिरी
१४२ सनेही
१४३ मधुराग
१४४ हरखराग
१४५ विभाकर
१४६ मारू
१४७ मेवार
१४८ चंद्रकाल
१४९ नंदन
१५० विनोदराग
१५१ मंगलराग
१५२ चंद्रबिंब
१५३ प्रभात

१५४ विरथन
१५५ कमलराग
१५६ कुसुम
१५७ कुंतल
१५८ चंपक
१५९ बहुल
१६० हेमाल
१६१ गुणसागर
१६२ विहंग
१६३ जलधर
१६४ मलरुहा
१६५ अनेती
१६६ रागनी
१६७ आनंदी
१६८ कुंतकी
१६९ सरस्वती
१७० कुंभारी

3

१७१ चोराशी
१७२ वचित्रा
१७३ प्रभावती
१७४ श्रीयरी
१७५ श्रीहटी
१७६ सोहनी
+१७७ श्लेयका
१७८ परजा
१७९ तैलंगी
१८० कान्हर
१८१ सागरराग
१८२ कुंभ
१८३ तिलक
१८४ सोहन
१८५ मोहन
१८६ सोमराग
१८७ भासराग
१८८ कोलाहल
१८९ तिलकचाँद
१९० शुकलवेरावर
१९१ विजयराग
१९२ तरस्कटोडका
१९३ रामराग
१९४ कुमद
१९५ गंभीर
१९६ जैनारायण
१९७ नटनारायण
१९८ देससोरठ
१९९ सामेरीसोरठ
२०० श्रीविलास
२०१ निषादी
२०२ पंचमी
२०३ कौशाकी
२०४ बंगाली
२०५ शाललता
२०६ लोलरागनी
२०७ सोरी
२०८ सुमकरी
२०९ हमावती
२१० नाटी
२११ देवकरी +
२१२ भावी
२१३ सुभगा
२१४ कौमारी
२१५ वेदनी
२१६ प्रकासनी
२१७ प्रपावती
२१८ धैवती
२१९ वसंती
२२० लीलावती
२२१ भृंगीका
२२२ काह्वेली
२२३ श्रृजाईका
२२४ करणाटी
२२५ किंनरी
२२६ पिनाकी
२२७ तिलककामोद
२२८ राजहंसी
२२९ इंद्राणी
२३० इंद्रावती
२३१ लीलावती
२३२ सूद्दवी
२३३ कौंकणी
२३४ सावेती
२३५ देसवराडी
२३६ कावेली
२३७ नाट
२३८ गुणमंजरी
२३९ सेरवरी
२४० सुघंदा
२४१ तवडजी
२४२ मध्यमी
२४३ विषमी
२४४ गांधारी
२४५ पंचमी
२४६ धैवती
२४७ निषादी
२४८ रक्तगांधारी
२४९ वैदकीशिवी
२५० मैभी
२५१ मंजारिका
२५२ हंसीरागनी
२५३ नागध्वनी
२५४ लावम
२५५ केदारी
२५६ वेगहारी
२५७ श्रेवा
२५८ शस्ततोटक
२५९ प्रथममंजरी
२६० मेनका

सूचीपत्र २

२६१ उरवसी
२६२ मनरंजनी
२६३ मनमोहसोहनी
२६४ वसंतिका
२६५ सुहवराडी
२६६ द्रवडवराडी
२६७ वरी
२६८ एरी
२६९ हंसका
२७० देवकृती
२७१ प्रताप
२७२ पूर्विका
२७३ छायाटोडी
२७४ केली
२७५ सोन
२७६ कोय
२७७ रेवती
२७८ दीपिका

२७९ प्रवरावरी
२८० देवी
२८१ सवेंगी
२८२ सुथारा
२८३ वगालका
२८४ लोलता
२८५ मेनप्रया
२८६ रजा
२८७ कामदेवी
२८८ लिलरंगी
२८९ प्रमोदनी
२९० हंसविलासनी
२९१ श्रीवरी
२९२ ऊजका
२९३ सात्वका
२९४ विभासी
२९५ कामदेवी +
२९६ शंकरी

२९७ विरंगी
२९८ मुडाईका
२९९ मारवी
३०० कुवजदा
३०१ मधुरी
३०२ मनोहरी
३०३ कामहस्तनी
३०४ कोकलाकेठी
३०५ भूपती
३०६ भूपाल
३०७ वैस्नव
३०८ शाकनक
३०९ रुद्र
३१० ब्रह्म
३११ ज्ञान
३१२ ब्रह्मानंद
३१३ सुसोम
३१४ गौडल

३१५ नुरंगगोड
३१६ द्रवडगोड
३१७ देसपाल
३१८ तुरस्कडलिंदी
३१९ देवराग
३२० शिव
३२१ औडुवभैरव
३२२ वैस्नवभैरव
३२३ रामकलीभैरव
३२४ कौशकभैरव
३२५ वहारभैरव
३२६ रामकलीषट्
३२७ रामगूजरी
३२८ विभासभूपाली
३२९ भटियालललत
३३० भटियालमंघार
३३१ भटियालकलिंग
३३२ मंघारपंचम

३३३ मंघारललत
३३४ मंघारवहार
३३५ मंघारवसंत
३३६ मंघारसोहनी
३३७ मंघारभैरव
३३८ ललतपंचम
३३९ ललतवहार
३४० ललतकलिंग
३४१ लालतवसंत
३४२ ललतहिंडोल
३४३ भैरवीटोडी
३४४ सिंयभैरवी
३४५ जीलफभैरवी
३४६ आनंदभैरवी
३४७ पीलूभैरवी
३४८ जंगलाभैरवी
३४९ आसावरीभैरवी
३५० मुलतानीभैरवी

रागसूचीपत्र ३

४२५ काफीवहार
४२६ अहीरीवहार
४२७ धनसरीवहार
४२८ पूरियावहार
४२९ मालश्रीवहार
४३० जैतश्रीवहार
४३१ लंकश्रीवहार
४३२ वेकश्रीवहार
४३३ टंकश्रीवहार
४३४ रिषभवहार
४३५ गांधारवहार
४३६ देवगांधारवहार
४३७ पटमंजरीवहार
४३८ प्रदीपकीवहार
४३९ दीपकवहार
४४० प्रदीपकवहार
४४१ पराकवहार
४४२ पूरवावहार

४४३ पूरवीवहार
४४४ गौरावहार
४४५ गौरीवहार
४४६ श्रीवहार
४४७ त्रिवणवहार
४४८ मालीगौरावहार
४४९ वराडिकावहार
४५० ललितागौरीवहार
४५१ चेतिगौरीवहार
४५२ यमनवहार
४५३ कल्यानवहार
४५४ खेमवहार
४५५ हेमवहार
४५६ इमनकल्यानवहार
४५७ स्यामवहार
४५८ जैतवहार
४५९ हमीरवहार
४६० कामोदवहार

४६१ नटवहार
४६२ तिलकवहार
४६३ छायावहार
४६४ जैतस्यामवहार
४६५ मनोहरध्यानवहार
४६६ भूपालीवहार
४६७ भूपालवहार
४६८ यमनभूपालीवहार
४६९ हमीरजैतवहार
४७० हमीरकल्यानवहार
४७१ कामोदछायावहार
४७२ पूरियाकल्यानवहार
४७३ स्यामपूरियावहार
४७४ जैतपूरियावहार
४७५ गौडकामोदवहार
४७६ सावंतवहार
४७७ सावनीवहार
४७८ सुधकल्यानीवहार

४७९ जमनवसंतवहार
४८० हमीरकेदारवहार
४८१ हमीरस्यामवहार
४८२ जैतहमीरवहार
४८३ कामोदकल्यानवहार
४८४ कामोदमलार
४८५ अडानावहार
४८६ सहानावहार
४८७ नाइकीवहार
४८८ कान्हरावहार
४८९ मालकौसवहार
४९० सोहनीवहार
४९१ वागेसरीवहार
४९२ केदारवहार
४९३ खंभायचीवहार
४९४ परजवहार
४९५ कलिंरावहार
४९६ झिंझोटी पहाडीवहार

३५१ पलासीभैरवी
३५२ वरवा भैरवी
३५३ वहारभैरवी
३५४ वसंतभैरवी
३५५ पंचमभैरवी
३५६ गूजरीभैरवी
३५७ देशभैरवी
३५८ रामकलीभैरवी
३५९ मनमगनमभैरवी
३६० नौरेजवाकरेजभैरवी
३६१ पराकभैरवी
३६२ वावारभैरवी
३६३ काफीभैरवी
३६४ सिंधडीभैरवी +
३६५ ललितसोहनि
३६६ ललितमालकौस
३६७ ललतभैरव
३६८ ललितरामकली

३६९ ललतवहार
३७० ललितपरज
३७१ ललितदेशकार
३७२ हिंडोलवहार
३७४ हिंडोलवसंत
३७५ हिंडोलपंचम
३७६ हिंडोलमालकौस
३७७ हिंडोलमालश्री
३७८ हिंडोलएरिया
३७९ हिंडोलकौशिक
३८० हिंडोलसोहनि
३८१ पंचमभैरव
३८२ पंचमकौशिक
३८३ पंचमलीलावती
३८४ पंचमलीलावरी
३८५ पंचमसोहनी
३८६ वसंतवहार
३८७ जमनवहार

३८८ भैरवीसिंधवहार
३८९ भैरववहार
३९० रामवहार
३९१ षटवहार
३९२ गोडगिरीवहार
३९३ गुजरवहार
३९४ आसावरीवहार
३९५ टोडीवहार
३९६ जौन वहार
३९७ देशीवहार
३९८ सूहावहार
३९९ लचराईवहार
४०० देशाषवहार
४०१ आसावहार
४०२ जोगियावहार
४०३ लाचारीवहार
४०४ वहाडरीवहार
४०५ टोडीभैरवीवहार
४०६ टोडीगुजरवहार

४०७ वराडीवहार
४०८ मल्हारवहार
४०९ गौडवहार
४१० रामदासीवहार
४११ सुरदासीवहार
४१२ सूरदासीवहार +
४१३ नटमलारीवहार
४१४ मेघवहार +
४१५ मियांकीमलारवहार
४१६ सोरठमलारवहार +
४१७ मुलतानीवहार
४१८ भीमपलासीवहार
४१९ धानीवहार
४२० वरवावहार
४२१ पीलूवहार
४२२ जंगलावहार
४२३ सिंधकाफीवहार
४२४ सिंधवहार

रागसूचीपत्र ३

४२५ काफीवहार
४२६ अहीरीवहार
४२७ धनसरीवहार
४२८ पूरियावहार
४२९ मालश्रीवहार
४३० जैतश्रीवहार
४३१ लंकश्रीवहार
४३२ वेकश्रीवहार
४३३ टंकश्रीवहार
४३४ रिषभवहार
४३५ गांधारवहार
४३६ देवगांधारवहार
४३७ पटमंजरीवहार
४३८ प्रदीपकीवहार
४३९ दीपकवहार
४४० प्रदीपकवहार
४४१ पराकवहार
४४२ पूरवावहार

४४३ पूरवीवहार
४४४ गौरावहार
४४५ गौरीवहार
४४६ श्रीवहार
४४७ त्रिवणवहार
४४८ मालीगौरावहार
४४९ वराडिकावहार
४५० ललितागौरीवहार
४५१ चेतिगौरीवहार
४५२ यमनवहार
४५३ कल्यानवहार
४५४ झेमवहार
४५५ हेमवहार
४५६ इमनकल्यानवहार
४५७ स्यामवहार
४५८ जैतवहार
४५९ हमीरवहार
४६० कामोदवहार

४६१ नटवहार
४६२ तिलकवहार
४६३ छायावहार
४६४ जैतस्यामवहार
४६५ मनोहरध्यानवहार
४६६ भूपालीवहार
४६७ भूपालवहार
४६८ यमनभूपालीवहार
४६९ हमीरजैतवहार
४७० हमीरकल्यानवहार
४७१ कामोदछायावहार
४७२ पूरियाकल्यानवहार
४७३ स्यामपूरियावहार
४७४ जैतपूरियावहार
४७५ गौडकामोदवहार
४७६ सावंतवहार
४७७ सावनीवहार
४७८ सुद्धकल्यानीवहार

४७९ जमनवसंतवहार
४८० हमीरकेदारवहार
४८१ हमीरस्यामवहार
४८२ जैतहमीरवहार
४८३ कामोदकल्यानवहार
४८४ कामोदमलार
४८५ अडानावहार
४८६ सहानावहार
४८७ नाइकीवहार
४८८ कान्हरावहार
४८९ मालकौसवहार
४९० सोहनीवहार
४९१ वागेश्वरीवहार
४९२ केदारवहार
४९३ खंभायचीवहार
४९४ परजवहार
४९५ कलिंगावहार
४९६ झिंझोटीपहाडीवहार

राग सूची पत्र ४

५६६ मेघरहंस
५६७ मेघकामोद
५६८ मेघगौड
५६९ मलारगौड
५७० मलारकान्हा
५७१ मलारकामोद
५७२ मलारसारंग
५७३ मलारमनोहा
५७४ मलारगौडगिरी
५७५ मलारदेश
५७६ मलादेशसोरठ
५७७ मलारखडानागौड
५७८ मलारसूरदासीनट
५७९ मलारछायानट
५८० मलारसूहासुघराई
५८१ मलारबंगाल
५८२ मलारमलहूहा

५८३ मलारजलधर
५८४ मलारमेघनाट
५८५ मलारामदासीमेघ
५८६ मलारस्याम
५८७ मलारजैतकल्यान
५८८ मियांकीमलारनाट
५८९ रामदासीमलारनाट
५९० सारंगनाट
५९१ सूहानाट
५९२ सुघराईनाट
५९३ देशाषनाट
५९४ भौशाषनाट
५९५ रामशाषनाट
५९६ वैरावरनाट
५९७ रामगिरिनाट
५९८ देवनाट
५९९ हूहनाट

६०० करणाटनाट
६०१ गौरनाट
६०२ मेघनाट
६०३ गौडगिरीनाट
६०४ किन्नरनाट
६०५ कल्याननाट
६०६ प्रमननाट
६०७ भूपालनाट
६०८ हमीरनाट
६०९ स्यामनाट
६१० जैतनाट
६११ हेमहेमनाट
६१२ हमीरनाट
६१३ कामोदनाट
६१४ गौडकामोदनाट
६१५ कामोदछायानाट
६१६ कान्हरनाट

६१७ सुडानानाट
६१८ नाइकीनाट
६१९ मोहननाट
६२० कौशकनाट
६२१ केदारनाट
६२२ जलधरनाट
६२३ शंकरनाट
६२४ विहंगनाट
६२५ देशसिंडरा
६२६ सामेरीसोरठदेश
६२७ मलारदेश
६२८ जैजैवंतीसोरठ
६२९ जैजैवंती
६३० कुकभदेश
६३१ सोरठसिंध
६३२ काफीदेश
६३३ खंभाइचीझिंझोटी
६३४ खंभाइचीजंगला

४९७ सिंदुरावहार
४९८ अलैयावेलावल
४९९ अलैयासरपरदा
५०० अलैयादेवगिरी
५०१ अलैयाककभ
५०२ अलैयातेलंग
५०३ अलैयाकन्हरी
५०४ अलैयागौडगिरी
५०५ वेलावलदेवगिरी
५०६ वेलावलककभ
५०७ वेलावलसरपरदा
५०८ वेलावलकल्यान
५०९ वेलावलशुकल
५१० देवगिरीसरपरदा
५११ देवगिरी
५१२ रामगिरी
५१३ देवगिरीपमन
५१४ देवगिरीककभ
५१५ लक्षासाख
५१६ श्यामघराई
५१७ सूहावेलावल
५१८ सूहाकान्हडा
५१९ सूहाटोडी
५२० सूहासारंग
५२१ सूहाअडाना
५२२ सुघराईअडाना
५२३ सुघराईकान्हडा
५२४ सुघराईदेशाख
५२५ सुघराईटोडी
५२६ सुघराईमलार
५२७ देवगंधारभैरव
५२८ देवगंधाररामकली
५२९ गंधारआसावरी
५३० गंधारजोगिया
५३१ गंधारटोडी
५३२ गंधारखट
५३३ गंधारदेशी
५३४ गंधारगूजरी
५३५ जोगियागंधार
५३६ गुजरीटोडी
५३७ गुजरीवराडी
५३८ गुजरीसाम
५३९ गुजरीदेशी
५४० गुजरीलाचारी
५४१ गुजरीवहादरी
५४२ टोडीवराडी
५४३ टोडीआसावरी
५४४ टोडीलाचारी
५४५ टोडीजोनपुरी
५४६ सावनीटोडी
५४७ रामकरीटोडी
५४८ दरबारीटोडी
५४९ टोडीपलासी
५५० मुलतानीटोडी
५५१ गंधारटोडीजौन
५५२ टोडीविलासी
५५३ वराडीसाम
५५४ वराडीवहादरी
५५५ वराडीत्रिवणी
५५६ टंकवराडी
५५७ करनाटवराडी
५५८ देशवराडी
५५९ सारंगमेघ
५६० सारंगसोरठ
५६१ सारंगमलार
५६२ सारंगगौरमलार
५६३ गौडसारंगनट
५६४ मियांकासारंग
५६५ मेघमधुमाध

इतिराग सागरे
सूचीपत्र ॥

रा॰

8B

री के म का ल का लि ना ग ना य न का म

ज ना व न ॥ वै कुं ठ ना य वि हा रि व

द्वी वा म न वि ल्से व ह्ल म वा रा ह वि ठ

ल वै जू बा म रै प्रा न ज वा व न ॥

तीखगया

ग म ध प म ग म प म ग रे स स नी

ॐ ज य मा यो म क्रं द म ना र म यु स्त द न

ध नी स स रे ग म ग रे स गरे स नी ध नी रेस

म द न मो ह न मु नं ज न म न मा म न

स ध नी नी स स स रे स स नी ध प म

ज ग न प नी ज ग त्रा य जे ग जी व न ज

ग म ध नी स स नी ध स नी ध प म ग

ग बैं धु न ज ग पा म न जे ग ३ ग टा व

रेस ग मध प ध ध नी स नी ध पम गम ग

१. न ॥ क्ष म के श व क ह णा ना य के सा

अथ रागभैरवसंपूर्ण सूचीपत्रम ॥

ले

१ तीनसमक·
२ हाटभैरव·
३ नामसुरोंकोसोलोहरकतोंके·
४ नेनाध्याय·
५ स्वरकरनेकाप्रकार·
६ नामरागभैरव पांचमत·
शारदामत·भरतम·कृस्नमत·शिवमत·हनुमानमत·
७ प्रातस्समय·
८ ध्यान·
९ आवाहन·
१० देवता·
११ मंत्र·
१२ षोडशपूजन·
१३ जपसंख्या ०.....
१४ नवरसपरिछेद·
१५ नाइका·
१६ नाइकाभेदपरिछेद·
१७ सरगम हरैकि पांचमत·
शारदामत० भरतमत·कृस्नमत·शिवमत·हनुमानम·
१८ अलापाध्याय·
१९ ब्रह्मपरिछेद·ध्रुवपदोंका·
२० शक्तिपरिछेद·ध्रुवपदोंका·
२१ गणेशपरिछेद·ध्रुवपदोंका·
२२ विस्नुपरिछेद· ध्रुवपदोंका·
२३ शिवपरिछेद· ध्रुवपदोंका·
२४ सूर्य[illegible] परिछेद·

धरेही हम धैहैं। ताकहूनैं अबलौं वरुणादिकै गाथीव
स्याऊ मन कीमैं हैं। वैदेकहू रवकी छिया केशव
गाऊ वसे कोऊ जाय नहें हैं। जानत हौ उन ग्रादि
नि है मुझ श्रेउ भयो बड़हौ पहिलैं हैं। सवैया। हलसे
फूल सवास कवा भरली भाकसीरे भये भौन भरा आये।
केशव बाग महा वनसौं जनुसी चली जौन्ह सबै संग

रा॰ दे॰
स॰

दीनो। नेह लग्यो उरना हरमैं मितनाह घरी ककहे
श्रुतसीनो। गावि मो गीत विरी विसमी मिलवैई मि
वार श्रृंगार सो लीनो। सवैया। लाडिली लीलिक
लोरि लरी कई लाल लके कहु श्रे गिलगायके ॥
आजनो केशव के मेरहू लेहयें लागत देतिन देषऊ
आइकै। वेगवली उठि आई लिवावन आदै रि श्रेकेली

रहे ही हम येई है। ताकरूतें ऊपलौं बहरुताके राषीव
साउ मन कीयैमें है। वैदे कसूर उनकी द्विगा केशव
गाऊ नरी कौऊ जाय जहैं कैहैं। जानूतरौ उन राषिवे
ति है धूम श्रेउमगो बहरौ पवियें है। सवैया। हलसे
फूल नवाय कना सरली भाकुसीये भयै भैनन भाये।
केशव बागमरे वनसैं जरसी वदरी जोन्ह सबै सग

सप्त सुरन तिन ग्राम एकईस मूरछना गुणी जन
मनमान ज्ञानपाईये परमाईये । थेय थेय्या थेय
थेय्यथा थित लांगता थिथि कुकु थेथे थि किटि
त धतन थुंथुं मृदु मृदंग मिलाईये । परन प्रति
प्रति परति मन उघटति घटराइये । पदत राता
पराक्रम प्रेम रंग देवट सुनाईये ॥ इतिवनतरंगः॥

जगेति किमर्पितानि ५३ स्तुवाणे निहतः कटा
त विशिखो निर्मीनमसी व्यथो शपामान्मा ऊटि
लः करोन कवरी भारोपि मारोयमे । मोहेना व
दयेव नन्वि नननाखिवाथरो रागवान् सहतः
लन मेडलमव कथे प्रोणीमिम कोउति ५४
मानिनी मानविध्वंसदक्षो जयति सोऽप्रते । ५३

मन इच्छा फल पावै दूर होत तनतैं कलेश । तीन सैन प्रभु त

मही को ध्यावै ब्रह्मा विस्नु महेश ॥ राग भैरव ॥ चौतारा ॥

परागता राजा महा राजा राजा तनजे विद्या जगदीश ॥ सप्त स्वर

सौराङ्कं बजाउं सब राग रागणी प्रत्र वष्टन सहित छतीश ॥

बाईस सस्रवन श्रुक ईश मूर्छा नाउ तनेचास कोट तान आवैं ज

प म ग रे स ग म प ध प ॥ ग म ध नि स ध नि स रे स नि ध प ग ॥ ग म प ध प म ग रे ग म प म म

ग रे रे ग प म ग रे स ॥ म ध नि स स स स रे नि ध प म ग रे ग प म ग रे स ॥ म प ध नि स ध नि स नि ध

प म ग रे स रे ग प म ग [illegible] ॥

नाम नमो वो के हिय तजे विद्या धर तीन लोक मध समस दीप
नव खंड । तीन सैन नमकों नित सुमिरन हेर नर मोनि गु
णी गंधर्व पंडित ॥ राग भैरव ॥ चौताल ॥ साधो विद्या धर गुण
निधान गुण दाता सरस्वती माता को कर आदेश । नमो नमो
रिद्धि सिद्धि के स्वामि सकल विद्या प्रवेश । जो इनको ध्यावै

प म ग रे रे स रे ग म प म म ध प म ग रे ग म ध प म ग प म ग रे स ॥ म ध नि स ध नि स म स नि ध प म ग रे
ग रे ग प म ग रे स ॥ म प ध प म ग रे ग म ग रे स स रे ग म ग रे स स नि ध प ॥ ग म म ध न स नि ध नि स रे
स नि ध प ॥ म प ध

सोचत नही पाछे को पछताते । काम क्रोध उन वस

है कीना मानुष जन्म पेमाईदी आपढीपे ओरनोंई ऊं

उवारा यह तो मन में सोच गंवारा । वेइका वदला प

कैहै सो मै देउ वताय हरि हेरन तोय चाहिये पहले आ

पहेताय । लाभ लोभ की छोड देवा ने मै जो कही

यह सिखले चाते अमल ठगी है पीयमे जीउ तोरा वेद

ऊँन

राग विभास

षट्पदी

- जागोजागो १
- जागियेब्रजराज २
- भयो पाछलो ५
- प्रातसमेउठि ६
- भोरभयोनंद ८
- प्रातसमेउठिलाल १४
- होप्रभातसमे १५
- गोवर्द्धनगिरि १८
- रायेजूहार २०
- काहेंकोडरा २२
- आजुककुदे २४
- आरतीतिलक २७
- कंचुकीकेबंद २९
- कहीनपरेनरे ३१
- राधारंगभरी ३८
- श्यामसिंधु ३९
- नेरेवभाव ४०
- गोपालेदेख ४२
- सुंदरनंदनंद ४३
- जिह्विवयपिउ ४४
- हरिमोहनकी ४५
- रंगीलेनोनानरे ४९
- रहमनुकैसेके ५१
- पछकखजूरजंबु ५९
- प्रातसमेउठि ८०
- सुधारसिंचार ८१
- आजुकोसिंधा ८२
- कमलनैन ८५
- सांवरेभलेहो ८६
- आजसगरी ९२
- भलीकीनी ९३
- आधिकनीके ९४
- सुंदरलाल १०५
- प्रियचित्र १०८
- मेजानिपिय ११२
- वरननउउन १२०
- चिरईचुह १२३
- कीउमैथावेर १२९
- होतकिला १३३
- आजुप्रभात १३७
- जोईजोईप्यारो १३८
- आजुतोजुव १४०
- प्रातसमेउठि १४३
- मैंनामेरेसूंघट १४५
- श्रीखियनब १४६
- रायेतेआति १४८
- स्यामस्याम १५०
- वलेउविकुंज १५९

॥ ४८

पत्रे ३४

अष्टपदी

- प्रातभयो ३
- लालेनाहित ४
- जागोकृस्न ९
- उठिगोपाल ११
- आजश्यामाजू २१
- बनीपियराधा ६५
- करोकलेऊ ७९
- आवतवनी ९५
- अरुणाउदय ९६
- चंद्रावलि १११
- काहेनसे १२३
- वलिहारी १२४
- माईहो १२५
- चलोरीसुर १३४
- सखीरीश्री १५१
- गोविंददधि १७६

॥ १६

भासपदी

- १२ भोरभयो ७
- प्रातसमे १२
- ४० सुंदरस्यामरे १३३
- २५ गोकुल १३५
- गूजरी १७०
- अतिकी १७२
- जोलोहरि १७५

श्रु ७

पत्रे ५५

जमना
गंगायद२३७
श्रीरमारहमास

चारपदी

- चिरइयाचुहं० १०
- ~~१२ [illegible]~~
- उठोमेरे १३
- मेजामोना १६
- प्रातसमेवरखर १७
- रजनीराजलि १९
- आजपियसी २३
- नवनिकुंज २५
- मैनेरीआधि २६
- तेंगोपालहे २८
- जूमतअलक ३०
- प्रातआवत ३२
- अरुणउदै ३३
- पेसीमानति ३४
- नयनमंदा ३५
- सुरताल ३६
- लालगिरि ३७
- जेसेतुकरु ४१
- तरनितनया ४६
- जोभावेसोकर ४७
- नेरेवदनकी ४८
- मोहयनुव ५०
- वलिवलिजाउ ५२
- आजुलाल ५३
- एकरसना ५४
- तूआजदेखिरी ५५
- रसमसेनंदल ५६
- मदनमोहन ५७
- लालप्यारो ५८
- नेरेवारतेजा ६०
- जहांईनेनाल ६१
- नेरोमुखमानो ६२
- रेउकुमुदनी ६३
- नवनिकुंज ६४
- अजिहीकठीन ६६
- आजकिसोर ६७
- जमुनापुलि ६८
- मोरहीबोधि ६९
- केलिकीयेहरि ७०
- नेंनिसिलाल ७१
- प्रातसमेन ७२
- जागतही ७३
- लाउतिला ७४
- रसिकलालके ७५
- मोरहीकरसो ७६
- पतिसुहाग ७७
- सुखपटओट ७८
- माईरीआज ८३
- मरगजीउरज ८४
- आलसउनी ८७

चारपदी

- सांझसमआ ८८
- इतनीवार ८९
- निसिकेउ ९०
- अरुणउ- ९१
- काहेको ९७
- सैय्यावखे ९८
- वनेहोरस ९९
- वनेहोरस १००
- वलिवलि- १०१
- कौनको १०२
- मदनमो- १०३
- मदनमो- १०४
- आयहोउठि १०६
- निसिकेउ १०७
- छीलेछीले १०९
- फागखिसीसि ११०
- रेनिजागे ११३
- माईआज ११४
- मंगलकर ११५
- रत्नजडित ११६
- मंगलआर ११७
- श्रीगोपाल ११८
- श्यामसुंदर ११९
- श्यामसिंधुपाम १२१
- विलउजिन १२६
- सखीमेरेव १२७
- नेरेमुखकी १२८
- नंदकिसोर १३०
- भोरहीदान १३१
- इंदवननवति १३६
- प्रातसमेंही १३९
- प्यारेकोली १४१
- कौनचतुर १४२
- छविलेलाल १४४
- रायेतहान १४७
- स्यामस्यामा १४९
- सुंदरवनश्या १५२
- प्रातसमे १५३
- आजतनीला १५४
- आईभोरभरे १५५
- प्यारीतेरी १५६
- ज्योंहीज्योंही १५७
- काहीकोवल १५८
- कवहूकवहू १५९
- आइयेजूआइये १६०
- दोऊरीराजन १६१
- चंचललोच १६२
- प्रातसमेजागी १६३
- पियआचकी १६४
- आवनिकुंजने १६५
- स्यामकेभुजन १६६
- तेरेनेनलोने १६७
- होगईवछरा [illegible]
- दयिमथ [illegible]
- उठेप्रातते १७३
- कटिपीतपट १७४
- जागोजागो १७७
- पियहदै १७८

चारपदी

- वारोकन्हैया १७९
- आलिरी १८०

॥ १६

पत्रे ५६